देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

ISSN : 2395-7115
March 2025
Vol.-21, Issue-3

Impact Factor
8.642

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

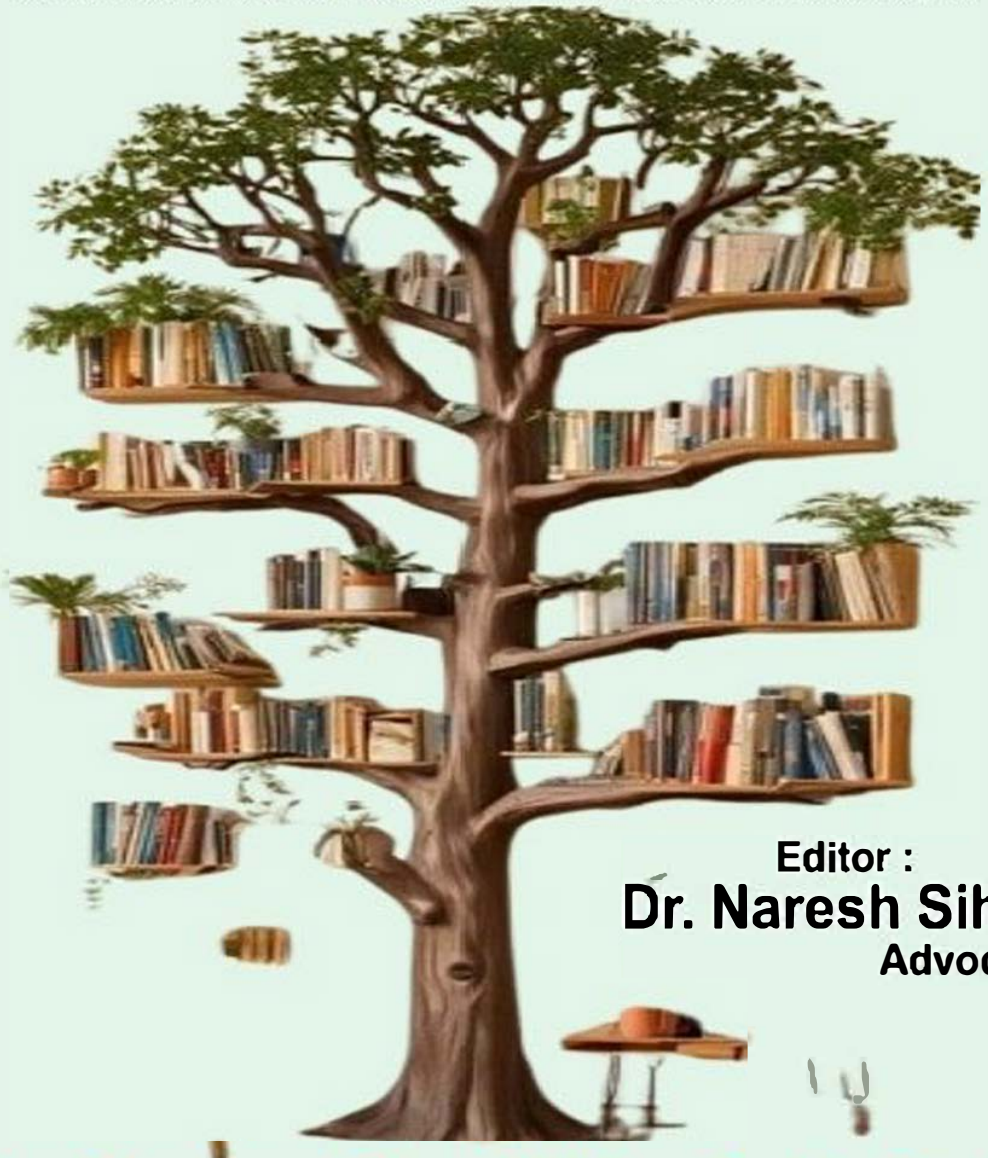

Editor :
Dr. Naresh Sihag
Advocate

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

स्व. चौ. गुगनराम सिहाग व उनकी छोटी बहन स्व. श्रीमती गीना देवी के शुभाशीर्वाद से प्रकाशित

JOURNAL OF HUMANITIES, COMMERECE, SCIENCE, MANAGEMENT & LAW

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Vol. 21 ISSUE-3 (मार्च 2025) ISSN : 2395-7115

प्रेरणा :

चौ. एम. सिहाग

सम्पादक :

डॉ. नरेश सिहाग 'बोहल', एडवोकेट

एम.ए. (समाजशास्त्र, लोक प्रशासन, हिन्दी शिक्षा शास्त्र, पत्रकारिता),
एम.फिल (समाजशास्त्र, हिन्दी) एम. लिब., एल-एल.बी. (ऑनर्स),
डिप्लोमा पंचायती राज (रजत पदक विजेता), पी.एच.डी. (हिन्दी)
डी.लिट् (मानद उपाधि), काठमांडू, नेपाल
विभागाध्यक्ष हिन्दी एवं शोध निर्देशक
टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर-335001 (राज.)

प्रकाशक :

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.)

202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा)

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL REFEREED/REVIEWED AND INDEXED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
ISSN 2395-7115

सम्पादकीय सम्पर्क :
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट
202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड,
भिवानी-127021 (हरियाणा)
Email : nksihag202@gmail.com
मो. 09466532152

Published by :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board,
Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA
Email : grsbohal@gmail.com
Facebook.com/bohalshodhmanjusha
Website : www.bohalsm.blogspot.com
WhatsApp : 9466532152

All Right Reserved by Publisher & Editor

Price

Individual/Institutional : 1100/-

Disclaimer :

1. Printing, Editing, Selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
2. All the Cheque/Bank Draft/IPO should be sent in the name of Gugan Ram Educational & Social Welfare Society payable at Bhiwani.
3. Articles in this journal do not reflect the Views or Policies of the Editor's or the Publisher's. Respective authors are responsible for the originally of their views/opinions expressed in their articles.
4. All dispute will be Subject to Bhiwani, Hry. Jurisdication only.

Printed by : Manbhawan Printers, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, Bhiwani (Hry.)

बोहल शोध मंजूषा परिवार*

मानद संरक्षक

प्रो. राधेमोहन राय
पूर्व उप प्राचार्य,
राजकीय स्नातकोत्तर महा.,
अलवर, राजस्थान।

डॉ. राजेन्द्र गोदारा
परीक्षा नियंत्रक,
टांटिया विश्वविद्यालय,
श्रीगंगानगर, राजस्थान।

डॉ. विनोद तनेजा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
गुरूनानक वि.वि. अमृतसर
पंजाब।

सम्पादक मण्डल

सह सम्पादिका :
डॉ. रेखा सोनी
उप प्राचार्या, शिक्षा विभाग
टाटिया वि.वि. श्रीगंगानगर।

सह सम्पादिका :
डॉ. सुशीला आर्या
हिन्दी विभाग, चौ. बंसीलाल
विश्वविद्यालय, भिवानी।

प्रबंध सम्पादक :
समुन्द्र सिंह
भिवानी, हरियाणा।

विधि विशेषज्ञ

डॉ. रामफल दलाल, एडवोकेट
जिला न्यायालय
भिवानी, हरियाणा।

अजीत सिहाग, एडवोकेट
पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट,
चंडीगढ़।

चरणवीर सिंह, एडवोकेट
जिला न्यायालय
पटियाला, पंजाब।

विषय विशेषज्ञ/परामर्शदात्री/शोधपत्र निरीक्षण समिति

माई मनीषा महंत
किन्नर अधिकार ट्रस्ट
भूना, जिला कैथल, हरियाणा

डॉ. विश्वबंधु शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
बाबा मस्तनाथ वि.वि. रोहतक

डॉ. संजय एल. मादार
विभागाध्यक्ष, पी.जी. केन्द्र
द.भा.हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद।

डॉ. गीता दहिया, प्राचार्या,
नैशनल टीटी कॉलेज फॉर गर्ल्स
अलवर, राजस्थान

डॉ. विनोद कुमार
हिन्दी विभाग, लवली प्रोफेशनल
यूनिवर्सिटी, पंजाब

डॉ. मो. रियाज़ खान
बीएमएस वूमैन कॉलेज आटोनोमेस
बेगलूरू

डॉ. वनिता कुमारी
च. दादरी (हरियाणा)

श्री सहदेव समर्पित
सम्पादक, शान्तिधर्मी, जीन्द

डॉ. अंजली उपाध्याय
उत्तर प्रदेश

डॉ. लता एस. पाटिल
राजीव गांधी बीएड कालेज
धारवाड़, कर्नाटक

प्रो. अमनप्रीत कौर
गुरू तेग बहादुर खालसा कॉलेज
फॉर वूमैन, दसूहा, पंजाब

डॉ. वर्षा रानी
संस्कृत विभाग, डॉ. भीमराम
अम्बेडकर, वि.वि., आगरा

प्रो. कमलेश चौधरी
राजकीय रणबीर महाविद्यालय
संगरूर, पंजाब

डॉ. किरण गिल
दीनदयाल टी.टी. महाविद्यालय
बारी, जिला सीकर, राज.

डॉ. सविता घुड़केवार
पीजी विभाग, दक्षिण भारत
हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

डॉ. परमजीत कौर
बरेली कॉलेज बरेली,
उत्तर प्रदेश।

डॉ. राजकुमारी शर्मा
नेपाल

डॉ. श्रीविद्या एन.टी.
श्री शंकराचार्य संस्कृत वि.वि.
केरल।

डॉ. बी. संतोषी कुमारी
पी.जी.विभाग, दक्षिण भारत हिन्दी
प्रचार सभा, मद्रास

श्री राकेश ग्रेवाल
सन जॉस,
कैलिफोर्निया, यू.एस.ए.

डॉ. पंडित बन्ने
भारत महाविद्यालय,
सोलापुर (महाराष्ट्र)

डॉ. पायल लिल्हारे
अमरशहीद चंद्रेशेखर आजाद
शा.स्ना.महा. निवाड़ी, मध्यप्रदेश

श्री राकेश शंकर भारती
यूक्रेन।

डॉ. उमा सैनी
आई.ए.एस.ई. विश्वविद्यालय
सरदारशहर, राजस्थान

डॉ. मनमीत कौर
राधा गोविन्द वि.वि.,
रामगढ़, झारखण्ड।

डॉ. रीना उन्नीयाल तिवारी
शिक्षा संकाय, डी.ए.वी. पीजी
कालेज, देहरादून

डॉ. सुरजीत सिंह कस्वां
डीन फिजिकल एजुकेशन
टांटिया वि.वि., श्रीगंगानगर,

डॉ. शबाना हबीब
त्रिवन्तपुरम, केरल

डॉ. शिवकरण निमल
राजस्थान

डॉ. राधाकृष्णन गणेशन
वाराणसी

डॉ. मानसिंह दहिया
हरियाणा

डॉ. नीलम आर्या
उत्तर प्रदेश

डॉ. रवि सुण्डयाल
जम्मू कश्मीर

प्रो. नरेन्द्र सोनी
डी.एन. कॉलेज, हिसार।

प्रो. रोहतास
डी.एन. कॉलेज, हिसार।

प्रो. सत्यबीर कालोहिया
पूर्व प्राचार्य, कैलिफोर्निया।

डॉ. इस्पाक अली
प्राचार्य, लाल बहादुर शास्त्री
शिक्षा महाविद्यालय, बेंगलूरू

प्रो. रेखा रानी
गवर्नमेंट कॉलेज
संगरूर, पंजाब

डॉ. के.के. मल्हौत्रा
पूर्व विभागाध्यक्ष
गवर्नमेंट कॉलेज, गुरदासपुर

डॉ. संजीव कुमार विश्वकर्मा
शासकीय महाविद्यालय,
लवकुश नगर, मध्य प्रदेश

डॉ. परमानन्द त्रिपाठी
एचओडी एजुकेशन, एल.एन.डी.
कालेज, मोतिहारी, बिहार

डॉ. करमजीत कौर
प्राचार्या, दशमेश गर्ल्स कॉलेज
चक आला, मुकेरिया, पंजाब

*सम्पूर्ण बोहल शोध मञ्जूषा परिवार/सम्पादक मण्डल अवैतनिक है।

शोध-पत्र प्रकाशन के लिए निर्देश मंजूषा

गुगनराम सोसायटी (पंजीकृत) द्वारा शोधार्थियों व अध्येताओं के शोध/अनुसंधान की गतिविधियों को प्रोत्साहित करने हेतू बोहल शोध मंजूषा ISSN 2395-7115 नामक बहुभाषिक अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। कला, संस्कृति, विज्ञान, वाणिज्य, मानविकी, प्रबंध, प्रौद्योगिकी, विधि, भूगोल, शिक्षा, पत्रकारिता पर केन्द्रीत इस शोध पत्रिका को विषय विशेषज्ञों तथा मनीषी विद्वानों की सक्रिय सहभागिता प्राप्त है। पत्रिका का वार्षिक शुल्क 1100 रु. है।

आप अपना शोध पत्र कम्प्यूटर से मुद्रित फोन्ट साईज 14, कृतिदेव-10, कृतिदेव-21 में व अंग्रेजी के Arial, Times New Roman में पेज मेकर या माइक्रोसोफ्ट वर्ल्ड में हमारी Email ID : grsbohal@gmail.com पर भेजें। शोध पत्र प्रेषित करने से पूर्व दिये गये सन्दर्भ, मात्रा आदि की पूर्णतया जाँच कर लें।

नोट :- उर्दू, पंजाबी आदि भाषा के शोध पत्र पेपर साईज 7x9.5 पर टाईप कराकर JPG या PDF फाईल हमारी ईमेल आई.डी. पर भेज सकते हैं।

हमारी पत्रिका में शोध पत्र लेखक के फोटो सहित प्रकाशित किये जाते हैं। इसलिए आप अपने शोध पत्र के साथ पासपोर्ट साईज फोटोग्राफ, सम्पर्क सूत्र : टेलीफोन, मोबाईल नं., ई-मेल तथा पिनकोड सहित पत्र व्यवहार का पूरा पता (हिन्दी व अंग्रेजी) कम्प्यूटर द्वारा टाईप करवाकर भेजें।

★ शोध पत्र 2000-2500 शब्दों (4-6 पेज) से अधिक नहीं होनी चाहिए, यदि शब्द सीमा अधिक होती है तो सम्पादक को अधिकार होगा यथा स्थान संक्षिप्तीकरण कर दें। अस्वीकृत शोध पत्र की वापसी संभव नहीं है।

★ पत्रिका में प्रकाशित श्रेष्ठ शोध पत्र को हमारी सोसायटी/पत्रिका की ओर से बहुउपयोगी श्रीमती गिना देवी शोधश्री सम्मान प्रदान किया जायेगा।

★ शोध पत्र में व्यक्त विचार लेखकों के स्वयं के विचार हैं। उनसे सम्पादक, प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है। शोध पत्र में प्रयुक्त किए गए तथ्यों के प्रति संबंधित लेखक उत्तरदायी होगा। पत्रिका में शोध आलेख प्रकाशन के लिए भेजने से पहले सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करना लेखक का दायित्व है। प्रत्येक विवाद का न्यायक्षेत्र भिवानी (हरियाणा) होगा।

★ सम्पादकीय पद अव्यावसायिक और अवैतनिक हैं। पत्रिका में केवल शोध पत्र ही प्रकाशनार्थ भेजें। शोध पत्र का प्रकाशन योजना एवं व्यवस्था के अनुसार यथा समय व प्रकाशित समस्त शोध पत्रों का सर्वाधिकार समिति/सम्पादक के पास सुरक्षित होगा।

नोट :

सहयोग/सदस्यता राशि 1100/- रू. का ड्राफ्ट/चैक/आई.पी.ओ. 'गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी' के नाम भेजें तथा ऑनलाईन बैंक में सहयोग जमा राशि की रसीद की फोटोप्रति अपने आलेख के साथ हमें मेल कर सूचित करने का कष्ट करें ताकि समय पर रसीद भेजी जा सके। ऑनलाईन सहयोग राशि के साथ 50/- रू. अतिरिक्त अवश्य जमा करवायें। प्रकाशन सहयोग शुल्क वापिस देय नहीं।

बैंक का नाम	:	पंजाब नैशनल बैंक, हालु बाजार, भिवानी (हरियाणा)
खाता धारक का नाम	:	गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी
बैंक खाता संख्या	:	1182000109078119
IFSC Code	:	PUNB0118200
MICR CODE	:	127024003

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

ISSN : 2395-7115

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Publisher : Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

Table 2

Methodology for University and College Teachers for calculating Academic/Research Score

(Assessment must be based on evidence produced by the teacher such as: copy of publications, project sanction letter, utilization and completion certificates issued by the University and acknowledgements for patent filing and approval letters, students' Ph.D. award letter, etc,.)

S.N.	Academic/Research Activity	Faculty of Sciences /Engineering / Agriculture / Medical /Veterinary Sciences	Faculty of Languages / Humanities / Arts / Social Sciences / Library /Education / Physical Education / Commerce / Management & other related disciplines
1.	**Research Papers in Peer-Reviewed or UGC listed Journals**	08 per paper	10 per paper
2.	**Publications (other than Research papers)**		
	(a) Books authored which are published by ;		
	International publishers	12	12
	National Publishers	10	10
	Chapter in Edited Book	05	05
	Editor of Book by International Publisher	10	10
	Editor of Book by National Publisher	08	08
	(b) Translation works in Indian and Foreign Languages by qualified faculties		
	Chapter or Research paper	03	03
	Book	08	08
3.	**Creation of ICT mediated Teaching Learning pedagogy and content and development of new and innovative courses and curricula**		
	(a) Development of Innovative pedagogy	05	05
	(b) Design of new curricula and courses	02 per curricula/course	02 per curricula/course

अनुक्रमणिका - मार्च 2025

क्र०	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	संपादकीय	डॉ० नरेश सिहाग	10-10
2.	'पिंजरा' मराठी सिनेमा में व्यक्त मानवीय मूल्य	प्रा. डॉ. माधवराव गजाननराव जोशी	11-15
3.	SOURCES OF BIRDS BIODIVERSITY : HARSH-JEEN AREA COMPARATIVE ANALYSIS OF LOCAL SPECIES AND GLOBAL SPECIES	Abishek Rollan, Dr. A. K. Siroya	16-20
4.	जगद्गुरु स्वामी रामभद्राचार्य जी के अरुंधती महाकाव्य में सामाजिक भावना	प्रो. शिशिर कुमार पांडेय, शीला देवी	21-26
5.	सूचना प्रौद्योगिकी का ग्रामीण समाज के सशक्तिकरण में योगदान	सरनीश कुमार, डॉ माधुरी वर्मा	27-31
6.	अमृता प्रीतम के काव्य और कहानियों में सामाजिक दर्शन एवं राष्ट्रीय चेतना	प्रो. ब्रजलता शर्मा, कु० उमा	32-34
7.	पंडित मदन मोहन मालवीय के सामाजिक योगदान का अध्ययन	LAV KESH BAHADR SINGH, Dr. Shrikrishna Singh	35-38
8.	स्कन्दपुराणे कार्तिकेयस्य कथासु परिलक्षितं देवत्वम्	अनिल कुमार	39-44
9.	Bridging the Gap:An Exploratory Study of Model Residential Schools for Tribal Communities in Kerala	Rahul Vijayan. V	45-49
10.	सावित्री बाई फुले का महिला-शिक्षा और समाज सुधार में योगदान	मनीष सुमन	50-52
11.	हिंदी उपन्यासों में भारतीय किसान एक अध्ययन	डॉ. अशोक कुमार	53-56
12.	मानं च तच्च यत्रोक्तमायुर्वेद: स उच्यते	Dr. R. Bharanidharan	57-62
13.	समाज में यौन एवं अन्य उत्पीड़न से शोषित होती महिलाएं	बॉबी	63-67
14.	वर्तमान सामाजिक परिवेश में सोशल मीडिया एवं महिला सशक्तिकरण	डॉ० योगेश कुमार त्रिपाठी,	68-71

		डॉ० कमल कश्यप भास्कर	
15.	चित्रामुद्गल की कहानियों में प्रदर्शित वैविध्यपूर्ण विषय एवं उसकी भाषा	आशु मंडोरा	72-76
16.	भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति	महेन्द्री कुमारी, डॉ० इन्दु प्रकाश सिंह	77-79
17.	ਬਿਰਤਾਂਤ ਸ਼ਾਸਤਰ ਦੇ ਬਦਲਵੇ ਸਰੋਕਾਰ	ਡਾ. ਮਨਿੰਦਰਜੀਤ ਕੌਰ	80-84
18.	The Role and Significance of Health Economics in Modern Healthcare	Renu Gupta	85-88
19.	'वेयर डू आई बिलांग' उपन्यास में अभिव्यक्त प्रवासी जीवन की समस्याएँ	डॉ. पूजा	89-92
20.	हिन्दी साहित्य और राष्ट्र निर्माण	सरबजीत कौर	93-97
21.	दिव्यांग शिक्षा के समावेशन में कृत्रिम बुद्धिमता और सूचना संचार प्रौद्योगिकी की भूमिका	डॉ. रजनीश कुमार सिंह, नीतू सिंह	98-103
22.	"ध्रुवस्वामिनी" में स्त्री अस्मिता के प्रखर प्रश्न	सिन्धु शर्मा	104-107
23.	Life Skills and Adolescents	Dr. Harpreet Kaur	108-110
24.	अनुवाद की भूमिका	Kumari Akanksha	111-115
25.	समकालीन हिंदी-कविताओं में स्त्री विमर्श	सोनाली राज	116-121
26.	राष्ट्र निर्माण में शिक्षा का योगदान : ऐतिहासिक, संवैधानिक और समकालीन परिप्रेक्ष्य	श्री सायसिंग अवास्या	122-126
27.	आदिवासी समाज में पलायन के कारणों एवं प्रभावों का अध्ययन (अलिराजपुर जिले के विकासखण्ड-सोण्डवा के विशेष सन्दर्भ में)	डॉ. मुकेश अजनार	127-129
28.	मैत्रयी पुष्पा जी के उपन्यासों में लोक सांस्कृतिक मूल्य	सुहासिनी. यू.	130-135
29.	पर्यावरण संरक्षण पर प्राचीन भारतीय दृष्टिकोण	नीलम पाटीदार	136-140
30.	श्रीमद्भागवत पुराण में अध्यात्म पक्ष	डॉ. पशुपतिनाथ मिश्र	141-146
31.	नरेन्द्र अत्री की रचनाओं में बदलते सांस्कृतिक मूल्य	कविता कुमारी, डॉ० माया मलिक	147-150

32.	भारतीय संस्कृति का ऐतिहासिक अध्ययन	डॉ० अरुण कुमार सिंह	151-157
33.	भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में पंडित मदन मोहन मालवीय के कृत कार्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन	LAV KESH BHAHADUR SINGH, Dr. Shrikrishna Singh	158-161
34.	भारत में ई-कॉमर्स का विकास	राजेश बारिया	162-165
35.	Rural Poverty in india:- A Brief Perspective on Sociogical Challenges	Pragya Tiwari	166-171
36.	ਸਿੱਖ ਧਰਮ ਵਿੱਚ ਸੇਵਾ: ਸਮਕਾਲੀਨ ਪ੍ਰਸੰਗਿਕਤਾ	ਜਸਮੀਤ ਸਿੰਘ	172 -176

संपादकीय

प्रिय पाठकों!

आप सभी का **'बोहल शोध मंजूषा'** के मार्च 2025 अंक में हार्दिक स्वागत है। यह हमारे लिए गर्व का विषय है कि हम आपके समक्ष इस अंक को प्रस्तुत कर रहे हैं, जो विविध विषयों पर केंद्रित शोध और आलेखों से समृद्ध है। इस संपादकीय के माध्यम से, हम वर्तमान शैक्षणिक परिदृश्य, शोध की महत्ता, और हमारे आगामी लक्ष्यों पर विचार-विमर्श करेंगे।

इस अंक में हमने विविध विषयों पर केंद्रित शोध-पत्रों को सम्मिलित किया है, जो वर्तमान समय की आवश्यकताओं और चुनौतियों को संबोधित करते हैं।

हमारा सतत प्रयास है कि **'बोहल शोध मंजूषा'** में प्रकाशित होने वाले प्रत्येक शोध-पत्र की गुणवत्ता उच्चतम स्तर की हो। इसके लिए हम निम्नलिखित कदम उठा रहे हैं:

सख्त समीक्षात्मक प्रक्रिया- प्रत्येक शोध-पत्र को विशेषज्ञों द्वारा समीक्षा के बाद ही प्रकाशित किया जाता है, जिससे उसकी प्रामाणिकता और गुणवत्ता सुनिश्चित हो सके।

प्लेगरिज्म की रोकथाम- हम यह सुनिश्चित करते हैं कि सभी प्रस्तुत शोध-पत्र मौलिक हों और किसी भी प्रकार की साहित्यिक चोरी से मुक्त हों।

लेखकों के लिए मार्गदर्शन- नये शोधकर्त्ताओं को उचित मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए हम कार्यशालाओं और वेबिनार का आयोजन करते हैं, जिससे वे अपने शोध-कौशल को निखार सकें।

आपका सहयोग: हमारी प्रेरणा

हम मानते हैं कि पाठकों और लेखकों का सहयोग हमारी सफलता की कुंजी है। आपके सुझाव, प्रतिक्रियाएँ, और आलोचनाएँ हमें निरंतर सुधार की प्रेरणा देती हैं। हम आपसे आग्रह करते हैं कि आप अपने विचारों को हमारे साथ साझा करें, जिससे हम पत्रिका की गुणवत्ता को और भी बेहतर बना सकें।

अंत में, हम सभी शोधकर्त्ताओं प्राध्यापकों, और पाठकों का धन्यवाद करते हैं, जिन्होंने **'बोहल शोध मंजूषा'** को इस मुकाम तक पहुँचाने में सहयोग किया है। हम आशा करते हैं कि आपका यह सहयोग भविष्य में भी बना रहेगा, और हम मिलकर ज्ञान के इस प्रकाश को और भी दूर तक फैलाएँगे।

धन्यवाद।

संपादक मंडल

बोहल शोध मंजूषा

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 March 2025 Page No. : 11-15
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

'पिंजरा' मराठी सिनेमा में व्यक्त मानवीय मूल्य

प्रा. डॉ. माधवराव गजाननराव जोशी,
श्री रेणुकादेवी महाविद्यालय, माहूर, त. माहूर, जि. नांदेड. ४३१७२१,
स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड.

सारांश:-

सिनेमा और टीव्ही के इतिहास में ऐसे असंख्य उदाहरण मौजूद है, साहित्य कृतियोंपर जिन फिल्मों का निर्माण किया गया हैं, उनमें मानवीय मूल्यों का स्वर प्रखरता से अभिव्यक्त हुआ हैं। रवींद्रनाथ ठाकुर, विभूतिभूषण, शरदचंद्र चॅटर्जी, माणिक बंदोपाध्याय, ताराशंकर बंधोपाध्याय, समरेश बसु आदि बहुचर्चित बंगाल लेखको ने फिल्म कार्यों को प्रेरित किया है। एक ओर हिंदी साहित्य की प्रसिद्ध रचनाओं पर सिनेमा का प्रभाव दिखाई देता है तो दूसरी ओर साहित्य की रचनाओं का रूपांतरण सिनेमा के माध्यम से हुआ है। सिनेमा दृक- श्राव्य विधा होने से जनमानस को प्रभावित करती हैं।

मराठी सिनेमा केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक बदलाव और मूल्य आधारित शिक्षा का एक प्रभावशाली माध्यम भी है। सत्य, प्रेम, संघर्ष, परिवार, नारी सशक्तिकरण, ग्रामीण जीवन और सामाजिक समस्याओं पर आधारित फिल्म दर्शकों को सोचने और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए प्रेरित करती हैं।

पृष्ठभूमि:-

मनुष्य जिस समाज में रहता है उस समाज के प्रति उसकी प्रतिबद्धता की चर्चा साहित्य में होती है। इसी प्रकार की प्रतिबद्धता भारतीय सिनेमा में गहरे उत्तरदायित्व बोध के साथ अभिव्यक्त होती है। भारतीय सिनेमा में समाज के प्रश्न, समस्या तथा व्यवस्था का बिंब दिखाई देता हैं। सिनेमा के माध्यम से भारतीय संस्कृति और मानवता को सुरक्षित करने का प्रयास होता है। 'सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय' का भाव सिनेमा के माध्यम से व्यक्त होता है। एक ओर साहित्य की कृतियों पर सिनेमाओं का निर्माण किया गया है, तो दूसरी ओर साहित्य की कृतियोंपर सिनेमा की कथावस्तु का प्रभाव दिखाई देता है। इसीलिए साहित्य और सिनेमा का अन्योन्याश्रित संबंध है। मराठी सिनेमा सिर्फ मनोरंजन का माध्यम नहीं है, बल्कि यह समाज को आईना दिखाने और उसमें बदलाव लाने में अहम भूमिका निभाता है। इसकी कहानियों, पात्रों और विषयों के माध्यम से कई मानवीय मूल्य प्रभावी रूप से व्यक्त किए जाते

हैं। सामाजिक सच्चाई, नैतिकता, संस्कृति और मानवीय भावनाओं की गहरी अभिव्यक्ति मराठी फिल्मों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

'श्वास' (२००४) एक बीमार बच्चे के इलाज के लिए संघर्ष कर रहे उसके दादा की मार्मिक कहानी। सच्चाई, ईमानदारी और मानवतावादी समाज के लिए कितनी महत्वपूर्ण हैं, अर्थात् सत्य और नैतिकता की आवश्यकता यह फिल्म दर्शाती है। 'नटरंग' (२०१०) अपनी कला के लिए सबकुछ बलिदान करने वाले एक कलाकार की कहानी। प्रेम केवल रोमांटिक नहीं होता, बल्कि यह सपनों, संघर्ष और त्याग में भी प्रकट होता है। 'सैराट' (२०१६) की फिल्म जातीय भेदभाव, सामाजिक प्रतिष्ठा और प्रेम की जटिलताओं पर आधारित फिल्म। समानता, स्वतंत्रता और सच्चे प्रेम के महत्व को उजागर करती है । अर्थात समाज की संकीर्ण मानसिकता और बदलाव की जरूरत को प्रतिपादित करती हैं। 'काठ' (१९८९), 'मुक्ता' (१९९४), 'मी शिवाजीराजे भोसले बोलतोय' (२००९), 'हाईवे' (२०१५) 'काकस्पर्श' विधवा पुनर्विवाह की आवश्यकता तथा लैंगिक सुख के अधिकार को लेकर महिलाओं की स्वतंत्रता, आत्मसम्मान और स्वावलंबन को महत्व देता हैं । अर्थात नारी सशक्तिकरण और आत्मनिर्भरता का संदेश दिया हैं। 'सिंधुताई सपकाळ' (२०१०),'बालक-पालक' (२०१२), 'वळू' (२००८) आदि सिनेमा परिवार के मूल्यों, संवाद और आपसी संबंधों की अहमियत पर जोर देते हैं ।. 'फँड्री' (२०१३), 'देऊळ' (२०११),'टिंग्या' (२००८) ग्रामीण समाज की समस्याओं, परंपराओं और संघर्षों का यथार्थ चित्रण किया गया हैं। 'हरिश्चंद्राची फॅक्टरी' (२००९), 'सिंधुताई सपकाळ' (२०१०), 'आनंदी गोपाळ' (२०१९) अपने सपनों को पूरा करने के लिए संघर्ष और संकल्प की महत्ता उजागर करती है ।

'पिंजरा' १९७२ में किरण शांताराम द्वारा निर्देशित प्रसिद्ध मराठी फिल्म है, मानवीय मूल्यों को बड़े ही प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत करता है। यह फिल्म केवल एक शिक्षक और तमाशा नर्तकी की कहानी नहीं है, बल्कि समाज की मानसिकता, नैतिकता और इंसानी जज़्बातों पर भी गहरा विचार प्रस्तुत करती है। यह सिनेमा तत्कालीन समाज में व्याप्त अध्यापक के जीवन और कार्य के महत्व को प्रकाशित करने वाली फिल्म है। उस समय शिक्षित होने से तात्पर्य समाज की विसंगतियों से छुटकारा पाने से रहा है, इसीलिए सामाजिक प्रबोधन का उत्तरदायित्व अध्यापक के कंधों पर रहा है।

'पिंजरा मराठी सिनेमा में व्यक्त मानवीय मूल्य'

१. नैतिकता और चरित्र :-

फिल्म का मुख्य पात्र, शाला मास्टर (श्रीराम लागू), अपनी नैतिकता और आदर्शों पर आधारित जीवन जीने का प्रयास करता है। लेकिन परिस्थितियाँ उसे एक ऐसे मोड़ पर लाकर खड़ा कर देती हैं जहाँ उसका चरित्र संदेह के घेरे में आ जाता है। यह दिखाता है कि समाज के बनाए नैतिक मापदंड व्यक्ति के जीवन को कैसे प्रभावित कर सकते हैं।

"कशी नशीबाने थट्टा आज मांडली,
सोन्यावानी निर्मळ होते तिथे एक गाव
तिथे एक गाव

त्याला एका मेनकेची दृष्ट लागली।"

'पिंजरा' फिल्म का यह गीत उस समय और आज भी मराठी संगीत प्रेमियों के बीच बेहद लोकप्रिय है। इसे आशा भोसले ने गाया है और इसका संगीत राम कदम ने दिया है। गीत में मुख्य रूप से नायक के दु:ख और भाग्य द्वारा उसके साथ किए गए खेल की मार्मिक कहानी को व्यक्त करता है। प्राचीन काल मे जहां रंभा, मेनका, उर्वशी आदी अप्सराओ ने ऋषीमुनियों के ध्यान को भंग कर उनको कर्तव्य मार्ग से भटकाया था उसी प्रकार से नैतिकता के और चरित्र का पाठ पढ़ानेवाले अध्यापक को तमाशा नर्तकी चंद्रा (संध्या)रुपी मेनका अपने सौंदर्य के जाल मे फसाकर अध्यापक का चरित्र हनन करती है।

२. प्रेम और त्याग :-

तमाशा नर्तकी चंद्रा (संध्या) का मास्टर के प्रति प्रेम और उसके लिए किया गया त्याग इस फिल्म के भावनात्मक पहलू को गहराई देता है। सच्चे प्रेम में स्वार्थ नहीं होता, बल्कि त्याग की भावना होती है, और यह चंद्रा के चरित्र में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। ' देवदास' की नृत्यांगना चंद्रमुखी भी देवदास से समर्पित प्रेम करती है। इनका प्रेम व्यक्ति से है न कि, उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा और पद से। 'पिंजरा' सिनेमा में नायक की भूमिका चरित्र अभिनेता डॉ. श्रीराम लागू ने बखूबी से निभाई है। अर्थात् इन दोनों पात्रों के माध्यम से उनका प्रेम और त्याग अभिव्यक्त होता है।

३. समाज की संकीर्ण मानसिकता :-

समाज किस तरह नैतिकता और अनैतिकता की परिभाषा तय करता है और किसी व्यक्ति के जीवन को अपने दृष्टिकोण से जज करता है, यह इस फिल्म में प्रमुख रूप से दिखाया गया है। समाज का यह दोहरा रवैया फिल्म में स्पष्ट रूप से उजागर किया गया है।

४. स्वतंत्रता और जिम्मेदारी :-

हर व्यक्ति को स्वतंत्र रूप से जीने का हक है, लेकिन उसके साथ जिम्मेदारी भी आती है। चंद्रा, जो एक तमाशा नर्तकी है, अपनी शर्तों पर जीती है, लेकिन समाज की धारणाओं और अपने निजी जीवन के द्वंद्व में फंस जाती है।

५. पश्चाताप और प्रायश्चित :-

जब मास्टर को अपनी गलती का एहसास होता है, तो वह गहरे पश्चाताप में चला जाता है और एक कठोर निर्णय लेता है। यह दिखाता है कि एक आदर्श नागरिक बनने की कोशिश में इंसान कभी-कभी अपनी निजी खुशियों से दूर हो जाता है। 'पिंजरा' सिनेमा के मास्टरजी आरंभिक कथावस्तु में गांव के सुशिक्षित और संस्कारवान व्यक्ति अर्थात् आदर्श के रूप में चित्रित होते हैं। आजीवन बूरी संगत से दूरी रखनेवाले मास्टर जी शराब और औरत के चक्कर में फंस जाते हैं। गांव के सांस्कृतिक और धार्मिक त्यौहारों के अवसर पर बड़ा मान सम्मान मिलनेवाले मास्टर जी को तमाशा के सभी कलाकारों के लिए जब भोजन परोसा जाता है उस वक्त कुत्ते के बाजू में बिठाना अपमानित सा लगता है। मास्टर जी चाहकर भी चंद्रा के प्रेम को भूला नहीं पाते। सिनेमा के अंतिम पड़ाव पर तमाशा के 'फड' को आग लगती है। इसके लिए

मास्टर जी को गुनहगार ठहराया जाता है। मास्टर जी इस पीड़ादायक जीवन से भागकर पुनः अपने गांव में वापस जाना चाहते हैं। वे अनजान व्यक्ति के रूप में गांव में पहुंचकर देखते हैं कि उनके पुतले का अनावरण का समारोह चल रहा था। लोग आदर्श अध्यापक की असमय मृत्यु पर भावविभोर होकर रो रहे थे। तीन पीढ़ियों को सुसंस्कारित करनेवाले मास्टर जी को गांव खो चुकाने का दर्द लोगों की आंखों से झलक रहा था। अतः लोग मास्टरजी की 'तमाशा की कथा' सुनेंगे तो अपने आदर्श की हत्या सह नहीं पायेंगे इसीलिए मास्टरजी हमेशा के लिए गांव छोड़कर चले जाते हैं।

६. सामाजिक मूल्यों की प्रधानता:-

'पिंजरा' सिनेमा में मास्टर जी एक गांव की पाठशाला में कार्यरत है। वे गांव की सभ्यता और संस्कृति से बंधे हुए हैं। आरंभिक कथा में मास्टर जी प्रतिदिन हनुमान जी के मंदिर में जाकर दर्शन करते है, योग का अभ्यास करते है, और स्कूल में आकर वह अपना पवित्र कार्य पूरा करते हैं। उस वक्त मास्टर जी समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तियों से एक व्यक्ति विशेष बनते है। गांव में जब तमाशा लगने वाला था उस वक्त अशिक्षित किंतु सभ्य, दृष्टा लोग तमाशा का विरोध करते हैं। अर्थात् तमाशा केवल मनोरंजन का माध्यम है वह प्रबोधन का माध्यम नहीं है, यह भावना समाज में रूढ़ हो चुकी थी। अतः समाज के लिए आवश्यक सामाजिक मूल्यों की निर्मिती समूह के द्वारा की गई है यह स्पष्ट होता है।

७. श्रृंगार से अधिक नैतिकता को महत्व :

तमाशा नर्तकी चंद्रा का जब गांव में आगमन होता है तो उसे सबसे पहले वैचारिकता से युक्त समाज का विरोध सहन करना पड़ता है। इसीलिए वह बाजू वाले बंजर जमीन पर अपना खेमा लगती है। वहां पर जब पहली बार वह लावणी प्रस्तुत करती है, तब सहायक विनोदी अभिनेता नीलू फूले कड़क ठंड में बैठे हुए लोगों के लिये कड़क श्रृंगार की लावणी की फरमाइश करते है। उस समय तमाशा नर्तकी के बोल गांव और लोगों की मानसिकता को स्पष्ट करते है -

"हे गांव लई न्यारं,
इथं थंडगार वारं,
याला गरम श्रृंगार सोसेना,
याचा आदर्शाचा तोरा,
यांचा कागद हाय कोरा,
इथं शाहिरी लेखनी पोचेना।"

अर्थात् इस गांव में युवाओं की कमी नहीं, लेकिन वे नैतिकता और आदर्श के परिपाटी पर चलने वाले है। वे शाहिरी और तमाशा जैसे लोककलाओं से दूर रहना पसंद करते हैं । अतः मैं श्रृंगार की लावणी पेश नहीं कर सकती।

निष्कर्ष:

'पिंजरा' सिर्फ एक कहानी नहीं, बल्कि समाज की सोच, उसके नियमों और इंसान के अंदर चल रहे संघर्ष को उजागर करने वाली एक गहरी फिल्म है। यह प्रेम, नैतिकता, त्याग, समाज की सोच और पश्चाताप जैसे महत्वपूर्ण मानवीय मूल्यों को दर्शाती है। 'पिंजरा' प्राणी, पंछी और इन्सान की स्वतंत्रता को छिनकर गुलाम बनाने का प्रतिक है। 'पिंजरा' सिनेमा वर्तमान समय में अध्यापकों के कार्य और उत्तरदायित्व को अधिक स्पष्ट करने में प्रासंगिक है। अखबार और टेलीविजन के समाचारों से अध्यापकों की छात्राओं, सहयोगी अध्यापिका, महिला आदि के साथ दुष्कर्मों की वार्ताएं प्रकाशित होती रहती है। 'पिंजरा' मराठी सिनेमा में मानवीय मूल्यों के महत्व को उजागर करता है।

सिनेमाओं में मानवीय मूल्य आदि का प्रभाव रहना आवश्यक है। 'हम साथ साथ हैं' हिंदी सिनेमा पारिवारिक एकता की आवश्यकता को प्रतिपादित करता है। किंतु कुछ सिनेमाओं को छोड़ देंगे तो वर्तमान सिनेमाओं से व्यवसायिकता का बोध दिखाई देता है। १०० कोटि से ५०० कोटि बजट की फिल्म तैयार हो रही है। किंतु इन सिनेमाओं में नंग धड़ंग, बीभत्सता व्याप्त होकर केवल पैसा कमाना इतना ही उद्देश्य दिखाई देता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

१. 'सिनेमा के पर्दे के पीछे' - लेखक जयप्रकाश चौकसे, प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण २०११.

२. 'हिंदी सिनेमा के चार अध्याय' - लेखक डॉ. टी. शशिधरन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण २०१४

३. 'सिनेमा की सोच' - लेखक अजय ब्रह्मात्मज, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण २००६

४. 'भारतीय कला रूप'- लेखक हेमंत शेष (संपादक), नैशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण २००१.

५. 'सिनेमा के सौ बरस' - लेखक शिल्पायन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण २००६.

६. 'भारतीय सिनेमा में भारतीय संस्कृती' - संपादिका डॉ. ऊषा कुमारी के.पी. अमन प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण २०१८.

संपर्क क्रमांक:- ९०९६३३७०८९. ईमेल आयडी- joshimadg@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 March 2025 Page No. : 16-20
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

SOURCES OF BIRDS BIODIVERSITY: HARSH-JEEN AREA COMPARATIVE ANALYSIS OF LOCAL SPECIES AND GLOBAL SPECIES

Abhishek Rollan, Scholar, Department of zoology,
Dr.A.K.Siroya, Professor, Department of zoology,
S.P.C. Govt.College, Ajmer (Rajasthan)
Affiliated with-M.D.S.University Ajmer (Rajsthan)

Abstract:
The biodiversity of birds in the *HARSH* and *JEEN* areas of Rajsthan's Aravalli range is examined in this research, with particular attention paid to species richness, habitat preferences, and the impact of environmental and human factors. 120 birds' species, including endemic, migratory, and globally threatened species, are identified by the research by combining field surveys, statistical analysis, and international comparison studies. There are notable differences in species richness between the two regions. The results show how important semi-arid environment are for maintain birds variety and emphasize the necessity of focused conservation efforts. Furthermore, this study highlights how human activity, habitat fragmentation, and climate change affect bird's populations, laying the ground work for conservation efforts that are both locally and internationally informed. This study advances our knowledge of biodiversity patterns and ecological processes in semi-arid habitats by recording bird's diversity at both local and global scales.

Keywords: Birds biodiversity, *HARSH* Region, *JEEN* Region, Aravalli, semi-arid ecosystems, avian conservation, habitat fragmentation, migratory species, climate change impact.

Introduction:
Bird biodiversity research offers important on species interactions, ecological health, and conservation priorities. Birds act as early warning system for environmental changes and bioindicators, reflecting the condition of their habitats. The Aravalli mountain range in Rajasthan contains the *HARSH* and *JEEN* areas, which have distinct biological niches with abundant vegetation, semi-arid environments, and varied degrees of human pressure. Even with their ecological importance, little is known about the bird variety in these areas. One of the world's oldest mountain systems, the Aravalli range, is home to a variety of bird species due to its varied habitats, which include grasslands and dry deciduous woods. For both permanent and migratory birds, the Harsh and Jeen areas in particular serve as vital biological zones. Rapid agricultural growth, urbanization, and climate change, however, have made these environments more and more vulnerable. This study fills the gap by comparing the local bird species in the *HARSH-JEEN* region with trends of avian biodiversity throughout the world. By employing a comprehensive strategy that blends field surveys with comparative analysis, this study aims to clarify the intricate interactions between regional and global factors influencing avian groups. For the purpose of creating conservation strategies

that are successful and in line with global biodiversity goals, it is essential to comprehend the biodiversity of birds in particular areas such as these.

Literature review:

1) **Global Perspective on Bird Biodiversity**:
   Numerous studies have demonstrated the importance of bird biodiversity in maintaining the resilience and functionality of ecosystems. The significance of bird biodiversity in preserving ecosystem resilience and functionality has been underlined in earlier research. The relationship between habitat changes and birds, pointing out that habitat destruction has resulted in notable drops in bird numbers *(Fuller,* 2012*).*
   Urbanization is a major contributor to biodiversity loss, which has consequences for The health of ecosystem(*McKinney*, 2002).
   Bird species are sensitive to habitat changes; they examined the effects of habitat fragmentation and deforestation on bird diversity worldwide.*(Castaño-Villa et al.,* 2019*).*
   The breeding, resting, and feeding habitats of migratory species are frequently destroyed or changed, making them especially sensitive to changes in land use and climate*(Runge et al.,* 2014*).*
2) **Environmental Factors Impacting the Diversity of Birds :**
   Environmental factors have a major influence on the diversity of bird species. In his Ground breaking work, Macarthur cites habitat complexity and resource availability as important factors that determine avian diversity*(Macarthur,* 1964*).*
   Additional studies back this up, showing that regions with more diverse habitats typically have higher species richness*(Hortal et al.,* 2009*).*
   Additionally, local bird populations may be impacted by habitat changes brought about by human activities like urbanization and agriculture(*Berges* et al., 2010).
3) **Regional studies and Gaps:**
   Despite being acknowledged as an ecologically vital location, the Aravalli range has not gotten much attention in studies of bird biodiversity. Recent studies conducted in nearby locations, such as the Sariska Tiger Reserve and Mount Abu Wildlife Sanctuary, have highlighted migrating warblers and the Indian Peafowl, offering some insight into the variety of birds*(Raman Kumar,* 2006*).*
   Still, there is substantial lack of targeted study on the HARSH- *JEEN* sub regions these regions may have species assemblages different from those found in the larger Aravalli range because of their distinctive semi-arid habitats and seasonal wetlands. Our knowledge of how local environment stresses and global climate change specifically impact bird populations in this area is limited by the dearth of thorough, region-specific research. The significance of habitat variety and the negative impacts of human activity are highlighted by global assessments that show important trends and risks to bird biodiversity. Comprehensive local research is essential to the development of successful conservation measures in the *HARSH-JEEN* region. Identifying species, comprehending habitat needs, and evaluating risks should be the main goals of these. Preserving the region's bird variety will be made easier by combining local data with global knowledge.

Objective: This study aims to:

1. Document the bird species richness and diversity in *HARSH* and *JEEN* regions, addressing a critical gap in understanding avian biodiversity within semi-arid ecosystem. This research specifically focuses on underexplored region within the

Aravalli range, providing baseline data essential for conservation planning and contributing to global biodiversity knowledge.

2. Analyze the ecological roles of the identified species in semi-arid ecosystems.
3. Compare the findings with global avian biodiversity patterns.
4. Provide actionable recommendations for conservation strategies.

Methodology:

Study area: The Aravalli range's *HARSH* and *JEEN* region are the study's primary focus. These areas are distinguished by anthropogenic landscapes, dry deciduous woods, and semi-arid temperatures with grasslands scattered throughout. To document seasonal changes in bird's population, field surveys were carried out over a 12- month period.

Data Collection:

Field Investigations: conducted throughout the pre-monsoon and post-monsoon seasons during a 12-month period. Birds species are documented using transect and point techniques. GPS mapping to document sightings' precise locations.

Secondary Information: reviews of the literature and information from ornithological databases (e.g. Birdlife international, eBird).

Environment Factors: Documentation of habitat types, plant cover, water availability, and proximity to populated areas. IMD records are the source of climate data (temperature, precipitation).

Statistical Analysis: Shannon-Weiner and Simpson's diversity indices are used to create species richness indexes. Using canonical correspondence analysis (CCA), species distributions and environmental variables are correlated. Comparative Analysis: We used secondary data from sources such as Bird Life International and the IUCN Red List to examine changes in bird biodiversity worldwide. In the *HARSH-JEEN* area and other semi-arid ecosystems throughout the world, species richness and conservation status were compared.

Results:

- Documentation of Species: A total of 120 bird species have been identified, Comprising 8 globally endangered species, 5 migratory species, and 10 endemic Species.

Checklist of bird *HARSH* and *JEEN* area:

Common Name	Scientific Name	Conservation Status	Residential Status
1 Indian Peafowl	*Pavo cristatus*	*Least concern*	Endemic
2 Indian Courser	*Cursorius coromandelicus*	*Abundant*	Endemic
3 Painted Sandgrouse	*Pterocles* indicus	*Abundant*	Endemic
4 Red-wattled Lapwing	*Vanellus indicus*	*Not Endangered*	Endemic
5 Jungle Babbler	*Turdoides striata*	*Abundant*	Endemic
6 Indian Robin	*Saxicoloides fulicatus*	*Abundant*	Endemic
7 Ashy Prinia	*Prinia socialis*	*Not Threatened*	Endemic
8 Shikra	*Accipiter badius*	*Abundant*	Endemic
9 White throated Kingfisher	*Halcyon smyrnensis*	*Not Threatened*	Endemic
10 Greater Coucal	*Centropus sinensis*	*Abundant*	Endemic
11 Steppe Eagle	*Aquila nipalensis*	Endangered	Global
12 Yellow-eyed Pigeon	*Columba eversmanni*	Vulnerable	Global
13 Great Knot	*Calidris tenuirostris*	Endangered	Global
14 Indian Vulture	*Gyps indicus*	Critically Endangered	Global
15 Egyptian Vulture	*Neophron percnopterus*	Endangered	Global
16 Red-headed Vulture	*Sarcogyps calvus*	Critically Endangered	Global
17 Black-necked Stork	*Ephippiorhynchus asiaticus*	Near Threatened	Global
18 Sociable Lapwing	*Vanellus gregarius*	Critically Endangered	Global
19 Rosy Starling	*Pastor roseus*	*Abundant*	Migratory
20 Garganey	*Spatula querquedula*	*Abundant*	Migratory
21 Sykes's warbler	*Iduna rama*	*Not Threatened*	Migratory

22 Common Hawk-cuckoo	*Hierococcyx varius*	*Abundant*	Migratory
23 Wood Sandpiper	*Tringa glareola*	*Not Threatened*	Migratory

Habitat Preferences: Dry deciduous woods and grasslands have the highest species richness. For migratory animals, agricultural areas and bodies of water were important habitats.
Environmental and Anthropogenic Impacts: Urbanization and habitat fragmentation have been recognized as the main risks. Migration patterns have been found to be influenced by climate fluctuation.
Comparative Analysis: The *Harsh-Jeen* region's species richness is consistent with global trends seen in semi-arid habitats.

Discussion:

Many bird species, some of which are internationally vulnerable, depend on the *Harsh-Jeen* area as a vital habitat. Discrepancies in habitat quality and human pressures are the causes of the observed species richness discrepancies between the two regions. These kinds of semi-arid habitats are important to the biodiversity of birds worldwide, providing endemic and migratory species with special niches. However, conservation measures must be made immediately due to the effects of climate change and human activity

List of references cited:

1. Berges, S. A., Schulte Moore, L. A., Isenhart, T. M., & Schultz, R. C. (2010). Bird species diversity in riparian buffers, row crop fields, and grazed pastures within agriculturally dominated watersheds. *Agroforestry Systems*, *79*(1), 97–110. https://doi.org/10.1007/s10457-009-9270-6
2. Castaño-Villa, G. J., Estevez, J. V., Guevara, G., Bohada-Murillo, M., & Fontúrbel, F. E. (2019). Differential effects of forestry plantations on bird diversity: A global assessment. *Forest Ecology and Management*, *440*, 202–207. https://doi.org/10.1016/j.foreco.2019.03.025
3. Fuller, R. J. (Ed.). (2012). *Birds and habitat: Relationships in changing landscapes*. Cambridge University Press.
4. Hortal, J., Triantis, K. A., Meiri, S., Thébault, E., & Sfenthourakis, S. (2009). Island Species Richness Increases with Habitat Diversity. *The American Naturalist*, *174*(6), E205–E217. https://doi.org/10.1086/645085
5. MacArthur, R. H. (1964). Environmental Factors Affecting Bird Species Diversity. *The American Naturalist*, *98*(903), 387–397. https://doi.org/10.1086/282334
6. McKINNEY, M. L. (2002). Urbanization, Biodiversity, and Conservation. *BioScience*,*52*(10),883.https://doi.org/10.1641/0006-3568(2002)052[0883:UBAC]2.0.CO;2
7. Raman Kumar, G. S., & Ashok Verma. (2006). *annotated checklist of the birds of Sariska Tiger Reserve, Rajasthan, India: Vol. Vol. 2*.
8. Runge, C. A., Martin, T. G., Possingham, H. P., Willis, S. G., & Fuller, R. A. (2014). Conserving mobile species. *Frontiers in Ecology and the Environment*, *12*(7), 395–402. https://doi.org/10.1890/130237

Email ID- abhishekrolla143@gmail.com Dr.ashoksiroya@yahoo.com

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 March 2025 Page No. : 21-26
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

जगद्गुरु स्वामी रामभद्राचार्य जी के अरुंधती महाकाव्य में सामाजिक भावना

मा. कुलपति प्रो. शिशिर कुमार पांडेय, शोध निर्देशक,
शीला देवी, शोध छात्रा हिंदी विभाग,
जगद्गुरु रामभद्राचार्य दिव्यांग राज्य विश्वविद्यालय चित्रकूट उत्तर प्रदेश

सार-

जगद्गुरु स्वामी रामभद्राचार्य जी आधुनिक भारत के एक प्रमुख संत, विद्वान और साहित्यकार हैं। उनका जीवन और कार्य समाज, संस्कृति, और धर्म के गहन चिंतन का प्रतिबिंब भी है। विशेष रूप से उनका अरूंधती महाकाव्य समकालीन हिंदी साहित्य का एक महत्वपूर्ण महाकाव्य है। जिसकी रचनाकृत महाप्राज्ञा माँ सरस्वती के वरदपुत्र अनंतानंत श्रीसमलंकृत परमाचार्य चरण ने एक अद्भुत साहित्यिक महाकाव्य प्रस्तुत किया है।

अरुंधती महाकाव्य के प्रणेता, सारस्वत ,प्रतिभावान ,पौराणिक आख्यानों के मर्मज्ञ और वैदिक साहित्य के महाप्राण श्रीतुलसीपीठाधीश्वर जगद्गुरु स्वामी रामभद्राचार्य जी हैं। अरुंधती महाकाव्य हिंदी साहित्य का एक अनुपम ग्रंथ है। इस महाकाव्य में भारतीय ,संस्कृति , सामाजिकता, मानवता ,राष्ट्रीयता, नैतिकता का भी उल्लेख किया गया है। अरुंधती महाकाव्य एक नूतन वाङ्मयी प्रयाग है। अरुंधती महाकाव्य न केवल साहित्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि इसमें निहित सामाजिक भावनाएँ भारतीय समाज के लिए अत्यंत प्रेरणादायक है। इस महाकाव्य में उन्होंने भारतीय नारी की महिमा एवं सामाजिक सुधारों की आवश्यकता के संदेशों को बड़े ही प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है। जगद्गुरु स्वामी रामभद्राचार्य जी का जन्म 14 जनवरी सन् 1950 को उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिले में हुआ। जन्म के दो माह के बाद ही वे प्रज्ञाचक्षु हो गए लेकिन उन्होंने इसे अपनी प्रगति में बाधा नहीं बनने दिया। उन्होंने संस्कृत, हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं का गहन ज्ञान अर्जित किया। उनकी स्मरण शक्ति इतनी प्रबल है कि, वह बिना ब्रेल लिपि के ही शास्त्रों का अध्ययन और अध्यापन करते हैं। उन्होंने चारो वेद, 18 पुराण, उपनिषद और रामचरित मानस जैसे ग्रंथों को कंठस्थ कर लिया है। जगद्गुरु स्वामी रामभद्राचार्य जी ने समाज के उपेक्षित

और वंचित वर्गों के उत्थान के लिए महत्वपूर्ण कार्य किए हैं। उन्होंने चित्रकूट में तुलसीपीठ (कांच मंदिर) की स्थापना की जहाँ वेद, दर्शन और साहित्य का अध्ययन अध्यापन होता है। इसके अलावा उन्होंने जगद्गुरु रामभद्राचार्य दिव्यांग राज्य विश्वविद्यालय की स्थापना की जो दिव्याँग विद्यार्थियों के लिए एक विशेष विश्वविद्यालय हैं। उनके इस महान कार्य से हजारों लोगों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाए हैं। उनकी साहित्यिक कृतियाँ मे रराघगीतगुंजन, काकाविदुर, माँ शबरी, अवध के अँजोरिया, अष्टावक्र महाकाव्य और अरुंधती महाकाव्य प्रमुख हैं। उनकी रचनाएं आध्यात्मिकता, भक्ति और सामाजिकता के तत्वों से युक्त हैं। उन्होंने अपनी कृतियों के माध्यम से समाज के उपेक्षित वर्गों के उत्थान और नारी सशक्तीकरण के संदेशों को प्रसारित किया है।

अरुंधती महाकाव्य का कथानक और संरचना

अरुंधती महाकाव्य जगद्गुरु स्वामी रामभद्राचार्य जी की साहित्यिक प्रतिभा का उत्कृष्ट उदाहरण है। इस महाकाव्य में उन्होंने महर्षि वशिष्ठ की धर्मपत्नी अरुंधती के चरित्र को केंद्र में रखते हुए एक विस्तृत कथानक का निर्माण किया है। अरुंधती महाकाव्य में भारतीय पौराणिक कथा के माध्यम से नारी सशक्तिकरण और सामाजिक सुधार के संदेशों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है। महाकाव्य का कथानक अरुंधती के जीवन की विभिन्न घटनाओं के माध्यम से आगे बढ़ता है। उनका जन्म, परिवार, विवाह, पति वशिष्ठ के साथ उनका समर्पण समाज में व्याप्त कुरीतियों के विरुद्ध उनका संघर्ष और समाज सुधार के लिए उनका प्रयास कथा के मुख्य स्तंभ है। अरुंधति का चरित्र नारी सशक्तीकरण का प्रतीक है, जो न केवल अपने परिवार के लिए समर्पित है बल्कि समाज के उत्थान में भी सक्रिय भूमिका निभाती है। उनका जीवन संघर्षों से भरा है लेकिन वह धैर्य, साहस और समर्पण के साथ हर चुनौतियों का सामना करती है। अरुंधती महाकाव्य में समाज के प्रति भावनाओं को स्पष्ट रूप से परिलक्षित किया गया है, कि जगद्गुरु स्वामी रामभद्राचार्य जी ने विभिन्न प्रसंगों के माध्यम से समाज को जागरूकता का संदेश दिया है। अरुंधति का समाज के प्रति समर्पण प्रेम का प्रतीक है। उन्होंने समाज के कल्याण को सामाजिक भाव से जोड़ा है। जिसमें समाज में देश भक्ति समाज में एकता की भावना जागृत किया है, उनकी शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक, न्याय को एक दिशा प्रदान करती है। महाकाव्य में यह संदेश दिया गया है कि एक सशक्त समाज के निर्माण में प्रत्येक नागरिक की भूमिका महत्वपूर्ण है। महाकाव्य में सामाजिक सुधार और नारी सशक्तिकरण महाकाव्य में सामाजिक भावनाओं का व्यापक प्रस्तुतीकरण है। जगद्गुरु स्वामी रामभद्राचार्य जी ने समाज में व्याप्त कुरीतियों जैसे जाति प्रथा,लिंग भेद और अन्य के विरुद्ध अपनी आवाज उठाई है और नारी शक्ति का चित्रण अरूंधती का चित्रण एक आदर्श नारी का प्रतीक है, बल्कि समाज के कल्याण के लिए भी सक्रिय हैं। यह नारी सशक्तिकरण के संदेश को प्रोत्साहित करती है। और समाज में महिलाओं की भूमिका को भी सम्मानित करती है। अरुंधति अन्य महिलाओं को शिक्षा, आत्मनिर्भरता और स्वाभिमान के मार्ग पर चलने के लिए

प्रेरित करती है। सामाजिक समानता महाकाव्य में सभी वर्गों और समुदायों के प्रति सामान्य और सम्मान का संदेश महाकाव्य में वर्णित है, की जैसे अरुंधती ने समाज के ऊपर उपेक्षित वर्गों के उत्थान के लिए कार्य किया है। शिक्षा का महत्त्व जगद्गुरु स्वामी रामभद्राचार्य जी ने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का माध्यम माना है। महाकाव्य में शिक्षा के महत्त्व पर विशेष ज़ोर दिया गया है। अरुंधती समाज में शिक्षा का प्रचार प्रसार करने के लिए सक्रिय भूमिका निभाती है, उन्होंने समाज में पारदर्शिता, नैतिकता और ईमानदारी के मूल्यों को प्रोत्साहित किया सामाजिक जागरूकता संवेदनशीलता को बढ़ावा दिया है। अरुंधती महाकाव्य की समकालीन प्रासंगिकता आज के समय में जब समाज विभिन्न चुनौतियों का सामना कर रहा है ऐसे में इस महाकाव्य में निहित संदेश विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

नारी सशक्तिकरण

महाकाव्य में नारी सशक्तीकरण का जो संदेश है वह आज भी प्रासंगिक है। महिलाओं के अधिकारों और समानता की लड़ाई में यह महाकाव्य प्रेरणा स्रोत है। अरुंधति का चरित्र नारियों को अपने अधिकार के लिए खड़े होने और समाज में सकारात्मक योगदान देने के लिए प्रेरित करता है। यह संदेश महिलाओं को आत्मनिर्भरता और स्वाभिमान की दिशा में अग्रसर करता है। इस संबंध में जगद्गुरु स्वामी रामभद्राचार्य जी महाराज ने इस प्रकार कहा है की

तुम स्वयं शक्ति होकर अवला कहलाती
क्यों हो अपना अद्भुत ऐश्वर्य छिपाती।
होकर कठोर दिखती तुम क्यों हो कोमल,
निश्चल होकर भी लक्षित क्यों हो चंचल।

शक्ति सर्ग पृ•120

अर्थात्: जगद्गुरु जी स्त्रियों को सशक्त बनाने के उद्देश्य से उपरोक्त पंक्तियों में कहते हैं कि स्त्रियां संकोची स्वभाव होने के कारण अपना वैभव और शक्ति को पहचान नहीं पाती है। जिसके कारण उन्हें अवला कहकर संबोधित किया जाता है। जबकि वह स्वयं ऊर्जा, ताकत का अकूत भंडार है। इसके आगे स्त्रियों के उनके विषय में याद दिलाते हुए कहते हैं कि आप लोग मजबूती और निश्चलता अथवा अडिगता का प्रतीक हो। किंतु स्वयं की शक्ति न पहचान पाने के कारण कोमल और चंचलता को धारण किए हुए हो जिसके कारण इस संसार में शोषण का शिकार सदियों से होती चली आ रही है।

बाहर से तेरा रूप विलासित दिखता
वस्तुतः योग योगी भी तुम से सीखता।
भारत में तुम हो शक्ति स्वरूप प्रतिष्ठा
है अनिर्वाच्य अद्वैत तुम्हारी निष्ठा।

शक्ति सर्ग पृ•121

इन पंक्तियों में जगद्गुरु जी ने स्त्रियों को उनकी वास्तविकता से अवगत कराते हुए कहते हैं कि आपका वाह्य स्वरूप भले ही सजावट अपूर्ण परिलक्षित हो रहा है किंतु आंतरिक रूप से आपसे योगियों को भी प्रेरणा मिलती है। अपने भारतवर्ष में स्त्री को शक्ति स्वरूपा बताकर उसकी प्रतिष्ठा में अभिवृद्धि की गई है और जिसकी एकात्मकता और निष्ठा अकथनीय है।

तुम एक चार रूपों से जग में आकर
माँ, बहन, सूता, पत्नी का धर्म निभाकर।
तुम दीपसिखा सम दिवारैन जल जल कर
जग में भरती आनंद स्वयं ढल-ढल कर।

शक्ति सर्ग पृ•121

उपरोक्त पंक्तियों में स्त्री स्वरूप की वास्तविक व्याख्या प्रस्तुत की गई है जिसके अंतर्गत बताया गया है की एक स्त्री समय और आवश्यकता के अनुसार अपने को प्रमाणित करती है। उसके प्रमुख चार स्वरूप है कभी वह माँ बनकर पुरुषों का पालन करती है , तो कभी बहन और पुत्री बनकर उनके मन में धैर्य और साहस का संचार करती है। इसी प्रकार भार्या बनकर वंश वृद्धि में सहायक होती है। जगद्गुरु जी स्त्रियों के महत्त्व को परिभाषित करते हुए कहते हैं कि, दीपक ज्योति के भांति स्वयं को जलाकर जग को प्रकाशित करने का कार्य निरंतर रूप से स्त्रियां ही करती है। तथा खुद को दिन रात गलाकर विश्व में उल्लास का संचार कर स्त्री ही है।

सामाजिक सुधार

जाति, लिंग, भेद और सामाजिक असमानता जैसी कुरीतियां आज भी समाज में मौजूद हैं। महाकाव्य में इन कुरीतियों के विरुद्ध जो संदेश दिया गया है। वह समाज सुधार के लिए प्रेरित करता है। यह हमें सामाजिक समानता, न्याय और मानवता के मूल्यों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करता है। महाकाव्य में हमें समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने के लिए सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया गया है।

जिसमें मानवता सत्कृत हो,
दानवता हो नित अभिभूत;
हो देवत्व तटस्थ जहाँ मैं,
होऊं बहुश: आविर्भूत ।
जिस पावन धरणी प्राची में,
समुदित हो रवि भारतवर्ष;
याज्ञिक धूमकेतू से पावित
सत्य सनातन धर्मोत्कर्ष। **श्सृष्टि सर्ग पृ•7**

इसके अंतर्गत जगद्गुरु जी ने कहा है कि, भारत वर्ष का समाज मानवता से ही अभिप्रेरित है तथा जिसमें देवत्व का संचार होता है। उन्होंने भारतवर्ष को सूर्य के रूप में प्रस्तुत किया है तथा उनके प्रकाश को सामाजिक समरसता के रूप में प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है। भारतीय समाज में सत्य और सनातन का उत्कर्ष पूर्णरूपेण दिखाई देता है।

गंगा-यमुन तरंग समर्चित,
जहां आर्तिहर आर्यावर्तः
जिसके सेवन से मिट जाए
प्राणिमात्र का पुनरावर्त।
जहाँ भारती का वीणा से
राम नाम का हो झंकार;
जहां रमू मैं रोम रोम में,
बन दशरथ का राजकुमार।

सृष्टि सर्ग पृ•8

इन पंक्तियों के माध्यम से जगदगुरु जी ने भारत के सामाजिक परिवेश को उद्घाटित करते हुए उनके भौगोलिक संदर्भ को दिखाया है।जहाँ पर गंगा, यमुना का पावन संगम है। वहीं दूसरी ओर अयोध्या, मथुरा जैसी धार्मिक स्थल भी हैं, जिनसे भारतीय समाज में धर्म, संस्कृति का प्रादुर्भाव और विस्तार होता है। भारतीय समाज में मर्यादा और समन्वय की भावना के स्थापना हेतु ही भगवान श्री राम जी ने अयोध्या नरेश दशरथ जी के यहाँ अवतरित हुए और संपूर्ण विश्व में मानवता को स्थापित करने का भी कार्य किया।

निष्कर्ष

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि अरुंधती महाकाव्य सुधार हेतु एक महत्वपूर्ण रचना है। यह महाकाव्य न केवल एक साहित्यिक कृति है, बल्कि समाज को दिशा दिखाने वाला एक मार्गदर्शक भी है। इसमें निहित सामाजिक भावनाएं आज भी प्रासंगिक है और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने की अद्भुत कार्य से युक्त है। जगदगुरु स्वामी रामभद्राचार्य जी के साहित्यिक योगदान और उनके विचारों का समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा है। जो आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा स्रोत है। उनका जीवन और कार्य हमें सिखाता है कि शारीरिक चुनौतियों भी मानव की इच्छा, शक्ति और समाज सेवा के संकल्प को नहीं रोक सकती। उन्होंने अपने जीवन से यह सिद्ध किया है की सच्ची सेवा और समर्पण से हम समाज में सकारात्मक परिवर्तन ला सकते हैं। महाकाव्य अरुंधती में संदेश हमें सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध खड़े होने से नारी सम्मान और सशक्तिकरण को बढ़ावा देने और समाज सांस्कृतिक पर्व को बनाए रखने के लिए प्रेरित करता है। यह महाकाव्य साहित्य समाज और राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1•जगद्गुरु स्वामी, रामभद्राचार्य, अरुंधती महाकाव्य सन् 2010 तुलसीपीठ प्रकाशन चित्रकूट उत्तर प्रदेश

2 •मिश्रा, रामनारायण ,स्वामी रामभद्राचार्य, जीवन और साहित्य सन् 2012, गंगानाथ झा शोध संस्थान वाराणसी उत्तर प्रदेश

3 • दास, महेश्वर भारतीय महाकाव्यों में सामाजिक संदेश सन् 2009 साहित्य परिषद भोपाल मध्य प्रदेश

4 • पांडेय, विनोद कुमार, स्वामी रामभद्राचार्य एक अध्ययन सन् 2014 महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ वाराणसी उत्तर प्रदेश

5• गुप्ता, मनीषा, स्वामी रामभद्राचार्य के साहित्य का सामाजिक विश्लेषण सन् 2013 साहित्य प्रकाशन आगरा उत्तर प्रदेश

6• सिंह, अभिषेक , स्वामी रामभद्राचार्य जी के काव्य में सामाजिक चेतना सन् 2016 ज्ञानदीप प्रकाशन पटना बिहार।

7• मिश्र, डॉ सभापति, अरूंधती महाकाव्य परिशीलन सन् 2014 श्रीतुलसीपीठ सेवान्यास, अमोदवन चित्रकूट, सतना मध्यप्रदेश।

Email Id.- shilucktd@gmail.com 9935359040

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 March 2025 Page No. : 27-31
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

सूचना प्रौद्योगिकी का ग्रामीण समाज के सशक्तिकरण में योगदान

सरनीश कुमार, शोध छात्र,
डॉ राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या
डॉ माधुरी वर्मा, प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग,
जवाहरलाल नेहरू मेमोरियल पीजी कॉलेज, बाराबंकी

शोध संक्षेप

गांवों को भारत की आत्मा कहा जाता है, और यदि गांवों के लोग जागरुक नहीं होंगे तो देश का विकास कभी भी संभव नहीं हो सकता। वर्तमान में किसी भी पहलू से गांव शहरो से पीछे नहीं है इसका सबसे बड़ा कारण संचार माध्यम है, संचार माध्यमों ने जहां शहरों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान किया है, वहीं ग्रामीण समाज को विकसित करने और लोगों में जागरूकता लाने का कार्य किया। गांव में सुविधाओं को पहुंचाने के लिए सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की एक महत्वपूर्ण उपयोगी उपकरण सिद्ध हो रहा है। जहां गांव के लोग सुविधाओं से वंचित रहते हैं,वहीं सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के माध्यम से एक नया आयाम और दिशा गांवों को प्रदान हुई है। सरकार द्वारा ग्रामीण क्षेत्र के विकास हेतु शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सशक्तिकरण, पुलिस प्रशासन आदि को संचार माध्यम से जोड़कर ग्रामीण तक सुविधा पहुंचाने का कार्य हो रहा है, वही कृषकों के लिए नवीन कृषि कार्यक्रमों के माध्यम से ग्रामीण किसानों को लाभ पहुंचाने में सूचना प्रौद्योगिकी की महत्वपूर्ण योगदान कर रही है।वर्तमान समय में सरकार द्वारा ग्रामीण समाज के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क, बिजली, जल संरक्षण, कृषि विकास, पर्यावरण संरक्षण इत्यादि की सूचनाओं को संचार माध्यमों से प्रदान कर भारत को सशक्त और विकसित देशों में जोड़ने का प्रयास जारी है।

कीवर्ड- सूचना, संचार,प्रौद्योगिकी, ग्रामीण, विकास,महिला सशक्तिकरण, जागरूकता

वर्तमान समय में विश्व में भारत को जो एक नवीन पहचान मिली है वह सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी में हो रही उन्नति से ही है। अंग्रेजी वर्णमाला के पांचवें अक्षर 'ई' ने समस्त सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्र पर गहरा प्रभाव डाला हुआ है।ई का अर्थ होता है इलेक्ट्रॉनिक। ईमेल से शुरू होकर वर्तमान समय में बैंक बाजार शिक्षा व्यापार परिवहन समस्त क्षेत्र को इसने अपने प्रभाव में ले लिया है। कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जो इसके प्रभाव से मुक्त

हो। नगरीय समाज हो या ग्रामीण समाज सभी क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी की स्पष्ट छाप दिखाई दे रही है।

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी ने इंटरनेट आधारित भरोसेमंद जानकारी आम जनता तक पहुंचाकर, उनके सशक्तिकरण में योगदान किया है। विकास सहायक संचार समाज के जीवन स्तर में सुधार शिक्षा के प्रचार प्रसार समाज ज्ञान जिज्ञासा एवं इच्छा इत्यादि को निरंतर और व्यापकता और प्रदान करने में योगदान कर रहा है इसके माध्यम से गरीबी उन्मूलन में सहायता मिली है गरीबी उन्मूलन हेतु आवश्यक है कि व्यक्ति जागरूक होऔर विभिन्न क्रिया कल्पना में उनकी सहभागिता सुनिश्चित हो आम जन में जागरूकता लाने एवं समाज को विकसित बनाने में सूचना एवं संचार मध्य महत्वपूर्ण रूप से जुड़ा है।

मानव के अस्तित्व की निरंतरता को बनाए रखने के लिए संचार अथवा संप्रेषण एक प्रभावी माध्यम है, जो किसी भी समूह या समाज के निर्माण हेतु एक आवश्यक शर्त है। संचार कुछ निश्चित संकेतों और चित्रों के माध्यम से दो या दो से अधिक सामाजिक इकाइयों के बीच विचार सूचना ज्ञान अभिवृद्धि और भावनाओं के विनिमय की एक प्रक्रिया है और इस प्रक्रिया के द्वारा एक दूसरे को हम समझते हैं एवं दूसरों के द्वारा हमें समझने का प्रयास किया जाता है।संचार के माध्यम से व्यक्ति सूचनाओं को दूसरों तक पहुंचाने का ही काम नहीं करता अपितु सूचनाओं को ग्रहण भी करता है। संचार को समूह निर्माण की आवश्यक दशा माना जाता है, बिना संचार के समूह के अस्तित्व की कल्पना भी नहीं की जा सकती संचार किसी भी सामाजिक व्यवस्था में सांस्कृतिक तत्वों की प्रकृति पर आधारित होता है। संचार के माध्यम से किसी वस्तु के माध्यम से सामान और सहभागी ज्ञान की प्राप्ति के प्रतीक के लिए प्राकृतिक उपयोग पर निर्भर होता है और इस प्रकार कहा जा सकता है कि मानव जीवन को अर्थपूर्ण और उद्देश्य पूर्ण बनाने में संचार महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है विज्ञान एवं तकनीकी की आधुनिकतम प्रकृति ने जहां विकास के नए दरवाजे खोले हैं वहीं भारत जैसे विकासशील देश में अनेक रीति रिवाज परंपरा अंधविश्वास पाखंड जो कि बड़े पैमाने पर फैले हुए हैं। ऐसे में विज्ञान और प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने के लिए सामाजिक चेतना का विकास करने में संचार की विभिन्न प्रौद्योगिकी का प्रयोग किया जा रहा है।

ग्रामीण समाज में संचार माध्यमों की आवश्यकता

भारत जैसे विकासशील देश में जहां की कुल जनसंख्या का 74% गांव में और कृषि आधारित अर्थव्यवस्था पर निर्भर है। जहां अनेक भाषाओं को बोलने वाले लोग साथ-साथ में निवास करते हैं । सूचना एवं संचार माध्यम को लोगों तक शिक्षा स्वास्थ्य एवं विभिन्न सरकारी योजनाओं के बारे में जानकारी प्रदान करने का सशक्त माध्यम है। सूचना संचार प्रौद्योगिकी में विकास को गति देने की अभूतपूर्व क्षमता है परंतु व्यापक शहरी झुकाव के कारण ग्रामीण समाज और किसानों को सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने से वंचित कर दिया है। 20वीं सदी में विज्ञान चिकित्सा आदि के क्षेत्र में बहुत ज्यादा प्रकृति हुई है। परंतु 21वीं सदी के प्रथम दशक में विश्व व्यापी गरीबी अन्य की कमी को पोषण बीमारियों एवं पर्यावरण के

भयंकर विनाश के कारण टिकाऊ विकास का लक्ष्य पहुंच से बाहर हो गया है। कई विकासशील देशों में कृषि की स्थिति अभी सही नहीं है परंतु वह अर्थव्यवस्था की धूरी है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि राष्ट्रहित आधुनिकीकरण आवश्यक है जिससे भूख और गरीबों को कम किया जा सके। इसी पर 21वीं सदी में हमारी सफलता का संपूर्ण ताना-बाना रहेगा।

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी से विकास की प्रक्रिया को गति मिलती है परंतु भारत में डिजिटल विभाजन के कारण इसका लाभ शहरी क्षेत्रों तक सीमित है ग्रामीण क्षेत्रों में अभी सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी संबंधित बदलाव नहीं हो पाए हैं ग्रामीण क्षेत्र अभी भी वंचित है। इस प्रकार सूचना के एकत्रीकरण और वितरण में एक विस्तृत दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। ग्रामीण समाज के लोगों को सुनना और उन्हें सूचना देना अत्यंत आवश्यक है वह स्थानीय समस्याओं को अच्छे से जानते हैं। उनके पारस्परिक सहयोग से संपूर्ण देश एवं समाज का विकास किया जा सकता है उनके पारंपरिक ज्ञान में एक नया वैज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न किया जा सकता है। अतः उन्हें विभिन्न प्रकार की वेबसाइटों रेडियो टेलीविजन के माध्यम से उन्हें जानकारियां प्रदान की जा सकती हैं। कृषि क्षेत्र में खतरनाक कीटनाशक के प्रयोग से सावधान किया जा सकता है। भारत में सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में काफी प्रगतिकी है और अब समय आ गया है कि सूचना प्रौद्योगिकी भारत के कोने-कोने तक पहुंचे। नई सोच और संचार प्रौद्योगिकी ग्रामीण विकास में सहायक हो सकते हैं।

संचार माध्यमों का महत्व

वर्तमान समय में बड़ी संख्या मे लोगों के विचारों को प्रभावित करने और जनमत का निर्माण करने के लिए समाचार पत्र पत्रिकाओं रेडियो टेलीविजन इंटरनेट का सहयोग लेना स्वाभाविक है। आधुनिक उदार लोकतांत्रिक समाज को आगे बढ़ाने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी काफी उपयोगी है। इसके माध्यम से हम लाखों करोड़ों लोगों तक सूचनाओं को कुछ ही समय तक पहुंचा सकते हैं और समाज को चलाने के लिए आम जनता से राय ले सकते हैं। यह हमें राजनीतिक विचारधाराओं के बारे में नवीनतम जानकारी उपलब्ध कराता है इससे सामाजिक संस्कृतिक मुद्दो पर विचार करने में मजबूती मिलती है।

ग्रामीण समाज में संचार माध्यमों के विकास के लिए सरकार द्वारा किया गया वैधानिक प्रयास

सरकार ने प्रौद्योगिकी को अनेक सुधारो का माध्यम बनाया है जिससे आम जनता तक लाभ एवं जानकारियां पहुंच सके। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी मंत्रालय अन्य मंत्रालयों के साथ-साथ राज्यों के सेवा वितरण को सुधारने के लिए भी काम कर रहा है सरकार भी इस तथ्य से भलीभांति परिचित है कि देश के विकास को अगले स्तर तक ले जाना तब तक संभव नहीं हो पाएगा जब तक की ग्रामीण भारत को आर्थिक विकास के दायरे में नहीं लाया जा सकता क्योंकि भारत के संपूर्ण आबादी का लगभग 70% हिस्सा आज भी ग्रामीण इलाकों में बसा हुआ है। ग्रामीण समाज के समुचित विकास के लिए विभिन्न विकास कार्यक्रमों और योजनाओं का क्रियान्वयन किया गया है -

आधार

आधार एक डिजिटल पहचान का माध्यम है और इसके द्वारा देश के प्रत्येक नागरिक को विशिष्ट पहचान या आधार संख्या प्रदान की गई है।यह डुप्लीकेट या नकली पहचान को खत्म करने के लिए एक प्रभावी व्यवस्था है। वैसे तो आधार के द्वारा सरकार प्रत्येक नागरिक को लाभ पहुंचाने के लिए पूर्णता कटिबध्द है क्योंकि इसका उपयोग प्रभावित सेवा वितरण के लिए किया जा रहा है और इसने पारदर्शिता और सुशासन को सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण योगदान किया है।

प्रत्यक्ष लाभ अंतरण

यह कल्याणकारी योजना आर्थिक सुधार पर केंद्रित योजना है जिसमें प्रौद्योगिकी का बड़े पैमाने पर प्रयोग हुआ है सूचना और संचार माध्यमों से लाभार्थियों की सही पहचान और धोखाधड़ी को कम करने के उद्देश्य से इस योजना की शुरुआत की गई।

स्वयं

स्वयं उन छात्रों के लिए डिजिटल विभाजन को दूर करने का प्रयास है जो अभी तक डिजिटल क्रांति से दूर हैं एवं ज्ञान अर्थव्यवस्था की मुख्य धारा में सम्मिलित नहीं हो पाए हैं। स्वदेशश में विकसित आईटी प्लेटफार्म के माध्यम से कक्षा 9 से स्नातकोत्तर तक की कक्षाओं में कोई भी व्यक्ति किसी भी समय कभी भी कहीं से भी हिस्सा ले सकता है। ग्रामीण समाज में छात्रों के लिए इसकी विशेष भूमिका है।

स्वच्छ भारत एप

वर्तमान समय में भारत का स्वच्छता अभियान एक राष्ट्रीय आंदोलन के रूप में परिवर्तित हो गया है विभिन्न स्वच्छता कार्यक्रमों के प्रबंधन में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की सार्थक भूमिका हो सकती है ।

किसान सुविधा

किसान सुविधा किसानों को महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध करने की दृष्टि से विकसित एक सर्वव्यापी मोबाइल ऐप है। यह ऐप विभिन्न मौसम बाजार, उर्वरक कीटनाशक दवाइयां कृषि मशीनरी कृषि सलाहकार व बहु संरक्षण आदि के संबंध में जानकारी प्रदान करता है। मौसम चेतावनी निकटतम क्षेत्र में वस्तु के बाजार मूल्य की भी जानकारी देता है। इसका उद्देश्य किसानों को और भी अधिक सशक्त बनाना है।

ई पंचायत

ई पंचायत ग्राम पंचायत के कामकाज को चुस्त दुरुस्त एवं सुनियोजित रूप देने वाली ई गवर्नेंस पहल है। यह पंचायती राज संस्थाओं में ई गवर्नेंस को सशक्त बनाने और उसके सेवाओं को सुलभ बनाने में योगदान कर रही है।

एग्री मार्केट एप

किसानों को फसल की कीमतों के बारे में अवगत कराने हेतु इस मोबाइल एप्लीकेशन को विकसित किया गया कृषि बाजार की एप का उपयोग करके किसान स्वयं के स्थान से 50

किलोमीटर के दायरे में आने वाले बाजारों में फसलों की कीमतों से संबंधित विभिन्न जानकारियां प्राप्त कर सकते हैं। कृषि वस्तुओं की कीमतों को एगमार्ग नेट पोर्टल से प्राप्त किया जा सकता है।

निष्कर्ष

ग्रामीण विकास और जनसंचार माध्यमों के प्रभाव का अध्ययन करने के उपरांत जो निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं उनके अनुसार जनसंचार एक ऐसा सशक्त माध्यम है जो ग्रामीण विकास मे सहायक हुआ है। जनसंचार माध्यमों जैसे रेडियो टेलीविजन समाचार पत्र पत्रिकाएं फिल्म धारावाहिक आदि से महिलाओं को सिर्फ जानकारियां ही प्राप्त नहीं हुई है बल्कि इन माध्यमों के द्वारा ज्ञान से उनमें जागृति अथवा जागरूक करने में विशेष भूमिका निभाई है महिलाओं को घर बैठे ही विकास कार्यक्रमों की जानकारी मिल जाती है उन्हें अपने अधिकारों की रक्षा के लिए बनाए गए कानून संपत्ति में उनका कितना और कौन सा अधिकार है की जानकारी प्राप्त हो जाती है।

जनसंचार माध्यमों द्वारा लोगों के दृष्टिकोण में परिवर्तन आया है जनसंचार के माध्यम से हुई क्रांतिकारी परिवर्तन राष्ट्र के अंदर विभिन्न समूह में बैठे हुए समाज को एक सामाजिक संगठन के मूल्य एवं आदर्श सभी में एक समान रूप से विकसित हो रहे हैं। इस प्रकार यह एक तरफ तो राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा दे रहा है वहीं दूसरी तरफ सामाजिक परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रहा है। ग्रामीण समाज के सामाजिक आर्थिक राजनीतिक सांस्कृतिक परिवर्तन के लिए गृह निर्माण स्वास्थ्य कृषि रहन-सहन विकास योजनाएं उद्योगों में आधुनिक तकनीक का अनुकूलन आवश्यक है। जनसंचार माध्यमों द्वारा गांव में आधुनिक तकनीक की उपयोगिता पर जोर दिया जा रहा है और वर्तमान समय में इसका प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है।

संदर्भ सूची

1. ए आर देसाई, रूरल सोशियोलॉजी ऑफ़ इंडिया।
2. भारत सरकार ग्रामीण विकास की नई दिशाएं, ग्रामीण क्षेत्र एवं रोजगार मंत्रालय, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ल
3. जोशी पूरनचंद, परिवर्तन और विकास संचार आयाम, राजकमल प्रकाशन दिल्ल
4. सिंह कटार, ग्रामीण विकास सिद्धांत नीतिया एवं प्रबंधन, रावत पब्लिकेशंस जयपुर, 2011
5. यादव राम जी, ग्रामीण विकास अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, पृष्ठ संख्या 7, 2003
6. योजना, फरवरी पृष्ठ 7-8, 2006
7. दाधीच बालेंदु शर्मा, ग्रामीण विकास में सूचना और संचार तकनीक का योगदान, कुरुक्षेत्र ग्रामीण विकास,मई 2018

मो. न.- 8874193362

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 March 2025 Page No. : 32-34
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

अमृता प्रीतम के काव्य और कहानियों में सामाजिक दर्शन एवं राष्ट्रीय चेतना

प्रो. ब्रजलता शर्मा, शोध निर्देशिका, हिन्दी विभाग,
कु० उमा, शोधार्थी, विषय हिन्दी,
महाराजा अग्रसेन हिमालयन गढ़वाल,
विश्वविद्यालय, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

शोध सारांश

अमृता प्रीतम भारतीय साहित्य की प्रमुख लेखिका रही हैं, जिन्होंने पंजाबी साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनकी कहानियाँ न केवल व्यक्तिगत अनुभवों और संवेदनाओं का चित्रण करती हैं, बल्कि इनका राष्ट्रीय और सामाजिक दृष्टिकोण भी गहरे प्रभाव डालता है। अमृता प्रीतम की कहानियों में संवेदनशीलता और राष्ट्रीय चेतना के संयोजन को समझना आवश्यक है, क्योंकि इनका लेखन सामाजिक संघर्षों, विभाजन और मानवाधिकारों के मुद्दों पर प्रकाश डालता है। अमृता प्रीतम की कहानियों में संवेदनशीलता का गहरा प्रभाव है। उनकी लेखनी में मानवीय संवेदनाओं, रिश्तों के उतार–चढ़ाव, प्रेम, विश्वास, और विश्वासघात की गहरी समझ देखने मिलती है। उनका लेखन नारी के मानसिक और भावनात्मक पहलुओं को उजागर करता है, जहाँ वह समाज में अपनी जगह और पहचान को तलाशने की कोशिश करती है। 'पिंजर' और 'रसीदी टिकट' जैसी कहानियों में अमृता प्रीतम ने नारी की पीड़ा और उसकी जद्दोजहद को पूरी संवेदनशीलता के साथ दर्शाया गया हैं।

अमृता प्रीतम की कहानियों में राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति भी महत्वपूर्ण है। उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, विभाजन, और सांप्रदायिक असहमति पर गहरी टिप्पणी की है। उनकी काव्य–रचनाओं और कहानियों में स्वतंत्रता के बाद की परिस्थिति और विभाजन के समय की पीड़ा को बड़े ही प्रभावशाली तरीके से व्यक्त किया गया है। उनके लेखन में भारतीय समाज की जटिलताओं और संघर्षों का बखूबी चित्रण किया गया है, जहाँ उन्होंने अपने पाठकों को यह समझाया कि व्यक्तिगत संघर्षों के साथ–साथ राष्ट्रीय स्तर पर भी बदलाव लाने की अति आवश्यकता है।

उदाहरण:

1. **'पिंजर':** इस कहानी में विभाजन के समय की त्रासदी और इसके परिणामस्वरूप महिलाओं की पीड़ा को प्रस्तुत किया गया है। अमृता ने इस कथा में न केवल व्यक्तिगत दृष्टिकोण से बल्कि राष्ट्रीय दृष्टिकोण से भी विभाजन के परिणामों को महसूस किया है।

2. **'रसीदी टिकट':** यह कहानी नारी के अस्तित्व के संघर्ष और उसकी मानसिकता की संवेदनशीलता को उजागर करती है। यहाँ पर नारी के शोषण और स्वतंत्रता की चाहत को राष्ट्रीय स्तर पर देखा जा सकता है, क्योंकि महिला आंदोलन और समाज में बदलाव की आवश्यकता पर बल दिया गया है।

अमृता प्रीतम की कहानियाँ एक ऐसे समग्र दृष्टिकोण से जुड़ी हैं, जो मानवीय संवेदनाओं, समाजिक असमानताओं और राष्ट्रीय चेतना को एक साथ प्रस्तुत करती हैं। उनका लेखन न केवल व्यक्तिगत संवेदनाओं का प्रतिनिधित्व करता है, बल्कि वह समाज और राष्ट्र के व्यापक मुद्दों को भी उजागर करता है। अमृता प्रीतम ने भारतीय समाज की जटिलताओं को अपनी कहानियों में बड़े ही संवेदनशील तरीके से प्रस्तुत किया, जो आज भी पाठकों को प्रभावित करती हैं।

शोध आलेख

अमृता प्रीतम का नाम भारतीय साहित्य की महत्वपूर्ण लेखिकाओं में आता है। उन्होंने पंजाबी साहित्य को समृद्ध और सशक्त बनाया। भारतीय समाज की जटिलताओं को विशेष रूप से महिलाओं के अधिकार, विभाजन के समय की पीड़ा, और सामाजिक असमानताओं पर अपनी काव्य–रचनाओं और कहानियों के माध्यम से प्रकाश डाला। उनकी रचनाओं में न केवल व्यक्तिगत अनुभवों का चित्रण है, बल्कि उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से समाज में व्याप्त विसंगतियों और राष्ट्र की समस्याओं पर भी गहरी टिप्पणी की है। उनका साहित्य सामाजिक दृष्टिकोण, संवेदनशीलता और राष्ट्रीय चेतना का संवेदनशील चित्रण करता है।

1. सामाजिक दर्शन व राष्ट्रीय चेतना :

अमृता प्रीतम की रचनाओं में समाज के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण किया गया है। उनका लेखन महिला अधिकारों, के लिए ही नहीं बल्कि जातिवाद, वर्गभेद, शोषण और असमानताओं पर भी आधारित है। उनकी काव्य–रचनाओं और कहानियों में समाज में व्याप्त दुरावस्था, अंधविश्वास, और स्त्री–शोषण पर कड़ी आलोचना की गई है। अमृता प्रीतम ने अपने लेखन के माध्यम से नारी के अस्तित्व को पहचाना है और उसकी स्वतंत्रता को महसूस भी किया है। उनके लेखन में नारी की भूमिका, उसकी पीड़ा, उसके अस्तित्व की तलाश, और समाज में उसके स्थान के बारे में गहरी सोच मिलती है। उनकी कविता 'मैंने तुम्हें देखा है' नारी के भीतर की स्वतंत्रता की आकांक्षा और समाज की बंदिशों से मुक्ति की आकांक्षा का प्रतीक है। अमृता प्रीतम का साहित्य केवल व्यक्तिगत जीवन की संवेदनाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें राष्ट्रीय दृष्टिकोण भी गहरी अभिव्यक्ति पाता है। उन्होंने विभाजन के समय की त्रासदी और उसके बाद के सामाजिक और सांस्कृतिक बदलावों को अपनी रचनाओं में चित्रित किया। उनके लेखन में भारतीय समाज की जटिलताओं, सांप्रदायिक असहमति और सांस्कृतिक संघर्षों पर व्यापक चर्चा देखने को मिलती है।

अमृता प्रीतम के काव्य और कहानी में स्वतंत्रता संग्राम, विभाजन के बाद की स्थिति, और राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता की गहरी भावना है। उदाहरण के लिए, उनकी कहानी 'पिंजर' विभाजन के समय की पीड़ा और उसके परिणामस्वरूप महिलाओं की स्थिति को दर्शाती है। यह कहानी न केवल एक व्यक्तिगत संघर्ष है, बल्कि विभाजन के राष्ट्रीय संकट का अवयव भी बन जाती है।

2. काव्य में सामाजिक और राष्ट्रीय दृष्टिकोणः

अमृता प्रीतम की कविताओं में समाजिक असमानताओं और विभाजन की पीड़ा का स्पष्ट चित्रण है। उनकी कविताएँ व्यक्तिगत जीवन की आंतरिक संघर्षों और सामाजिक असमानताओं पर गहरी टिप्पणी करती हैं। उनकी कविता 'अमृता प्रीतम की कविताएँ' में उनके सामाजिक और राष्ट्रीय दृष्टिकोण की स्पष्ट झलक मिलती है, जहाँ उन्होंने समाज में बदलाव की आवश्यकता को समझा है और महिलाओं के अधिकारों की भी वकालत की है। अमृता प्रीतम की कविता 'वह भी एक समय था' में भारत के विभाजन की त्रासदी और सामाजिक असमानताओं का बयान है। इसमें यह देखा जाता है कि अमृता ने अपनी कविताओं में न केवल व्यक्तिगत संघर्षों का चित्रण किया, बल्कि राष्ट्रीय अस्मिता और एकता की आवश्यकता पर भी ध्यान केंद्रित किया।

अमृता प्रीतम की कहानियाँ भी सामाजिक दृष्टिकोण की परिचायक हैं। उनकी कहानी 'रसीदी टिकट' एक स्त्री के आत्ममुक्ति के संघर्ष को दर्शाती है, जिसमें नारी का अस्तित्व, स्वतंत्रता और समाज के प्रति उसकी जिम्मेदारी को भी प्रस्तुत किया गया है। इस कहानी के माध्यम से अमृता ने नारी के स्वतंत्र विचार और अस्तित्व को दिखाया है, जो समाज के निर्धारित बंधनों से मुक्त होना चाहती है। उनकी कहानी 'पिंजर' विभाजन के समय की पीड़ा और महिलाओं की स्थिति को दर्शाती है, जो राष्ट्र के टूटने के साथ–साथ

व्यक्तिगत त्रासदी का शिकार भी होती हैं। अमृता की कहानियाँ राष्ट्रीय चेतना और समाजिक संवेदनाओं को बड़े ही प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत करती हैं।

3. अमृता प्रीतम का समाज और राष्ट्र के प्रति दृष्टिकोणः

अमृता प्रीतम का साहित्य समाज में बदलाव लाने का एक अंश है। उनका लेखन मानवीय समानता, स्वतंत्रता और बुराई के खिलाफ संघर्ष का प्रतीक बनकर सामने आता है। अमृता प्रीतम ने अपनी रचनाओं के माध्यम से यह संदेश भी दिया है कि समाज और राष्ट्र में बदलाव तभी संभव है जब हर व्यक्ति को बराबरी का दर्जा मिले और समाज के हाशिए पर खड़े लोग (विशेषकर महिलाएं) को समान अधिकार मिलें।

निष्कर्षः

अमृता प्रीतम का साहित्य सामाजिक दर्शन और राष्ट्रीय चेतना का संवेदनशील और गहन रूप प्रस्तुत करता है। उनका लेखन न केवल व्यक्तिगत संवेदनाओं का चित्रण करता है, बल्कि यह समाज के विभिन्न पहलुओं को उजागर करता है। उन्होंने महिलाओं की स्थिति, विभाजन की त्रासदी, और राष्ट्रीय एकता की बात बहुत गहनता से की है। उनका साहित्य एक साथ व्यक्तिगत, सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना को जागृत करता है और यह आज भी समाज में बदलाव और सुधार की दिशा में प्रेरणास्त्रोत है।

संदर्भः

1. अमृता प्रीतम, पिंजर, 1950।
2. अमृता प्रीतम, रसीदी टिकट, 1955।
3. कुमार, शिव कुमार (2002), अमृता प्रीतमः जीवन और रचनाएँ, हिंदी साहित्य संस्थान।
4. अमृता प्रीतम, पिंजर, 1950।
5. अमृता प्रीतम, रसीदी टिकट, 1955।
6. कुमार, शिव कुमार (2002), अमृता प्रीतमः जीवन और रचनाएँ, हिंदी साहित्य संस्थान।
7. प्रीतम, अमृता (2005), मैंने तुम्हें देखा है, पंजाबी साहित्य प्रकाशन।
8. कुलदीप, रतन (2010), अमृता प्रीतम और उनका साहित्य, भारतीय साहित्य समीक्षक।

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 March 2025 Page No. : 35-38
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

पंडित मदन मोहन मालवीय के सामाजिक योगदान का अध्ययन

LAV KESH BAHADR SINGH, Research Scholar history,
Dr. Shrikrishna Singh, professor history
P. K. K. Government degree college Jalabad Shahjahanpur

प्रस्तावना

समय-समय पर स्थितियों के अनुकूल इस प्रकृति ने आवश्यक के अनुसार विभिन्न महान विभूतियों को जन्म दिया। जिनके माध्यम से स्थितिजन्य समस्याओं के निराकरण के लिए अपने ओजस्वी नेतृत्व के माध्यम से समाज को अंधकार से निकाल कर समाज को सत मार्ग की ओर अग्रसित करने का प्रयास किया। पंडित मदन मोहन ऐसे ही प्रतिभा संपन्न व्यक्तित्व के धनी थे जिन्होंने अपने विभिन्न सेवायुक्त कार्यों के माध्यम से समाज को एक नया मार्ग प्रशस्त किया।

पंडित मदन मोहन मालवीय प्रकाण्ड पंडित, कालजई समाजसेवी एवं अद्वितीय नेता राजनीतिक नेता, अद्भुत वाकशक्ति के धनी, अनन्य विद्या प्रेमी, कुशल अधिवक्ता, हिंदी उन्नायक, सिद्धांत वादी पत्रकार, महान स्वतंत्रता सेनानी इन सभी ऊर्जाओं का प्रयोग महामना ने समाज के उत्थान के लिए किया। महामना जीवन पर्यंत समाज सेवा के कार्यों में लग रहे।

यद्यपि महामना एक कुलीन ब्राह्मण थे। परंतु उनका विश्वास रूढ़ियों पर न था। वे सदैव वैज्ञानिकता तथा आधुनिकता के समायोजन के पक्ष में तत्पर रहे। पंडित मदनमोहन मालवीय ने सदैव विधवा विवाह का समर्थन किया तथा दहेज प्रथा का विरोध किया।वे स्त्रियों के उच्च शिक्षा के समर्थन तथा सर्वांगीण विकास के पक्षधर थे। उन्होंने सभी वर्णों के लोगों को दीक्षित किया। ऐसे ही बहूप्रतिभा के धनी महामना के सामाजिक कार्य सदैव मानव जाति का उत्थान करता रहेगा तथा हम सबको भी प्रेरित करता रहेगा।

अध्ययन का उद्देश्य

1 -पंडित मदनमोहन मालवीय के सामाजिक योगदान के कार्यों का वर्णन करना।

2 -पंडित मदनमोहन मालवीय के सामाजिक योगदान की जानकारी देना।

3 -भारत रत्न मदन मोहन मालवीय का समाज के लिए किए गए कार्यों को जानना।

पंडित मदन मोहन मालवीय का सामाजिक कार्य

पंडित मदन मोहन मालवीय का बाल्यावस्था से ही सामाजिक कार्यों में रुचि थी, जो जीवन पर्यंत उसी के लिए जिए। बाल्यावस्था में ही उन्होंने अपने संगीत साथियों के साथ एक दल बनाया, इसके नेता वे स्वयं थे। यह दल सदैव सामाजिक कार्य के लिए तात्पर्य रहता था। बाल्यावस्था में ही उन्होंने वाग्वर्धिनी सभा का गठन किया था। जिसका उद्देश्य वाद-विवाद विवाद करना था। इस सभा में इस सभा के माध्यम से ईसाई पादरियों के प्रपंच, धर्मांतरण, स्कूल के हिंदू धर्म की छीछालेदर व दुष्प्रचार का प्रत्याख्यान करने से वह कदा भी नहीं चूकते थे।

काशी हिंदू विश्वविद्यालय के लिए चंदा मांगने पर एक पूंजी पति के द्वारा टिप्पणी किए जाने के जवाब में महामना ने इस प्रकार उत्तर दिया ।

मर जाऊं मांगू नहीं अपने हित के काज,
परहित कारज मांगते मोहि न आवत लाज।

स्त्रियों के संबंध में महामना के विचार प्रेरणादायक थे, उन्होंने इस संबंध में कहा नारी घर की शोभा नहीं कर्म और धर्म के क्षेत्र में स्वावलंबी हो। महामना का मानना था की छात्रों के मानसिक शारीरिक स्वास्थ्य की पढ़ाई पर जोर दिया जाए। पंडित मदन मोहन मालवीय कहते थे स्त्री भारत के भविष्य का आधार होगी। मदन मोहन मालवीय बाल विवाह के विरोधी थे, उन्होंने 20- 25 वर्ष की आयु को विवाह के लिए उत्तम माना। विधवाओं के संबंध में महामना का विचार था कि विधवा चाहे तो उनका विवाह कर देना चाहिए। महामना दहेज प्रथा के घोर विरोधी थे। उनका कहना था दहेज शास्त्र सम्मत नहीं है, दहेज को अधर्म का मूल माना तथा स्वास्थ्य अपत्य विक्रय (वर कन्या दोनों पक्ष) की घोर निंदा है, यह कथन जनमानस को बताया। इन्हीं के प्रयास से हरिद्वार संस्कृत विद्यालय में उपनिषद अध्ययन हेतु बालिकाओं का प्रवेश आसान हो सका।

छुआछूत के संबंध में पंडित मदन मोहन मालवीय का विचार स्पष्ट था और वे छुआछूत के घोर विरोधी थे। उन्होंने शुद्धि आंदोलन को प्रोत्साहित किया, उन्होंने हिंदू प्रवर्दनीय सभा की स्थापना की। मदन मोहन मालवीय छुआछूत नही अपितु शुद्धता को मानते थे। महामना का कथन था हिंदू समाज में कोई छोटा बड़ा नहीं है। उन्होंने हजारों लोगों को भी विधर्मी होने (दूसरे धर्म में जाने) से बचाया। रावलपिंडी में प्रांतीय सभा की अध्यक्षता करते समय बोला छुआछूत हमारे लिए घातक है तथा अछूतों को कुओं से पानी न भरने देना एवं शूद्रों के बालकों को भी विद्यालयी प्रवेश न देना संकुचित दृष्टिकोण का परिचायक है। सन् 1924 प्रयाग कुंभ के अवसर पर अछूतों का प्रवेश उन्हीं के प्रयास से हुआ, सन् 1928 में हरिद्वार कुंभ मेले में भी इसी प्रकार के प्रयास से वे प्रवेश दिलाने में सफल रहे। उन्होंने प्रयाग, काशी, नासिक, कोलकाता में अछूतों को बड़ी संख्या में दीक्षा प्रदान किया। मदनमोहन मालवीय ने कई बार आर्य समाज की अध्यक्षता भी किया।

पंडित मदन मोहन मालवीय पत्रकारिता को व्यवसाय नहीं अपितु सामाजिक उत्तरदायित्व माना। महामना सरकार के द्वारा जनता विरुद्ध आचरण की आलोचना में कभी नहीं चुके।

शिक्षा तथा हिंदी भाषा के क्षेत्र में उन्होंने अमूल्य योगदान दिया। पंडित मदनमोहन मालवीय हिंदी आंदोलन के प्रथम पंक्ति के महानायक केवल भारत ही नहीं अपितु अंतरराष्ट्रीय स्तर के महानतम शिक्षण संस्थान में एक बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के संस्थापक एवं आदर्श कुलपति थे। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में सर्वप्रथम हिंदी में भाषण देने वाले महामना मदन मोहन मालवीय ही थे। उन्होंने हिंदी साहित्य सम्मेलन में मुख्य भूमिका निभाई। महामना ने लगभग 28 वर्ष तक संयुक्त रूप से प्रांतीय काउंसिल, भारतीय विधान काउंसिल, केंद्रीय लेजिसलेटिव असेंबली में अपना मूल योगदान दिए। जिसमें उन्होंने अंग्रेजों का डटकर सामना किया तथा उन नीतियों पर बहस किया इसमें निम्न- कर व लगान नीति, अकाल, भुखमरी, सिंचाई, कुप्रबंधन, अशिक्षा, स्वास्थ्य, बेकार प्रथा, कुली प्रथा, सरकारी फिजूल खर्ची, आयात निर्यात नीति, उत्पादन व बिक्री कर, राजनीतिक सुधार, पब्लिक सर्विस कमीशन, मद्यपान नीति, सेना नीति, रौलट विधेयक, शिक्षा विधेयक, मुद्रा विधेयक, रिजर्व बैंक विधेयक, साइमन कमीशन, सैनिक शिक्षा, निम्नवर्ण शिक्षा, वैज्ञानिक वाणिज्य शिक्षा विधेयक, वैज्ञानिक परिषद का गठन आदि विषयों पर ब्रिटिश हुकूमत को आईना दिखाते रहे।

पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्र को धर्म से ऊपर मानते थे तथा वे सांप्रदायिकता के विरोधी थे। सन् 1933 काशी में दंगा हुआ वे इससे बहुत व्यथित हुए। इसके लिए उन्होंने एक सहायता समिति का गठन किया। जिससे सभी वर्गों के दंगाग्रस्त लोगों को सहायता प्रदान किया था। उन्होंने मोपला, मुल्तान, कोलकाता दंगा ग्रस्त लोगों को सहायता पहुंचाई।

हिंदू-मुस्लिम एकता के संबंध में भोपाल दंगों के बाद दोनों पक्षों को मदन मोहन मालवीय ने कुछ इस प्रकार समझाया-

1- सभी धर्म इंसान बनने की प्रेरणा देते हैं।

2- सभी एक ईश्वर की संतान है। 3-दोनों एक देश के वासी हैं।

जहां तक धार्मिकता और सांप्रदायिकता की बात हो तो दोनों अलग हैं धार्मिक व्यक्ति सांप्रदायिक हो यह जरूरी नहीं हो सकता है।

निष्कर्ष-

पंडित मदनमोहन मालवीय के सामाजिक कार्यों से ही मंत्र-मुग्ध होकर महात्मा गांधी ने 'महामना' नाम से संबोधित किया। मदन मोहन मालवीय ने अपना संपूर्ण जीवन राष्ट्र के लिए अर्पित कर दिया। मदनमोहन मालवीय ने समाज के हाशिये पर खड़े लोगों के लिए अथक परिश्रम किया और सामाजिक न्याय की लड़ाई लड़ी। कल जो पंडित मदनमोहन मालवीय ने सामाजिक उत्थान के बीज बोए थे आज उससे हम फल प्राप्त कर रहे हैं। महामना का व्यक्तित्व हमारे समाज को ऐसे ही नेतृत्व प्रदान करता रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

* गिरधर मालवीय, महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जीवन परिचय
* शरद सिंह, राष्ट्रवादी व्यक्तित्व महामना मदन मोहन मालवीय
* ईश्वर प्रसाद शर्मा, मालवीय जी के सपनों का भारत
* पद्माकर मालवीय, मालवीय जी के लेख
* पंकज चतुर्वेदी, मदन मोहन मालवीय
* अशोक मेहता, न्यायालय में महामना

mob. 9648619567 Email shaileshbsc9838@gmail Email. S.Krishana51@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 March 2025 Page No. : 39-44
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

स्कन्दपुराणे कार्त्तिकेयस्य कथासु परिलक्षितं देवत्वम्-

अनिल कुमार, शोधार्थी, संस्कृत, पाली एवं प्राकृत,
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला, काँगड़ा (हि.प्र.)

संस्कृतवाङ्मये वेदेभ्यः अनन्तरं पुराणानां सर्वाधिकं महत्त्वम् अस्ति। पुराणशब्देन एव अस्य प्राचीनतायाः बोधः भवति। पुराणानि प्राचीनानि अपि भाषाया एवं शैल्याः दृष्ट्या नूतनानि अपि सन्ति। पुराणानाम् अध्ययनेन ज्ञायते यत् पुराणेषु धर्मः, दर्शनं, नीतिः, संस्कृतिः, कला, इतिहासः, भूगोलः, राजनीतिः, अर्थनीतिः, भक्तिः, ज्ञानम्, वैराग्यः इत्यादि सर्वं समाहितम् अस्ति। वस्तुतः पुराणम् आर्यसंस्कृतेः एव सभ्यतायाश्च समन्वितं रूपम् अस्ति, यस्य रचना वेदार्थ-विस्तारस्य भावनया महर्षि वादरायणेन कृता-

अक्षय्यमन्नपानं वै पितृंस्तस्योपतिष्ठते।
इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत्।।

भारतीयसंस्कृतेः मूलाधारस्य रूपे वेदेभ्यः अनन्तरं पुराणानां स्थानम् अस्ति। वेदेषु वर्णितं रहस्यं जनसामान्यस्य कृते दुर्लभम् अस्ति। परञ्च पुराणानां मंगलमयीं, ज्ञानप्रदायिनीं दिव्य कथां श्रुत्वा पठन-पाठनं च कृत्वा जन सामान्योऽपि भक्तितत्त्वस्य रहस्येण सहजतया परिचितः भवितुं शक्नोति। महाभारते उक्तम् अस्ति 'पुराणसंहिताः पुण्याः कथा धर्मार्थसंश्रिताः'[1] अर्थात् पुराणानां पवित्रा कथा धर्मम्, अर्थञ्च प्रवर्तते। एतदर्थं भगवतः दर्शनाय एवं च शारीरिक-मानसिकरोगाणां निवृत्तौ पुराणानां पारायणं कुर्यात्। पञ्चमवेदस्य रूपे पौराणिकज्ञानं सर्वप्रथमं सृष्टिकर्तुः ब्रह्मणः मुखेन अभिव्यक्तम् अभवत्-

इतिहासपुराणानि पञ्चमं वेदमीश्वरः।
सर्वेभ्य एव वक्त्रेभ्यः ससृजे सर्वदर्शनः।।

पुराणकाले स्कन्दः एकः अतिमहत्त्वपूर्णः देवता आसीत्। महाकाव्येषु स्कन्दस्य जन्मनः विषये अनेका कथा अस्ति। पुराणेषु जन्मनः कथया सह तु स्कन्दस्य उपलब्धिषु अपि ध्यानं दत्तम्

अस्ति। कतिपयपुराणेषु स्कन्दस्य जन्मनः कथा, महाकाव्येषु प्राप्ता साः कथायाः तुल्या अस्ति यत्र अग्नये मुख्यता प्रदत्ता अस्ति। विष्णुपुराणे उक्तं यत् स्कन्दः अग्नेः पुत्रः अस्ति एवं शरस्तम्बे व्यजायत-

अग्निपुत्रः कुमारस्तु शरस्तम्बे व्यजायत।

स्कन्दस्य जन्मना कृत्तिकानां सम्बन्धोऽपि उक्तः-

अपत्यं कृत्तिकानां तु कार्तिकेय इति स्मृतः।

विभिन्नानां विषयाणां विस्तृत-विवेचनस्य दृष्ट्या पुराणेषु स्कन्दपुराणं बृहत् अस्ति। भगवता स्कन्देन कथितम्, एतदर्थं अस्य पुराणस्य नाम स्कन्दपुराणम् इति।

स्कन्दपुराणे कार्तिकेयस्य जन्मनः कथा एवं प्रकारेण अस्ति, स्कन्दपुराणे उक्तम् अस्ति यत् महादेवशिवः अत्यल्पबिल्वपत्रं प्राप्य सर्वदा सन्तुष्टः भवति। पुष्पस्य, जलस्य, च अर्पणेन अपि प्रसन्नः भवति- **'पत्रेण पुष्पेण तथा जलेन प्रीतो भवत्येष सदाशिवो हि.....'** भगवान् शिवः सर्वदा सर्वेभ्यः कल्याणस्वरूपः अस्ति। एतदर्थं सर्वः एतस्य पूजां कुर्यात्। एषः व्यवधानशून्यः, निर्गुणः, निर्विकारः, निर्बाधः, निर्विकल्पः, अस्ति।

एतादृशमहिमयुक्तस्य देवाधिदेवस्य शिवस्य सर्वे देवाः पूजनं कृतवन्तः। शिवः सर्वज्ञः अस्ति, स स्तुत्याः, पूजनेन च तुष्टः सर्वदा किमपि ददाति एव। शिवेन गन्धमादनपर्वतस्य एकान्तप्रदेशे पार्वत्या सह सम्भोगक्रियायाः विचारः कृतः। तत्पश्चात् शिवः पार्वत्या सह महत्यां रतिक्रीडायां तत्परोऽभवत्। सम्भोगक्रियासमये शंकरस्य वीर्येण समस्तचराचरजगत् नष्टं दृश्यते स्म। अनन्तरं ब्रह्मा-विष्णुश्च अग्निदेवस्य स्मरणं कृतवन्तौ। अग्निदेवः तस्मिन् एव समये तत्र आगतवान्, द्वयोः आज्ञया अग्निः केसरतुल्यकान्तियुक्तस्य हंसस्य रूपं धृत्वा शिवस्य भवनं प्रविष्टः। अन्तः गत्वा तेन उक्तं यत् हे मातः! हस्तौ एव मम पात्रम्, अस्मिन् मह्यम् भिक्षां देहि। तदा माता 'जातवेदसे' भिक्षां दत्तवती। पार्वत्या भिक्षारूपेण शिवस्य वीर्यं दत्तम्, अग्निः तस्मिन् एव समये वीर्यम् अखादत्। एतत् दृष्ट्वा पार्वती कुपिता अभवत्, अग्नये च शापं अददात्, पार्वती अवदत् यत् मम् शापेन त्वं शीघ्रमेव सर्वभक्षी भविष्यति, एवं शिवस्य वीर्येण महत् कष्टम् अनुभविष्यति इति।[2] तदनन्तरम् अग्निः शिवम् अपृच्छत् भगवन् अधुना अहं किम् करोमि, शिवेन उक्तं यत् भवान् मम वीर्यं स्त्रियाः गर्भे स्थापयतु। अग्निना पुनः उक्तं यत् भवताम् तेजः दुःसहम् अस्ति, प्राकृतजनः सोढुं न शक्नोति। तस्मिन् समये एव नारदमुनिः अग्निदेवम् उक्तवान्- मम वार्ता शृणुः माघमासे प्रातः काले स्नानं कृत्वा याः अत्यधिकं शैत्यं अनुभवन्ति, ताः यदा अग्नेः सेवनाय आगमिष्यन्ति तदा तासां शरीरे भवान् शिवस्य तेजः स्थापयिष्यति। अनन्तरम् अग्निदेवः

ब्रह्ममुहूर्ते स्वकीय प्रचण्डतेजसा प्रज्वलितः अभवत्। अग्निं प्रज्वलितं दृष्ट्वा अत्यधिकशैत्यकारणेन कृत्तिकाः अग्निसेवनस्य इच्छया तत्र आगमनस्य विचारं कृतवत्यः, यावत् पर्यन्तम् अग्निं तपन्ति तावत् शंकरस्य वीर्यस्य सम्पूर्णपरमाणवः तासां शरीरे प्रविष्टाः। अधुना अग्निदेवः तस्मात् वीर्यात् मुक्तोऽभवत्। तत्पश्चात् ताः कृत्तिकाः गर्भवत्यो भूत्वा ततः स्वगृहम् आगच्छन्ति। महर्षिभिः यदा शापो दत्तः तदा ताः नक्षत्राणां रूपे आकाशे विचरन्ति। तस्मिन् समये कृत्तिकाः शिवस्य वीर्यं हिमालयस्योपरि त्यजन्ति स्म। तदा तद् वीर्यं सुवर्णतुल्यं प्रभाति, अनन्तरं गङ्गायां प्रवाहितम्, गङ्गायाः प्रवाहेण तद् वीर्यम् शरवणस्य समूहे पतति। तत्र तद् वीर्यं षण्मुखयुक्तस्य बालकस्य रूपे परिणतोऽभवत्। सः बालकः तप्यमानसुवर्णस्य तुल्यः कान्तिमान् आसीत्, तस्य मुखं सुन्दरम् आसीत्। तस्य सम्पूर्णेषु अङ्गेषु सुन्दरता आसीत्। सूर्यस्य तुल्यं तेजस्विनं गङ्गाकुमारं दृष्ट्वा सर्वे देवाः तस्य वन्दनं कृतवन्तः। तस्मिन् अभ्युदयकाले ऋषिमुनयः शान्तिपाठं कुर्वन्तः आसन्।

स्कन्दपुराणे ऋषयः वेदमन्त्राणाम् उच्चारणं कृत्वा, गायकाः गीतं गीत्वा, एवं वाद्ययन्त्र- वादकाः वाद्यस्य प्रयोगं कृत्वा कार्त्तिकेयस्य अभिनन्दनं कृतवन्तः-

गीतवादित्रघोषेण ब्रह्मघोषेण भूयसा।
संस्तूयमानो विविधैः सूक्तैर्वेदविदां वरैः।।
कुमारविजयं नाम चरित्रं परमाद्भुतम्।
सर्वपापहरं दिव्यं सर्वकामप्रदं नृणाम्।।
ये कीर्तयन्ति शुचयोऽमितभाग्ययुक्ताश्चानंत्यरूपमजरामरमादधानाः।
कौमारविक्रममहात्म्यमुदारमेतदानंददायकमनोर्थकरं नृणां हि।।
यः पठेच्छृणुयाद्वाऽपि कुमारस्य महात्मनः।
चरितं तारकाख्यं च सर्वपापैः स मुच्यते।।

अनन्तरं तारकासुरस्य, कुमारस्य च मध्ये युद्धम् अभवत्। महाबाहुकुमारेण तारकासुरस्य हृदये शक्तया प्रहारः कृतः, परञ्च तारकस्योपरि प्रहारस्य कोऽपि प्रभावः न अभवत्। अनन्तरं तारकासुरेण कार्त्तिकेयस्योपरि स्वशक्तया प्रहारः कृतः प्रहारेण कार्त्तिकेयः मूर्च्छित अभवत्। यदा मूर्च्छातः बहिः आगतः तदा महर्षिगणाः तस्य स्तुतिं कृतवन्तः। कार्त्तिकेयः देवान्, पर्वतान् च आश्वासितवान् यत् अद्य अहं तारकासुरस्य वधं करिष्यामि इति।

स्कन्दपुराणे भगवान् कार्त्तिकेयः तारकासुरस्य वधं कृत्वा स्वयम् एव कुमारेश्वरनामकस्य शिवलिङ्गस्य स्थापनां कृतवान्। तारकासुरस्य वधानन्तरं कार्त्तिकेयः अत्यन्तं खिन्नो भूत्वा शोकाकुलः अभवत्। एवं देवाः उक्ताः यत् भवन्तः मम स्तुतिं मा कुर्वन्तु, यतोहि अहं पापं कृतवान्। यद्यपि पापाचारिणः तारकस्य वधेन कोऽपि दोषः न अस्ति, तथापि तारकासुरः तु

भगवतः शिवस्य भक्तः आसीत्। एतत् स्मरणं कृत्वा शोकाकुलताम् अनुभवामि। एतदर्थम् अहं कमपि प्रायश्चित्तं श्रोतुम् इच्छामि, यतोहि प्रायश्चितं कृत्वा महत् पापमपि नष्टं भवति। यस्मिन् समये कार्त्तिकेयः शोकाकुल आसीत्, तस्मिन् समये भगवता विष्णुना देवानां मध्ये उक्तम्-महेशनन्दन! यदि श्रुतिं, स्मृतिं, इतिहासं, पुराणं च प्रमाणं मन्यते, तर्हि दुष्टानां वधे कोऽपि दोषः न अस्ति-

श्रुतिः स्मृतिश्चेतिहासाः पुराणं च शिवात्मज।
प्रमाणं चेत्ततो दुष्टवधे दोषो न विद्यते।।

अपरा कथा एवमस्ति यत् एकदा तारकासुरस्य भयात् देवाः महादेवस्य स्तुतिं कृतवन्तः, एवं महादेवस्य आज्ञया कार्त्तिकेयं स्वसेनायाः सेनापतिं नियुक्तवन्तः। अनन्तरं स्कन्दस्य बलेन प्रबला भूत्वा सर्वे देवाः तारकासुरेण सह युद्धं कृतवन्तः। तस्मिन् समये देवैः दानवानां सेनायाः संहारः कृतः। तत्पश्चात् भगवतः विष्णोः प्रेरणया कार्त्तिकेयः शक्तेः प्रहारं कृत्वा सारथिसहितस्य तारकासुरस्य वधं कृतवान्। अन्यदैत्याः तारकासुरं मृतं दृष्ट्वा पातालमलोके पलायनं कृतवन्तः। तदा देवैः कुमारस्य पराक्रमस्य प्रशंसा कृता। विजयप्राप्त्यनन्तरं शिवादिसर्वदेवैः कार्त्तिकेयः देवानां सेनायाः सेनापतिपदे अभिषिक्तः कृतः।[3]

अनन्तरं कार्त्तिकेयः मनसि स्वमातुः पितुः च ध्यानं कृतवान्। एवं हस्ते शक्तिं स्वीकृत्य दैत्यराजतारकस्योपरि वेगेन प्रहारं कृतवान्। शक्तेः आघातेन एव तारकासुरः सहसा धराशायी अभवत्। कुमार-कार्त्तिकेयेन तारकासुरः बलपूर्वकं हतः, एतत् देवैः, ऋषिमुनिभिः स्वचक्षुर्भिः दृष्टम्, दृष्ट्वा ते प्रसन्नमनसा कार्त्तिकेयस्य स्तुतिं कृतवन्तः। तत्पश्चात् स्वपुत्रैः एवं मेर्वादि पर्वतैः आच्छादितः गिरिराजहिमालयः अपि तत्र आगच्छत् एवं कार्त्तिकेयस्य स्तवनं कृतवान्। अनन्तरं सर्वैः देवैः, ऋषिभिः सह गीतस्य, वाद्यस्य च ध्वनिं कृत्वा वेदमन्त्रोच्चारणपूर्वकं सूक्तैः सह कुमारस्य स्तवनं कृतम्। यः महात्मा कुमारस्य अस्य 'तारकवधनामक' चरित्रस्य पाठं करोति वा श्रवणं करोति तस्य सर्वेषाम् पातकानां विनाशो भवति।[4]

देवैः कृताम् इमां स्तुतिं श्रुत्वा प्रसन्नतायुक्ताः पर्वताः अपि सर्वतोभावेन तस्य गिरिजाकुमारस्य स्तवनं कृतवन्तः। कुमारेण पर्वतेभ्यः वरो दत्तः-

भो भोगिरिवरा! यूयं शृणुध्वं मद्वचोऽधुना।
कर्मिभिर्ज्ञानिभिश्चैव सेव्यमानाभविष्यथ।।
पर्वतीयानि तीर्थानि भविष्यन्ति न चान्यथा।
शिवालयानि दिव्यानि दिव्यान्यायतनानि च।।

अयनानि विचित्राणि शोभनानि महान्ति च।
भविष्यन्ति न सन्देहः पर्वताः! वचनान्मम।।
योऽयं मातामहो मेऽद्य हिमवान्पर्वतोत्तमः।
तपस्विनां महाभागः फलदो हि भविष्यति।।
मेरुश्चगिरिराजोऽयमाश्रयोहिभविष्यति।
लोकालोकोगिरिवरउदयाद्रिर्महायशाः
लिङ्गरूपो हि भगवान्भविष्यति न चान्यथा।
श्रीशैलो हि महेन्द्रश्च तथा सह्याचलो गिरिः।।
माल्यवान्मलयो विन्ध्यस्तथाऽसौ गन्धमादनः।
श्वेतकूटस्त्रिकूटो हि तथादर्दुरपर्वतः।।

यस्य मुखे सर्वदा ' नमः शिवाय' इत्यस्य पञ्चाक्षरमन्त्रस्य जपो भवति, यस्य चित्तं सर्वदा शिवस्य चिन्तने भवति, यः सर्वेषाम् प्राणिनः प्रति समभावं स्थापयति, परस्य निन्दायां यस्यवाणी मूका भवति, एवं यः परस्त्रीषु स्वे नपुंसकभावं एव स्थापयति, एतादृशस्य उपासकस्योपरि शिवस्य विशेषकृपा भवति।[5]

विशेषतः कार्तिकमासस्य पूर्णिमायां कार्तिकेयस्य पूजनं कुर्यात्, एवं कृत्वा स्कन्दस्य यात्रायाः यत् फलम् अस्ति, तत् पूर्णरूपेण प्राप्तं भवति। कार्तिकेयस्य अष्टाधिक-एकशतं नाम्नाम् ब्रह्मचर्य पालनपूर्वकं पवित्रभावेन एकमासपर्यन्तं जपं कृत्वा मनुष्यः सर्वपापेभ्यः मुञ्चति। श्रीविश्वामित्रः कुमारकार्तिकेयस्य स्तुतिं अष्टाधिक-एकशतेन नामभिः कृतवान्-

विश्वामित्रस्तु भगवान्कुमारं शरणं गतः।
स्तवं दिव्यं सम्प्रचक्रे महासेनस्य चापि सः।।
अष्टोत्तरशतं नाम्नां शृणु त्वं तानि फाल्गुन!।
जपेन येषां पापानि यान्ति ज्ञानमवाप्नुयात्।।

कुमारेण कुमारेश्वरस्य स्थापनानन्तरं देवैः प्रणामः कृतः एवम् च उक्तम्- प्रभो! वयं भवताम् विजयकीर्तेः प्रकाशनाय जले एकम् उत्तमं स्तम्भं स्थापयामः, तस्य अग्रे भवान् विश्वकर्मणा निर्मितस्य तृतीयशिवलिङ्गस्य स्थापनां करोतु। देवानाम् अनेन कथनेन स्कन्दः 'तथास्तु' उक्त्वा अनुमतिं दत्तवान्। स्तम्भस्य नाम 'विश्वनन्दकः' इति। तस्य पश्चिमे भागे भगवतः स्तम्भेश्वरस्य स्थापना कृता। स्तम्भेश्वरात् पश्चिमे भागे महात्मा स्कन्दः स्वशक्तेः अग्रभागेन एकस्य कूपस्य निर्माणं कृतवान्, यस्मिन् पातालगङ्गा प्रकटीभूता। माघस्य कृष्णपक्षस्य चतुर्दशीतिथौ यः मनुष्यः

अस्मिन् कूपे स्नानं कृत्वा पितृणां तर्पणं करिष्यति, तस्य निश्चयमेव गया-श्राद्धेन प्राप्तस्य पुण्यफलस्य प्राप्तिः भविष्यति-

स्तम्भेश्वरस्ततो देवः स्थापितस्त्रक्षसूनुना।
विरिञ्चिप्रमुखैर्देवैर्जातानन्दैः समं तदा।।
हरिहरादित्ययुक्तैस्तैः सेन्द्रैर्मुनिगणैरपि।
तस्यैव पश्चिमे भागे शक्त्यग्रेण महात्मना।।
गुहेन निर्मितः कूपो गङ्गा तत्रतलोद्भवा।
माघस्य च चतुर्दश्यां कृष्णायां पितृतर्पणम्।।
कूपे स्नानं नरः कृत्वा भक्त्या यः पाण्डुनन्दन।।
गयाश्राद्धेन यत्पुण्यं तत्फलं लभते स्फुटम्।।

सन्दर्भग्रन्थ सूची-

1. महाभारत आदिपर्व- २६७
2. महाभारतम् (आदिपर्व) १.१६
3. श्रीमद्भागवतपुराणम् - (तृतीय स्कन्द) अध्याय-१२ श्लोक-३९
4. विष्णुपुराणम्- १.१५. ११५
5. तत्रैव- श्लोक-११६
6. स्कन्दपुराणम् - मा. अध्यायः-२७ श्लोक- २२-२८
7. स्कन्दपुराणम् माहेश्वरखण्ड अध्यायः - २७ श्लोक- २२-२८
8. स्कन्दपुराणम् (प्रथमे माहेश्वरखण्डे स्वामिकार्त्तिकेय विजयोत्सववर्णनं नामत्रिंशोऽध्यायः) - श्लोक- ४९-५२
9. स्कन्दपुराणम्- कौमारिकाखण्ड अध्यायः- २६.११
10. स्कन्दपुराणम्- (ब्राह्मखण्ड) चातुर्मास्य माहात्म्य
11. स्कन्दपुराणम्- माहेश्वरखण्ड- (केदारखण्ड) अध्यायः- ३०
12. स्कन्दपुराणम्- माहेश्वरखण्ड- अध्यायः- ३१ श्लोक- ८६-९३
13. स्कन्दपुराणम् तत्रैव- अध्यायः-३१
14. स्कन्दपुराणम् माहेश्वरखण्ड (कुमारिकाखण्ड) अध्यायः- २९ श्लोक- १२३.१२४
15. स्कन्दपुराणम्- माहेश्वरखण्ड (कौमारिकाखण्ड) अध्यायः- ३५ श्लोक- १०-१३

मोबाईल नम्बर- 82195-73053 ई-मेल- anil94602kumar@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 March 2025 Page No. : 45-49
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Bridging the Gap: An Exploratory Study of Model Residential Schools for Tribal Communities in Kerala

Rahul Vijayan. V, Research scholar,
Department of Political Science, University of Kerala

Abstract

This article explores the impact of model residential schools on the education and empowerment of tribal communities in Kerala, India. Through a qualitative case study approach, we examine the experiences of students, teachers, and administrators in these schools. Our findings suggest that model residential schools have the potential to bridge the educational gap between tribal and non-tribal communities, but face challenges related to infrastructure, teacher training, and cultural sensitivity. We recommend policy interventions to address these challenges and promote inclusive education for tribal communities. Our findings highlight the schools' potential in improving academic performance, preserving tribal culture, and empowering students. However, infrastructure challenges, inadequate teacher training, and cultural insensitivity emerged as significant obstacles.

Keywords

Model Residential Schools, Tribal education, Inclusive education, Cultural preservation, Empowerment

Introduction

India's tribal communities have historically faced significant educational disparities, perpetuating cycles of poverty and social exclusion. Kerala, despite its high literacy rates, is no exception. The state's tribal populations continue to trail behind their non-tribal counterparts in educational attainment, with far-reaching consequences for their socioeconomic development. In response to these disparities, the Government of Kerala has established Model Residential Schools (MRS) specifically for tribal students. These schools aim to provide quality education, boarding facilities, and holistic development opportunities to tribal children. However, the effectiveness of MRS in bridging the educational gap for tribal communities in Kerala remains understudied.India's tribal communities have long faced significant educational disparities, perpetuating cycles of poverty, marginalization, and social exclusion. The 2011 Census revealed that Kerala's tribal populations trailed behind the state's general population in literacy rates, with a staggering 25.4% gap. To address this disparity, the Government of Kerala initiated the Model Residential Schools (MRS) program, aiming to provide quality education, boarding facilities, and holistic development opportunities to tribal students. Despite the program's promise, there is a dearth of research examining the effectiveness of MRS in bridging the educational gap for tribal communities in Kerala. This exploratory study seeks to address this knowledge gap by investigating the

experiences of students, teachers, and administrators in MRS. By examining the successes and challenges of these schools, this study aims to inform policy recommendations that enhance the quality and inclusivity of education for tribal communities in Kerala.

Tribal communities' education in Kerala

Kerala has a tribal population of approximately 470,000, constituting 1.5% of the state's total population. There are 48 recognized tribal communities in Kerala, each with their unique culture, language, and traditions. The literacy rate among tribal communities in Kerala is 74.6%, significantly lower than the state's overall literacy rate of 94.2%. Tribal students face numerous challenges in accessing quality education, including remote locations, lack of infrastructure, and transportation difficulties. Language barriers also pose a significant challenge, as many tribal students speak their native languages and struggle to adapt to Malayalam-medium schools. Cultural differences and sensitivities also impact tribal students' educational experiences. Poverty and economic constraints further exacerbate these challenges, limiting tribal families' ability to provide educational resources. Teacher shortages in tribal areas also hinder the delivery of quality education. To address these challenges, the Government of Kerala has established Model Residential Schools (MRS) specifically for tribal students. These schools provide free education, boarding, and lodging facilities to tribal students. Additionally, the Tribal Welfare Departments oversee tribal development, including education. Scholarships and incentives are also offered to encourage higher education among tribal students. Despite these initiatives, more needs to be done to address the educational disparities faced by tribal communities in Kerala.

An inclusive curriculum that incorporates tribal culture, language, and history is essential. Cultural sensitivity training for teachers can also promote a more supportive learning environment. Language support and bilingual education can help tribal students transition to Malayalam-medium schools. Economic empowerment initiatives can also help improve tribal families' economic status, enabling them to support their children's education. Community engagement and partnerships with local tribal communities are crucial in ensuring that education policies and programs are responsive to their needs. By addressing these challenges and implementing targeted initiatives, Kerala can work towards improving the educational outcomes and opportunities for its tribal communities.

Challenges Faced by Tribal Students

Language barriers also pose a significant challenge, as many tribal students speak their native languages and struggle to adapt to Malayalam-medium schools. Cultural differences and sensitivities also impact tribal students' educational experiences. Poverty and economic constraints further exacerbate these challenges, limiting tribal families' ability to provide educational resources. Teacher shortages in tribal areas also hinder the delivery of quality education. Additionally, the lack of educational infrastructure, including schools, classrooms, and libraries, affects the quality of education provided.

Initiatives and Programs

To address these challenges, the Government of Kerala has established Model Residential Schools (MRS) specifically for tribal students. These schools provide free education, boarding, and lodging facilities to tribal students. Additionally, the Tribal Welfare Departments oversee tribal development, including education. Scholarships and incentives are also offered to encourage higher education among tribal students. The Ashram schools program provides residential schools for tribal students in remote areas.

Community Engagement and Partnerships

Community engagement and partnerships with local tribal communities are crucial in ensuring that education policies and programs are responsive to their needs. This includes involving tribal leaders and community members in the decision-making process and providing training and capacity-building programs for tribal teachers and educators. By addressing these challenges and implementing targeted initiatives, Kerala can work towards improving the educational outcomes and opportunities for its tribal communities.

Future Directions

Future research should focus on exploring the impact of initiatives such as Model Residential Schools and scholarships on tribal students' educational outcomes. Additionally, studies should examine the effectiveness of cultural sensitivity training for teachers and the impact of inclusive curriculum on tribal students' educational experiences. Furthermore, research should investigate the role of community engagement and partnerships in improving educational outcomes for tribal communities.

Policy Implications

The findings of this study have significant policy implications. Policymakers should prioritize initiatives that address the unique needs of tribal communities, including language support, cultural sensitivity training, and inclusive curriculum. Additionally, policies should focus on improving access to education, including the establishment of more Model Residential Schools and the provision of scholarships and incentives. By addressing these challenges, policymakers can help promote inclusive education and bridge the educational gap for tribal communities in Kerala.

Profile; Model residential schools Kerala

Model Residential Schools in Kerala: A Step towards Inclusive Education Kerala, a state in southern India, has been at the forefront of promoting education and social welfare. One such initiative is the Model Residential Schools (MRS) program, aimed at providing quality education to tribal students. In this article, we will delve into the concept of MRS, its objectives, and the impact it has had on tribal education in Kerala. The primary objective of MRS is to provide residential education to tribal students, enabling them to access quality education and bridge the educational gap. The schools aim to promote academic excellence, cultural preservation, and holistic development among tribal students. By providing free education, boarding, and lodging facilities, MRS seeks to empower tribal students and equip them with the skills and knowledge necessary to compete in the modern world.

The impact of MRS on tribal education in Kerala has been significant. The schools have provided access to quality education for thousands of tribal students, enabling them to pursue higher education and careers. The schools have also promoted cultural preservation and empowerment among tribal students. According to a study, the dropout rate among tribal students in MRS is significantly lower compared to tribal students in non-residential schools. Despite the success of MRS, there are several challenges that need to be addressed. One of the major challenges is the lack of infrastructure and facilities in some schools. There is also a need for more teachers and staff, particularly those who are fluent in tribal languages. Additionally, there is a need for more vocational training and skill development programs to equip students with employable skills. Model Residential Schools in Kerala have been a game-changer in promoting tribal education. The schools have provided access to quality education, promoted cultural preservation, and empowered tribal students. While there are challenges that need to be addressed, the impact of MRS on tribal education in Kerala has been significant. As the state continues to prioritize education and social welfare, it is likely that MRS will remain a vital component of Kerala's education landscape.

Impact of Model Residential Schools

1. _Improved academic performance_: Tribal students in MRS have demonstrated significant improvement in academic performance, particularly in subjects like mathematics and science.
2. _Increased enrollment_: MRS has increased enrollment rates among tribal students, particularly girls.
3. _Reduced dropout rates_: MRS has reduced dropout rates among tribal students, ensuring that they complete their education.
4. _Promoted cultural preservation_: MRS has promoted cultural preservation and sensitivity, enabling tribal students to maintain their cultural identity.

Challenges and Future Directions

1. _Infrastructure development_: MRS requires infrastructure development, including upgraded classrooms, hostels, and sports facilities.
2. _Teacher training_: Teachers in MRS require training on tribal culture, language, and pedagogy to effectively cater to tribal students' needs.
3. _Community engagement_: MRS requires ongoing community engagement and participation to ensure that the schools remain responsive to tribal communities' needs and concerns.

Conclusion

This exploratory study aimed to investigate the effectiveness of Model Residential Schools (MRS) in bridging the educational gap for tribal communities in Kerala. The study employed a qualitative research approach, using in-depth interviews, focus group discussions, and observations to collect data from three MRS in Kerala. The findings of this study suggest that MRS has been successful in providing access to quality education for tribal students, promoting academic achievement, cultural preservation, and empowerment. The schools have also fostered a sense of community and belonging among tribal students, enabling them to overcome the challenges of educational marginalization. However, the study also revealed several challenges faced by MRS, including infrastructure development, teacher training, and community engagement. These challenges highlight the need for ongoing support and development to ensure the sustainability and effectiveness of MRS.

References :

1. *Kerala State Tribal Welfare Department*. (2020). Annual Report 2019-2020. Thiruvananthapuram: Government of Kerala. This report provides an overview of the tribal welfare initiatives in Kerala, including the Model Residential Schools.
2. *National University of Educational Planning and Administration*. (2019). Elementary Education in India: Progress and Challenges. New Delhi: NUEPA. This report provides an overview of the elementary education sector in India, including the challenges faced by tribal communities.
3. *Kumar, S.* (2018). Education of Tribal Children in India: Issues and Challenges. Journal of Educational Research, 11(1), 1-12. This article examines the issues and challenges faced by tribal children in accessing quality education in India.
4. *Raj, S.* (2017). Tribal Education in Kerala: A Critical Analysis. Journal of Tribal Education, 3(1), 1-15. This article provides a critical analysis of tribal education in Kerala, highlighting the challenges and opportunities.

5. *Government of Kerala*. (2015). Kerala State Education Policy. Thiruvananthapuram: Government of Kerala. This policy document outlines the state government's vision for education in Kerala, including initiatives for tribal communities.
6. *UNICEF*. (2014). India's Tribal Children: A Status Report. New Delhi: UNICEF India. This report provides an overview of the status of tribal children in India, including their access to education and healthcare.
7. *National Commission for Scheduled Tribes*. (2013). Report of the National Commission for Scheduled Tribes, 2012-2013. New Delhi: Government of India. This report provides an overview of the status of tribal communities in India,

Mail id : rahulvijayan0000@gmail.com **Ph no : 9946440615**

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 March 2025 Page No. : 50-52
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

सावित्री बाई फुले का महिला–शिक्षा और समाज सुधार में योगदान

मनीष सुमन, सहायक आचार्य इतिहास,
केशव महाविद्यालय, अटरू

सारांश :–

शोध पत्र में सावित्रीबाई फुले द्वारा महिलाओं की शिक्षा और समाज सुधार में योगदान का अध्ययन किया गया है। भारत की पहली महिला शिक्षिका सावित्री बाई फुले का पूरा जीवन महिला शिक्षा और महिला अधिकारों के लिए समर्पित रहा है। महिला सशक्तिकरण के लिए काम करने के दौरान उन्हें कड़े संघर्षो को झेलना पड़ा उन्होंने महिलाओ को शिक्षित करने के लिए अथक प्रयास किए और समाज में व्याप्त कुरीतियों जैसे कन्या शिशु हत्या, बाल–विवाह, सती प्रथा, छुआछूत आदि के खिलाफ आवाज उठाई। अपने पति ज्योतिराव फुले के साथ मिलकर 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना की। 19 वीं शताब्दी में महिलाओं की शिक्षा के लिए तथा समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने के लिए सावित्री बाई फुले ने आवाज उठाई। भारत की महिला शिक्षक तथा सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में इतिहास के पन्नो में सावित्री बाई फुले का नाम अमिट रहेगा।

उद्देश्य :–

1. सावित्री बाई फुले का महिला शिक्षा में योगदान का अध्ययन किया गया।
2. सावित्री बाई फुले ने समाज–सुधार में कई योगदान दिये है।
3. समाज पर सावित्री फुले के प्रभाव का वर्णन किया गया है।

परिकल्पना :–

1. सावित्री बाई फुले ने महिला शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
2. सावित्री बाई के कार्यो का समाज पर सकारात्मक प्रभाव है।

अध्ययन विधि और आंकड़ो का संग्रह :–

प्रस्तुत अध्ययन के लिए ऐतिहासिक अध्ययन पद्धति का उपयोग किया गया है। अध्ययन मे प्राथमिक और द्वितीयक दोनो आंकड़ो का शामिल किया गया है। प्राथमिक डेटा का संग्रह प्रत्यक्ष सर्वेक्षण, साक्षात्कर, अवलोकन, प्रश्नावली और अनुसूची आदि के माध्यम से किया गया है। इस अध्ययन की प्रकृति वर्णनात्मक है।

प्रस्तावना :–

समाज मे व्याप्त बुराइयों के विरूद्ध लड़ने के लिए कुछ लोगो के उठने और संघर्ष करने के अनेक उदाहरण मिलते है, लेकिन उनमें से कुछ ऐसे विशेष व्यक्तित्व होते है जिनके द्वारा दिए गये विचारो और शुरू किये गये उपक्रमों का भावी पीढ़ीयों पर बहुत गहरा असर पड़ता है। ऐसी ही एक महान् विभूति देश की प्रथम महिला शिक्षिका सावित्री बाई फुले थी। समाज सुधार के लिए उनके द्वारा उठाये गये कदम न केवल उनके दौर की पृष्ठभूमि मे महान थे, बल्कि आज भी वे हमारे लिए प्रेरणा के स्त्रोत है, और वर्तमान मे प्रासंगिक भी है।

सावित्री बाई फुले का जीवन परिचय :–

सावित्री बाई फुले का जन्म 3 जनवरी 1831 में महाराष्ट्र के नायगांव में पिता खन्दोजी नेवसे व माता लक्ष्मी के घर हुआ। 1840 में 9 वर्ष की आयु मे उनका विवाह समाज–सुधारक ज्योतिराव (ज्योतिबा) फुले के साथ हुआ। विवाह के समय वे अनपढ़ थी। जिस दौर मे सावित्री बाई फुले पढने का सपना देख रही थी, उस दौर मे अस्पृश्यता, छुआछूत, भेदभाव जैसी कुरीतियां चरम पर थी। उसी दौरान

की एक घटना के अनुसार एक दिन सावित्री बाई अंग्रेजी की किसी पुस्तक के पन्ने पलट रही थी, तभी उनके पिताजी ने देख लिया। वह दौड़कर आए और उनके हाथ से पुस्तक छीनकर घर से बाहर फेंक दी। कारण सिर्फ इतना था उस दौर में शिक्षा का अधिकार केवल उच्च जाति के पुरूषों को ही था। दलित और महिलाओं के लिए शिक्षा ग्रहण करना पाप समझा जाता था। बस उसी दिन से सावित्री बाई फुले ने वह पुस्तक वापस लाकर प्रण कर कि लिया कुछ भी हो जाए वह एक न एक दिन पढ़ना जरूर सीखेगी।

सावित्री बाई फुले व नारी शिक्षा :–

सावित्री बाई फुले के पति ज्योतिबा फुले उनके जीवन मे शिक्षक बनकर आए। 1841 मे पढ़ने–लिखने का प्रशिक्षण उन्हे ज्योतिबा फुले से ही मिला। पूना मे अंग्रेज अधिकारी रे जेम्स मिचेल की पत्नी नारी शिक्षा की पक्षधर थी। अतः नार्मल स्कूल द्वारा सावित्री बाई फुले को विधिवत् अध्यापिका का प्रशिक्षण दिया गया। अंग्रेजी भाषा मे पारंगत होने के बाद सावित्री बाई फुले ने टामसन क्रेक्सन की जीवनी पढ़ी। टामसन नीग्रो लोगों पर हुए जुल्मों के विरूद्ध न केवल लड़े थे, बल्कि कानून बनवाने में भी सफल हुए थे। उनकी जीवनी पढ़कर सावित्री बाई फुले बहुत प्रभावित हुई। वे भारत मे अछूत और स्त्रियों की गुलामी के प्रति चिंतित थी। सावित्री बाई फुले ने अपने पति दलित–चिंतक व समाज–सुधारक ज्योतिराव फुले से प्रेरणा प्राप्त कर सामाजिक चेतना को आगे बढाया। उन्होंने जनवरी 1848 से लेकर मार्च 1852 के दौरान तीन सालों में अपने पति और सामाजिक क्रांतिकारी नेता ज्योतिबा फुले के साथ मिलकर लगातार एक–एक करके बिना किसी आर्थिक मदद और सहायता के लड़कियों के लिए 18 स्कूल खोलकर, शैक्षणिक–सामाजिक क्रांति का शंखनाद किया। इस तरह का क्रांतिकारी और समाज व्यवस्था में बदलाव लाने वाला काम देश में सावित्री बाई फुले से पहले किसी और ने नहीं किया था लेकिन तत्कालिक जातिवादी व महिला शिक्षा के विरोधी लोगों द्वारा सावित्री बाई फुले को प्रताड़ित किया जाने लगा। जब भी सावित्री बाई फुले स्कूल जाती थी तो लोग उन पर पत्थर और गोबर फेंक दिया करते थे। ऐसा प्रतिदिन होता था लेकिन सावित्री बाई पीछे नही हटी और उन्होंने इसका हल भी ढूंढ लिया। वे अपने साथ एक अतिरिक्त साड़ी भी लेकर जाने लगी ताकि वहां जाकर साड़ी बदल सके। भारी विरोध व प्रताड़ना के बाद भी सावित्री बाई फुले ने स्कूल जाना नही छोड़ा। सावित्री बाई फुले देश की माहिला शक्ति के लिए एक मिसाल और प्रेरणा है कि अगर दृढ़ संकल्प और इच्छाशक्ति हो तो समाज में नई चेतना का विस्तार किया जा सकता है। सावित्री बाई फुले को देश की प्रथम प्रशिक्षित महिला शिक्षिका होने का गौरव प्राप्त है। उन्होंने ऐसे समय में शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करना शुरू किया, जब शिक्षा के सारे द्वार महिलाओं के लिए बंद प्रायः थे। महिलाओं को पैरों की जूती कहा जाता था। महिला का जीवन चूल्हे–चौके और बच्चे पैदा करने में, पति की सेवा तक ही सीमित था। उनकी इच्छी, रूचि, अभिरूचि व मान–सम्मान का कोई मूल्य नहीं था। उच्च जाति के समुदायों की महिलाओं की स्थिति भी सोचनीय थी परन्तु दलित व पिछड़ी महिलाओं की स्थिति अत्यधिक चिंतनीय थी। लेकिन सावित्री बाई फुले अटूट संकल्प के साथ महिला शिक्षा एवं सामाजिक क्रांति के लिए प्राण–प्रण से जुटी हुई थी। सावित्री बाई फुले देश में महिला शिक्षा जागृति एवं सामाजिक चेतना आंदोलन की प्रवर्तक थी। वे नारी शिक्षा एवं दलित महिला आन्दोलन की साहसी अग्रदूत महिला थी, वहीं वे एक कुशल सामाजिक कार्यकर्ता भी थी। सावित्री बाई फुले कोई साधारण माहिला नहीं थी जिन्हें इतिहास के गर्भ में छुपा दिया जाए और वे गुमनामी के अंधेरो मे छुप जाए। सावित्री बाई फुले ने 1853 मे बालहत्या प्रतिबंधक गृह स्थापित किये जिसमें विधवाएं अपने बच्चों को जन्म दे सकती थी। अगर वो उसे वहां छोड़कर भी जा सकती थी क्योंकि उस समय विधवा को उसके सगे संबंधी या अन्य गर्भवती बना कर छोड़ देते थे। परिवार व समाज द्वारा उन्हे अपनाने से इनकार कर दिया जाता था। इससे बचने के लिए विधवा महिलायें अपने बच्चों को आश्रय के लिए छोड़ देती थी। तत्कालीन समाज की ऐसी विकट समस्याओं के लिए सावित्री बाई फुले का कार्य बेहद सराहनीय था। सावित्री बाई फुले और ज्योतिबा फुले ने 24 सितम्बर 1873 को 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना की। जिसके माध्यम से विधवा विवाह की परंपरा शुरू की और इस संस्था के द्वारा प्रथम विधवा पुनर्विवाह 25 दिसंबर 1873 को सम्पन्न करवाया गया। इसके अलावा उन्होंने मजदूरों के लिए एक रात्रिकालीन स्कूल खोला ताकि दिन में काम करने वाले मजदूर रात में पढ़ भी सकते है। उन्होंने दलित–वचिंतों के लिए अपने घर का कुआं भी खोल दिया था यह उस समय की बहुत बड़ी घटना थी क्योंकि लोग उन्हें सार्वजनिक कुएं से पानी

नही लेने देते थे। वर्ष 1998 में उनके सम्मान में भारत सरकार द्वारा डाक टिकट जारी कर उनके कार्यो को याद किया गया। एक बार पुणे में प्लेग फैला तो सावित्री बाई फुले 66 वर्ष की अवस्था में अपने पुत्र डॉ. यशवंत के साथ पूरी मेहनत व तन–मन से रोगियो की सेवा में जुटी रही, लेकिन दुर्भाग्य से सावित्री बाई फुले प्लेग का शिकार हो गई और 10 मार्च 1897 को इस महान् विभूति का निधन हो गया।

निष्कर्ष :–

भारत की पहली महिला शिक्षक के रूप में सदैव ही सावित्री बाई फुले का नाम जाना जाएगा महिलाओ की शिक्षा एवं समाज सुधार के कार्यो में उन्होंने अपने जीवन को समर्पित कर दिया। जो स्वयं पिछड़ी जाति से थी उसने स्वयं को शिक्षित कर, महिलाओं को शिक्षा रूपी प्रकाश से प्रकाशित कर जीवन जीने की कला सिखाई। समाज के उत्थान के लिए अपनी अंतिम सांस तक प्रयत्नशील रही।

संदर्भ सूची :–

* खुराना के.एल. मॉडेम इंडियन, 2002 लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा 3
* घडिमाल रिहाना (संपादक) भारतीय समाज में महिलाएं एक पाठक ऋषि प्रकाशन, नई दिल्ली
* जोशी तारकीता लक्ष्मणश्रेष्ठ, 1997 पब्लिकेशन डिवीजन, पटियाला हाउस, नई दिल्ली – 110001
* कीर धनंजय –महात्मा ज्योतिराव फुले – भारत क्रांति के जनक
* उपदेश एच सी.–भारत मे महिलाओं की स्थिति खंड–2 अनमोल प्रकाशन, नई दिल्ली

पत्र–पत्रिकाएं :–

* सुबोध पत्रिका
* रॉयल बुलेटिन पत्रिका
* दलित टुडे – संपादक वेद कुमार
* मासिक पत्रिका – हम दलित
*राजस्थान पत्रिका
* दीनबंधु

पता – मनीष सुमन
प्रताप नगर – 1st , छबड़ा जिला – बारॉ (राजस्थान) पिन कोड – 325220
मोबाईल – 9829194315
ई–मेल – manishsuman792@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 March 2025 Page No. : 53-56
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिंदी उपन्यासों में भारतीय किसान एक अध्ययन

डॉ. अशोक कुमार, सह आचार्य, हिंदी विभाग,
केन्द्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश, धर्मशाला।

किसी भी राष्ट्र में किसान उस देश की अर्थ व्यवस्था के धुरी होते हैं। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था ''भारत का हृदय गांवों में बसता है, गांवो की उन्नति से ही भारत की उन्नति सम्भव है। गांवों में ही सेवा और परिश्रम के अवतार कृषक रहते हैं। लेकिन भारतीय किसानों के जीवन की त्रासदी रही है कि स्वतन्त्रता से लेकर आज तक इनकी स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आया। अन्नदाता कहे जाने वाले कृषक अतिवृष्टि–अनावृष्टि, अकाल, पाले की मार आदि कई कारणों से आत्महत्या के लिए विवश है। मुगुल और ब्रिटिश काल में भारतीय कृषक तत्कालीन शासकों, सामन्तों, जमीनदारों के अत्याचार एवं लगान से परेशान थे। आजादी के पश्चात किसानों की स्थिति में अपेक्षित सुधार नहीं हुआ।'' 1950 के दशक में एकल घरेलू उत्पादन में कृषि क्षेत्र का योगदान जहां 50 प्रतिशत था, अब 2017–18 में करीब 16.4 प्रतिशत रह गया।''[1] मुंशी प्रेमचन्द ने ''गोदन'' उपन्यास में किसानों की समस्या को ऐसे सामाजिक परिप्रेक्ष्य में चित्रित किया है कि वे अपने राग–विराग, त्याग–स्वार्थ, सत्य–असत्य, भोलेपन आदि के द्वन्द्व में पाठकों के मन में सहानुभूति उत्पन्न कर कृषकों की त्रासदी को बड़े सामाजिक यथार्थ की पहचान कराते हैं। उपन्यास के आरम्भ में होरी अपनी पत्नी धनिया से कहता है ''जब दूसरों के पांवों तले अपनी गर्दन दबी हुई हो तो उन पांवों को सहलाने में ही कुशल है।''[2] प्रेमचन्द द्वारा रचित 'गोदान' उपन्यास में होरी को भारत के सभी गांवों के किसानों का प्रतिनिधि माना जा सकता है। होरी की गाय पालने की इच्छा प्रत्येक किसान की इच्छा है। भारतीय किसान खेती को मरजाद समझता है, इसकी अभिव्यक्ति होरी की इस उक्ति से हो जाती है। ''हमी को खेती से क्या मिलता है? जो दस रूपए महीने का भी नौकर है वह भी हमसे अच्छा खाता पहनता है। लेकिन खेतों को तो छोड़ा नहीं जाता, मरजाद भी तो पालना पड़ता है।''[3]

आज भी अधिकतर किसान पारम्परिक मर्यादा के नाम पर खेतीबाड़ी को बोझ की तरह ढो रहे हैं कृषि कर्म के प्रति मन में कोई श्रद्धा नहीं है। राष्ट्रीय सर्वेक्षण संगठन के आंकड़े बताते हैं –''कि भारत के 45 प्रतिशत किसानों को यदि कोई और काम मिल जाए तो वे खेती बाड़ी छोड़ने को राजी है।''[4] भारत में ऐसे भी किसान है जिनके पास 2 हेक्टैयर से कम जमीन है, लेकिन कृषि योग्य साधन भी उपलब्ध नहीं है। सरकार कई योजनाओं को कृषकों के हित में क्रियान्वित की जा रही है लेकिन ये योजनाएं व्यावहारिक धरातल पर फलीभूत नही हो रही है। राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (नावार्ड) के आंकड़े बताते हैं कि देश में कृषि से जुड़े 52.5 प्रतिशत परिवार आज भी कर्ज के बोझ तले जी रहे हैं। ग्रामीण परिवारों को खुशी के बजाय दैनिक मजदूरी करने से ज्यादा आमदनी मिल रही है।''[5] सरकार की योजनाएं व्यावहारिक धरातल पर इसलिए फलीभूत नहीं हो रही है कुछ सामर्थ्यवान कृषक कृषि साधनों के लिए बैंक से इसलिए कर्ज लेते हैं ताकि भविष्य में सरकार पर दबाव डालकर कर्ज माफ किया जा सके, जिन कृषकों को यथार्थ में कर्ज की जरूरत होती है वह दिवालियापन के डर से कर्ज नहीं लेते। मुंशी प्रेमचन्द ने 'गोदान' में किसानों का जो यथार्थ चित्रण किया है, उससे स्पष्ट होता है कि प्रेमचन्द को किसान वर्गीय की गहरी समझ थी। प्रेमचन्द का किसान स्वभाव से विद्रोही न होकर निजी सम्पत्ति के संबंधों पर टिका वह किसान है जिन्हें फसलों से उचित आय प्राप्त नहीं होती। व्यापारी, पूजीपति किसानों से सस्ते मूल्य पर खरीदे गए फसलों, फलों, सब्जियों आदि को बाजारों में ऊंची दरों पर बेच देते हैं। प्रसिद्ध कवि

सुदामा पाण्डेय धूमिल ने यही यक्ष प्रश्न देश की सरकार, न्याय, प्रशासन और लोकतांत्रिक व्यवस्था के सामने रखा है।

''एक आदमी रोटी बेलता है
एक आदमी रोटी खाता है
एक तीसरा आदमी भी है
जो न बेलता है, न रोटी खाता है
वह सिर्फ रोटी से खेलता है
मैं पूछता हूं
यह तीसरा आदमी कौन है?
मेरे देश की संसद मौन है।''[6]

आधुनिक परिपेक्ष्य में सरकार किसानों की समस्याओं को नजर–अंदाज नहीं कर रही है। किसानों की दशा में सुधार के हर संभव प्रयास कर सकारात्मक कदम उठा रही है, ''मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना, जैविक खेती योजना, फसल बीमा योजना, राष्ट्रीय गोकुल मिशन, प्रधानमंत्री ग्राम सिंचाई याजना, मनरेगा, राष्ट्रीय कृषि आयोग का गठन, रूरल नालेज सेन्टर्स, किसान क्रेडिट कार्ड कृषि सम्बन्धी कार्यक्रमों का प्रसारण हेतु ''कृषि चैनल'' की शुरूआत जैसे कई योजनाएं किसानों के हित के लिए प्रारम्भ की गई है। फिर भी ''वैश्विक हंगर इंडेक्स'' ने विश्व के 119 देशों के लिए जो रैकिंग जारी की है उसमें विश्व की छठी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होने का दावा करने वाली भारतीय अर्थव्यवस्था की रैंक 103वीं है।''[7] खाद्य उत्पादन में आत्म निर्भर होने वाला यह देश विरोधाभास की स्थिति में है, जहां एक तरफ सरकार की पहल से खाद्यानों का उत्पादन बढ़ रहा है, वहीं दूसरी तरफ बढती हुई आवादी और भ्रष्टाचार के कारण सरकार की योजनाएं व्यावहारिक धरातल पर सफल नहीं हो पा रही है। कृषि उत्पादन में वृद्धि के बावजूद काफी आबादी कुपोषण के शिकार हैं। इसके परिणामस्वरूप आज के किसानों का यह असन्तोष तथा आन्तरिक विद्रोह गोदान के गोवर की तरह गांव से शहर की ओर मजदूरी के लिए पलायन करने को मजबूर करता है। 'गोदान' उपन्यास में जब होरी कर्ज से मुक्ति पाने के लिए पारिवारिक प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए अन्यायों तथा कष्टों को सहता हुआ सतत परिश्रम करता है तब लू लगने से एक मजदूर उससे कहता है ''तुम तो बहुत दुर्बल हो गए हो, दादा'' तो होरी हंस कर कहता है तो क्या मोटे होने के दिन हैं। मोटे वह होता है जिन्हें न दिन की सोच होती है न इज्जत की। इस जमाने में मोटा होना बेहयाई है। सौ को दुबला कर के तब एक मोटा होता है। ऐसे मोटेपन में क्या सुख? सुख तो जब है कि सभी मोटे को।''[8] होरी के जीवन का यह अनुभव समस्त भारतीय किसानों के जीवन अनुभव का निचोड है। प्रेमचन्द ने प्रेमाश्रम उपन्यास में भूमिपति और कृषक वर्ग के पारस्परिक संघर्ष का वित्रण हुआ है। एक ओर लखनपुर गांव के किसान अपनी शक्ति बटोर कर जूझता है , फिर बिखर जाता है, दूसरी ओर ज्ञानशंकर के कारिन्दे तहसीलार, थानेदार जैसे व्यवस्थापकों की विशाल सेना से समस्त ग्रामीणों को कुचल डालने के लिए कटिबद्ध है। प्रेमशंकर व्यवस्था के उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं जो व्यवस्थापकों, पूंजीपतियों तथा जमीनदारों की आलोचना करते हैं लेकिन अपने सिद्धान्त को साकार रूप देने का प्रयास नहीं करते। वह अपने भाई ज्ञानशंकर का मुकाबला करने में गांव का साथ नहीं देते हैं। एक स्थान पर प्रेमशंकर कहता है–''मेरा सिद्धान्त है कि मनुष्य को अपनी कमाई खानी चाहिए। यहीं प्राकृतिक नियम है किसी को यह अधिकार नहीं कि वह दूसरों की कमाई को अपनी जीवन वृत्ति को आधार बनाए।''[9] प्रेमाश्रम उपन्यास के संदर्भ में डॉ0 रामविलास शर्मा का कथन है कि हिन्दी में किसानों की समस्याओं पर ज्यादा उपन्यास लिखे ही नहीं गए, जो लिखे भी गए, प्रेमचन्द की सूझबूझ का अभाव है। उपन्यास में प्रेमचन्द ने किसानों के छिपे साहस, धीरता, मनोबलों तथा कृषकों की संघर्षशीलता का चित्रण मात्र कोरी कल्पना नहीं अपितु यथार्थ ही यथार्थ है। आज भी इस प्रकार की समस्याओं का मूल कारण अर्थिक विषमता है। इस आर्थिक विषमता या जमीनदारी प्रथा ने अमीर–गरीब किसानो में ऐसा असन्तुलित विभाजन कर दिया है कि जमीनदारों के पास सैंकड़ों हैक्टेयर खेत है और जबकि कई किसानों के पास छोटे खेत है और कई खेतहीन। किसानों के बीच आर्थिक असन्तुलन की विडम्बना तब भयानक हो जाती है जब धनबल, भुजाबल, द्वारा जमींदार न्याय, प्रशासन द्वारा मलकियत का जामा पहनाया जाता है और निर्धन कृषक भय के कारण समझौता का रास्ता अपनाकर अत्याचार बर्दाश्त कर लेते हैं। इन परिस्थितियों के कारण किसानों

की आत्म हत्या में बढौतरी हुई है। एक सर्वेक्षण के अनुसार 2015 में 4595 खेतिहर मजदूरों ने आत्म हत्या की जबकि 2016 में आत्म हत्या करने वाले खेतिहर मजदूरों की संख्या 5019 हो गई।''[10] गोदन में सर्वप्रमुख समस्या किसान की ही है। रायसाहब जैसा जमीनदार की तरह आदर्शवादी सिद्धान्त रखते हुए बेगार लेने में संकोच नहीं करता, जैसे आज की व्यवस्था में बैठे चन्द भ्रष्ट अधिकारी किसानों से रिश्वत लेने में संकोच नहीं करते। गांव के महाजन, पटेश्वरी, नोखेराम, मातादीन, झिंगुरी सिंह जो कि मृत्यु के पश्चात निर्धन किसान का शोषण करते हैं। यदि कोई व्यक्ति समाज में मानवतावादी स्तर पर नैतिकता और मानव मूल्यों को स्थापित करने का प्रयास करता है तो समाज के ठेकेदार उस पर टूट पड़ते हैं। गोदान में होरी का जीवन इसी व्यक्ति और समाज के द्वन्द्व का प्रतिफल है। देश में कई किसान गरीब हैं इसलिए नहीं कि वह मेहनत नहीं करते, काम करना नहीं जानते, अपितु इसलिए हैं कि वे उस समाज में रहते हैं जहां शोषक वर्ग के फैलाए जाल के सिवा कुछ नहीं है। यही शोषक राजनीतिज्ञों व्यवस्थापकों से सांठगांठ रखते हैं और किसानों की आधे से ज्यादा कमाई इनकी जेब में चली जाती है। ''संयुक्त परिवार'' हमारी संस्कृति की विशेषता रही है। लेकिन परस्पर सौहार्द की भावना न होने के कारण अब यह एकल परिवार में परिवर्तन हो रहा है। 'गोदान' उपन्यास में होरी, हीरा, शोभा तीनों सगे भाई हैं। किन्तु परस्पर आत्मीयता न होने के कारण भाई–भाई, पिता–पुत्र के बीच निर्मल रिश्ता नहीं रह पाता। आधुनिक परिवेश में पारिवारिक और दांपत्य जीवन पूर्णतया अस्त–व्यस्त है। जब भी ग्रामीण परिवेश में कोई कमाने लायक हो जाता है वह गांव छोड़ कर बाहर चला जाता है। संयुक्त परिवार के विघटन से भाई–भाई में जमीन का बंटवारा आज की ज्वलंत समस्या है। आबादी दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है और जमीन कम होती जा रही है। इस प्रकार 'गोदान' में होरी नाम के किसान की त्रासदी समूची कृषक संस्कृति की ओर वर्तमान परिवेश में आज के भारतीय कृषकों की त्रासदी है। प्रगतिशील लेखक नागार्जुन द्वारा 1952 में प्रकाशित 'बलचनामा' उपन्यास में निम्नवर्गीय किसान पुत्र की यातनापूर्ण जीवन का मार्मिक चित्रण किया है। पिता के मरने के पश्चात जमींदारों के यहां उसका पुत्र नौकरी करते हुए अमानवीय अत्याचारों को सहना पड़ता है। ''वह किसान जीवन की समस्त पीड़ाओं और अभावों की यात्रा करता है तथा सामाजिक विषमता को भोगता हुआ उसका विश्वस्त साक्षी बनता है। पूरे उपन्यास में किसान का दुख–दर्द और संघर्ष व्याप्त है तथा मानवीय अधिकारों को जकड़ने वाली शोषक जर्जर मान्यताओं, वर्ग व्यवस्थाओं और परम्पराओं पर कलात्मक प्रहार किया गया है।''[11] इस प्रकार भारतीय किसान की जीविका मुख्यतः खेती है। किसान आधुनिक ग्रामीण भारतीय जीवन का दर्पण है। भारतीय किसानों के संदर्भ में विश्व के महान विचारक सिसरो का कथन है ''किसान मेहनत करके पेड़ लगाते हैं पर स्वयं उन्हें ही उनके फल नसीब नहीं हो पाते।'' सतत दिन–रात महनत करके किसानों का जीवन अत्यन्त कठोर संघर्षपूर्ण है। मानसून की अनिश्चितता, प्राकृतिक आपदा, योजनाओं का व्यावहारिक धरातल पर फलीभूत न होना, चन्द भ्रष्ट जमीनदार, अधिकारी, पटवारी, पुलिस, पूंजीपती, धर्मगुरू, राजनीतिज्ञ आदि शोषक शक्तियां जो दिखावे के लिए ऊपर से सभ्य है लेकिन सहानुभूति के नाम पर भीतर से पत्थर, जिन के लिए पैसा ही उनका जीवन मूल्य है।

देश का कृषक सोचता है कि कर्ज माफ कर राजनीतिज्ञ हमारे प्रति संवेदनशील है। इसलिए हमारे जन प्रतिनिधि निश्चित रूप से ढोंग करते हैं। क्योंकि वे अपने पद, ताकत, प्रतिष्ठा, अहंकार के लिए जीते हैं लेकिन आम जनता के सेवक बनने का दिखावा करते हैं। जिस देश की समस्या असली हो और समाधान नकली हो तो उस देश में आम जनता के जीवन में कभी खुशहाली नहीं आ सकती। स्वतन्त्रता के 75 वर्ष पूरे होने पर ''प्रधानमंत्री ने सन 2022–23 तक किसानों की आय दुगनी करने का आहवान किया है जिसे पूरा करने के लिए कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय ने सात बिन्दुओं की रणनीति बनाई है।''[12] इस प्रकार देश की प्रगति के लिए किसानों की प्रगति भारतीय अर्थ व्यवस्था की रीढ है। कई बार योजनाओं के बारे सुनकर भ्रम होता है कि किसानों के अच्छे दिन आने वाले हैं। इन योजनाओं को यथार्थ के धरातल पर सफल बनाने के लिए योजनाओं और किसानों के बीच योजना को लागू करने वाले भ्रष्ट अधिकारियों और दलालों पर अंकुश लगाना होगा। तभी देश के विकास की लड़ाई किसानों द्वारा जीती जाएगी।

संदर्भ सूची :–

1 प्रतियोगिता दर्पण, उपकार प्रकाशन, आगरा, मई 2019, पृष्ठ 173

2 मुंशी प्रेमचन्द, गोदान, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, संस्करण 2008

3 मुंशी प्रेमचन्द, गोदान, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, संस्करण 2008
4 डॉ0 विकास दिव्यकीर्ति, निबन्ध दृष्टि, पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली संस्करण 2016
5 प्रतियोगिता दर्पण, उपकार प्रकाशन, आगरा, मई 2019, पृष्ठ 173
6 सुदामा पाण्डेय धूमिल, रोटी और संसद, रचना पुंज, कमल प्रकाशन बिलासपुर।
7 प्रतियोगिता दर्पण, उपकार प्रकाशन, आगरा, मई 2019, पृष्ठ 173
8 मुंशी प्रेमचन्द, गोदान, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, संस्करण 2006
9 मुंशी प्रेमचन्द प्रेमाश्रम, प्राकशन संस्थान, नई दिल्ली, संस्करण 2008
10 प्रतियोगिता दर्पण, उपकार प्रकाशन, आगरा, मई 2019, पृष्ठ 173
11 रामदरश मिश्र, हिन्दी उपन्यास एक अर्न्तयात्रा, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2016, पृष्ठ 240
12 प्रतियोगिता दर्पण, उपकार प्रकाशन, आगरा, मई 2019, पृष्ठ 173

मोबाईल नम्बर – 8894535331

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 March 2025 Page No. : 57-62
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

मानं च तच्च यत्रोक्तमायुर्वेदः स उच्यते

Dr R Bharanidharan, Assistant Professor,
Department of Sanskrit, Swami Dayananda College of Arts & Science, Manjakkudi, Tiruvarur District, Tamilnadu

आयुर्वेदशब्दः संस्कृतभाषायाः निष्पन्नोऽस्ति। तदर्थोऽस्ति जीवनस्य विज्ञानमिति। आयुर्वेदिकचिकित्सायां व्यक्तेः मनः, शरीरं, आत्मानं, पर्यावरणञ्च मध्ये सन्तुलनं भवति। आयुर्वेदः प्राचीनचिकित्साव्यवस्थासु अन्यतमोऽस्ति। अस्य उत्पत्तिः भारते एव अभवत्। अद्यापि बहूभिः जनैः उपयुज्यते। आयुर्वेदिकचिकित्सा आहारपरिवर्तनेन, ओषधीद्वारा, योगाभ्यासेन, ध्यानेन वा क्रियते।

प्राचीनाचार्यानां व्याख्यानुसारम् आयुर्वेदस्य अर्थः अतीवविस्तृतोऽस्ति। आयुर्वेदे शरीरेन्द्रियमनात्मनां संयोगः आयुः इति उक्तम्। संपत्तिविपत्त्यनुसारम् आयुः तस्य बहुविधं भवति, संक्षेपेण तु प्रभावभेदानुसारं चतुर्विधं मन्यते। यः केनचित् प्रकारेण शारीरिकमानसिकविकासराहित्यः, ज्ञानविज्ञानबलपौरुषधनयशकुटुम्बादि संसाधनसमृद्धः व्यक्तिः सुखायुः इति कथ्यते। एवं प्रत्युत सर्वसम्पदां सन् शारीरिकमानसिकरोगेण पीडितो वा स्वस्थो वा भवति चेदपि, व्यक्तिः संसाधनहीनः अथवा आरोग्यसम्पदां द्वयोरुपरि नीचः भवति यः, सः व्यक्तिः दुःखायुः इति कथ्यते। यः व्यक्तिः आरोग्यसम्पद्युक्तः अथवा तेष्वभावेऽपि विवेकनैतिकसौम्योदारसत्यमहिंसाशान्तिदानमित्यादिगुणैः सम्पन्नयुक्तः, समाजस्य जनस्य च कल्याणे निरतमस्ति सः हितायुः इति उच्यते। प्रत्युतः यस्य अविवेकित्वं, क्रूरत्वं, दुराचारत्वं, स्वार्थत्वं, दम्भत्वं, उत्पीडनत्वादि दुष्टगुणाः परिपूर्णाः सन्ति, सः अहितायुः इति कथ्यते। एवं प्रकारेण हितायुः, अहितायुः, सुखायुः, दुःखायुः इति चत्वारः भेदाः सन्ति। तथा च कालावधि अनुसारं दीर्घायुः, मध्यायुः, अल्पायुः च त्रिविधः सन्ति। तथापि एतेषु त्रिष्वपि बहवः भेदाः कल्प्यन्ते।

वेद शब्दस्य अर्थो भवति शक्तिः, लाभः, वेगः, विचारः, प्राप्तिः, ज्ञानसाधनञ्चेति। तथा च आयुषः वेदः आयुर्वेदः जीवनविज्ञानस्य ज्ञानम् इति कथ्यते। अर्थात् यस्मिन् शास्त्रे आयुषः स्वरूपम्, तद्भेदान्, तद्धितकारकं, तज्ज्ञानसाधनानामध्ययनं, जीवनस्य शरीरेन्द्रियमनात्मविकासेन सह

कल्याणसुखदीर्घायुस्साधनानि, तद्बाधकप्रकरणोन्मूलनार्थमुपायान् वर्ण्यते। परन्तु अद्यत्वे आयुर्वेदस्य प्रयोगः प्राचीनभारतीयचिकित्साव्यवस्था इति सङ्कीर्णार्थे भवति।

आधुनिकयुगे आयुर्वेदस्य महत्त्वम्

अद्यतनकाले यदा जीवनशैलीसम्बद्धाः रोगाः वर्धन्ते तदा आयुर्वेदस्य महत्त्वमपि अधिकं वर्धितमस्ति। एवं चिकित्साविधयः जनानां प्राकृतिकं स्वस्थजीवनं कर्तुं साहाय्यं कुर्वन्ति। अधुना आयुर्वेदस्य आधुनिकविज्ञानेन सह प्राचीनपद्धतीः संयोजयित्वा नवीनाः चिकित्साविधयः विकसिताः सन्ति।

आयुर्वेदः - आयुः, वेदः। आयुषः वेदः इति। भारतीय उपमहाद्वीपे विद्यमानं मूलं वैकल्पिकस्य चिकित्साव्यवस्था अस्ति। भारते, नेपाले, श्रीलङ्कादेशे च आयुर्वेदस्य उपयोगः भवति, यत्र प्रायः 80 प्रतिशतं जनाः अस्य उपयोगं कुर्वन्ति। आयुर्वेदसदृशः शब्दः चिकित्साविज्ञानं विज्ञानशाखा च अस्ति तच्च ज्ञानं विना रोगेण जीवनं कर्तुं, पीडितरोगान्मुक्तिं दातुं वा आयुर्वर्धनार्थं च भवति।

आयुर्वेदग्रन्थाः त्रिविधभौतिकदोषाणामसन्तुलनमेव रोगस्यकारणं, सन्तुलनं स्वास्थ्यमिति मन्यन्ते। आयुर्वेदः स्कन्धत्रयं वा सूत्रत्रयमिति अपि उच्यते। एतत् स्कन्धत्रयं सूत्रत्रयञ्च भवति यत् हेतुः, लिङ्गः, औषधञ्च। तथैव सम्पूर्णायुर्वेदिकचिकित्सायां ये अष्टभागाः तत् अष्टाङ्गवैद्यमिति मन्यते। तत्र अष्टाङ्गाः भवन्ति तच्च कायचिकित्सा, शाल्यतन्त्रम्, शालक्यतन्त्रम्, कौमारभृत्यः, अगदतन्त्रम्, भूतविद्या, रसायनतन्त्रम्, वाजिकरणमति। केचन जनाः आयुर्वेदस्य सिद्धान्तव्यवहारयोः च महत्त्वं ददति, ब्रह्मणा स्वजनस्य हिताय दत्तमिदं चिकित्सिकविज्ञानम्। अन्ये आद्यविज्ञानं मन्यन्ते।

परिभाषा एवं व्याख्या

आयुर्वेदयति बोधयति इति आयुर्वेदः। अर्थात् जीवनस्य ज्ञानप्रदं शास्त्रम् आयुर्वेदः इति। स्वस्थानां रोगीनाञ्च कृते यत् विज्ञानम् उत्तमं मार्गं दर्शयति सः आयुर्वेदः इति कथ्यते। अर्थात् यस्मिन् शास्त्रे आयुश्शाखा, आयुर्विद्या, आयुस्सूत्रम्, आयुर्ज्ञानम्, आयुर्लक्षणम्, आयुस्तन्त्रं शरीररचना, शारीरिकक्रियाः च एतेषां सर्वेषां विषयाणां ज्ञानमुपलब्धमस्ति, सः आयुर्वेदः इति कथ्यते।

हिताहितं सुखं दुःखमायुस्तस्य हिताहितम्।
मानं च तच्च यत्रोक्तमायुर्वेदः स उच्यते।। चरकसंहिता 1.40

आयुर्वेदस्य इतिहासः

तत्त्वविदां मते विश्वस्य प्राचीनतमं पुस्तकमस्ति ऋग्वेदः। विभिन्नाः विद्वांसः अस्य रचनाकालः ख्रीष्टात् पूर्वं त्रिसहस्रात् पञ्चाशत्सहस्रवर्षाणि यावत् इति मन्यन्ते। ऋग्वेदसंहितायामपि आयुर्वेदस्य परममहत्त्वस्य सिद्धान्ताः सर्वत्र विकीर्णाः सन्ति। चरकः, सुश्रुतः, कश्यपः इत्यादयः आयुर्वेदः अथर्ववेदस्य उपवेदमिति मन्यन्ते। अनेन ज्ञायते यत् आयुर्वेदस्य सिद्धा प्राचीनतमा भवति। आयुर्वेदस्य प्राचीनग्रन्थानुसारम् एषा चिकित्साव्यवस्था देवेषु आसीत्, यस्य ज्ञानं देवैः मानवकल्याणार्थं पृथिव्याः महास्वामीभ्यः दत्तमासीत्। अश्विनीकुमारः अस्य शास्त्रस्य आदिमः आचार्यः

इति मन्यते यः दक्षप्रजापतेः शरीरस्य उपरि बकस्य शिरः संलग्नम् इत्यादीनि अनेकचमत्कारिकानि उपचाराणि कृतवान्नासीत्। इन्द्रः अश्विनीकुमारेभ्यः एतत् ज्ञानं प्राप्तवान्। इन्द्रः धन्वन्तरिं पाठयति स्म। काशीराजः दिवोदासः धन्वन्तरी अवतारः इति कथ्यते। विभिन्नसम्प्रदायस्य अनुसारं तेषां प्राचीनः प्रथमः आचार्यः आत्रेयः, सुश्रुतः इति वदन्ति। तेषां समीपं गत्वा आयुर्वेदस्य अध्ययनं कृतवान्। अत्रिः, भारद्वाजश्च अस्य शास्त्रस्य प्रवर्तकौ स्मृतौ। आयुर्वेदस्य आचार्याः भवन्ति ये अश्विनीकुमारः, धन्वन्तरिः, दिवोदासः काशिराजः, नकुलः, सहदेवः, अत्रिः, च्यवनः, जनकः, बुधः, जाबालिः, पैलः, अगस्त्यः एवं सुश्रुतः, चरकः चेति। ब्रह्मा आयुर्वेदम् अष्टभागेषु विभज्य प्रत्येकभागस्य नाम तन्त्रम् इति अस्थापयत्। अष्टाङ्गायुर्वेदस्य अन्तर्गताः देहतत्त्वम्, शरीरविज्ञानम्, शस्त्रविद्या, भेषजम्, द्रव्यगुणतत्त्वम्, चिकित्सातत्त्वम्, धातृविद्या अपि सन्ति। तदतिरिक्तं सदृशचिकित्सा, विरोधीचिकित्सा, जलचिकित्सा, प्राकृतिकचिकित्सा, नाडीविज्ञानम् इत्यादयः अद्यत्वे नवीनचिकित्साव्यवस्थानां मूलसिद्धान्ताः अपि 2500 वर्षपूर्वं सूत्ररूपेण लिखिताः दृश्यन्ते।

आयुर्वेदस्य कालविभाजनम्

आयुर्वेदस्य इतिहासं मुख्यतया त्रिधाभागेषु विभक्तमस्ति।

संहिताकालः

संहिताकालस्य समयः पञ्चमशताब्याः षट्शताब्याः यावदिति मन्यते। स च कालः आयुर्वेदस्य मौलिकरचनानां युगोऽभवत्। अस्मिन् समये आचार्यैः स्वप्रतिभा, अनुभवस्य बले भिन्नशरीराङ्गानां विषये स्वस्य विद्वाद् ग्रन्थाः प्रकाशिताः। आयुर्वेदस्य मुनित्रयस्य चरकसुश्रुतवाग्भटस्य च उदयकालः संहिताकालोऽपि अस्ति। चरकसंहिता इति पुस्तकस्य माध्यमेन कायचिकित्साक्षेत्रे अद्भुतसफलता अस्य कालस्य प्रमुखं वैशिष्ट्यमस्ति।

व्याख्याकालः

नागार्जुनः येन योगशतकं नामक चिकित्साग्रन्थः लिखितः। प्रायः दार्शनिकः नागार्जुनः, वैद्यकः नागार्जुनः च भिन्नव्यक्तिः इति मन्यते। अस्य कालखण्डः सप्तशताब्याः पञ्चदशशताब्याः यावत् इति मन्यते, अयं कालः आलोचनानां भाष्यकाराणाञ्च कृते प्रसिद्धोऽस्ति। अस्मिन् काले भाष्यकाराः संहिताकालस्य लेखनानां विषये परिपक्वाः स्वस्थाः च व्याख्याः कृताः। अस्य कालस्य आचार्यडल्हणस्य सुश्रुतसंहिता टीका आयुर्वेदजगति अतीव महत्त्वपूर्णा इति मन्यते। रसरत्नसमुच्चयः इति शोधपुस्तकमपि अस्य कालस्य सृष्टिरस्ति यते आचार्यवाग्भटेन चरकसुश्रुतसंहिता आधारेण अनेकेषां रसायणशास्त्रज्ञानां कृतिषु च लिखितमस्ति।

विवृतिकालः

अस्य कालस्य समयः चतुर्दशशताब्याः आरभ्य आधुनिककालपर्यन्तम् इति मन्यते। अयं कालः विशिष्टविषयेषु पुस्तकलेखनस्य कालोऽभवत्। अस्मिन् काले माधवनिदानः, ज्वरदर्पणः आदि ग्रन्थाः अपि रच्यन्ते स्म। अस्मिन् काले विविधचिकित्सारूपेषु अपि विशेषं ध्यानं दत्तम्, ये अद्यत्वेऽपि

प्रासङ्गिकाः सन्ति। अस्मिन् काले आयुर्वेदस्य विस्तारः, बृहत्प्रमाणेन उपयोगः च क्रियते। आयुर्वेदस्य प्राचीनता वेदकालादेव सिद्धा इति स्पष्टम्। आधुनिकचिकित्साशास्त्रे सामाजिकचिकित्सा नूतना विचारधारा इति मन्यते। परन्तु सा नूतना विचारधारा नास्ति, अपितु केवलं तस्याः पुनारावृत्तिः एव यस्याः उल्लेखः 2500वर्षाणाम् अधिककालपूर्वम् आयुर्वेदेऽभवत्। तस्य सर्वेषां सिद्धान्तानां प्रत्येकं वचनम् एतावता वर्षाणाम् अनन्तरमपि सूक्ष्मस्थूलरूपेण सत्यं सिद्धं भवति। यथा किञ्चित्कालपूर्वम् आधुनिकवैज्ञानिकैः कृत्रिमनासिकानिर्माणकार्यं कृतमस्ति तथा च तेषां वैज्ञानिकानां मते सुश्रुतसंहितायां मूलभूतसिद्धान्तान् पठित्वा तस्मिन् विषये अधिकविस्तृतकार्यं कृत्वा एव एतत् कार्यं सम्भवं जातम्।

आयुर्वेदस्य अवतरणम्

चरकमतानुसारम् - आयुर्वेदस्य ऐतिहासिकज्ञानस्य सन्दर्भे चरकमेतन आयुर्वेदस्य ज्ञानस्य अध्ययनं प्रथमं चतुर्मुखात् प्रजापतिः, प्रजापतिद्वारा अश्विनीकुमारौ, ताभ्याम् इन्द्रः, इन्द्रात् भारद्वाजः, तस्मात् च्यवनः च प्राप्तवन्तः। च्यवनस्य कालः अश्विनीकुमारस्य समकालीनः इति मन्यते। आयुर्वेदस्य विकासे ऋषिच्यवनस्य योगदानम् अतिमहत्त्वपूर्णमस्ति। पुनः भारद्वाजः आयुर्वेदस्य प्रभावेन दीर्घसुखम्,आरोग्यजीवनं प्राप्य अन्येषु ऋषिषु तस्य प्रचारं कृतवान्। तदनन्तरं पुनर्वसु आत्रेयः अग्निवेशभेलजतूपाराशरहारीतक्षारपाणयः नामक षट् शिष्यान् आयुर्वेदस्य उपदेशं कृतवान्। एतेषु षट् शिष्येषु अत्यन्तं बुद्धिमान् अयम् अग्निवेशः सर्वप्रथमं (अग्निवेशतन्त्रम्) संहितां निर्मितवान्। यस्याः पश्चात् चरकेन संशोधनं कृत्वा चरकसंहिता इति नामकरणं कृतं यत् आयुर्वेदस्य आधारः भवति।

सुश्रुतमतानुसारम् (धन्वन्तरिसम्प्रदायः) - धन्वन्तरि इत्यपि मन्यते यत् आयुर्वेदः केवलं ब्रह्मदेवेन एव प्रतिपादतः। सुश्रुतस्य मते सुश्रुतः अन्यैः महर्षिभिः सह आयुर्वदेस्य अध्ययनार्थं काशीराजः एव दिवोदासरूपेण अवतारं कृत्वा धन्वन्तरि भगवतः समीपं गत्वा तस्मै आवेदनं कृतवान्। तस्मिन् समये भगवान् धन्वन्तरिः तान् जनान् प्रवचनं कुर्वन्नवदत् यत् सर्वप्रथमं जगतः सृष्टेः पूर्वमपि ब्रह्मा स्वयमेव अथर्ववेदस्य उपवेदस्य आयुर्वेदं सहस्राध्यायलक्षश्लोकेषु प्रकाशितवान्। ततः मनुष्यः अल्पबुद्धिमान् इति मन्यमानः, सः अष्टधा विभजति स्म। पुनः भगवान् धन्वन्तरिः वदति यत् ब्रह्मदेवात् दक्षप्रजापतिः, तस्मात् अश्विनीकुमारौ, ताभ्याम् इन्द्रः च एवं प्रकारेण आयुर्वेदस्य अध्ययनं कृतवन्तः।

आयुर्वेदीयचिकित्सायाः विशेषताः

आयुर्वेदिकचिकित्साविधिः सर्वाङ्गीनविधिरस्ति। आयुर्वेदिकचिकित्सायाः अनन्तरं व्यक्तेः शारीरिकं मानसिकञ्च स्थितिः सुधारा भवति। आयुर्वेदस्य औषधानाम् अधिकांशः घटकाः ओषधीः, वनस्पतयः, पुष्पाणि, फलानि च इत्यादिभ्यः प्राप्यन्ते। अतः एतत् औषधं प्रकृतेः समीपस्थमस्ति। आयुर्वेदिकौषधेषु व्यावहारिकरूपेण कोऽपि दुष्प्रभावः न दृश्यते। आयुर्वेदः अनेकेषां दीर्घकालीनरोगानां

कृते विशेषतया प्रभावी भवति। आयुर्वेदः न केवलं रोगचिकित्सां करोति अपितु रोगाणामपि निवारणं करोति। आयुर्वेदः आहारस्य जीवनशैल्याः च सरलपरिवर्तनद्वारा रोगान् दूरं स्थापयितुम् उपायान् सूचयति। आयुर्वेदिकौषधानि स्वस्थजनानामपि उपयोगिनो भवन्ति। आयुर्वेदिकचिकित्सा तुल्यकालिकरूपेण सस्तो भवति यतोहि आयुर्वेदिकचिकित्सायां सुलभतया उपलब्धाः ओषधीः उपयुज्यन्ते।

उद्देश्यम्

आयुर्वेदस्य उद्देश्यमस्ति यत् स्वस्थजीवस्य आरोग्यस्य रक्षणं, रोगी रोगस्य चिकित्सा च भवति। **प्रयोजनं चास्य स्वस्थस्य स्वास्थ्यरक्षणम् आतुरस्यविकारप्रशमनञ्च।। चरकसंहिता 30.26** स्वस्थजनानाम् आरोग्यरक्षणार्थम्, रोगिणां विकाराणां चिकित्सां कर्तुं स्वस्थताञ्च कर्तुञ्च भवति।

आयुर्वेदिकोपचारस्य लाभः

आयुर्वेदिकौषधानि प्राकृतिकतत्त्वैः निर्मिताः भवन्ति। अतः तेषां दुष्प्रभावाः अत्यल्पाः भवन्ति। शारीरिकमानसिकसन्तुलनम् - एतन्न केवलं शारीरिकस्वास्थ्यम्, अपितु मानसिकभावनात्मकस्वास्थ्यं केन्द्रीक्रियते। व्यक्तिगतोपचारः - आयुर्वेदिकचिकित्सा व्यक्तेः शरीरस्य प्रकारस्य दोषस्य च आधारेण भवति, येन चिकित्सा अधिका प्रभावी भवति।

स्वस्थानां स्वास्थ्यरक्षणम्

तदर्थं स्वशरीरानुकूलं प्रकृतिरनुकूलं देशकालं विचार्य्य तन्नियमितरूपाहारविहारं, चेष्टां, व्यायामं, शौचं, स्नानं, शयनं, जागरणादि गृहस्थजीवनाय उपयोगी शास्त्रोक्तं दिनन्दिनं, रात्रिचर्याम् एवम् ऋतुचर्याञ्च अनुसृत्य, सङ्कटमयकार्यं परिहरन्, विवेकपूर्वकं प्रत्येककार्यं कृत्वा मनेन्द्रियं नियन्त्रयन् स्वशरीरस्य बलं दुर्बलञ्च विचार्य यत्किमपि वा कार्यं स्थानकालादिपरिस्थित्यनुसारं करणं, मलमूत्रादिप्रवाहं न निवारयन्, ईर्ष्याद्वेषलोभाहङ्कारादिपरिहारः, वमनविरेचनादिप्रयोगैः शरीरात् सञ्चितदोषान् दूरीकर्तुं काले काले शरीरस्य शुद्धिः, सदाचारस्य पालनं कर्तुं, प्रदूषितवायुजलदेशकालजन्य महामारीरोगविशेषज्ञवैद्यपरामर्शञ्च सम्यगनुसरणं कर्तुं, स्वच्छं शुद्धञ्च जलं वायुः भोजनमित्यादीनां सेवनं, अन्येषामपि तथैव कर्तुं प्रेरयितुञ्च स्वास्थ्यरक्षणस्य साधनानि सन्ति।

आयुर्वेदस्य मुख्यसिद्धान्ताः

त्रिदोषसिद्धान्तः

आयुर्वेदे शरीरस्य त्रयाणां प्रमुखदोषाणां (वातपित्तकफानां) संतुलनं स्वास्थ्यस्य कुञ्जी इति मन्यते। एतेषां दोषत्रयाणाम् असुन्तुलनेन रोगाः पीडयन्ति नः।

प्राकृतिकचिकित्सा

आयुर्वेदे ओषधीभिः प्राकृतिकौषधैः, आहारपरिवर्तनेन, नित्यक्रियाभिः च चिकित्सा क्रियते। अस्य उद्देश्यं शरीरस्य, मनसः, आत्मनः च सन्तुलनं भवति।

स्वास्थ्यसंवर्धनम्

आयुर्वेदः न केवलं रोगानाम् उपचारे केन्द्रितोऽस्ति, अपितु सुस्वास्थ्स्यस्य निर्वाहस्य, रोगानां परिहारस्य च उपायानपि सूचयति। एतद्व्यक्तेः रोगप्रतिरोधकशक्तिं सुदृढां कर्तुं बलं ददाति।

आयुर्वेदः एवं एलोपैथी

आयुर्वेदस्य एलोपैथी च सर्वथा भेदः अस्ति। आरोग्यदर्शने, रोगदर्शने, निदानस्य चिकित्सायाः च दर्शने भेदः अस्ति। एलोपैथी इत्यस्य बहवः समर्थकाः आयुर्वेदं वैज्ञानिकचिकित्सातन्त्रं न मन्यन्ते।

केचन आचार्याः तेषां कृतयः च अत्र उल्लिखिताः सन्ति। चरकस्य रसविद्या बृहत्त्रयी चरकसंहिता च, सुश्रुतस्य सुश्रुतसंहिता, वाग्भटस्य अष्टाङ्गहृदयम्, भावमिश्रस्य लघुत्रयी एवं भावप्रकाशः, माधवकरस्य माधवनिदानम्, शार्ङ्गधरस्य शार्ङ्गधरसंहिता, अन्यः - अष्टाङ्गसङ्ग्रहः, विजयरक्षितशिष्यः श्रीकण्डदत्तस्य मधुकोषः, वाचस्पतिवैद्यस्य आतङ्कदर्पणम्, भेलाचार्यस्य मधुस्रवा भेलसंहिता च, कौमारभृत्यस्य काश्यपसंहिता, वङ्गसेनस्य वङ्गसेनसंहिता (चिकित्सासारसङ्ग्रहम्) इत्यादयः सन्ति।

प्रायः प्रत्येकः लेखकः आयुर्वेदस्य कस्यचित् भागविशेषस्य विस्तृतं वर्णनं ददाति, शेषस्य सामान्यवर्णनं च करोति। अस्मिन् सन्दर्भे उच्यते यत्

निदाने माधव श्रेष्ठः सूत्रस्थाने तु वाग्भटः। शारीरे सुश्रुतः प्रोक्तः चरकस्तु चिकित्सिते॥

अग्निपुराणे

आयुर्वेदं प्रवक्ष्यामि सुश्रुताय यमब्रवीत। देवो धन्वन्तरिः सारं मृतसञ्जीवनीकरम्॥

अग्निः वशिष्टस्य कृते एवं वदति यत् इदानीं धन्वन्तरिभगवता सुश्रुतं प्रति यः आयुर्वेदः प्रचारितः आसीत् तस्य वर्णनं करोमीति। एतत् आयुर्वदस्य सारं मृतानपि जीवयतीति। तादृशं माहात्म्यं वर्तते अस्मिन् आयुर्वेदे।

9543058948 bharani.iyengar@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 March 2025 Page No. : 63-67
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

समाज में यौन एवं अन्य उत्पीड़न से शोषित होती महिलाएं

बॉबी, शोधार्थी,
कुरुक्षेत्रा विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

सारांश:-

भारत की आजादी को 75 वर्ष से अधिक समय व्यतीत हो चुका है, संविधान ने समान अवसर तथा हिफाजत का आश्वासन भी दिया है, कानूनी अधिकारो में भी सुधार किया गया है। व्यापक स्तर पर अक्षर ज्ञान देने के लिए राष्ट्रीय नीति बनाई है। इन सबके बावजूद हमारे समाज मे स्त्रियों का मूल्य एवं स्थान उस स्तर तक नहीं उठ पाया जितना उठना चाहिए था। आज स्त्रियों कुछ जगृत तो हो गई है, किंतु उनमें निराशा व्याप्त है। विश्व के समग्र व यथेष्ट विकास के लिए महिलाओं का विकास की मुख्य धारा से जुडा होना परम आवश्यक है। नारी की स्थिती समाज में जितनी महत्व पूर्ण सुदृढ सम्मानजनक व सक्रिय होगी उतना ही समाज उन्नत समृध्द व मजबूत होगा, लेकिन फिलहाल हमारे पास ऐसी कोई ताकत नहीं है। ताकत पैदा करने के लिए ठोस स्पष्ट कल्पना होनी चाहिए कि किस तरह के समाज की रचना करनी चाहिए वैसे तो आज लगता है कि स्त्री पुरुष में बराबरी स्थापित हो गई है परंतु यह छलावा मात्र है। पुरुष प्रधान समाज में औरत का स्थान गुलाम जैसा है, वैवाहिक जीवन में पुरुष ही फैसला करता है, औरत उस पर अमल करती है। यह सब समाप्त होना चाहिए। स्त्रियों भी चाहे तो अपने आँचल के दुध व आँखो के पानी को इस लायक बना सकती है कि जागरुकता का सतत प्रवाह बन सके। परंतु सफलता के लिए स्वाभिमान को जगाने की आवश्यकता है। यदि स्वाभिमान व आत्मस्वतंत्रता जागृत नहीं होगी तो ना ही समानता की कल्पना हमेशा के लिए सपना बनकर रह जाएगी। स्त्रियों की अभी भी बहुत बड़ी संख्या ऐसी है जो मुश्किल से पेट पालने की स्थिति में है, गरीब है, रीति-रिवाजों को जालों में उलझी हुई है। इन्हे गौरव पूर्ण जीवन सुलभ हो सके, इसके लिए प्रयत्न करना स्त्रियों की जिम्मेदारी है।

प्रस्तावना-

नारी जीवन हाय, तुम्हारी यही कहानी।
आंचल में है दुध और आँखो मे पानी।।

महिलाओं के प्रति हिंसा एवं अपराध आज के युग की ही घटना नहीं है। प्राचीन भारत में भी इसके अनेक उदाहरण मिलते है। महाभारत काल मे युधीष्ठिर ने अपनी पत्नी द्रौपदी को

जुए में दांव पर लगा दिया था और दुर्योधन ने भरी सभा में उसका चीर हरन कर अपमानित किया था। रामायण काल मे रावन ने सीता का अपहरन किया था। विधवाओं को भारत में अनेक अधिकारों से वंचित किया जाता रहा तथा विभिन्न प्रकार के कष्ट दिए जाते रहे। दहेज को लेकर नारी को जला देने या हत्या कर देना आज के युग की सब से बडी त्रासदी है। सतीत्व के नाम पर महिलाओं को इसी देश मे जिन्दा जलाया जाता रहा है। हम आए दिन पत्र पत्रिकाओ मे बलात्कार की घटनाएँ पढ़ते है। इस प्रकार से महिलाओं का उत्पीड़न एवं शोषण उनके बलात्कार, उन्हे बहला फुसला कर भगा ले जाना एवं वेश्यावृत्ती के लिए बेच देना, उनके साथ मारपीट एवं गाली गलौज करना, उन्हे जला देना या हत्या कर देना आदि महिला अपराध के कुछ प्रमुख उदाहरण है।

अनुसन्धान के उद्देश्य:-

- महिलाओ के हिंसा एवं उत्पीड़न का अर्थ समझना।
- महिलाओ के प्रति हिंसा के कारणों का अध्ययन करना।
- महिलाओ के प्रति हिंसा रोकने के सुझावों का अध्ययन करना।

अनुसन्धान की प्रविधि:-

महिलाओं के प्रति हिंसा, अर्थ, परिभाषा एवं प्रकार- महिलाओ के प्रति हिंसा से तात्पर्य है। महिलाओं के निकट रिश्तेदारों जैसे माता, पिता, भाई, बहन, सास, ससुर, देवर, नंनद, भाभी या परिवार के किसी भी सदस्य अथवा अन्य व्यक्तियों द्वारा किया जाने वाला हिंसात्मक व्यवहार एवं उत्पीड़न जो नारी को शारीरिक, मानसिक आघात पहुँचाता है। अपराधिक हिंसा जैसे बलात्कार एवं अपहरण आदि, घरेलु हिंसा जैसे दहेज सम्बधी मृत्यु, पत्नी को पिटना, लैंगिक दुर्व्यहार आदि।

सामाजिक हिंसा जैसे पत्नी एवं पुत्र वधु को मादा भ्रूण की हत्या के लिए बाध्य करना। महिलाओं से छेड़छाड़ विधवा को सती होने के लिए बाध्य करना, दहेज के लिए तंग करना एवं स्त्री को संपत्ति में हिस्सा न देना आदि।

भारत में महिलाओं का उत्पीड़न प्राचीन काल से ही होता रहा है, जिसका उल्लेख हमे प्राचीन धर्म ग्रन्थो एवं पुस्तको मे मिलता है। समाज में प्रचलित रिती रिवाजों में एवं विचारधाराओं का भी महिला उत्पीड़न मे योगदान रहा है। आजादी के बाद महिलाओं के कल्याण के लिए कई वैधानिक प्रयत्न किए गए उनमे शिक्षा का प्रसार हुआ है। वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हुई है, इनके बावजुद भी उनके प्रति किए जाने वाले अत्याचारो एवं अपराधी में कोई उल्लेखनीय कमी नहीं आयी है। बलात्कार, दहेज प्रथा, महिलाओं को जला देना, भगा ले जाना, अपहरण करके उन्हें मारने पिटने की घटनाएं आज भी अखबारों की सुर्खियों में रहती है।

महिलाओं के साथ किये जाने वाले अपराधों में से भारत के इन पाँच राज्यो में सबसे ज्यादा होते है। मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, महाराष्ट्र तथा राजस्थान में होते है। महिलाओं के बारे में जो आँकड़े प्रदर्शित किए गए, वो अपूर्ण हैं, क्योंकि उनके प्रति किए गए। सभी

अपराधों को पुलिस में दर्ज नहीं करवाया जाता है तथा नारी के प्रतिहार में ही किये जानेवाले अपराधों को घरेलु मामला समझ कर पुलिस उनमे हस्तक्षेप नहीं करती और स्त्रियां भी उन्हें बाहर उजागर करना उचित नहीं मानती।

नारी उत्पीड़न का एक प्रमुख रूप यौन उत्पीड़न है। स्त्रियां जहाँ काम करती है, वहाँ उनके मालिकों द्वारा भी कुछ स्त्रियों का यौन शोषण किया जाता है। उन्हें ऐसा करने के लिऐ आर्थिक एवं अन्य प्रकार के प्रलोभन भी दिए जाते हैं और समर्पन करने की स्थिती में उनके साथ दुर्व्यवहार किया जाता है। उन्हे परेशान किया जाता है, उन पर झुठा आरोप लगाकर उन्हे फसाया जाता है। जिनसे तंग आकर या तो वे नौकरी छोड़ देती है, या अपना समर्पण कर देती है। ऐसी स्थिती में स्त्री में हीनता की भावना पैदा हो जाती है। सामान्यतः स्त्रियों से यह अपेक्षा की जाती है कि यदि उनके साथ कोई यौन संबंधित भले ही मजाक या छेड़छाड़ करता है, तो उन्हे बर्दाश्त कर लेना चाहिए। होटलों में काम करने वाली महिलाओं से यह अपेक्षा की जाती है, कि वे अपने कामुक हाव भाव एवं अदाओं से ग्राहकों को आकर्षित करे पुरुष ऐसी स्थिती में यदि गन्दे प्रस्ताव रखता है तो स्त्री को चतुराई से उन्हे टाल देना चाहिए।

महिलाओं के प्रति यौन एवं अन्य प्रकार के उत्पीड़न:- भगा ले जाना व अपहरण करना, नारी हत्या तथा भ्रूण हत्या, बलात्कार, नारी के प्रति अत्याचार एवं मानवाधिकार का हनन, दहेज हत्याएँ, वैश्यावृत्ति, विधवाओं के प्रति हिंसा, छेड़छाड़, पत्नी को पिटना गृह हिंसा आदि।

महिलाओं के विरुद्ध हिंसा के कारण:-

1) भारत में ही नहीं विश्व के सभी समाजों में पुरुषों की प्रधानता पायी जाती है।

2) भारत में स्त्रियों की पुरुषों पर आर्थिक निर्भरता पायी जाती है।

3) अशिक्षा के कारण महिलाएं अपने अधिकारों प्रति जागरुक नहीं है।

4) भारत में बालविवाह, परदा प्रथा, दहेज, विधवा पुनर्विवाह, जैसी कुप्रथाएं प्रचलित है। महिला जिनका शिकार बन जाती है।

5) पारिवारिक तनाव होने कारण पुरुष अपना तनाव पत्नी पर थोपने का प्रयास करता है।

6) वे पुरुष जो नशा करते है, शराब पिते है, वो नशे के दौरान पत्नी पर अत्याचार करते है।

7) परिस्थिती वश प्रेरणा कई बार परिस्थितीयाँ ऐसी हो जाती है कि व्यक्ति अपराध कर बैठता है।

8) कई बार महिला अपराध को बर्दाश्त करती है और वे पुलिस या न्यायालय की शरण में जाने, अन्य लोगो से मदत लेने का प्रयत्न नहीं करती।

9) गरीबी और दरिद्रता

महिलाओं के प्रति हिंसा को रोकने के सुझाव-

1) आश्रय की व्यवस्था सरकार और स्वयंसेवी संगठनों को ऐसी महिलाओं के लिए आवास की व्यवस्था करनी चाहिए जो पति और ससुराल वालों की व्यवस्था से तंग आकर घर छोडना चाहती हैं।

2) शिक्षा की सुविधा प्रदान की जाए स्त्री पर अत्याचार का एक कारण स्त्रियों का अशिक्षित होना भी है इसे एक कारण स्त्रियो का अशिक्षित होना भी है। इसे रोकने के लिए स्त्री शिक्षा का प्रसार किया जाए।

3) दण्ड की व्यवस्था से लोग अपनी पत्नीयों को परेशान करते है उनकी सामाजिक निन्दा की जाए और उन्हे सार्वजनिक रूप से दण्डित किया जाए जिससे कि अन्य लोगों को भी सबक मिले और वे ऐसा करने के लिए प्रेरित न हो।

4) महिला न्यायालयों की स्थापना महिलाओं के प्रति किए गए अपराधों एवं हिंसा की सुनवायी के लिए पृथक से महिला न्यायालयों की स्थापना की जाए, जिसमे अनुभवी महिला न्यायाधीश हो। इससे सामान्य न्यायालयों में जाने का महिलाओं में जो भय होता है, वह समाप्त होगा और वे अपनी बात को इन न्यायालयों की सुनवायी एवं कार्यवाही सार्वजनिक रूप से न हो। इन में केवल पिड़ित महिला की मद्द करने वाले लोंगों एवं आरोपियों को ही आने की इजाजत हो।

5) महिला संगठनो का निर्माण नैतिक संभल देने एवं उनमें आत्मविश्वास जगाने के लिए अधिकाधिक महिला संगठनो की स्थापना की जाएँ।

6) वैचारिक परिवर्तन महिलाओं के विरुद्ध हिंसा एवं अपराध को रोकने के लिए लडकियों के माता- पिता के विचारों में भी परिवर्तन लाना होगा। वे लड़कियों का बचपन से ही इस प्रकार का सामाजिकरण करते है, जिसमें उन्हें पति परमेश्वर की धारणा सिखायी जाती है। उन्हे कहाँ जाता है पति के घर डोली जाती है और अर्थी भी वही उठती है।

निष्कर्ष:- घर में महिलाएँ घर वालों की उपेक्षाओं का शिकार बनती हैं, तो दफ्तर में अपने साथियों व उच्चाधिकारियों की उनके द्वारा शारीरिक, मानसिक रूप से शोषित भी होती है। घर की भाँती, दफ्तर की जिम्मेदारी को निभाना अपने अधिकारी को खुश रखना योग्यता पूरक काम करना सहकर्मियो के सुख-दुःख में भागीदारी करना आदि उसके कर्तव्य हो जाते हैं। फिर कही भी गलती हो जाए तो हर तरफ से उसे ताने और अवांछित बाते भी सुननी पड़ती है। मामूली छेड़छाड़ से महिलाओं की जिंदगी मे घटित होते है। अनेक समस्याओं से जुझते हुए जहाँ वे साहसी व निडर हो जाती है, वही दुसरी और हताष, निराष व गिरते मनोबल से भी घिर जाती है। महिलाओं को सशक्तिकृत करने की दिशा में उनको आर्थिक स्वतंत्रता प्रदान का लगभग आधा हिस्सा होने के कारण किसी भी देश की आर्थिक संरचना को वे प्रभावित करती है। महिलाओं की क्षमताओं को राष्ट्रीय विकास तब तक अपूर्ण है, जब तक उसमें महिलाओं का विकास, आर्थिक स्थिति और विश्व अर्थव्यवस्था में उनका स्थान, महिला के प्रति भेदभाव को और बढ़ावा देती है। आदर्श जीवन समाज को अधार शिला कहलाती है, जो वास्तविकता के नैतिक व्यवस्था पर आधारित है। जो वास्तविकता के धरातल पर मानवहित की सम्यक व्यवस्था होनी चाहिए। इस आदर्श व्यवस्था को नैतिक संधिवान के कारण जो सामाजिक व्यवस्था बनी उसके अनुसार जीवन जीना चाहिए था। महिलाओं के संन्दर्भ में भारतीय समाज मे दो प्रकार के दृष्टिकोण पाए जाते हैं। एक दृष्टिकोण समाज में स्त्री को पुरुषों के समकक्ष

सम्मान एवं परिस्थिति दिलाने पक्ष में है तो दुसरा दृष्टिकोण उन्हे उनके अधिकारो का मानता है अतः उन्हें उनके अधिकारो से वंचित करने के पक्ष में है। इसके लिए सबसे जरुरी यह है कि आज का समाज स्त्रियों के महत्व को समझे, उनके योगदान को सराहे और उनके साथ सहानुभूति पूर्व रवैया अपनाये। उनकी समस्याओं में हिस्सेदारी करे और उनका मानसिक, शारीरिक शोषण करने वालों के खिलाफ सख्त रवैया अपनाए।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1 सुन्दरिया राजेन्द्र प्रसाद- महिला एवं घरेलू हिंसा, सागर पब्लिशर्स जयपुर 2013

2 श्री मही युवराज स्त्री अभ्यासाच्या दिशा, अधर्व पब्लिकेशन्स्, 10 जनवरी 2012

3 दुब मुक्तो- महिला आरक्षण चुनौतियाँ और सम्भावनाएँ, बी. के. तनेजा क्लासिकल पब्लिशिंग क नई दिल्ली, 2013

4 डॉ० भुसारी नीलकंठ, डॉ० पोच्छी वनीता, डॉ० निकम मिना प्रतिबिंब महिला समस्यांचा आत्मबोध, अधर्व पब्लिकेशन्स्, 2013

5 ब्राऊन लुईज पनि- दासियाँ एशिया का सेक्स बाजार, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली 2005

6 डॉ० महाजन रघुनाथ, डॉ० देसाई संभाजी, पाटील रंगराव कौटुंबिक हिंसाचार आणि महिला, प्रशांत पब्लिकेशन्स, 2016

Ph no. 8527150382 Gmail- bobysingh15519@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 March 2025 Page No. : 68-71
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

वर्तमान सामाजिक परिवेश में सोशल मीडिया एवं महिला सशक्तिकरण

डॉ0 योगेश कुमार त्रिपाठी, असिस्टेंट प्रोफेसर (अतिथि), समाजशास्त्र विभाग,
महाराजा सुहेलदेव राज्य विश्वविद्यालय, आजमगढ़ (उ0प्र0)
डॉ0 कमल कश्यप भास्कर,
रामनगर, शंकरगंज, जौनपुर (उ0प्र0)

सार–

प्रस्तुत शोध पत्र में 'सोशल मीडिया' के माध्यम से 'महिला सशक्तिकरण की प्रक्रिया', 'उसकी चुनौतियों' एवं 'संभावनाओं' पर चर्चा की गई है। डिजिटल युग में, सोशल मीडिया महिलाओं को अपनी आवाज़ 'उठाने', 'ज्ञान अर्जित करने' व 'अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता फैलाने' का एक प्रभावी माध्यम बन गया है। 'फेसबुक', 'इंस्टाग्राम', 'ट्विटर', 'लिंक्डइन', तथा 'यूट्यूब' जैसे प्लेटफॉर्म महिलाओं को अपनी 'प्रतिभा', 'विचार' एवं 'अनुभव' साझा करने के सशक्त माध्यम प्रदान करते हैं। यह शोध पत्र सोशल मीडिया के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इसमें उन संभावनाओं पर भी प्रकाश डाला गया है जिनके माध्यम से महिलाएं सोशल मीडिया का अधिक 'सुरक्षित एवं प्रभावी' ढंग से उपयोग कर सकती हैं।

मुख्य शब्द– सोशल मीडिया, महिला सशक्तिकरण, तकनीकी, सूचना एवं प्राद्योगिकी।

परिचय–

डिजिटल युग में सोशल मीडिया, केवल 'संवाद' एवं 'सूचना के प्रसार' का माध्यम नहीं रह गया है, अपितु यह एक ऐसा मंच बन चुका है जो लोगों को 'सशक्त' करता है। विशेष रूप से 'महिलाओं के लिए', सोशल मीडिया ने उनकी आवाज़ को उठाने एवं अपने विचारों को दुनिया के सामने प्रस्तुत करने का एक 'अनोखा अवसर' प्रदान किया है। पहले जहां महिलाओं को 'पारंपरिक सामाजिक ढांचों' तथा 'पितृसत्तात्मक व्यवस्था' के कारण अपनी आवाज़ को दबाना पड़ता था, अब वे सोशल मीडिया के माध्यम से समाज में अपनी जगह बना रही हैं। विभिन्न प्लेटफार्मों के माध्यम से महिलाएं न केवल अपनी व्यक्तिगत पहचान बना रही हैं, वरन् सामाजिक मुद्दों पर भी खुलकर बात कर रही हैं। उदाहरण के तौर पर, महिलाओं ने #MeToo अभियान के माध्यम से ''यौन उत्पीड़न के खिलाफ'' एक वैश्विक आंदोलन शुरू किया, जिससे लाखों महिलाएं जुड़ीं तथा अपने अनुभव साझा किए। सोशल मीडिया के माध्यम से महिला सशक्तिकरण की राह में कई चुनौतियाँ भी हैं; 'ट्रोलिंग', 'साइबर बुलिंग', 'गोपनीयता का उल्लंघन', तथा 'फेक न्यूज़' जैसी समस्याएं महिलाओं की ऑनलाइन उपस्थिति को खतरे में डाल सकती हैं। कई महिलाएं इन समस्याओं से परेशान होकर सोशल मीडिया से 'दूरी बना लेती हैं', जिससे उनका 'सशक्तिकरण प्रभावित होता है'। इस शोध पत्र का उद्देश्य उक्त चुनौतियों का विश्लेषण करना एवं यह समझना है कि कैसे सोशल मीडिया महिलाओं के सशक्तिकरण में एक सशक्त भूमिका निभा सकता है।

सोशल मीडिया का महिला सशक्तिकरण में योगदान–

डिजिटल युग में सोशल मीडिया ने 'महिलाओं को सशक्त' करने में एक अभूतपूर्व भूमिका निभाई है। यह मंच महिलाओं को अपनी आवाज़ उठाने का मौका देने के साथ ही उन्हें 'सामाजिक', 'आर्थिक', 'राजनीतिक', व 'व्यक्तिगत' स्तर पर सशक्त होने का अवसर भी प्रदान करता है। विभिन्न प्लेटफॉर्म्स

(फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, लिंक्डइन, यूट्यूब) ने महिलाओं को अपनी पहचान स्थापित करने तथा अपनी क्षमताओं को प्रदर्शित करने के नए आयाम दिए हैं यथा, (1) ''सामाजिक सशक्तिकरण'', सोशल मीडिया ने महिलाओं को सामाजिक मुद्दों पर खुलकर बात करने का अवसर दिया है; वे 'लैंगिक समानता', 'यौन उत्पीड़न', 'घरेलू हिंसा', एवं 'शिक्षा के अधिकार' जैसे विषयों पर अपनी राय व्यक्त कर रही हैं। #MeToo तथा #TimesUp जैसे वैश्विक आंदोलनों ने यौन उत्पीड़न के खिलाफ महिलाओं को एकजुट होने का मंच दिया। इन अभियानों के माध्यम से महिलाएं एक–दूसरे का समर्थन कर रही हैं और समाज में बदलाव की दिशा में कदम उठा रही हैं। (2) ''आर्थिक सशक्तिकरण'', सोशल मीडिया ने महिलाओं को अपने 'व्यवसाय' एवं 'उद्यमिता कौशल' को विकसित करने का एक मजबूत मंच प्रदान किया है; कई महिलाएं 'इंस्टाग्राम', 'फेसबुक', एवं 'यूट्यूब' जैसे प्लेटफार्म्स का उपयोग कर अपने 'उत्पादों' एवं 'सेवाओं' का प्रचार कर रही हैं। 'ऑनलाइन शॉप्स', 'कुकिंग चैनल्स', 'फैशन ब्लॉग्स', एवं 'इन्फ्लुएंसर मार्केटिंग' के माध्यम से महिलाएं आर्थिक रूप से स्वतंत्र हो रही हैं। यह उनके वित्तीय स्थिति को सुधार रहा है, साथ ही उन्हें आत्मनिर्भरता की दिशा में भी अग्रसर कर रहा है। (3) ''शैक्षिक सशक्तिकरण'', सोशल मीडिया महिलाओं के लिए एक शिक्षा और ज्ञान का स्रोत भी है। विभिन्न ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से महिलाएं नई स्किल्स सीख सकती हैं, करियर की संभावनाओं के बारे में जान सकती हैं, एवं विभिन्न विषयों पर जागरूकता प्राप्त कर सकती हैं। (4) ''नेटवर्किंग व कनेक्टिविटी'', सोशल मीडिया ने महिलाओं को अपने जैसे विचारधारा वाले लोगों से जुड़ने का अवसर दिया है। विभिन्न ऑनलाइन समूहों एवं समुदायों में महिलाएं एक–दूसरे का समर्थन करती हैं तथा साझा अनुभवों के माध्यम से एकजुटता महसूस करती हैं। 'लिंक्डइन' जैसे प्लेटफार्म 'पेशेवर नेटवर्किंग' के लिए एक महत्वपूर्ण मंच बन चुके हैं, जहाँ महिलाएं करियर के नए अवसरों की खोज कर सकती हैं। (5) ''आत्म–अभिव्यक्ति एवं आत्मसम्मान'', सोशल मीडिया ने महिलाओं को अपनी 'रचनात्मकता' तथा 'आत्म–अभिव्यक्ति' के नए आयाम खोजने का मौका दिया है; वे अपने 'लेखन', 'फोटोग्राफी', 'कला', एवं 'संगीत' के माध्यम से अपनी पहचान बना सकती हैं। यह आत्म–अभिव्यक्ति उनके 'आत्मसम्मान' के साथ–ही–साथ आत्मविश्वास को बढ़ाने में भी सहायक है।

सोशल मीडिया– महिला सशक्तिकरण में चुनौतियाँ –

'सोशल मीडिया', महिला सशक्तिकरण का एक सशक्त मंच बन चुका है, लेकिन इसके साथ कई चुनौतियाँ भी जुड़ी हुई हैं; इन चुनौतियों का प्रभाव महिलाओं के 'आत्मसम्मान', 'मानसिक स्वास्थ्य', एवं 'ऑनलाइन उपस्थिति' पर पड़ता है। महिलाओं के लिए एक 'सुरक्षित' एवं 'सम्मानजनक डिजिटल वातावरण' बनाने के लिए इन चुनौतियों का समाधान आवश्यक है यथा, (1) ''साइबर बुलिंग एवं ट्रोलिंग'', साइबर बुलिंग 'सोशल मीडिया' पर महिलाओं के लिए सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है; उन्हें बार–बार 'अपमानजनक टिप्पणियों', 'धमकियों' एवं 'अनुचित संदेशों' का सामना करना पड़ता है। 'ट्रोलिंग' भी महिलाओं की राय को दबाने के लिए एक प्रमुख 'हथकंडा' बन गया है, विशेष रूप से जब वे 'सामाजिक' या 'राजनीतिक' मुद्दों पर खुलकर बात करती हैं। ये घटनाएँ महिलाओं के 'आत्मविश्वास' को नुकसान पहुंचा सकती हैं तथा कई बार उन्हें सोशल मीडिया छोड़ने पर मजबूर कर देती हैं। (2) ''गोपनीयता एवं डेटा सुरक्षा का उल्लंघन'', महिलाओं की व्यक्तिगत जानकारी का दुरुपयोग सोशल मीडिया पर एक गंभीर समस्या है; अक्सर महिलाएं 'फेक प्रोफाइल', 'फोटो मॉर्फिंग', एवं 'अश्लील सामग्री' के माध्यम से बदनाम किए जाने का शिकार होती हैं। इससे उनकी 'सुरक्षा' एवं 'मानसिक स्वास्थ्य' पर गंभीर प्रभाव पड़ सकता है। गोपनीयता के उल्लंघन के कारण महिलाओं को हमेशा सतर्क रहना पड़ता है, जिससे उनकी ऑनलाइन गतिविधियाँ सीमित हो जाती हैं। (3) ''सामाजिक पूर्वाग्रह एवं लैंगिक असमानता'', सोशल मीडिया पर महिलाओं को 'लैंगिक असमानता' व 'सामाजिक पूर्वाग्रहों' का भी सामना करना पड़ता है; कई बार महिलाओं की उपलब्धियों को नकारा जाता है या उनकी राय को गंभीरता से नहीं लिया जाता; विशेष रूप से पारंपरिक समाजों में, महिलाओं को अक्सर उनकी ऑनलाइन उपस्थिति के लिए आलोचना का सामना करना पड़ता है। (4) ''ऑनलाइन उत्पीड़न तथा धमकी'', महिलाओं को ऑनलाइन उत्पीड़न व धमकी देना एक आम बात हो गई है; खासकर जो महिलाएं उच्च पदों पर हैं या प्रसिद्ध व्यक्तित्व हैं, उन्हें सोशल मीडिया पर 'अपमानजनक संदेशों' एवं 'धमकियों' का सामना करना पड़ता है। ये धमकियाँ शारीरिक सुरक्षा

के लिए भी खतरा बन सकती हैं। (5) ''मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव'', लगातार 'साइबर बुलिंग', 'ट्रोलिंग' एवं 'उत्पीड़न' का महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा असर पड़ता है; 'अवसाद', 'चिंता', व 'आत्म–संदेह' जैसी समस्याएँ सोशल मीडिया पर सक्रिय महिलाओं के लिए आम हो सकती हैं। ये समस्याएँ उनके व्यक्तिगत जीवन के साथ ही पेशेवर को भी प्रभावित कर सकती हैं।

सोशल मीडिया व लैंगिक समानता–

सोशल मीडिया ने 'लैंगिक समानता' को बढ़ावा देने में एक सशक्त भूमिका निभाई है; यह ऐसा मंच बन गया है जहाँ 'महिला' व 'पुरुष' अपने विचार साझा कर सकते हैं, 'सामाजिक भेदभाव' के खिलाफ आवाज़ उठा सकते हैं, एवं लैंगिक असमानता को समाप्त करने की दिशा में ठोस कदम उठा सकते हैं। सोशल मीडिया ने वास्तव में जागरूकता बढ़ाई है साथ ही समानता के लिए एक व्यापक सामाजिक आंदोलन को भी प्रोत्साहित किया है, (1) ''समानता के लिए जागरूकता अभियान'', सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर कई वैश्विक अभियानों (''#HeForShe'', **#MeToo'', **#TimesUp'', एवं ''#GenderEquality'') ने लैंगिक समानता के प्रति समाज को जागरूक करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन अभियानों ने महिलाओं के खिलाफ 'हिंसा', 'भेदभाव', एवं 'यौन उत्पीड़न' के मुद्दों पर वैश्विक स्तर पर चर्चा शुरू की है। (2) ''महिलाओं की आवाज़ को मंच प्रदान करना'', सोशल मीडिया ने उन महिलाओं को भी आवाज़ दी है जो 'पारंपरिक सामाजिक ढांचों' के कारण अपने विचार एवं अनुभव साझा नहीं कर पाती थीं; अब महिलाएं अपने 'अनुभव', 'चुनौतियों' एवं 'संघर्षों' को दुनिया के सामने रख सकती हैं व समानता की दिशा में बदलाव की मांग कर सकती हैं। (3) ''लैंगिक भेदभाव के खिलाफ लड़ाई'', सोशल मीडिया ने महिलाओं के खिलाफ 'भेदभाव' एवं 'असमानता' की घटनाओं को उजागर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है; 'यौन उत्पीड़न', 'कार्यस्थल पर भेदभाव', व 'घरेलू हिंसा' जैसे मुद्दों को सोशल मीडिया पर उजागर करके न्याय की मांग की गई है। इससे समाज में लैंगिक असमानता के खिलाफ जागरूकता एवं संवेदनशीलता बढ़ी है। (4) ''पुरुषों की भागीदारी को प्रोत्साहित करना'', लैंगिक समानता केवल महिलाओं का मुद्दा नहीं है; यह समाज के हर वर्ग का मुद्दा है; सोशल मीडिया ने पुरुषों को भी समानता के अभियानों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया है; इस तरह के प्रयास लैंगिक समानता की दिशा में एक 'सकारात्मक वातावरण' बनाने में सहायक होते हैं। (4) ''स्टीरियोटाइप को तोड़ना'', सोशल मीडिया ने पारंपरिक लिंग भूमिकाओं व स्टीरियोटाइप को तोड़ने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है; महिलाएं अब केवल 'गृहिणी', 'शिक्षिका' या 'नर्स' की भूमिकाओं तक सीमित नहीं हैं; वे 'राजनीति', 'विज्ञान', 'खेल', एवं 'व्यवसाय' में अपनी क्षमताओं को प्रदर्शित कर रही हैं एवं सोशल मीडिया उनके इन प्रयासों को दुनिया के सामने ला रहा है।

निष्कर्ष–

सोशल मीडिया महिला सशक्तिकरण का एक ''प्रभावी माध्यम'' बन चुका है; यह महिलाओं को केवल आवाज़ ही नहीं देता है, वरन् उन्हें अपने विचार और अनुभव साझा करने के लिए एक 'सुरक्षित' मंच भी प्रदान करता है, यह 'साइबर', 'बुलिंग', 'ट्रोलिंग', एवं 'गोपनीयता' के उल्लंघन जैसी चुनौतियाँ अभी भी बड़ी बाधा हैं।

सुझाव –

सोशल मीडिया के माध्यम से महिला सशक्तिकरण एवं लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए कुछ महत्वपूर्ण सुझाव निम्नलिखित हैं यथा, (1) ''साइबर सुरक्षा जागरूकता अभियान'', महिलाओं को 'साइबर बुलिंग', 'ट्रोलिंग', 'गोपनीयता उल्लंघन' एवं अन्य ऑनलाइन खतरों से बचाने के लिए साइबर सुरक्षा के प्रति जागरूक करना आवश्यक है; सरकारी व गैर–सरकारी संगठनों को सोशल मीडिया के सुरक्षित उपयोग के लिए जागरूकता अभियान चलाना चाहिए। (2) ''कड़े कानूनी प्रावधान'', 'साइबर अपराधों', 'उत्पीड़न', एवं 'गोपनीयता के उल्लंघन' से संबंधित कड़े कानूनी प्रावधान लागू किए जाने चाहिए; साइबर अपराधों की रिपोर्ट करने की प्रक्रिया को सरल एवं सुलभ बनाया जाना चाहिए जिससे कि महिलाएं बिना किसी डर के अपनी शिकायत दर्ज करा सकें। (3) ''सामाजिक स्टीरियोटाइप्स को तोड़ना'', सोशल मीडिया प्लेटफार्मों पर ऐसे कंटेंट को बढ़ावा देना चाहिए जो लैंगिक स्टीरियोटाइप्स को चुनौती देता हो व समानता का संदेश देता

हो; समाज को महिलाओं की उपलब्धियों को समान रूप से स्वीकार करने के लिए संवेदनशील बनाना होगा। (4) ''महिलाओं के नेतृत्व वाले प्लेटफॉर्म का विकास'', महिलाओं के नेतृत्व वाले सोशल मीडिया ''प्लेटफार्मों'' एवं ''समूहों'' को बढ़ावा देना चाहिए, जहाँ वे अपनी आवाज़ उठा सकें एवं एक–दूसरे का समर्थन कर सकें। (5) ''सकारात्मक माहौल का निर्माण'', सोशल मीडिया पर एक सकारात्मक वातावरण बनाने के लिए सभी यूजर्स को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए; इसके लिए ऑनलाइन प्लेटफार्मों को 'नैतिकता' एवं 'सकारात्मक' बातचीत को बढ़ावा देने के लिए सख्त नीतियाँ लागू करनी चाहिए। (6) ''डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देना'', डिजिटल साक्षरता के कार्यक्रमों के माध्यम से महिलाओं को सोशल मीडिया के सही एवं सुरक्षित उपयोग की शिक्षा दी जानी चाहिए। निःसंदेह उक्त सुझावों के माध्यम से सोशल मीडिया को 'महिला सशक्तिकरण' एवं 'लैंगिक समानता' के लिए अधिक प्रभावी तथा सुरक्षित मंच बनाया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1. AlAmmary, J. (2022). The impact of social media on women's empowerment in the Kingdom of Bahrain. *Gender, Technology and Development*, *26*(2), 238-262.
2. Gangwani, S., Alruwaili, N., & Safar, S. A. (2021). Social media usage and female empowerment in Saudi Arabia. *Academy of Strategic Management Journal*, *20*(4), 1-8.
3. Kadeswaran, S., Brindha, D., & Jayaseelan, R. (2020). Social media as a gateway for accelerating women empowerment. *Parishodh Journal*, *9*(III), 4876-4885.
4. Kashyap, G. (2014). Role of alternative media in empowerment of women. *J. Mass Commun. Journalism*, *4*(209), 2.
5. Kulsum, N. M. (2018, January). Women empowerment in social media era that encourage sustainability development. In *Proceedings of The International Conference on Social Sciences (ICSS)* (Vol. 1, No. 1).
6. Kumari, M. (2020). Social media and women empowerment. *Int. J. Sci. Technol. Res*, *9*(3), 626-629.
7. Melissa, E., Hamidati, A., & Saraswati, M. S. (2013). Social media empowerment: How social media helps to boost women entrepreneurship in Indonesian urban areas. *The IAFOR Journal of Media, Communication and Film*, *1*(1), 77-90.
8. Melissa, E., Hamidati, A., Saraswati, M. S., & Flor, A. (2015). The Internet and Indonesian women entrepreneurs: Examining the impact of social media on women empowerment. *Impact of information society research in the global south*, 203-222.
9. Narayana, A., & Ahamad, T. (2016). Role of media in accelerating women empowerment. *International Journal of Advanced Education and Research*, *1*(1), 16-19.
10. Peerzada, N., Bashir, R., & Bashir, N. (2021). Social Media & Women Empowerment: A Meta-Analysis. *Zeichen Journal*, *7*(9), 96-103.
11. Vardhan, R. (2020). Social Media, ICT and Women Empowerment: A Study. *Intellectual Quest*, *13*.

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 March 2025 Page No. : 72-76
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

चित्रा मुद्गल की कहानियों में प्रदर्शित वैविध्यपूर्ण विषय एवं उसकी भाषा

आशु मंडोरा, शोधार्थी
पीएचडी हिंदी, हैदराबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय

समकालीन साहित्य में गद्य रचने वाले अनेकों लेखक- लेखिकाएँ सामने आते हैं। जो अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज में उपस्थित जटिल विद्रूपताओं को सटीक एवं तीक्ष्ण रूप में पाठक वर्ग के समक्ष रखते है । चित्रा जी भी अपनी गद्य रचनाओं में समाज में उपस्थित ज्वलंत विषयों को पाठक वर्ग के सामने रखती है । वह सूक्ष्म भाषिक संवेदना के साथ अपनी रचनाओं एक साथ कई परतों में अनेक छवियों को अन्वेषित करती है । समकालीन साहित्य में रचनाकार का दायित्व गंभीर हो चला है । एक रचनाकार के रूप में, समाज में उपस्थित हर महत्वपूर्ण विषय को साहित्य में जगह देना सरल कार्य नहीं है । फिर भी इस कार्य को अपनी संपूर्ण क्षमता एवं निडरता के साथ चित्रा जी प्रदर्शित किया हैं ।

चित्रा जी द्वारा रचित उपन्यासों के समान ही उनकी कहानियों में भी हमें वैविध्यपूर्ण विषयों की माला मिलती है । उनकी रचनाओं में प्रस्तुत प्रत्येक विषय समाज में उपस्थित इसी न किसी वर्ग की सच्चाई कहने से नहीं चुकता । यह कार्य उनकी भाषा के सहज स्वभाविक संयोजन से भी कही न कही सुगम रूपसे संभव हुई है । चित्रा जी की भाषा को इसलिए भी सराहनीय माना जाता है चूँकि अपनी रचनाओं में विविध विषयों को उन्होंने अपनी भाषा के बल पर ही न्यायसंगत गढ़ा है । अभी तक उनके तीन कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके है जो “आदि-अनादि” के रूप में तीन भागों में प्रकाशित है ।

उनकी कुछ महत्वपूर्ण कहानियाँ इस संदर्भ में उल्लेखनीय है । चित्रा जी की ‘गेंद’ कहानी के केंद्र में समकालीन समाज के महत्वपूर्ण पहलु रखे गए है । पहला, सचदेव जी के माध्यम से वृद्धों की समस्या को दर्शाया गया है तो दूसरी ओर एक बालक का चित्रण किया गया है जो एक कामकाजी माता-पिता की संतान है। नौकरीपेशा माँ अपनी बच्चों के पालन-पोषण करने में किस कदर असमर्थ रहती है यह दर्शाया गया है । बालक घर में बंद करके रखा जाता है जो बाहर गेंद जाने पर सचदेव जी से गेंद वापस कमरे के अंदर देने के लिए सहायता मांगता है । वहीँ सचदेव जी अपनी उम्र के तकाजे के चलते अपनी श्रवण शक्ति खो

बेठे है । जिसले इलाज के लिए वह अपने बेटे से तार भेजकर पैसे मांगने को विवश है । अपनी सारी संपति अपने बच्चों के नाम करने के बाद वृद्ध माता-पिता का स्थिति को यहाँ बहुत ही मार्मिक तरीके से व्यक्त किया गया है । बालक बाहर से बंद है और वृद्ध भीतर से ।

'हथियार' कहानी चित्रा जी द्वारा रचित महत्वपूर्ण रचना है । जिसमें समकालीन समाज में माता-पिता के संबंधों में आ जाने वाले अलगाव के कारण उनकी संतान के मानसिक द्वंद को दर्शाया गया है । तन्वी गुप्ता के माता-पिता जा तलाक हो गया है । तन्वी दोनों के प्रति लगाव व प्रेम रखती है । अदालतीय फैसले के तहत वह अपनी माँ के साथ रहती है जो किसी चमड़े वाले विधुर से प्रेम करती है व उसे लिए ही अपने पति से अलग हो जाती है । किंतु तन्वी अपने पिता से लगातार मिलती है और बचपनी की किस्सों को दोहरा कर बचपन की यादों में डूब जाती है । इस तरह वह दोनों के बीच का सेतु बनती है । समकालीन समाज में रिश्तों का बनना-टूटना बहुत आसान हो गया है । रिश्तों के बीच आवश्यक गंभीरता व संयम विलुप्त सा हो गया है । चित्रा जी की इस कहानी पर एक लघु फिल्म भी बनाई गई है जिससे इस विषय की गंभीरता को समझा जा सकता है ।

चित्रा जी की 'जिनावर' कहानी में मानव और पशु के बीच का रिश्ता दिखाया गया है। यह घोड़ी सरवरी और मालिक असलम के बीच अनकहे संबंधों की अप्रतिम कहानी है । असलम तांगे वाला है जिसके परिवार में आठ बच्चे और उसकी पत्नी है जिनका गुजर-बसर तांगे से ही होता है । सरवरी एक इसे रोग से ग्रस्त है जिसका कोई इलाज नही । ऐसे में परिवार चलने का कोई दूसरा स्रोत न होने पर असलम बीमार घोड़ी को लेकर ही सवारी के लिए निकल जाता है । जिस कारण घोड़ी एक गाड़ी से टकरा जाती है। असलम इस घटना का लाभ उठाते हुए गाड़ी चला रही महिला से पैसा वसूल कर सरवरी को उसी हालत में छोड़ भाग जाता है । मनुष्य अपने स्वार्थ के लिए जानवर का दुरुपयोग करता है । जब वह जानवर अपने बुरे समय में होता है तो वह उसकी आवश्यकता खत्म हो जाने पर उसे उसी हालत में छोड़कर भाग निकलता है ।

इसी कड़ी में चित्रा जी की एक और महत्वपूर्ण कहानी पर दृष्टि डालनी आवश्यक हो जाती है । 'जंगल' कहानी में घरों में पीला जाने वाली जानवरों की दशा की ओर चित्रा जी हमारा ध्यान आकर्षित करती है। इस कहानी में एक बालक के माध्यम से चित्रा जी एक तरफ तो बाल- मनोविज्ञान मार्मिक चित्रण करती है दूसरी ओर भर में पाले जाने वाले छोटे-छोटे पशुओं की दशा भी प्रस्तुत करती है। कहानी में खरगोश के बच्चों का एक जोड़ा पाला जाता है। जिसमें से एक कुछ ही समय में मर जाता है । जिससे बालक पीयूष बहुत आहत होता है । दादी के समझाने पर पीयूष को यह समझ आता है कि खरगोश का बच्चा अपनी माँ से अलग हो जाने के कारण मर गया । जिसके उपरांत वह दूसरे बच्चे को मरने से बचाने की इच्छा से उसे जंगल में वापस छोड़ आने का निर्णय लेता है । बच्चों में मन में पशु-पक्षियों के प्रति प्रेम के साथ- साथ यह कहानी उन्हें स्वतंत्र छोड़ने की आवश्यकता की सीख भी देती है ।

पारिस्थितिक संतुलन के लिए इन जानवरों का स्वतंत्र होकर जंगल में विचरण करना अत्यंत आवश्यक है।

चित्रा जी की 'भूख' कहानी एक अत्यंत संवेदनात्मक विषय पाठकों के समक्ष रखती ै । समकालीन समाज की सबसे बड़ी विडंबना है कि मनुष्य अपना भूख के आगे इतना विवश होकर एक शिशु को आमदनी के लिए उपयोग करने लगा है । पति की मृत्यु के बाद लक्ष्मी के सामने परिवार पालने की जिम्मेदारी आ जाती है । वह अपने लिए काम ढूंढने जाती है तो उसे सेठ लोगों की बिगड़ती नजरों का सामना करना पड़ता है । जिस कारण वह कहीं भी काम पर अधिक समय तक टिकने में असमर्थ रहती है । इसे विकट समय में सावित्री द्वारा बच्चा किराये पर देने की बात सुनकर पहले तो वह अचरज में आती है । किंतु कोई मार्ग न होने पर वह अपना बच्चा किराये पर दे देती है । जिससे बच्चे की स्थिति रोने और भूख के कारण इतनी गंभीर हो जाती है कि अंततः उसकी मृत्यु हो जाती है । चित्रा जी द्वारा बच्चे की स्थिति का वर्णन अत्यंत मार्मिकता से किया गया है । यह समकालीन समाज की सबसे गंभीर समस्या है जिसने एक छोटे से शिशु को भी इस दलदल में फँसा दिया है । उपकरण की तरह शिशुओं का उपयोग किया जा रहा है । उन्हें भूखा रखा जाता है जिससे वह ज्यादा से ज्यादा रोए और आस-पास के लोग दया करके अधिक पैसे भीख में दें ।

शिशु व्यापार की तरह समाज के एक संकीर्ण विषय को उजागर करती है चित्रा जी की 'वाइफ स्वैपी' कहानी । इस कहानी में चित्रा जी ने भारतीय संस्कृति के नाम पर उच्च स्तरीय वर्ग में चलने वाली संकीर्ण मनोवृति को प्रदर्शित किया है । भारतीय समाज में पति-पत्नी के संबंध का एक नया रूप यहाँ देखने को मिलता है । पति-पत्नी का संबंध जो अग्नि को साक्षी मानकर आरंभ होता है, उच्च समाज में उसका विकृत रूप देखा जा सकता है । उच्च वर्ग के लोग क्लबों में जाने वहां के माहौल के अनुसार खुद को ढलने के नाम को स्वयं का उच्च स्तरीय होने का प्रमाण समझते है। ऐसे में वहां होने वाले हर कम को वह सही समझते है और उसमें अपना भरपूर सहयोग भी देते है । चित्रा जी इसका वर्णन कुछ इन शब्दों में करती है, "रावण उसको नहीं ले जा रहा था, सीता माता स्वेच्छा से उनके संग जा रही थी । स्वेच्छा से न जा रही होती तो उसकी गाड़ी में चढ़ने से मना कर देती । कैसे मना करती पति-इच्छा को जो अपनी इच्छा बना लिया था । सतीत्व का धर्म उसका धर्म ।" इस तरह के खेल समाज को किस ओर ले जा रहे है । इस वर्ग विशेष में जन्म लेने वाले बच्चे किस तरह की मानसिकता को लेकर समाज में विचरण करेंगे । समाज में उपस्थिति एक परिवार के मूल्य, पति-पत्नी के संबंधों की गंभीरता एवं मानवीय संवेदना का यह बदलता स्वरूप सोचनीय है ।

'अवांतर कथा' चित्रा जी के निजी अनुभव पर लिखी कहानी मानी जाती है । इस कहानी में चित्रा जी एक ज्वलंत मुद्दा पेश करती है । साहित्य में अपना नाम कमाने वाली एक लेखिका जब एक संपादक की पत्नी हो जाती है तो उसके जीवन में आने वाली कठिनाइयों

को यहाँ प्रस्तुत किया गया है । वह लिखती है कि किसी भी लेखिका को किसी भी संपादक की पत्नी नहीं होना चाहिए । वह लिखती हैं, "आप मेरी बात सुनकर हँसेंगे टिप्पणी करेंगे कि अजीब मूर्ख पत्नी है । जिसका पति संपादक है उसे भला क्या दुःख।.....आपका मनोभाव सत्य है किंतु पूर्वजन्म का यह सुफल मेरे लिए भी धन्यभाग होता, अगर देश के अधिकांश संपादकों की पत्नियों की तरह मैं भी मात्र चमचा-काछुल खामिनी होती, लेखिका न होती।" एक लेखिका के रूप में एक स्त्री को जिस तरह की परिस्थितयों का सामना करना पड़ता है इसका खुलासा चित्रा जी यहाँ करती है । लेखिका को जिन भी संगोष्ठियों व साहित्य-सम्मेलनों से निमंत्रण मिलता है वहाँ उन्हें दूसरों की रचनाओं की गुणवत्ता जाँचने का काम सौंपा जाता है । जिसके उपरांत उनसे निवेदन किया जाता है कि वह रचना वह अपने घर ले जाए और अपने संपादक पति से उस रचना को अपने पत्र-पत्रिका में छापने का आग्रह करें । लेखिका के मन में यहाँ तक विचार आता है कि इस तरह की स्थिति का सामना करते रहने से अच्छा है वो अपने संपादक पति से तलाक ले लें ।

संक्षेप में उनकी हिंदी ठेठ मुंबइया हिंदी है। उपन्यास के अधिकांश पात्रों की भाषा में मराठी भाषी शब्द पाये जाते हैं। जैसे चप्पल, खोली, आतिथ्य, हरामखोर आदि। साथ ही अंग्रेजी शब्दों की भी भरमार दिखाई देती है। जैसे- प्लेटफार्म, हेलीकॅप्टर, लॉकअप, कंपार्टमेंट, पर्सनल डिपार्टमेंट, शॉर्टकट आदि अंग्रेजी शब्द प्रयोग पाये जाते हैं। उपन्यास की भाषा में अपेक्षित प्रवाह और सहजता है। चित्रा ने भाषा को अधिक प्रभावी एवं आकर्षक बनाने के लिए मुहावरों का भी प्रयोग किया है। जिससे भाषा अधिक, जिवंत बन गयी है। "कोई सिलवट न चिपकना, ताकते रह जाना, दीदो में तेल चुआकर बैठना" आदि मुहावरों का प्रयोग पाया जाता है। साथ ही कहावतों का भी प्रयोग भाषा को अधिक जनभाषा के निकट लाया है। "हथेली पर सरसों उगना", "मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक", "अंधो में काना राजा" इस प्रकार मुहावरों तथा कहावतों का प्रयोग चित्रा ने पात्रों के मनोभावों को अधिक स्पष्ट रूप से चित्रित करने के लिए किया है इसमें सुभाषितों का भी प्रयोग हुआ है। जैसे -"राम रतन धन पायो", "प्रथम ग्रासे मच्छिकापात"।

इस तरह चित्रा जी की कहानियाँ अपने अंदर एक संसार लिए चलती है । जिसमें प्रत्येक छोटे-बड़े, उच्च-निम्न, जीव-जंतु एवं युवा-वृद्ध को स्थान मिलता है । उनके विषयों की इन विविधताओं के कारण ही वह समकालीन समाज की एक सजग लेखिका के रूप में जानी जाती है । उनकी विशेषता इसमें रूप में भी देखी जा सकती है कि विषयों के इस वैविध्यपूर्ण वर्णन के साथ-साथ उनकी भाषा उनके द्वारा प्रदर्शित प्रत्येक विषय के साथ न्यायसंगत दृष्टिगत होती है । चित्रा जी एक समाज-सेविका के रूप में भी कार्य कर चुकी है । उनका जीवन अनुभव ही उनके सफल लेखन की प्रेरणा है । इस तरह की उनकी कितनी ही और कहानियाँ है जिनका विषय समाज में उपस्थित किसी न किसी तत्कालीन स्थिति पर प्रश्न डालता है । यही विशेषताएँ उन्हें अन्य लेखिकों से अलग करती है । चित्रा जी का कथा-साहित्य आज के युवा लेखक-लेखिकाओं के लिए प्रेरणादायक है ।

संदर्भ ग्रंथ

१. चित्रा मुद्गल : एक मूल्यांकन, के. वनजा, सामयिक बुक्स, संस्करण २०१६
२. चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य का अनुशीलन, डॉ. गोरक्ष थोरात, अन्नपूर्णा प्रकाशन, प्रथम संस्करण २००९
३. संपादक- डॉ. कृपाशंकर उपाध्याय, आवां विमर्श, सामयिक बुक्स २०१०

संपर्क न. 7982589573 ई-मेल : kavyaashi92@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 March 2025 Page No. : 77-79
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति

महेन्द्री कुमारी, शोधार्थी हिन्दी विभाग,

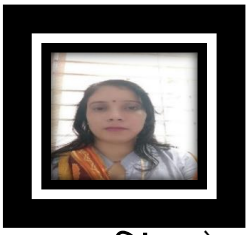

डॉ0 इन्दु प्रकाश सिंह, शोध निर्देशक,
राजकीय कन्या महाविद्यालय, धौलपुर राज0
हिन्दी विभाग, महाराजा सूरजमल बृज विश्वविद्यालय, भरतपुर राज0

प्रकृति और पुरुष–विधाता के दो विशिष्ट एवं अभिनव सृजन हैं। इन दोनों की ही सर्वथा स्वतंत्र एवं पृथक्–पृथक सत्ता होती है, परंतु अंततः परस्पर पूरक बनकर परिपूर्णता अर्जित करना ही उनकी नियति है अथवा मजबूरी। एक के अभाव में दूसरा निष्प्रभावी ही नहीं अपूर्ण और निरर्थक–सा बनकर रह जाता है। नर–नारी, स्त्री–पुरुष या संपूर्णतः कहें तो नर–मादा इन्हीं के प्रतिरूप हैं, जो सृजन के मूलाधार हैं। अतः इनकी पारस्परिक अनुरक्ति और अनुबंध सहज और स्वाभाविक है। निर्विवाद रूप से इस अनुरक्ति के मूल में काम (वासना) तत्त्व की सक्रियता सबसे विशिष्ट होती है जो युगल की संरचना कर इस सायुज्जता को स्थायित्व एवं विशिष्ट रचनाधर्मी स्वरूप प्रदान करती है। यह वासना नर–नारी की शारीरिक/प्राकृतिक आवश्यकता ही नहीं बल्कि अपरिहार्य विवशता भी कही जा सकती है। यह इतनी आवेगमय होती है कि अपने जागरण के दौरान मर्यादा के समस्त बंधनों को तोड़कर निर्बंध प्रवाह हेतु निरंतर यत्नशील रहती है। इसको बरजोरी अंकुश में रखने की जितनी ही चेष्टा की जाती है, यह उतनी ही प्रचण्ड, स्वच्छंद, उन्मुक्त और अमर्यादित होती चली जाती है, फलतः कुत्सित, घिनौनी और अमर्यादित भी। यही कारण है कि,''इसकी प्रबलता, आवेग प्राणता और निर्बंध उच्छलन को स्वीकार कर परिवार की अवधारणा को मूर्त रूप देने वाले मनीषियों ने काम को संयमित और उदात्तीकृत करने का प्रयास किया। फलतः विवाह नामक संस्था का गठन हुआ और नियंत्रित कामाचार को प्रीति, प्रणय, अनुराग,.....प्रभृति न जाने कितने विशेषण प्रदान किये गये। यहॉ नर–नारी, पति–पत्नी के रूप में काम–वासना की उत्ताल तरंगों पर निर्द्वंद्व भाव से आरूढ़ हो जहॉ शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक संतृप्ति प्राप्त करते हैं वहीं सृजन की श्रृंखला को आगे बढ़ाने में रचनात्मक सुयोग भी प्रदान करते हैं।''[1]

तात्पर्य यह है कि पति–पत्नी (मूलतः नर–नारी) एक–दूसरे के अनिवार्य पूरक कहे जा सकते हैं। पत्नी के लिए धर्मपत्नी, वामांगी, अर्धांगिनी, प्रेयसी.... प्रभृति पर्यायवाची शब्द और उनके समर्पण से जुड़ी अनेकानेक रोमांचक कथायें इसी यथार्थ को द्योतित करती हैं। यह भी ध्यान रखें कि भारतीय परिवेश में पत्नी की भूमिका और दायित्व को पति की अपेक्षा गुरुतर मानते हुए यहॉ तक घोषित किया गया है– **यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवता** अर्थात् जहॉ नारी का सम्मान होता है, वहॉ देवता निवास करते हैं– आस्था के धरातल पर मातृ–शक्ति को सर्वोपरि मानना इसका एक सशक्त प्रमाण है। उसकी इसी प्रतिष्ठा ने मध्यकाल में उसके साथ विसंगतियों का जो ताण्डव किया, उसने उसको हीनावस्था में ला पटका। इस विसंगति का सामान्य परिचय हम इस प्रकार प्राप्त कर सकते हैं–अनेक समानताओं के बावजूद यह

स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं कि,''नर–नारी विधाता की परस्पर भिन्न रचनायें हैं। इसीलिए अनेक संदर्भों में उनकी सामर्थ्य और सक्रियता के क्षेत्र भी भिन्न–भिन्न हैं। जहॉ पुरुष; पौरुष, श्रम, कठोरता, बर्बरता और अधीरता की प्रतिमूर्ति होता है, वहीं नारी; त्याग, दया, करुणा, ममता और धैर्य की। अपनी इसी विशेषता के चलते वह बेटी के रूप में अपना जीवन आरंभ कर बहिन, पत्नी, मॉ,.....प्रभृति न जाने कितने रिश्तों का निर्वाह किया करती है। पुरुष को प्रतिष्ठा और उपलब्धि के सर्वोच्च शिखर पर आरूढ़ करने के लिए वह स्वयं को भी दॉव पर लगा दिया करती है। नारी के इसी अभिनव व्यक्तित्व और कृतित्व को लक्ष्य कर कही गयी यह उक्ति अब एक सामान्य सत्य–सी बनकर स्थापित हो गयी है कि– **प्रत्येक पुरुष की सफलता के पीछे एक स्त्री का हाथ होता है।**[2]

हमारा देश/भारतीय समाज, मान्यताओं के उक्त धरातल पर एक आदर्श देश/समाज माना जा सकता है। उसने आदिकाल से ही नर–नारी को समान मानकर नारी को हमेशा भरपूर सम्मान दिया है। ''वस्तुतः नारी की समता, उसकी बौद्धिकता एवं समाज में उसके स्थान के संबंध में भारतीय परंपरा अत्यंत समृद्धिशाली रही है। स्त्रियॉ हमारी सांस्कृतिक आकर ही नहीं वरन् लोकजीवन, धर्म और मानवता के विकास की कुंजी भी हैं।''[3] भारतीय सामाजिक व्यवस्था में नारी जाति सुख, सम्पत्ति, ज्ञान एवं शक्ति का प्रतीक मानी गयी है। जिसकी अभिव्यक्ति के रूप में लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा, पार्वती,..... की पूजा की जाती है। देवताओं के नाम के आगे उनकी पत्नियों के नाम (सीताराम, राधेश्याम, गौरीशंकर, ...) का स्मरण इसी यथार्थ की जीवंत प्रमाण है। ''तैत्तरीय उपनिषद की शिक्षावली में 'मातृदेवोभव, पितृदेवोभव, आचार्यदेवोभव' कहा गया है। इसमें माता को सबसे पहला स्थान दिया गया है। आश्रमों में गुरुपत्नी अत्यंत सम्माननीय होती थीं। समाज व्यवस्था में स्त्रियों की समान सहभागिता एवं स्त्रियों के प्रति सम्मान की गौरवमयी परंपरायें ही भारतीय संस्कृति को विश्व की अन्य संस्कृतियों से अनूठी, भिन्न एवं मौलिक बनाती हैं।''[4] परन्तु प्रसंगवश इनके संदर्भ में यह तथ्य भी चरितार्थ होता है कि परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है। परिवेश के बदलाव के साथ न जाने कितनी मान्यतायें बदल जाती हैं। राजा, रंक बन जाते हैं और आबादी, वीरानी की शरण–स्थली बन जाती है। भारतीय नारी–समुदाय पर ये मान्यतायें अक्षरशः चरितार्थ होती हैं। पुरातन उद्धरणों/प्रसंगों से यह स्पष्ट संकेत मिलता है कि नारी को तत्कालीन समाज में यथेष्ट सम्मान मिलता था। बृहदारण्यक उपनिषद में ऐसे धार्मिक कृत्यों के उल्लेख मिलते हैं जिनका उद्देश्य विदुषी पुत्री प्राप्त करना था। इस काल में स्त्रियों की शिक्षा–दीक्षा पर विशेष बल दिया जाता था। यह स्पष्ट है कि ऋग्वेद की अनेक ऋचायें–लोपमुद्रा, विश्वतारा, शिकता, निवावरी, घोषा एवं इंद्राणी आदि विदुषी स्त्रियों की रची हुई हैं। महाभारत काल और उसके बाद स्थापित संक्रांति कालीन परिवेश के साथ स्त्रियों के सम्मान को ग्रहण लगना आरंभ हुआ। परंतु आस्थायें सहसा विखंडित नहीं हुईं। यद्यपि द्रोपदी के चीर–हरण का गर्हित प्रसंग जिस महामानव के सामने सम्पन्न हुआ था, उसी भीष्म पितामह की मान्यता है कि,''स्त्री को सदैव पूज्य मानकर उसके साथ स्नेह का व्यवहार करना आवश्यक है। जहॉ स्त्रियों का आदर होता है, वहॉ देवताओं का निवास होता है और उसकी अनुपस्थिति में सारे कार्य पुण्य रहित हो जाते हैं।''[5]

लेकिन धीरे–धीरे परिस्थितियॉ ऐसी निर्मित हो गयीं कि उसे पूरी तरह पुरुष के अधीन माना जाने लगा। सामान्यतः मनुस्मृति के प्रणेता मनु पर स्त्री–विरोधी होने का आरोप लगाया जाता है, किंतु यह सर्वथा संगत नहीं। उनके नारी–संबंधी विचार न्यायपूर्ण, पक्षपात रहित एवं उनके प्रति स्नेह एवं सम्मान के द्योतक हैं।[6] लेकिन इस सत्य को नकारा नहीं जा सकता कि धीरे–धीरे विसंगतिपूर्ण होती जा रही देश की राजनीतिक परिस्थितियों ने ऐसा परिवेश निर्मित कर दिया जिससे एक–एक कर अनेकानेक ऐसी विसंगतिपूर्ण विडंबनायें स्थापित होती रहीं जिससे नारी परतंत्र, पराधीन, निस्सहाय और निर्बल बनी। मुगलों के शासन–काल के अंतिम चरण में उसकी अवस्था पतन के गर्हित स्तर तक पहुॅच गयी। फिर अंग्रेजों के शासन–काल में (स्वतंत्रता–संग्राम 1857 ई.के पूर्व) नारी–दशा में सुधार के जो प्रयास किये गये वे सराहनीय तो थे किंतु नाकाफी थे। किंतु 1857ई. से 1947ई. के मध्य नारी की अवस्था में जागरण का एक अप्रत्याशित और क्रॉतिकारी परिवर्तन दृष्टिगत होता है। हिंदी साहित्य ने इन संदर्भों को बड़ी गहराई से आत्मसात् कर प्रस्तुत किया है। उसके आधुनिक काल से ही नारी–जागरण को देश की आजादी की प्रथम और मूलभूत आवश्यकता मानकर उन्हें उनकी विविध विसंगतियों से मुक्ति दिलाने का उद्यम किया गया। उसे रचनाधर्मिता का अवसर मिला तो उसने भी न केवल पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर सहयोग किया बल्कि अनेक क्षेत्रों में अपनी कर्मनिष्ठा से उसे पीछे भी छोड़ दिया। 1954ई. में पारित विशेष विवाह

कानून, 1955ई. में पारित हिन्दू विवाह और विवाह विच्छेद कानून, 1956ई. में पारित हिन्दू उत्तराधिकार कानून, 1956ई. में पारित हिंदू दत्तक ग्रहण और रखरखाव अधिनियम, 1959ई. में पारित अंतरजातीय विवाह अधिनियम, 1961ई. में पारित दहेज निषेध अधिनियम, 1972ई. में पारित गर्भ का चिकित्सकीय समापन अधिनियम, कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न (रोकथाम, निषेध और निवारण) अधिनियम, 2001ई. में घोषित राष्ट्रीय महिला सशक्तीकरण नीति और अब विविध क्षेत्रों/संगठनों में 30 प्रतिशत आरक्षण की व्यवस्था लागू किये जाने की तत्परता से जो परिणाम सामने आ रहे हैं, वे अपेक्षा के अनुरूप तो हैं, परंतु अभी भी इनके लिए बहुत कुछ किया जाना शेष है।

तात्पर्य यह है कि भारतीय नारी–समुदाय का आचरण साम्प्रतिक विसंगतियों के संवेदनशून्य परिवेश में एक ऐसा अजूबा क्रिया–व्यापार बन चुका है, जिसके बारे में कोई निश्चित राय व्यक्त करना फिलहाल संगत नहीं। शिवानी की कहनियों के ताने–बाने ऐसे ही विविध भाव–भंगिमा वाले नारी–चरित्रों के क्रिया–व्यापार से बुने गये हैं। यह विविधता ही उन्हें प्रतिष्ठित कहानीकारों के मध्य सहज ही स्थापित कर देती है।

प्रेमचंद, गोदान, ''मर्द में वह सामर्थ्य ही नही है। वह अपने को मिटायेगा, तो शून्य हो जायेगा। वह किसी खोह में जा बैठेगा और सर्वात्मा में मिल जाने का स्वप्न देखेगा। वह तेज प्रधान जीव है और अहंकार में यह समझकर कि वह ज्ञान का पुतला है, सीधा ईश्वर में लीन होने की कल्पना किया करता है। स्त्री पृथ्वी की भॉति धैर्यवान है, शांति सम्पन्न है, सहिष्णु है। पुरुष में नारी के गुण आ जाते हैं तो वह महात्मा बन जाता है। नारी में पुरुष के गुण आ जाते हैं, तो वह कुलटा बन जाती है। पुरुष आकर्षित होता है स्त्री की ओर, जो सर्वांश में स्त्री हो।'', पृ.सं. 128

संदर्भ–

1. सामान्य हिंदी, भारतीय नारी : विगत, वर्तमान और संभावित स्वरूप, पृ.सं. 544
2. वही, पृ.सं. 544–545
3. जैन डॉ. दीपा, महिला सुरक्षा एवं महिला पुलिस, पृ.सं. 1
4. वही,
5. जैन डॉ. दीपा, महाभारत–अनुशासन पर्व, (महिला सुरक्षा एवं महिला पुलिस), पृ.सं. 4 से उद्धृत
6. वही, पृ.सं. 4
7. सामान्य हिंदी, भारतीय नारी : विगत, वर्तमान और संभावित स्वरूप, पृ.स. 547

मोबाइल न0–6376832414. ईमेल पता– mahendrikumari10@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 March 2025 Page No. : 80-84
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

ਬਿਰਤਾਂਤ ਸ਼ਾਸਤਰ ਦੇ ਬਦਲਵੇ ਸਰੋਕਾਰ

ਡਾ. ਮਨਿੰਦਰਜੀਤ ਕੌਰ, ਅਸਿਸਟੈਂਟ ਪ੍ਰੋਫੈਸਰ, ਪੰਜਾਬੀ ਵਿਭਾਗ,
ਦਸਮੇਸ਼ ਗਰਲਜ਼ ਕਾਲਜ, ਚੱਕ ਅੱਲ੍ਹਾ ਬਖਸ਼, ਮੁਕੇਰੀਆਂ।

ਕੋਈ ਸਾਹਿਤ ਦੀ ਪਰਤ ਨੂੰ ਜਾਣਨਾ ਹੋਵੇ ਤਾਂ ਸਭ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾ ਧਿਆਨ ਬਿਰਤਾਂਤ ਤੇ ਆਉਂਦਾ ਹੈ। ਵੀਂਹਵੀ ਸਦੀ ਦੌਰਾਨ ਸਾਹਿਤ-ਚਿੰਤਨ ਦੇ ਖੇਤਰ ਵਿੱਚ ਇੱਕ ਦਿਲਚਸਪ ਗੱਲ ਸਾਹਮਣੇ ਆਈ ਕਿ ਸਾਹਿਤਕਾਰ ਕਵਿਤਾ ਅਤੇ ਨਾਟਕ ਨਾਲੋਂ ਬਿਰਤਾਂਤ ਨੂੰ ਆਪਣਾ ਵਿਸ਼ਾ ਬਣਾਉਣ ਵਿੱਚ ਰੁਚਿਤ ਹੋ ਗਏ। ਬਿਰਤਾਂਤ ਅਤੇ ਬਿਰਤਾਂਤ ਸੰਰਚਨਾ ਦੇ ਸਿਧਾਂਤ ਅਤੇ ਅਧਿਐਨ ਨਾਲ ਅਤੇ ਉਹਨਾਂ ਤਰੀਕਿਆ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧਿਤ ਅਨੁਸ਼ਾਸ਼ਨ ਹੈ ਜਿਹਨਾਂ ਰਾਹੀ ਪ੍ਰਭਾਵ ਪਾਉਂਦੇ ਨਜ਼ਰ ਆਉਂਦੇ ਹਨ। ਇਸ ਬਦਲਦੇ ਸਰੋਕਾਰ ਵਿੱਚ ਸਾਹਿਤ ਚਿੰਤਨ ਦੇ ਖੇਤਰ ਵਿੱਚ ਅਮਰੀਕੀ ਨਵ-ਅਲੋਚਨਾ, ਰੂਸੀ ਰੂਪਵਾਦ, ਸੰਰਚਨਾਵਾਦ, ਚਿਹਨ-ਵਿਗਿਆਨ, ਉੱਤਰ ਸੰਰਚਨਾਵਾਦ, ਮਾਰਕਸਵਾਦ ਅਤੇ ਉੱਤਰ-ਮਾਰਕਸਵਾਦ, ਉੱਤਰ ਬਸਤੀਵਾਦ ਵਰਗੀਆਂ ਧਾਰਾਵਾਂ ਦਾ ਨਾਮ ਲਿਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ। "ਬਿਰਤਾਂਤ ਨਿਤ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਦਾ ਸਾਧਾਰਨ ਸ਼ਬਦ ਨਹੀਂ ਸਗੋਂ ਇਸਦਾ ਸੰਬੰਧ ਸਮਕਾਲੀ ਆਲੋਚਨਾ ਦੀ ਤਕਨੀਕੀ ਸ਼ਬਦਾਵਲੀ ਨਾਲ ਹੈ।" ਬਿਰਤਾਂਤ ਦਾ ਸਬੰਧ ਹਮੇਸ਼ਾ ਹੀ ਰਚਨਾ ਦੀ ਤਕਨੀਕੀ ਪੱਖ ਨਾਲ ਜੁੜਿਆ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਬਿਰਤਾਂਤ ਦਾ ਵਿਸਥਾਰ ਕਾਲਪਨਿਕ ਤੇ ਵਾਸਤਵਿਕ ਵੀ ਮੰਨਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਦਾ ਘੇਰਾ, ਨਾਵਲ, ਕਹਾਣੀ, ਜੀਵਨੀ, ਸਵੈ-ਜੀਵਨੀ ਅਤੇ ਇਤਿਹਾਸ ਵਰਗੀਆਂ ਸਾਹਿਤਕ ਰੂਪਾਂ ਵਿੱਚ ਲੇਖਕ ਆਪਣੀਆਂ ਵਿਆਕਤੀਗਤ ਸਭਿਆਚਾਰਕ ਜਾਂ ਕੌਮੀ ਪਛਾਣ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਤੱਖ ਨਜ਼ਰ ਆਉਂਦਾ ਹੈ। ਜਸਬੀਰ ਸਿੰਘ ਜੀ ਨੇ ਆਪਣੀ ਲੇਖਣੀ ਵਿੱਚ ਬਿਰਤਾਂਤ ਦਾ ਸਿਧਾਂਤਕ ਵਿਵਚਨ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਕਥਾ-ਰਚਨਾ ਦਾ ਬਿਰਤਾਂਤ ਦੇ ਸੰਗਠਨਕਾਰੀ ਤੱਤਾਂ ਅਤੇ ਨੇਮਾਂ-ਪ੍ਰਬੰਧਾਂ ਦੀ ਤਲਾਸ਼ ਕਰਨ ਵੱਲ ਰੁਚਿਤ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਜੇਕਰ ਬਿਰਤਾਂਤ ਸ਼ਾਸਤਰ ਦਾ ਸੰਕਲਪ ਪਰਿਲੀਵਾਰ ਪ੍ਰਸਿੱਧ ਸੰਰਚਨਾਵੀ ਚਿਤਨ ਤੋਦੇਰਪਣ ਨੇ ਆਪਣੀ 1969 ਈ. ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਿਤ ਪੁਸਤਕ **Grammaire du Decameron** ਵਿੱਚ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ। ਇਸ ਵਿੱਚ ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਸੰਗਠਨਕਾਰੀ ਨੇਮਾਂ ਦੀ ਤਲਾਸ਼ ਕਰਨ ਦਾ ਯਤਨ ਕੀਤਾ। ਡਾ. ਜੋਗਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਕੈਰੋ ਹੋਰਾਂ ਨੇ ਕਹਾਣੀ ਦੇ ਬਿਰਤਾਂਤ ਰੂਪ ਨੂੰ ਮੌਖਿਕ ਤੇ ਸਾਹਿਤਕ ਵੀ ਹੋ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਜਦੋ ਤੱਕ ਦਾ ਬਿਰਤਾਂਤ ਹੋਂਦ ਵਿੱਚ ਆਇਆ ਉਸ ਵਿੱਚ ਕਈ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਬਦਲਾਵ ਰੂਪ ਵੀ ਆਏ ਹਨ। ਇਹ ਬਦਲਵਾ ਰੂਪ ਸੰਰਚਨਾਵਾਦ ਦੇ ਅੰਤਰਗਤ ਸਾਹਮਣੇ ਆਇਆ ਹੈ। ਇਸ ਦੇ ਪੜਾ ਕਈ ਧਾਰਾਵਾਂ ਨਾਲ ਜੁੜੇ ਹੋਏ ਹਨ ਜਿਵੇਂ ਰੂਸੀ ਰੁਪਵਾਦ ਸੰਰਚਨਾਵਾਦ, ਸਾਰਨਵਾਦ ਆਦਿ ਚਿੰਤਨ ਧਰਾਵਾਂ ਨਾਲ ਜੁੜ ਕੇ ਸਮੇਂ ਤੇ ਸਥਿਤੀ ਨੂੰ ਬਿਆਨ ਕਰਦਾ ਹੈ।

ਜੇਕਰ ਵੇਖਿਆ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਬਿਰਤਾਂਤ ਸ਼ਾਸਤਰ (Narratology) ਉਹ ਵਿਗਿਆਨ ਪੱਧਰੀ ਹੈ ਜੋ ਕਿ ਕਹਾਣੀਆਂ, ਨਾਵਲ ਉਹਨਾਂ ਬਣਤਰ ਅਤੇ ਉਹਨਾਂ ਦੇ ਅਰਥਾਂ ਦੀ ਜਾਂਚ-ਪਰਖ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਅਜੋਕੇ ਸਮੇਂ ਵਿੱਚ ਇਸ ਵਿੱਚ ਅਨੇਕਾਂ ਤਬਦੀਲੀਆਂ ਵੇਖਣ ਨੂੰ ਮਿਲਦੀਆਂ ਹਨ। ਜੇਕਰ ਅਸੀਂ ਪੁਰਾਣੇ ਸਾਹਿਤ ਨੂੰ ਵਿਚਾਰਦੇ ਹਾਂ ਤਾਂ ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਅਤੇ ਮੱਧਕਾਲੀ

ਸਾਹਿਤ ਵਿੱਚ ਬਿਰਤਾਂਤ ਦੀ ਮਹੱਤਤਾ ਨੂੰ ਉਜਾਗਰ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਇਹਨਾਂ ਸਮਿਆਂ ਦੀਆਂ ਲਿਖੀਆਂ ਗਈਆਂ ਰਚਨਾਵਾਂ ਰਾਜਸੀ, ਧਾਰਮਿਕ ਅਤੇ ਸਮਾਜਿਕ ਪਹਿਚਾਣ ਨਾਲ ਜੁੜੀਆਂ ਹੁੰਦੀਆਂ ਹਨ। ਇਸ ਵਿੱਚ ਮਹਾਂਭਾਰਤ ਅਤੇ ਰਸਾਇਣ ਵਰਗੀਆਂ ਧਾਰਮਿਕ ਕਾਥਾਵਾਂ ਦਾ ਬਿਰਤਾਂਤ ਵਿਰਾਸਤੀ ਬਿਰਤਾਂਤ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਵਿੱਚ ਮਿਥਕ, ਧਾਰਮਿਕ ਗਾਥਾਵਾਂ ਅਤੇ ਰਾਜਸੀ ਇਤਿਹਾਸ ਦਾ ਕੇਂਦਰ ਬਣਦੀਆਂ ਹਨ। ਇਹਨਾਂ ਇਤਿਹਾਸਕ ਪੱਧਰ ਤੇ ਰਾਜ ਦਰਬਾਰਾਂ ਅਤੇ ਯੁੱਧਾਂ ਬਾਰੇ ਲਿਖੇ ਗਏ ਰਚਨਾਵਾਂ ਦਾ ਬਿਰਤਾਂਤ ਬਾਰੇ ਵਧੇਰੇ ਜਾਣਕਾਰੀ ਮਿਲਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਵਿੱਚ ਵਲਾਦੀਮੀਰ ਪ੍ਰੋਪ ਨੇ ਰੂਸੀ ਲੋਕ-ਕਹਾਣੀਆਂ ਦੇ ਸੰਰਚਨਾਤਕ ਤੱਤਾਂ ਨੂੰ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ, ਰੋਲਾਂ ਬਾਰਤ ਬਿਰਤਾਂਤ ਦਾ ਭਾਸ਼ਾਈ ਅਤੇ ਸੰਕੇਤਰ ਵਿਆਖਿਆ ਕੀਤੀ ਹੈ। ਯਾਕ ਦੇਰੀਦਾ ਪਾਠ ਦੀ ਵਿਖੰਡਨ ਵਿਧੀ ਦਾ ਰੂਪ ਪੇਸ਼ ਕਰਦਾ ਹੈ। “ਕਾਰਲ ਮਾਰਕਸ ਦੇ ਮਗਰੋਂ ਅਨਮੋਨਿਓ ਗ੍ਰਮਸ਼ੀ ਨੂੰ ਦੁਨੀਆਂ ਦਾ ਸਭ ਤੋ ਮੋਲਿਕ ਮਾਰਕਸੀ ਚਿੰਤਨ ਮੰਨਿਆ ਗਿਆ ਹੈ। ਪ੍ਰਭੂਸਤਾ, ਲੋਕ ਬੋਧ, ਸੁਬੋਧਾ ਬੁੱਧੀਵਰਗ ਰਾਜਸੱਤਾ ਧਰਮ, ਲੋਕਧਾਰਾ, ਸਾਹਿਤ, ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਅਤੇ ਭਾਸ਼ਾ ਆਦਿ ਅਨੇਕ ਵਿਸ਼ਿਆ ਤੇ ਜਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦਾ ਉਸਨੇ ਗੰਭੀਰ ਚਿੰਤਨ ਕੀਤਾ।”(2)

21ਵੀਂ ਸਦੀ ਵਿੱਚ ਬਿਰਤਾਂਤ ਸ਼ਾਸਤਰ ਦੇ ਨਵੇਂ ਪਰਿਪੇਖ ਹੋਂਦ ਵਿੱਚ ਆਏ ਨਵੇਂ ਪਰਿਪੇਖ ਲਿੰਗ, ਵਰਨ, ਜਾਤੀ, ਪਰਵਾਸ, ਤਕਨੀਕ ਤੇ ਮੀਡੀਆ ਦੇ ਨਵੇਂ ਰੁਝਾਨ ਵੇਖੇ। ਇਹਨਾਂ ਨੂੰ ਉੱਤਰ-ਆਧੁਨਿਕ ਦੇ ਪਰਿਪੇਖ ਵਿੱਚ ਰੱਖਕੇ ਵਾਚਿਆਂ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਪ੍ਰਵਾਲੀ ਦੇ ਚਿੰਤਨ ਸਾਹਿਤ, ਕਲਾ ਅਤੇ ਹੋਰ ਸਭਿਆਚਾਰਕ ਸਿਰਜਨਾਵਾਂ ਵਿਚਾਰਧਾਰਕ ਉਤਪਾਦਨ ਦੇ ਵਿਭਿੰਨ ਰੂਪ ਹਨ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਅੰਤਿਮ ਤੇ ਆਧਾਰ ਸੰਰਚਨਾ ਨਿਰਧਾਰਤ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਪਹਿਲਾ ਇਹ ਸਿਧਾਂਤ ਪ੍ਰਣਾਲੀਆਂ ਮਾਰਕਸਵਾਦ, ਸੰਰਚਨਾਵਾਦ, ਕਲਾਸੀਕਲ, ਯਥਾਰਥਵਾਦ ਹਨ ਪਰ ਸਮੇਂ ਦੇ ਬਦਲਾਵ ਨਾਲ ਇਹਨਾਂ ਦੀਆਂ ਪ੍ਰਣਾਲੀਆਂ ਉੱਤਰ ਆਧੁਨਿਕ ਵਿੱਚ ਆ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ। ਇਹ ਮਾਰਕਸਵਾਦ ਆਰਥਿਕ, ਰਾਜਨੀਤਿਕ ਅਤੇ ਸਮਾਜਿਕ ਵਿਚਾਰਧਾਰਾ ਜੋ ਕਿ ਏਂਗਲਸ ਹੈ ਕਾਰਲ ਦੇ ਵਿਚਾਰਧਾਰਾ ਨਾਲ ਜੁੜਦੀ ਹੈ ਤੇ ਆਪਣੀਆਂ ਲਿਖਤਾਂ ਵਿੱਚ ਉਹਨਾਂ ਦਾ ਸਥਾਨ ਗ੍ਰਹਿਣ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਇਹ ਵਿਚਾਰਧਾਰਾ ਪੂੰਜੀਵਾਦੀ ਦੀ ਆਲੋਚਨਾ ਕਰਦੀ ਹੈ ਤੇ ਇਕ ਵਰਗਹੀਣ ਸਮਾਜ ਦੇ ਪੱਖ ਵਿੱਚ ਬੋਲਦੀ ਹੈ। ਇਹਨਾਂ ਦਾ ਸਿਧਾਂਤ ਬੁਰਜੁਆਜੀ, ਪ੍ਰੋਲੰਟੇਰੀਅਤ, ਅਤੀਤ ਦਾ ਭੋਤਿਕਵਾਦ, ਮੂਲਭੂਤ ਵਧੀਕ ਮੁਲਾਂ, ਧਰਮ ਦੀ ਆਲੋਚਨਾ ਕਰਦਾ ਹੈ, ਇਹਨਾ ਦਾ ਮਕਸਦ ਉਤਪਾਦਨ ਦੇ ਸਰੋਤ ਜਿਸ ਵਿੱਚ ਫੈਕਟਰੀਆ, ਮਜ਼ਦੂਰ ਵਰਗ, ਸਮਾਜਿਕ ਵਿਵਸਥਾ, ਕਰਨ ਵਾਲਿਆਂ ਉਹਨਾਂ ਕੀਤੇ ਕੰਮ ਦਾ ਪੂਰਾ ਮੁੱਲ ਨਾ ਮਿਲਣਾ, ਯੋਗਤਾ ਅਨੁਸਾਰ ਕੰਮ ਦੀ ਕਦਰ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਇਹਨਾਂ ਸਮੱਸਿਆ ਦਾ ਹੱਲ ਕਰਨ ਲਈ ਸ਼ੰਘਰਸ਼ ਹੈ। ਅੱਗੇ ਵੱਧ ਕੇ ਇਹ ਉੱਤਰ ਮਾਰਕਸਵਾਦ ਆਉਂਦਾ ਹੈ। “ਉੱਤਰ ਮਾਰਕਸਵਾਦ ਸਾਹਿਤ ਸਿਧਾਂਤ ਅਤੇ ਸਮੀਖਿਆ ਨਾਲ ਹੈ। ਇਹ ਸਮੀਖਿਆ ਵਿਧੀ ਮੂਲ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਕਲਾਸੀਕਲ ਮਾਰਕਸਵਾਦ ਦੀ ਉਪਜ ਹੈ ਇਸ ਦੀ ਬੁਨਿਆਦੀ ਦਾਰਸ਼ਨਿਕ ਸਥਾਪਨਾਵਾਂ ਨੂੰ ਪ੍ਰਵਾਨ ਕਰਦੀ ਹੈ।”(3) ਇਸ ਵਿੱਚ ਬਿਰਤਾਂਤ ਰਚਨਾ ਵਿਸ਼ਲੇਸ਼ਣ ਵਿਅਕਤੀਗਤ ਵਿਲੱਖਣਤਾ ਦਾ ਆਧਾਰ ਬਣਾਇਆ ਹੈ। ਫਿਰ ਸਮਾਜਿਕ ਆਰਥਿਕ ਬਣਤਰ ਦਾ ਸੰਬੰਧਤ ਉਸ ਨੂੰ ਪਰਖਦਾ ਹੈ। ਜੇਮਸਨ ਦੇ ਮਤ ਅਨੁਸਾਰ ਰਚਨਾ ਦੀ ਕਥਾ ਵਿੱਚ ਵਿਅਕਤੀ ਦੀ ਸਥਿਤੀ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਮਾਨਸਿਕ ਬਿੰਬ ਦਾ ਵੀ ਚਿੱਤਰ ਪੇਸ਼ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਅਸਲ ਵਿੱਚ ਬਿਰਤਾਂਤ ਸ਼ਾਸਤਰ ਦਾ ਸੰਕਲਪ ਸੰਰਚਨਾਵਾਦ ਨਾਲ ਹੀ ਸਾਹਮਣੇ ਆਇਆ ਹੈ। ਡਾ. ਹਰਭਜਨ ਸਿੰਘ ਦੇ ਮੱਤ ਅਨੁਸਾਰ “ਸੰਰਚਨਾਵਦਾ ਨਾ ਕੋਈ ਦਾਰਸ਼ਨਿਕ ਲਹਿਰ ਹੈ, ਨਾ ਸਾਹਿਤਕ ਪ੍ਰਵਿਰਤੀ। ਇਹ ਇੱਕ ਚਿੰਤਨ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀ ਹੈ ਜੋ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਗਿਆਨ ਦੇ ਸੰਕਲਪਾਂ ਅਤੇ ਅੰਤਰ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀਆਂ ਨੂੰ ਮਾਡਲ ਵਾਂਗ ਵਰਤਦੀ ਹੈ।” ਸੰਰਚਨਾ ਚਿੰਨ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀ ਮੰਨਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਸਿਧਾਂਤ ਭਾਸ਼ਾ ਦੇ ਸੰਕਲਪ ਵਿੱਚ ਪੇਸ਼

ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਹੈ। "ਸੰਰਚਨਾਵਾਦ ਇੱਕ ਚਿੰਤਨ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀ ਹੈ। ਇਸ ਚਿੰਤਨ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀ ਦਾ ਸਰੋਤ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਗਿਆਨ ਹੈ। ਇਸ ਦਾ ਚਿੰਤਨ ਫਰਦੀਨਾਂ-ਦਾ-ਸੋਸਿਊਰ ਅਤੇ ਬੋਦਿਨ-ਦਾ-ਕੋਰਥਨੇ ਦੇ ਯਤਨਾਂ ਸਦਕਾ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੋਇਆ।"(4)

ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਇਸਦਾ ਸਰੋਕਾਰਾਂ ਵਿੱਚ ਰੂਸੀ ਰੂਪਵਾਦੀਆਂ ਨੇ ਕਥਾ ਤੇ ਕਥਾਨਕ ਦੇ ਸੰਕਲਪਾਂ ਵਿੱਚ ਚਿੰਤਨ ਕਰਦਿਆ ਉਹਨਾਂ ਰਚਨਾਵਾਂ ਦੀਆਂ ਅੰਤਰ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀਆਂ ਨੂੰ ਅਪਣਾਇਆ ਹੈ। ਉਹਨਾਂ ਦੀਆਂ ਮੁੱਢਲੀਆਂ ਰੂਸੀ ਹੱਥ-ਲਿਖਤਾਂ ਵਿੱਚ ਈਸਾਈ ਮਤ ਅਨੁਸਾਰ ਸੰਤ ਦਿਆਂ ਜੀਵਨੀਆਂ, ਸੰਤਾਂ ਦੇ ਉਪਦੇਸ਼, ਤੀਰਥ ਯਾਤਰਾ ਦਾ ਜ਼ਿਕਰ ਅਤੇ ਬਾਈਬਲ ਦੀਆਂ ਟੁਕਾਂ ਆਦਿ ਮਿਲਦੀਆਂ ਸਨ। ਪਰ ਹੁਣ ਇਹਨਾਂ ਦੀ ਦਿਸ਼ਾ ਬਦਲ ਗਈ। ਇਹ 1917ਈ. ਵਿੱਚ ਬੋਲਸ਼ੇਵਕ ਪਾਰਟੀ ਜਿਹੜੀ ਪਿੱਛੋਂ ਕੰਮਿਊਨਿਸਟ ਪਾਰਟੀ ਬਣੀ, ਬਾਅਦ ਵਿੱਚ ਸਮਾਜਵਾਦੀ ਰਾਜ ਦੀ ਸਥਾਪਨਾ ਹੋਈ। ਪੰਜਾਬੀ ਸਾਹਿਤਕਾਰਾਂ ਉੱਤੇ ਰੂਸੀ ਸਾਹਿਤਕਾਰਾਂ ਦਾ ਡੂੰਘਾ ਪ੍ਰਭਾਵ ਪਿਆ ਹੈ। ਆਧੁਨਿਕ ਕਾਲ ਦੇ ਪੰਜਾਬੀ ਲੇਖਕਾਂ ਨੇ ਤਾਲਸਤਾਏ ਦੀਆਂ ਰਚਨਾਵਾਂ ਦਾ ਅਨੁਵਾਦ, ਗੋਰਕੀ ਤੇ ਚੈਖ਼ਣ ਦੀਆਂ ਕਹਾਣੀਆਂ ਨੇ ਪ੍ਰੇਰਿਆ। ਇਸ ਕਰਕੇ ਬਿਰਤਾਂਤ ਦਾ ਰੁੱਖ ਬਦਲ ਗਿਆ। ਕਲਾਸੀਕਲ ਤੇ ਪੁਰਾਣੇ ਇਤਿਹਾਸ ਨੂੰ ਅਪਣਾ ਕੇ ਰਚਨਾਵਾਂ ਦੇ ਵਿਸ਼ਿਆ ਨੂੰ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ। "ਰੂਸੀ ਰੂਪਵਾਦੀ ਸਾਹਿਤ ਚਿੰਤਕਾਂ ਦੀਆਂ ਕਥਾ-ਸਾਹਿਤ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧਿਤ ਇਨ੍ਹਾਂ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਅੰਤਰ-ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀਆਂ ਨੇ ਬਿਰਤਾਂਤ ਸ਼ਾਸਤਰ ਦੀ ਉਸਾਰੀ ਲਈ ਮੁੱਢਲਾ ਆਧਾਰ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕੀਤਾ।"(5) ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਹੀ ਮਨੋਵਿਸ਼ਲੇਸ਼ਣ ਚਿੰਤਕ ਪ੍ਰਣਾਲੀ ਵਿੱਚ ਪੀਰਕੇ ਮਾਸ਼ੇਰੀ, ਫ੍ਰੈਡਰਿਕ ਜੇਮਸਨ ਅਤੇ ਟੈਲੀ ਈਗਲਟਨ ਦਾ ਨਾਮ ਲਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਪ੍ਰਣਾਲੀ 19ਵੀਂ ਸਦੀ ਵਿੱਚ ਸਥਾਪਤ ਕੀਤਾ ਸਿਧਾਂਤ ਹੈ। ਇਸ ਪ੍ਰਣਾਲੀ ਨਾਲ ਮਨੁੱਖ ਦੀਆਂ ਮਾਨਸਿਕ ਪ੍ਰਕਿਰਿਆਵਾਂ ਅਤੇ ਵਿਵਹਾਰਾਂ ਦੇ ਅਧਿਐਨ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧਿਤ ਹੈ। ਇਹਨਂ ਨਾਲ ਹੀ ਸਮਾਜ, ਤੇ ਮਨੁੱਖ ਦੀ ਮਨੋ ਵੇਗਾਂ ਨੂੰ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ। "ਮਨੁੱਖੀ ਮਾਨਸਿਕਤਾ ਨੂੰ ਸਮਝਣ ਲਈ ਵਰਤੀ ਜਾਂਦੀ ਮਨੋਵਿਸ਼ਲੇਸ਼ਣ ਦੀ ਵਿਧੀ ਇੱਕ ਤਕਨੀਕ ਹੈ ਮਨੋਰੋਗੀਆਂ ਦੇ ਇਲਾਜ ਲਈ, ਪਰ ਇਸ ਵਿਧੀ ਦੇ ਪਿਛੇ ਕੰਮ ਕਰਦੇ ਸਿਧਾਂਤਾਂ ਤੇ ਇਸ ਰਾਹੀ ਇਲਾਜ ਕਰਨ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਮਿਲੇ ਨਤੀਜਿਆਂ ਨੂੰ ਦੇਖਦੇ ਹੋਏ, ਇਸਨੂੰ ਅਜਿਹੀ ਵਿਧੀ ਕਿਹਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ ਜਿਸ ਨੇ ਦੁਨੀਆਂ ਭਰ ਵਿੱਚ ਮਨੁੱਖੀ ਮਨ ਨੂੰ ਸਮਝਣ ਲਈ ਇੱਕ ਨਵਾਂ ਪਰਿਪੇਖ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕੀਤਾ।"(6) ਲੋਕ ਸਾਹਿਤ ਵਿੱਚ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਰੂਪਾਂ ਵਿਚੋਂ ਮਿਥ ਦਾ ਅਧਿਐਨ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਧ ਹੋਇਆ ਹੈ ਜਿਸ ਵਿਚੋਂ ਕਥਾ ਭਾਵ ਬਿਰਤਾਂਤ ਦੀ ਮਹੱਤਤਾ ਦਾ ਪਤਾ ਲੱਗਦਾ ਹੈ। ਲੇਖਕਾਂ ਦੁਆਰਾ ਮਨੁੱਖ ਦੀ ਖਾਹਿਸ਼ ਵਿੱਚੋਂ ਪੈਦਾ ਹੁੰਦੀਆਂ ਭਾਵਨਾਵਾਂ ਜੋ ਮਨ ਦੇ ਅੰਦਰ ਛੁਪੇ ਨੂੰ ਉਜਾਗਰ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਜਿਸ ਨਾਲ ਵਿਅਕਤੀਗਤ ਦੀ ਵਿਲੱਖਣਤਾ ਪਛਾਣੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਫ੍ਰੈਡਰਿਕ ਜੇਮਸਨ ਦੀ ਕਿਤਾਬ ਦ ਪੋਲੀਟੀਕਲ ਵਿੱਚ ਬਹੁ ਪਰਤੀ ਵਿਸ਼ਲੇਸ਼ਣ ਉੱਤੇ ਜ਼ੋਰ ਦਿੱਤਾ। ਉਹਨਾਂ ਸਮਕਾਲੀ ਇਤਿਹਾਸਕ ਯਥਾਰਥ ਨੂੰ ਸਮਾਜਿਕ ਆਰਥਿਕ ਬਣਤਰ ਅਤੇ ਇਤਿਹਾਸਕ ਯਥਾਰਥ ਹਵਾਲੇ ਨਾਲ ਰਚਨਾਵਾਂ ਦਾ ਰੂਪ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਅਜੋਕੇ ਵਿਦਵਾਨਾਂ ਨੇ ਮਾਰਕਸਵਾਦੀ, ਸੰਰਚਨਾਵਾਦੀ, ਮਨੋਵਿਗਿਆਨ, ਕਲਾਸੀਕਲ ਪਰੰਪਰਾ ਨੂੰ ਆਪਣੀਆਂ ਲਿਖਤਾਂ ਵਿੱਚ ਲਿਆ ਹੈ। ਸਮਾਜ ਦੇ ਯਥਾਰਥ ਨੂੰ ਇਹਨਾਂ ਪ੍ਰਣਾਲੀਆਂ ਨਾਲ ਮੇਲ ਕੇ ਵੇਖਿਆ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। "ਮਨੁੱਖੀ ਸਮਾਜਿਕ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਵਰਤਾਰੇ ਅਤੇ ਵਿਹਾਰ ਵਿੱਚ ਬਿਰਤਾਂਤ ਦੀ ਅਤਿਅਤ ਸਾਰਥਕ ਅਤੇ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਭੂਮਿਕਾ ਰਹੀ ਹੈ। ਆਦਿ ਕਾਲ ਤੋਂ ਹੀ ਮਨੁੱਖ ਕਥਾ-ਕਹਾਣੀਆਂ ਦੇ ਅਨੇਕਾਂ ਸੰਗਠਨ ਉਸਾਰਦਾ ਅਤੇ ਸੰਚਾਰਦਾ ਰਿਹਾ ਹੈ।"(7) ਇਸ ਲਈ ਇਹ ਦਿਸ਼ਾ ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਦੇ ਮੌਖਿਕ ਜਾ ਲਿਖਤੀ ਰੂਪਾਂ ਵਿੱਚ ਵੀ ਮਿਲ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।

ਜਦੋਂ ਬਿਰਤਾਂਤ ਨੂੰ ਸਾਹਿਤ ਰੂਪਾਂ ਵਿੱਚ ਵਿਚਾਰਦੇ ਹਾਂ ਤਾਂ ਇਹਨਾਂ ਦੀ ਵਿਧਾਵਾਂ ਅਨੇਕਾਂ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਪੇਸ਼ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਗਲਪ ਦੇ ਪੱਖ ਤੋਂ ਵੇਖਿਆ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਰੋਮਾਂਸ, ਆਦਰਸ਼ ਗ੍ਰੁਣ, ਸਮਾਜ ਦੇ ਵਿੱਚ ਵਿਚਰਦੇ ਹੋਏ ਯਥਾਰਥ ਦਾ ਅਬਾਸ ਕਰਵਾਉਂਦੇ ਨਜ਼ਰ ਆਉਂਦੇ ਹਨ। ਇਹ ਪ੍ਰਵਾਲੀਆਂ ਹੀ ਮੁੱਢਲੇ ਦਹਾਕਿਆਂ ਵਿੱਚ ਸਾਹਿਤ ਚਿੰਤਨ ਤੇ ਸਮੀਖਿਆ ਦੇ ਰੂਪ

ਵਿੱਚ ਸਥਾਪਤ ਹੋ ਗਈਆਂ ਹਨ। ਬਿਰਤਾਂਤ ਅਧਿਐਨ ਦੇ ਖੇਤਰ ਵਿੱਚ ਸੰਰਚਨਾਵਾਦ, ਰੂਸੀ ਰੂਪਵਾਦੀ, ਮਨੋਵਿਗਿਆਨ ਦੀ ਪ੍ਰਣਾਲੀ ਦੀ ਰੂਪ ਰੇਖਾ ਦਾ ਸਾਹਿਤ ਚਿੰਤਨ ਰੂਪ ਮਿਲਦਾ ਹੈ। ਆਧੁਨਿਕ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਜਾ ਕਹਿ ਲਵੋ ਕੇ 21ਵੀਂ ਸਦੀ ਵਿੱਚ ਇਹਨਾਂ ਦੇ ਰੂਪਾਂ ਦੇ ਨਵੇਂ ਪਰਿਪੇਖ ਸਾਡੇ ਸਾਹਮਣੇ ਆਏ ਜੋ ਉੱਤਰ ਆਧੁਨਿਕ ਦੇ ਸੰਦਰਭ ਵਿੱਚ ਜੁੜ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਇਹ 20ਵੀਂ ਸਦੀ ਵਿੱਚ ਇੱਕ ਲਹਿਰ ਵਜੋਂ ਵਿਆਪਕ ਸ਼ਬਦ ਹੈ ਜੋ ਸਾਹਿਤ, ਕਲਾ, ਅਰਥ ਸਾਸਤਰ, ਦਰਸ਼ਨ, ਵਾਸਤਵਿਕ, ਕਥਾ ਤੇ ਸਾਹਿਤਕ ਆਲੋਚਨਾ ਅਨੇਕਾਂ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਯੋਗ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਗੁਰਪਾਲ ਸਿੰਘ ਸੰਧੂ ਨੇ ਆਪਣੇ ਅਧਿਐਨ ਵਿੱਚ ਬਿਰਤਾਂਤ ਦੀ ਗੱਲ ਚਿਹਨ ਵਿਗਿਆਨ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਕੀਤੀ ਹੈ। "ਚਿਹਨ ਵਿਗਿਆਨ ਅਧਿਐਨ ਸਮੇਂ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਗਿਆਨਕ ਮਾਡਲ ਰਾਹੀ ਅਸੀਂ ਹਰ ਇੱਕ ਵਰਤਾਰੇ ਦੇ ਉਸ ਅੰਤਰੀਵੀ ਪ੍ਰਬੰਧ, ਮਰਯਾਦਾਵਾਂ ਦੇ ਸੰਗਠਨ ਅਤੇ ਭੇਦਾਂ ਦੀ ਪਹਿਚਾਣ ਰਾਹੀ ਚਿਹਨੀਕਰਣ ਦੀ ਪ੍ਰਕਿਰਿਆ ਗਤੀਸ਼ੀਲ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।"(8)

ਬਿਰਤਾਂਤ ਸ਼ਾਸਤਰ ਲਈ ਫ੍ਰੈਡਰਿਕ ਜੇਮਸਨ ਨੇ ਆਪਣੀ ਪੁਸਤਕ The Political Unconscious ਵਿੱਚ ਵੀ ਬਿਰਤਾਂਤ ਨੂੰ ਸਮਾਜਕ ਪ੍ਰਤੀਕਤਮਕ ਕਾਰਜ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਉਸਨੇ ਰਚਨਾ ਦੇ ਬਹੁ-ਪਰਤੀ ਵਿਸ਼ਿਆ ਦੀ ਗੱਲ ਕੀਤੀ ਹੈ। ਉਸਨੇ ਆਪਣੀਆਂ ਰਚਨਾਵਾਂ ਵਿੱਚ ਇਹ ਕਿਹਾ ਹੈ ਕਿ ਜਦੋਂ ਵੀ ਲੇਖਕ ਲਿਖਤ ਬਿਆਨ ਕਰਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਉਸਦਾ ਵਿਸ਼ਾ ਜਾਂ ਤਕਨੀਕ ਹਮੇਸ਼ਾ ਹੀ ਪਿਛੋਕੜ ਵਿੱਚ ਅਣਚੇਤਨ ਪ੍ਰੇਰਵਾਵਾਂ ਨੂੰ ਬਿਆਨ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਉਸਨੇ ਤਿੰਨ ਧਰਾਤਲਾਂ ਨੂੰ ਬਿਆਨ ਕੀਤਾ ਹੈ।

1. ਧਰਾਤਲ ਵਿੱਚ ਕਥਾ ਦਾ ਬਿਆਨ ਹੋਣਾ ਜਿਸ ਵਿੱਚ ਪਾਤਰਾਂ ਦੇ ਮਾਧਿਅਮ ਰਾਹੀਂ ਹੋਂਦ ਵਿੱਚ ਆਏ ਸਮਾਜਿਕ ਪ੍ਰਤੀਕਾਤਮਕ ਕਾਰਜਾਂ ਦਾ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀ ਗੋਚਰ ਕਰਨਾ ਹੈ।
2. ਸਮਾਜਿਕ ਆਰਥਿਕ ਬਣਤਰ ਨਾਲ ਜੋੜਨ ਲਈ ਸੁਝਾਉ ਪੈਦਾ ਕਰਨੇ ਹਨ। ਮਨੁੱਖ ਦੀ ਮਾਨਸਿਕ ਸਥਿਤੀ ਚਿਹਨ-ਪ੍ਰਬੰਧਾਂ ਦਾ ਮਾਧਿਅਮ ਰਾਹੀਂ ਹੋਂਦ ਵਿੱਚ ਆਉਂਦਾ ਹੈ।
3. ਇਸ ਧਰਾਤਲ ਵਿੱਚ ਇਤਿਹਾਸਕ ਯਥਾਰਥ ਦੀ ਨਿਸ਼ਾਨਦੇਹੀ ਕਰਨ ਨਾਲ ਜੁੜਿਆ ਹੈ ਜੋ ਵਿਭਿੰਨ ਚਿਹਨ-ਪ੍ਰਬੰਧਾਂ ਦਾ ਮਾਧਿਅਮ ਰਾਹੀਂ ਹੋਂਦ ਵਿੱਚ ਆਉਂਦਾ ਹੈ।

ਜੇਮਸਨ ਇੱਕ ਅਮਰੀਕੀ ਸਾਹਿਤ ਆਲੋਚਕ ਅਤੇ ਮਾਰਕਸਵਾਦੀ ਰਾਜਨੀਤਕ ਚਿੰਤਕ ਹੈ। ਉਹ ਸਮਕਾਲੀ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਬਾਰੇ ਵਿਸ਼ਲੇਸ਼ਣ ਲਈ ਜਾਣਿਆ ਜਾਂਦਾ ਸੀ। ਉਸਦੀਆਂ ਰਚਨਾਵਾਂ ਦੇ ਵਿਸ਼ੇ ਸ਼ੈਲੀ ਅਤੇ ਉਸਦੇ ਅਸਤਿਤਵਾਦੀ ਦਰਸ਼ਨ ਦੇ ਰਾਜਸੀ ਤੇ ਨੈਤਿਕ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀ ਕੋਣ ਵਿਚਕਾਰ ਸੰਬੰਧਾਂ ਤੇ ਕੇਂਦਰਿਤ ਸਨ। ਉਸਦੀਆਂ ਲਿਖਤਾਂ ਦਾ ਘੇਰਾ ਬੜਾ ਵਿਸ਼ਾਲ ਮੰਨਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਉਸਨੇ ਬਿਰਤਾਂਤਕ ਜੁਗਤਾਂ ਅਤੇ ਸੰਰਚਨਾਵਾਂ, ਕਦਰਾਂ-ਕੀਮਤਾਂ ਅਤੇ ਵਿਸ਼ਵ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀ ਕੋਣ ਤੇ ਧਿਆਨ ਕੇਂਦ੍ਰਿਤ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਇਸ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਲੈਵੀ ਸਤਰਾਸ ਨੇ ਵੀ ਬਿਰਤਾਂਤ ਦਾ ਸਿਧਾਂਤ ਦੇ ਰੂਪਾਂ ਨੂੰ ਬਦਲਦੇ ਪਰਿਪੇਖ ਵਿੱਚ ਲਿਆ ਹੈ। ਉਸਦੀਆਂ ਲਿਖਤਾਂ ਵਿੱਚ ਮਨੁੱਖੀ ਮਨ, ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਕਾਲ ਨੂੰ ਵਰਤਮਾਨ ਨਾਲ ਜੁੜ ਗਿਆ ਹੋਵੇ। ਸਮੇਂ ਦੇ ਬੀਤਣ ਨਾਲ ਹੀ ਸੰਰਚਨਾਵਾਂ ਸਿਰਜਣ ਨਾਲ ਮਨੁੱਖੀ ਮਨ ਦੀਆਂ ਸ਼ਕਤੀਆਂ ਦਾ ਵਿਕਾਸ ਹੋਇਆ। ਲੈਵੀ ਸਤਰਾਸ ਸੋਸਿਊਰ ਦੇ ਸਿਧਾਤਾਂ ਤੋਂ ਬਹੁਤ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਹੋਇਆ। ਉਹ ਵੀ ਇਹਨਾਂ ਦੀਆਂ ਧਾਰਨਾਵਾਂ ਨੂੰ ਮਨੁੱਖੀ ਮਨ ਨਾਲ ਜੋੜ ਕੇ ਸੰਰਚਨਾਵਾਂ ਦੀ ਸਿਰਜਣਾ ਕਰਦਾ ਹੈ।

1. ਮਨੁੱਖੀ ਮਨ ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਕਾਲ ਤੋਂ ਵਰਤਮਾਨ ਪਰਿਪੇਖ ਵਿੱਚ ਰੱਖਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਨਾਲ ਹੀ ਮਨੁੱਖੀ ਸ਼ਕਤੀ ਦੇ ਵਿਕਾਸ ਦੇ ਸਿੱਟੇ ਮਾਹਮਣੇ ਆਏ।

2. ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਨੂੰ ਲੈ ਸਿਖਿਆ ਦੇ ਮਾਪਦੰਡ ਵਿੱਚ ਰੱਖਦਾ ਹੈ। ਸੱਭਿਆਚਾਰਕ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਉਹ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਸਮਾਨਤਾ ਦਾ ਖਿਆਲ ਕਰਕੇ ਮਨੁੱਖੀ ਮਨ ਦਾ ਵਿਸ਼ਵ ਸਮਾਨ ਕਾਰਜ ਕਰਨ ਵਿੱਚ ਕਾਮਯਾਬ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।
3. ਉਹ ਮਨੁੱਖ ਦੀਆਂ ਗਹਿਰੀਆਂ ਪਰਤਾਂ ਨੂੰ ਖੋਲਦਾ ਹੈ ਤੇ ਇੱਕ ਦੂਸਰੇ ਦੇ ਪ੍ਰਸੰਗ ਵਿੱਚ ਰੱਖ ਵੇਖਦਾ ਹੈ।
4. ਸਾਕਾਦਾਰੀ ਸੰਬੰਧਾਂ ਨੂੰ ਉਹ ਧੁਨੀਆ ਦੇ ਅੰਤਰੀਣ ਰੱਖ ਕੇ ਰਿਸ਼ਤਿਆਂ ਦੀ ਸਾਰਥਕਤਾ ਨੂੰ ਜਾਣਦਾ ਹੈ ਤੇ ਇਹਨਾਂ ਪੈਟਰਨ ਨਾਲ ਉਹ ਸਥੂਲ, ਸੂਖਮ ਅਤੇ ਸੰਚਾਰੀ ਪ੍ਰਭਾਵ ਕਬੂਲਦੇ ਹਨ।
5. ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਜਾਂ ਸਮਾਜਾਂ ਦੇ ਲਿਖਤੀ ਇਤਿਹਾਸ ਨੂੰ ਸਾਹਿਤ, ਅਵਸ਼ੇਸ ਜਾਂ ਪੁਰਾਤਤਵ ਸਬੂਤ ਨਹੀਂ ਮਿਲਦੇ, ਉਹਨਾਂ ਦੀਆਂ ਅੰਤਰੀਵੀ ਸੰਰਚਨਾਵਾਂ ਦੀ ਤੁਲਨਾ ਕਰਦਾ ਹੋਇਆਂ ਇਤਿਹਾਸ ਵਿੱਚ ਉਲੀਕਿਆ ਸਿਧਾਂਤ ਨੂੰ ਅਜੋਕੇ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਰੱਖ ਕੇ ਪੇਸ਼ ਕਰਦਾ ਹੈ।

ਅਜੋਕੇ ਸਮੇਂ ਦੇ ਬਿਰਤਾਂਤ ਦੇ ਬਦਲਾਵ ਪਿਛਲੇ ਝਾਤ ਅਨੁਸਾਰ ਹੀ ਅੱਗੇ ਵਧਦੀ ਹੈ। ਇਹਨਾਂ ਦੇ ਧਰਾਤਲ ਇਤਿਹਾਸ ਯਥਾਰਥ ਨਾਲ ਵਾਸਤਵਿਕਤਾ ਨਿਵਾਸ ਕਰਦੀ ਹੋਈ ਅਗਾਂਹ ਵਧੂ ਵਿਧੀ ਰਾਹੀ ਵਿਸ਼ਿਆ ਨੂੰ ਬਿਆਨਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਅਧਿਐਨ ਵਿਸ਼ਲੇਸ਼ਣ ਦਾ ਉਦੇਸ਼ ਬਿਰਤਾਂਤਕ ਰਚਨਾ ਨੂੰ ਵਿਚਾਰਧਾਰਾਈ ਵਿਧੀ ਰਾਹੀ ਵਿਸ਼ਿਆ ਨੂੰ ਛੂਹਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹ। ਫਿਰ ਰਚਨਾ ਦੇ ਅਗਾਂਹ ਦਾ ਧਰਾਤਲ ਕਾਰਜਸ਼ੀਲ ਹੋ ਕੇ ਭਿੰਨ-ਭਿੰਨ ਚਿਹਨਾਂ ਰਾਹੀ ਸਾਹਿਤਕ ਤੇ ਸੱਭਿਆਚਾਰਕ ਪੜਾਵਾਂ ਦਾ ਅਣਚੇਤਨ ਰੂਪ ਧਾਰਨ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਹਰ ਸਾਹਿਤ ਦੇ ਰੂਪ ਦਾ ਬਿਰਤਾਂਤ ਪਹੁੰਚ ਵਿਧੀ ਰਾਹੀ ਤਰਕ ਤੱਕ ਦਾ ਸਫ਼ਰ ਤਹਿ ਕਰਕੇ ਆਪਣੀ ਸਮੀਖਿਆ ਦਾ ਵਿਸ਼ਲੇਸ਼ਣ ਅਤੇ ਸਮੀਖਿਆ ਦਾ ਕਾਰਜ ਨੂੰ ਯਥਾਰਥ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਪੇਸ਼ ਹੋ ਕੇ ਕੇਂਦਰ-ਬਿੰਦੂ ਨੂੰ ਉਜਾਗਰ ਕਰਨ ਵਿੱਚ ਸਫਲ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।

ਹਵਾਲੇ ਅਤੇ ਟਿੱਪਣੀਆਂ:-

1. ਜਗਬੀਰ ਸਿੰਘ:- ਸਮਕਾਲੀ ਪੰਜਾਬੀ ਬਿਰਤਾਂਤ, ਚੇਤਨਾ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ ਪੰਜਾਬੀ ਭਵਨ, ਲੁਧਿਆਣਾ, ਪੰਨਾ-28
2. ਸੁਤਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਨੂਰ(ਸੰਪਾ):- ਸਮਕਾਲੀ ਪੱਛਮੀ ਚਿੰਤਨਾ, ਪੰਜਾਬੀ ਦਿੱਲੀ ਅਕਾਦਮੀ, ਪੰਨਾ-14
3. ਜਗਬੀਰ ਸਿੰਘ :- ਸਮਕਾਲੀ ਪੰਜਾਬੀ ਬਿਰਤਾਂਤ, ਪੰਨਾ-17
4. ਡਾ. ਰਤਨ ਸਿੰਘ:- 'ਸਾਹਿਤ ਕੋਸ਼' ਪਬਲੀਕੇਸ਼ਨ ਬਿਊਰੋ, ਪਟਿਆਲਾ, ਪੰਨਾ-338
5. ਜਗਬੀਰ ਸਿੰਘ:- ਸਮਕਾਲੀ ਪੰਜਾਬੀ ਬਿਰਤਾਂਤ, ਚੇਤਨਾ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ ਪੰਜਾਬੀ ਭਵਨ, ਪੰਨਾ-30
6. ਸਤਿੰਦਰ ਔਲਖ(ਡਾ.):- ਮਨੋਵਿਸ਼ਲੇਸ਼ਣ ਅਤੇ ਪੰਜਾਬੀ ਲੋਕਧਾਰਾ, ਪਬਲੀਕੇਸ਼ਨ ਬਿਊਰੋ ਪੰਜਾਬੀ ਯੂਨੀ. ਪਟਿਆਲਾ, ਪੰਨਾ-5
7. ਡਾ. ਜਗਬੀਰ ਸਿੰਘ:- ਬਿਰਤਾਂਤ ਗਲਪ ਸਿਧਾਂਤ ਤੇ ਸਮੀਖਿਆ, ਆਰਸੀ ਪਬਲਿਸ਼ਰਜ਼ ਚੌਕ, ਦਿੱਲੀ, ਪੰਨਾ-119
8. ਗੁਰਪਾਲ ਸਿੰਘ ਸੰਧੂ:- ਰੋਲਾਂ ਬਾਰਤ ਦੀ ਅਨੁਵਾਦਕ ਤੇ ਵਿਆਖਿਆਕਾਰ, ਲੋਕ ਗੀਤ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ, ਸਰਹੰਦ, ਪੰਨਾ-30

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 March 2025 Page No. : 85-88
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

The Role and Significance of Health Economics in Modern Healthcare

Renu Gupta, Assistant Professor,
Department of Education Dasmesh Girls College Chak Alla Baksh Mukerian

Abstract

Health economics is a vital discipline that explores the efficient allocation, utilization and financing of healthcare resources. This paper underscores its crucial role in informing policy-making, addressing health disparities and fostering sustainable healthcare systems. The COVID-19 pandemic has highlighted the pressing need for efficient resource allocation and comprehensive economic evaluations, exposing vulnerabilities in global healthcare frameworks. As healthcare costs rise, a robust understanding of health economics is essential for optimizing decision-making processes and improving health outcomes. The paper advocates for integrating health economics into academic curricula and public discourse, emphasizing its role in developing equitable healthcare solutions. By equipping policymakers, healthcare providers and stakeholders with health economics knowledge, we can address contemporary challenges like access disparities and inefficient resource distribution. Key elements such as cost-effectiveness analysis, healthcare financing and policy evaluation are discussed to illustrate their impact on improving health outcomes for diverse populations. The study calls for an interdisciplinary approach that merges economics, public health, and healthcare management to tackle current and future healthcare needs. Ultimately, prioritizing health economics is crucial for building resilient, equitable healthcare systems that ensure better access, quality of care, and health equity for all. Keywords: Health Economics, Resource Allocation, Health Disparities, Economic Evaluation, Sustainable Healthcare.

Introduction

Health economics is defined as the study of how healthcare resources are allocated, utilized and financed. It examines the cost-effectiveness of healthcare interventions, evaluates the efficiency of healthcare systems and analyzes the impact of policies on health outcomes. By assessing the economic and social implications of health-related decisions, health economics aids policymakers, providers, and stakeholders in making informed choices. This discipline addresses critical issues such as access to care, the value of medical technologies and the economic burden of diseases. Ultimately, health economics aims to improve healthcare delivery's efficiency and effectiveness while promoting equity and sustainability. **Health Economics** encompasses various concepts that guide healthcare decision-making. Key components include: **Resource Allocation**: The distribution of healthcare resources among competing demands. **Cost-Effectiveness Analysis**: Evaluating the costs of interventions relative to their health outcomes,

allowing for informed choices about resource use. **Healthcare Financing**: Understanding funding mechanisms that support healthcare systems. **Social Implications**: Health economics also explores how economic factors influence public health outcomes, addressing disparities and informing strategies to improve health equity. Health economics plays a crucial role in policy making by ensuring evidence-based decisions, optimizing resource allocation and promoting equitable healthcare access. Economic evaluations help prioritize cost-effective interventions, especially for underserved populations, addressing health disparities. As healthcare costs rise globally, health economics is key in developing sustainable systems and forecasting long-term policy impacts. The COVID-19 pandemic highlighted the importance of efficient resource allocation, guiding decisions on treatments, vaccines and healthcare resources. It also accelerated telehealth adoption, with economic assessments of its cost-effectiveness reshaping healthcare delivery and improving access. Health economics remains vital for informed, sustainable policy decisions.

Reviews of Related Literature

The reviewed studies highlight the crucial role of health economics in addressing global healthcare challenges and improving healthcare systems. Pillai (2013) emphasizes the need for integrating health economics into clinical practice in India to enhance healthcare delivery and patient outcomes, addressing issues like market failures and information asymmetry. Jakovljevic and Ogura (2016) discuss the evolution of health economics to tackle global challenges such as aging populations and rising costs, advocating for improved economic evaluations to support policies and universal health coverage. Kansal and Singh (2021) stress the significance of health economics in promoting human development, especially in India, where it can help overcome barriers like malnutrition and inadequate sanitation, ultimately contributing to economic growth and achieving Health for All. Joshi et al. (2022) highlight the need for a well-educated public health workforce in India, calling for collaboration among academic institutions to improve resource sharing and community health outcomes. Singh et al. (2022) highlight the importance of health economics in optimizing resource allocation and strengthening healthcare systems, particularly in response to infrastructure challenges and the effects of the COVID-19 pandemic. Jakasania et al. (2023) advocate for comprehensive school health programs in India, focusing on adolescent well-being and supporting initiatives like Ayushman Bharat for better implementation. Al Meslamani (2024) underscores the importance of tailoring health economics to diverse health systems and migrant populations, while addressing ethical concerns like data privacy and equity. Algharibi et al. (2024) highlight a gap in health economics knowledge among healthcare professionals in Saudi Arabia, advocating for targeted training to enhance decision-making in managing healthcare costs. The reviewed studies underscore the critical role of health economics in addressing healthcare disparities, improving system resilience and guiding policy decisions to create more efficient and sustainable healthcare systems. Pillai (2013) advocates for integrating health economics into clinical practice to improve patient outcomes in India, while Jakovljevic and Ogura (2016) emphasize the need for advancements to tackle challenges like out-of-pocket expenses and universal health coverage. Kansal and Singh (2021) highlight its role in promoting productivity and achieving "Health for All" in India, and Joshi et al. (2022) stress enhancing public health education and workforce development. Singh et al. (2022) focus on building resilient healthcare systems, especially post-COVID-19, and Jakasania et al. (2023) call for comprehensive health programs to support adolescent well-being. Al Meslamani (2024) points to the need for tailored approaches to diverse health systems, while Algharibi et al. (2024) highlight gaps in healthcare professionals' health economics knowledge,

calling for targeted training. Collectively, these studies emphasize the importance of health economics in shaping equitable, effective and sustainable healthcare systems globally.

Current Need for Health Economics Awareness: In today's healthcare landscape, understanding health economics is essential for optimizing resource allocation. Awareness of economic principles enables policymakers to make informed decisions that maximize health outcomes while minimizing costs. This is particularly crucial in addressing disparities in access to care and promoting equity in healthcare distribution. By recognizing economic barriers, targeted interventions can be designed to ensure that underserved populations benefit from necessary resources, fostering a more equitable healthcare system. As healthcare costs rise, health economics also supports the development of sustainable systems. Economic awareness aids in the identification of innovative approaches that improve patient care while controlling rising expenses. The integration of health economics into academic curricula, like at Panjab University, is key to preparing future professionals for roles in healthcare management, policy-making, and research. This course emphasizes practical applications, such as cost-effectiveness analysis, resource allocation, and healthcare financing, equipping students with valuable skills for addressing real-world challenges. Student feedback on the Health Economics course has been positive, highlighting the relevance of the content to current healthcare challenges and the importance of interdisciplinary learning. However, students have suggested more interactive elements to further enrich their learning experience. Additionally, government initiatives focused on improving healthcare efficiency, expanding insurance coverage, and investing in health data systems are driving better policy decisions, promoting innovation, and ensuring a more equitable healthcare system.

Global Status of Health Economics: Health economics plays a pivotal role globally, influencing healthcare policies and resource allocation. In developed countries like the U.S., U.K., and Canada it shapes policies and funding decisions. European nations use economic evaluations to guide public health funding, while in Australia, health economics ensures cost-effective treatments through initiatives like the Pharmaceutical Benefits Scheme. Emerging economies such as India and Brazil are increasingly leveraging health economics to address disparities and prioritize investments. In Africa, there is a growing focus on building health economics capacity, and Asian countries like Japan and South Korea utilize economic assessments to improve healthcare efficiency and promote equitable access to care across diverse populations. **Conclusion** we can say that, health economics is essential for informed policymaking, addressing healthcare disparities and ensuring sustainability. Integrating it into academic curricula and supporting government initiatives will enhance decision-making and improve outcomes. Continued research will be key to building resilient, equitable healthcare systems globally.

References

1. Pillai, R. K. (2013). Health economics: Theoretical considerations and scope for application in the Indian context. Clinical Epidemiology and Global Health, 1(2), 96-100. https://doi.org/10.1016/j.cegh.2013.05.002
2. Dang, A., Likhar, N., & Alok, U. (2016). Importance of economic evaluation in health care: An Indian perspective. Value in Health Regional Issues, 9, 78-83. https://doi.org/10.1016/j.vhri.2016.03.004
3. Jakovljevic, M., & Ogura, S. (2016). Health economics at the crossroads of centuries–from the past to the future. Frontiers in Public Health, 4, 115. https://doi.org/10.3389/fpubh.2016.00115

4. Kansal, S., & Singh, R. (2021). An overview of health economics and health policies in India. Journal of Indian Research, 9(1&2), 58-68.
5. Joshi, A., Bhatt, A., Gupta, M., Grover, A., Saggu, S. R., & Malik, I. V. (2022). The current state of public health education in India: A scoping review. Frontiers in Public Health, 10, 970617. https://doi.org/10.3389/fpubh.2022.970617
6. Singh, N., Shukla, R., Acharya, S., & Shukla, S. (2022). The past, present, and future of health economics in India. Journal of Family Medicine and Primary Care, 11(12), 7513-7516. https://doi.org/10.4103/jfmpc.jfmpc_2266_21
7. Jakasania, A., Lahariya, C., Pandya, C., Raut, A. V., Sharma, R., K, S., ... & Gupta, S. S. (2023). School health services in India: Status, challenges, and the way forward. Indian Journal of Pediatrics, 90(Suppl 1), 116-124. https://doi.org/10.1007/s12098-023-04852-x
8. Al Meslamani, A. Z. (2024). Challenges in health economics research: Insights from real-world examples. Journal of Medical Economics, 27(1), 215-218. https://doi.org/10.1080/13696998.2024.2310466
9. Algharibi, E. D. A., Fadel, B. A., & Al-Hanawi, M. K. (2024). Assessment of knowledge of health economics among healthcare professionals in the Kingdom of Saudi Arabia: A cross-sectional study. Healthcare, 12(2), 185. https://doi.org/10.3390/healthcare12020185www.google.com

rngupta454@gmail.com **9780460408**

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 March 2025 Page No. : 89-92
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

'वेयर डू आई बिलांग' उपन्यास में अभिव्यक्त प्रवासी जीवन की समस्याएँ

डॉ. पूजा
V.P.O. Baliana, pana Mazra, The. Sampla,
Dist. Rohtak, Pin code - 124401

सारांश : प्रवास मनुष्य जीवन का अभिन्न अंग है। यह प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक जैसा न होकर समय एवं परिस्थिति अनुरूप होता है। वर्तमान समय में औद्योगिक क्रांति ने प्रवास की गति को और अधिक तीव्र कर दिया है। वैश्वीकरण के इस दौर में विदेश जाने के अवसरों में इजाफा हुआ है। पूंजीपति देशों की आर्थिक संपन्नता, मजबूती और पदार्थक खुशहाली को देखकर मनुष्य प्रवास तो कर लेता है लेकिन उसकी आंतरिकता से अनभिज्ञ रहता है जैसे ही वह वहाँ के परिवेश से अवगत होता है तो उसे अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है, यथा; अस्मिता का संकट, नॉस्टेल्जिया, पीढ़ीगत अंतर संबंधी मूल्य, सांस्कृतिक आघात, नैतिक मूल्यों का पतन, पारिवारिक विघटन, रूढ़िवादिता, स्त्री की परिवर्तित होती मानसिकता, अकेलापन, धर्म के नाम पर राजनीति, विभेदीकरण नीति, जीवन मूल्यों का ह्रास, स्वच्छंद यौन संबंध, वैवाहिक जीवन में संबंधों का स्थायी न रहना, भाषा संबंधी समस्या, आर्थिक विपन्नता इत्यादि। अर्चना पैन्यूली जी ने उक्त सभी समस्याओं को अपने उपन्यास 'वेयर डू आई बिलांग' में अभिव्यक्ति किया है।

बीज शब्दः अस्मिता, नॉस्टेल्जिया, विभेदीकरण, नस्लभेद, संस्कृति, अकेलापन, राजनीति, बेरोजगारी।

प्रस्तावना : प्रवासी महिला रचनाकारों में अर्चना पैन्यूली अपनी मौलिक प्रतिभा एवं लेखनी के माध्यम से वैश्विक साहित्य जगत् में अमिट छाप बना चुकी हैं। इनका लेखन अबाध गति से जारी है। इनके चार उपन्यास (परिवर्तन, वेयर डू आई बिलांग, पॉल की तीर्थयात्रा, कैराली मसाज पार्लर), दो कहानी संग्रह (हाईवे E47, कितनी माँएँ हैं मेरी), सात अंग्रेजी पुस्तकें और अनेक काव्य रचनाएं प्रकाशित हो चुकी हैं। उनकी अनेक कहानियाँ प्रतिष्ठित पत्रिकाओं एवं प्रवासी विशेषांक में प्रकाशित हो चुकी हैं। इन्हें अनेक प्रतिष्ठित सम्मानों एवं पुरस्कारों से पुरस्कृत एवं सम्मानित किया जा चुका है। इनके द्वारा रचित भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित 'वेयर डू आई बिलांग' उपन्यास में प्रवासी जीवन की अनेक समस्याओं को रेखांकित किया गया है।

उपन्यास की शुरुआत रीना द्वारा भारत में अपने परिजनों के साथ बिताए गए पलों से होती है। उपन्यास की प्रमुख पात्र रीना है। इनका जन्म डेनमार्क में हुआ है। यह भारत में अपने परिजनों से मिलने जुलने आती रहती है। उनके शरीर में सभी जीन्स हिंदुस्तानी हैं। रीना भारत और डेनमार्क की संस्कृति, समाज, प्रकृति तथा परिवेश को भिन्न पाती है। वह डेनिस भाषा में धारा प्रवाह के साथ बोलती है निधड़क अपने डेनिस मित्रों के साथ विचरण करती है लेकिन वह स्वयं को डेनिश स्वीकार नहीं कर पाती। हिंदुस्तान आने पर उसे हिंदुस्तान पराया लगने लगता है क्योंकि दोनों ही देशों में उसे अपनी अस्मिता एवं पहचान के संकट का सामना करना पड़ता है जब वह डेनमार्क में होती है तब वहां के लोग रीना से पूछते हैं वेयर डू यू कम फ्रॉम और जब वह हिंदुस्तान में होती है तब भी उससे यही प्रश्न पूछा जाता है वेयर डू यू कम फ्रॉम। जब हरी रीना को टेक्नीकल डेनिश कहता है तब वह उसे कहती है मैं डेनिश नहीं हूँ और जब वह उसे इंडियन कहता है तब वह अपने को ग्लोबल सिटीजन की संज्ञा देती है। हरि केबीसी मिशन में थियोलॉजी की पढ़ाई करने के लिए डेनमार्क आता है। वह अपना धर्म परिवर्तित करता है। हिंदू से क्रिश्चियन बन जाता

है। गोविंद प्रकाश शांडिल्य हरि को चेताते हुए कहते हैं, "तुम इस देश में रहने चले आए हो हरि कुमार...। मगर यहां तीन बातों का भरोसा मत करना – वेदर, वर्क और वूमेन...। वेदर यहाँ किसी भी क्षण बिगड़ सकता है। वर्क से तुम्हें बिना किसी पूर्व चेतावनी के बर्खास्त किया जा सकता है और तुम्हारी वूमेन बिना स्पष्ट कारण के तुम्हें छोड़ सकती है। थ्रो–अवे कल्चर यहाँ बहुत ही स्ट्रांग है। बी अवेर।"[1]

रीना भारत में बिताये पलों को स्मरण करती है किस प्रकार यशपाल भारद्वाज बुजुर्ग ने उन्हें कहा था कि स्वयं भारतवासियों को भी वेयर डू डे बिलांग का नहीं पता। वे अपनी भाषाएँ खो रहे हैं, उनसे अपने रीति–रिवाज छुटते जा रहे हैं। समाज में साधु–संतों का महत्व फीका पड़ता जा रहा है। विदेशी कंपनियाँ लोकल लोगों के छोटे–छोटे उधम छीन रही हैं और हिंदू लोग अपने वेद–उपनिषद भूलकर ख्रीस्त शास्त्र पर विश्वास करने लगे हैं। हमारी भोली–भाली गरीब जनता को लालच देकर ये मिशनरियां धर्म परिवर्तन के लिए उकसाती हैं। जबकि भारतीयों को नहीं भूलना चाहिए कि हमारी भाषा, धर्म और संस्कृति अत्यंत समृद्ध है।

जब स्मिता भट्ट को उनका पार्शल देने की बात आती है तब निर्मल रीना को उन्हें आंटी जी कहकर संबोधित करने को कहते हैं लेकिन रीना की मां सुधा इस पर प्रतिवाद करती हुई कहती है क्यों आप हमेशा हर जगह इंडियन कल्चर ले आते हो। वह उन्हें उनको नाम से ही संबोधित करने को कहती है। निर्मल अपनी बेटी को समझाते हुए कहते हैं, "ऐसा कर, रीना... तू पहले उसे आंटी एडरेस करना, अगर उसे कोई आपत्ति न हो तो यह संबोधन चलने देना, नहीं तो स्मिता जी कहना। 'जी'–पूरी दुनिया में केवल हम इंडियंस के पास ही आदर का यह अनुलग्न है। हमारी भाषा की यह एक बड़ी देन है।"[2] आगे वे कहते हैं भले ही हम विदेश में रहते हैं और अनेक देशों के लोगों से मेलजोल रखते हैं लेकिन हमारी सांस्कृतिक परंपरा ही हमारी पहचान है। हम नहीं चाहते कि हमारे बच्चे बड़े–बूढ़ों को उनके नाम से संबोधित करें, हमारे बच्चे सुसंस्कृत, सभ्य और कल्चर्ड बनें। निर्मल को डेनमार्क में सब कुछ अनकल्चर्ड लगता है। रीना अपने मम्मी–पापा के रिश्ते को बेहतर बनाने का प्रयास करती लेकिन इन दोनों की भिन्न परिवेश में परवरिश होने से इनके ष्टिकोण दृष्टिकोण सोचने–समझने के तरीकों में पर्याप्त भिन्नता दृष्टिगत होती है।

स्मिता भट्ट को डेनमार्क में नौकरी के लिए काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है वह डेनमार्क के इंटरनेशनल स्कूलों में अपना cv देती है इंटरव्यू देती है तो वहाँ की नीतियों से परिचित होती है, "हमारे स्कूल की एक नीति यह भी है कि अध्यापक उन देशों के नागरिक होने चाहिए जिनकी मातृभाषा अंग्रेजी हो– नेटिव इंग्लिश स्पीकर्स।"[3] स्मिता की मातृभाषा हिंदी होने से वह अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाने में स्वयं को अक्षम पाती है और अपनी एकमात्र अयोग्यता अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, इंग्लैंड, न्यूजीलैंड में जन्म न लेने को मानती है। अपने प्रमाण पत्र की फाइलें छोड़कर स्मिता भट्ट मिसेज ब्राउन को हेव ए गुड वीकेंड कहकर निकल पड़ती है। वह स्वयं को व्यवस्थित करने का प्रयत्न करती है एक नई जिंदगी की चाहत लिए नई जगह प्रवेश करने पर वह अपने को तलाशने लगी, "भारतीय समुदाय, भारतीय रेस्टोरेंट, भारतीय स्टोर्स, भारतीय आध्यात्मिक व धार्मिक स्थल... जो डेनमार्क जैसे छोटे–से देश में संख्या में बहुत अधिक तो नहीं मगर भारतीयों को अपना घर महसूस करवाने के लिए काफी थे।"[4] वह कुएँ का मेंढ़क भी नहीं बने रहना चाहती थी। डेनमार्क जैसे छोटे देश में निवासियों के लिए पर्याप्त विविधताएं थी और जिंदगी में विविधताएं मनुष्य की स्वाभाविक नियति रही है। स्मिता अंततः एक लिंक की सदस्य बन जाती है। ट्रीटॉप इंटरनेशनल स्कूल में स्मिता को सब्स्टीट्यूट टीचर की नौकरी करनी पड़ती है जहाँ उसे रंगभेद का शिकार होना पड़ता है।

गोविंद प्रकाश शांडिल्य भी डेनमार्क में अकेलेपन व उदासी महसूस करते और सोचते यहाँ उनका अपना कोई भाई–बहन रिश्तेदार नहीं। जैसे–जैसे वह उम्र के शिखर पर बढ़ते जा रहे थे वैसे–वैसे उन्हें औपचारिक निमंत्रण मिलने भी कम हो गए थे। इनका मिलना–जुलना बंद हो गया था और यह सोचने पर विवश होते कि अपना देश ही इस बुढ़ापे के लिए समीचिन है। गोविंद प्रकाश सोचते हैं किस प्रकार उनकी शिपिंग कंपनी से अकस्मात् छंटनी हो गई थी। ये बहुत ही ईमानदार और परिश्रमी मैकेनिक थे लेकिन तीसरी दुनिया में यहाँ विदेशी होने पर इन्हें अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ता है और इनसे कम अनुभवी मैकेनिक और कारीगरों को काम पर रखा जाता है। ऐसे में गोविंद प्रकाश शांडिल्य के लिए अपने परिवार का जीवन सुचारु ढ़ंग से चलाने में और अन्य नौकरी ढूंढने में अत्यंत कठिनाई का सामना करना पड़ता है। यहां ये देखते हैं कि किस प्रकार डेनमार्क जैसे छोटे–से देश में अवैध काले धंधे अपना विकराल रूप धारण किए हुए

हैं, "अपराधी वर्ग यहाँ कैसे काम करता है। चोरों का गिरोह पुलिस से कैसे छिपता है? ड्रग्स का व्यापार कैसे चलता है? कैसे लड़कियां अपहृत होकर वेश्यालयों में बेच दी जाती हैं? वेश्याओं के धंधे कैसे चलते हैं? एजेंट अवैद्य प्रवासियों को यहाँ किसी तरीके से व्यवस्थित करते हैं? लोग झूठी शादियां करके कैसे गैर कानूनी तरीके से यहाँ बसते हैं? दुकानदार या रेस्टोरेंट मालिक टैक्स न देकर सरकार को कैसे ठगते हैं।"[5] गोविंद जी भी अपनी पत्नी कमला से तलाक लेने को कहते हैं जिससे तुम्हें सरकार से अकेले माता होने से आर्थिक सहायता मिल सके इससे मकान के लोन में भी तुम्हें 50% छूट मिलेगी। वे ग्रीक एजेंट से मिलकर तीन माह के टूरिस्ट वीजा के लिए डेनमार्क आई मेघना से कागजी तौर पर शादी करने का निर्णय लेते हैं। "तलाक व शादी सभी कुछ नकली होगा, केवल कागजों पर। जब दो वर्षों उपरांत मेघना को एक डेनिश नागरिक की पत्नी होने के नाते यहाँ की नागरिकता मिल जाएगी तो मेघना उन्हें तलाक दे देगी।"[6] वे कहते हैं सत्य और ईमानदारी से रहकर देख लिया है यह दुनिया जालसाजी से भरी है यहाँ ईमानदारी का नामोनिशान नहीं है आज जालसाजी के द्वारा ही निर्वाह संभव है। इनकी पत्नी इनकी नीचता पर लानत भरी बातें कहती है तब वे अपनी सफाई पेश करते हुए कहते हैं कि मैं इस देश में एक कंगाल इमीग्रेंट की तरह आया था और सात वर्षों के कठिन संघर्षों, समस्याओं से जूझते हुए आज पुनः बेरोजगार हो गया हूँ। ऐसे में कमला पांच सितारा होटल में सफाई का काम करना शुरू करती है और अपने बच्चों को भी पार्ट टाइम नौकरी करने के लिए प्रेरित करती है वह नहीं चाहती थी कि उसका पति उनसे तलाक ले और झूठा विवाह कर अपनी आजीविका चलाए। उनकी बेटी सुधा मैक्डोनल में पार्ट टाइम नौकरी करती है और बेटे सुभाष और सुरेश सुबह–सुबह घरों में अखबार बांटने का कार्य करते हैं। गोविंद जी भी कुछ दिनों पश्चात् मेघना से भी धोखा मिलने के अपनी पत्नी की मदद से कोपेनहेगन में एक छोटा–सा रेस्टोरेंट खोलते हैं और धीरे–धीरे ये परिवार फिर से समृद्ध होने लगता है।

गोविंद जी डेनमार्क में कवि सम्मेलन का आयोजन करते हैं जिसमें आठ विभिन्न एशियाई देशों और एक ओल डेनिश कवि सम्मिलित होते हैं। इनमें परस्पर अपनी मातृभाषा में गुफ्तगू आरंभ होती है। इमीग्रेंट्स को यहाँ किन–किन परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है, इस मुल्क में उनकी क्या हैसियत है कैसा बेगाना सलूक उनके साथ किया जा रहा है और किस प्रकार सरकार उनके प्रति अपना कड़ा रुख रखती जा रही है। गोविंद जी डेनमार्क की पावरफुल, चश्माधारी लेडी पोलीटिशियन पिया खोसखार्ड जोकि अप्रवासी विरोधी पार्टी का नेतृत्व कर रही थी उन पर कटाक्ष करते हुए कहते हैं। मैडम पिया खोर्श गार्ड

"देखिए आप रंगभेदी न बनिए
अरे न ही मेरे खिलाफ विभेदीकरण फैलाइए
जरा सोचिए आप वहीं खड़ी है
जहां की आप हैं अपनी जमीन से हिला तो मैं हूँ।"[7]

धार्मिक क्षेत्र में भी प्रवासियों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। डेनमार्क में खुले हिंदू धार्मिक स्थल राजनीति से संपृक्त हैं। मंदिरों के संचालन और वित्त व्यवस्था को लेकर यहाँ के लोगों में मुठभेड़ बनी रहती है। गोविंद जी और उनकी पत्नी कमला मंदिरों की इस राजनीति में सदैव उलझे रहते हैं। प्रबंधकों का ध्यान भी पूजा–पाठ में लिप्त रहने की अपेक्षा भक्तजनों को अपने–अपने खेमों में आकर्षित करने में रहता है। जहां भी मंदिरों/मस्जिदों में प्रशासकीय विभाग नियुक्त होता वहाँ कुछ न कुछ राजनीति चलती रहती है। जबकि धार्मिक संस्थानों की स्थापना सांप्रदायिक सौहार्द एवं आध्यात्मिक रूप से शांतिमय के लिए की जाती है।

निष्कर्ष : निष्कर्ष तौर पर कहा जा सकता है कि प्रवासी भारतीय अपना हुनर, काबिलियत के साथ हौंसला बुलंद करके सुखद जीवन की कल्पना लेकर विदेशों में प्रस्थान करते हैं लेकिन यहाँ इन्हें अपनों से दूर रहने की पीड़ा के साथ–साथ अनेक संघर्षों, समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इनके संघर्ष और समस्याएं भारतीयों की अपेक्षा दोगुने हैं। संस्कृतियों की परस्पर टकराहट इन्हें कचोटती रहती है। इन्हें विदेशी सरकारों की कठोर नीतियों का कोपभाजन सहना पड़ता है। ये सदैव अपनी अस्मिता, स्वाभिमान, पहचान के लिए संघर्षरत् रहते हैं।

संदर्भ सूची :–

1. अर्चना पैन्यूली, वेयर डू आई बिलांग, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, सं. 2010, पृ. 44
2. अर्चना पैन्यूली, वेयर डू आई बिलांग, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, सं. 2010, पृ. 55
3. अर्चना पैन्यूली, वेयर डू आई बिलांग, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, सं. 2010, पृ. 61
4. अर्चना पैन्यूली, वेयर डू आई बिलांग, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, सं. 2010, पृ. 96
5. अर्चना पैन्यूली, वेयर डू आई बिलांग, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, सं. 2010, पृ. 117
6. अर्चना पैन्यूली, वेयर डू आई बिलांग, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, सं. 2010, पृ. 119
7. अर्चना पैन्यूली, वेयर डू आई बिलांग, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, सं. 2010, पृ. 161

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 March 2025 Page No. : 93-97
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिन्दी साहित्य और राष्ट्र निर्माण

सरबजीत कौर, (शोधार्थी) हिन्दी विभाग,
पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला।

सारांश:

साहित्य जीवन की अभिव्यक्ति है। किसी भी राष्ट्र के विकास में साहित्य महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अच्छे साहित्य से ही अच्छे समाज का निर्माण होता है और एक अच्छा समाज ही अच्छे राष्ट्र के निर्माण का आधार बनता है। जिस राष्ट्र में साहित्य का अभाव है, उस राष्ट्र का जीवित रहना कठिन है। साहित्य किसी राष्ट्र के जीवन में एक संजीवनी औषधि की भाँति है। साहित्यकार राष्ट्र के जागरूक पहरेदार होते हैं, जिस कारण उनकी रचनाओं में परेक्ष-अपरोक्ष रुप में राष्ट्र की संस्कृति, परिस्थितियाँ एवं गतिविधियाँ की चित्रण होना संभव है। साहित्यकार अपनी रचना में समाज की पुकार को वाणी देकर राष्ट्र के पथ को नई दिशा से आलोकित करता है।

Keywords: राष्ट्र, हिंदी, निर्माण, साहित्य, समाज, परिस्थितियाँ।

भूमिका:

साहित्य समाज का दर्पण होता है। साहित्य का समाज से वही संबंध है जो आत्मा का शरीर से है। मानवीय सभ्यता के विकास और राष्ट्र निर्माण में साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। किसी भी राष्ट्र की उन्नति और सभ्यता की जानकारी उसके साहित्य से ही प्राप्त होती है। जिस राष्ट्र का साहित्य जितना अधिक समृद्ध होगा वह राष्ट्र उतना ही शक्तिशाली होगा। साहित्य की समृद्धि ही वहाँ की जनता की समृद्धि की सूचक है। इतिहास साक्षी है कि किसी भी राष्ट्र या समाज में जितने भी परिवर्तन आये हैं वह सब साहित्य के माध्यम से ही आये हैं। साहित्यकार समाज में फैली कुरीतियों, विसंगतियों, अभावों, विषमताओं तथा असमानताओं के बारे में लिखकर जनमानस को जागरूक करने का कार्य करता है। जब सामाजिक जीवन में नैतिक मूल्यों का पत्न होने लगता है, तब साहित्य ही लोगों को सही दिशा दिखाकर उनका मार्गदर्शन करता है। कह सकते हैं कि साहित्य किसी भी राष्ट्र का प्राण होता है।

यह एक निर्विवाद सत्य है कि किसी भी राष्ट्र का निर्माण वहाँ कि साहित्य पर निर्भर होता है। रूस का जार शासन जिसके आतंक तथा अत्याचारों से पूरा रूस कराहने लगा था, उसका तख्ता पलटने के लिए वहाँ के साहित्य और साहित्यकारों ने ही लोगों को जागरूक

किया। यूरोप के पोप के अत्याचारों से भी मार्टिन लूथर जैसे साहित्यकारों के विचारों ने ही लोगों को विरोध करने के लिए जागृत किया। जिससे पोप के अत्याचारों से उन्हें मुक्ति प्राप्त हुई। भारत भी इसका अपवाद नहीं। स्वार्थ लोलुप विदेशियों ने प्राचीन काल से ही भारत पर आक्रमण किए और हमारे देश वासियों में फूट डालकर यहां पर अपना शासन कायम किया। किसी भी राष्ट्र को निर्जीव बनाने का सबसे अच्छा माध्यम है वहाँ कि साहित्य को नष्ट कर देना। विदेशियों ने भारत में भी यही कार्य किया। उन्होनें भारत के प्राचीन विश्वविद्यालयों नालंदा और तक्षशिला के पुस्तकालयों में आग लगा दी और वहाँ के श्रेष्ठ साहित्य को नष्ट कर दिया। परिणामस्वरुप साहित्य के अभाव में हमारी राष्ट्रीयता विलुप्त-सी हो गई। हम आश्रयहीन और असहाय बन कर मूक पशु की भाँति अत्याचार और अन्याय सहन करते रहे। साहित्य के अभाव में भारत को आगे आने वाले समय में वह बुरे दिन देखने पड़े जिसकी किसी ने कल्पना भी नहीं की थी। भारत को लम्बे समय तक स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए संघर्ष करना पड़ा।

भारत के राष्ट्र निर्माण में हिन्दी साहित्य ने प्राचीन काल से ही अविस्मरणीय योगदान दिया है। मध्यकाल में विनष्ट होते हुए हिंदुत्व को बचाने के लिए भूषण जैसे कवियों ने शिवाजी जैसे देशभक्त वीरों को प्रेरणा दी और शिवाजी हिंदुओं की रक्षा करने के लिए सर्वस्व बलिदान कर गए। भूषण ने शिवाजी के अतिरिक्त छत्रसाल को भी शत्रुओं का दमन करने के लिए प्रोत्साहित किया। यदि ऐसे देशभक्त कवियों का प्रोत्साहन इनको प्राप्त न हुआ होता और शिवाजी जैसे वीरों ने देश-भक्ति का परिचय न दिया होता तो भारत में हिंदुत्व का कोई चिह्न अवशिष्ट न रह गया होता।

जब हम आधुनिक काल के हिन्दी साहित्य पर दृष्टिपात करते हैं तो यह तथ्य भली प्रकार प्रकट होता है कि भारतेंदु और द्विवेदी युग के कवियों ने भारतीय गौरव को अपनी कलम से अभिव्यक्त कर भारतीयों के मन में देश प्रेम की भावना को पैदा किया। भारतेंदु युगीन कवियों ने राष्ट्र के एकीकरण के लिए लोगों को प्रेरित कर राष्ट्र निर्माण में बहुमूल्य योगदान दिया। इस युग के कवियों ने समाज में व्याप्त बाह्यडम्बरों, कुरीतियों का विरोध करने के साथ ही भारतीय आर्थिक पराभव की वस्तुस्थिति से जनता को परिचित कराया। भारतीय अर्थव्यवस्था को सदृढ़ करने की कामना से इस युग के कवियों ने स्वदेशी उद्योगों को प्रोत्साहन देने और स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग के लिए प्रेरणा देने का कार्य बाखूबी किया। विदेशी वस्तुओं के सामूहिक वहिष्कार और स्वदेशी वस्तुओं के व्यापक सम्मान ने राष्ट्रीय भावना को ठोस आधार दिया। विदेशी वस्तुओं के प्रति समूचे राष्ट्र में घृणा की जो लहर दौड़ी, उसके मूल में हिन्दी साहित्यकारों की ओजस्वी वाणी प्रमुख प्रेरक के रूप में रही है। स्वदेशी आंदोलन के सूत्रधार नेता भी इस वाणी से प्रेरणा प्राप्त कर रहे थे। अपने राष्ट्र में बनी वस्तुओं की गुणवत्ता की अपेक्षा उसमें अपनेपन के भाव की अनुभूति पर बल देने के कारण स्वदेशी वस्तुएं लोकप्रिय होने लगी। हिन्दी साहित्यकारों ने स्वदेशी वस्तुओं और स्वदेशी भावों को अपनी रचनाओं का विषय बनाकर इस अभियान को जन-जन तक पहुँचाया।

किसी भी राष्ट्र की उन्नति और प्रगति के लिए शोषित मुक्त समाज का होना जरूरी है। शोषण से मुक्त कर शोषित के जीवन को ऊपर उठाना उनका कर्तव्य है जो सामाजिक और आर्थिक रूप से संपन्न है। छायावाद के प्रतिभाशाली कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने अपनी रचनाओं 'तोड़ती पत्थर', 'दीन', 'भिक्षुक', 'विधवा' आदि में शोषण की यथार्थपूर्ण तस्वीर दिखाते हुए समाज को शोषण मुक्त बनाने के लिए प्रेरित किया। शोषण मुक्त समाज को देखने की अभिलाषा व्यक्त करते हुए कवि मुक्तिबोध कहते हैं-

"समस्या एक
मेरे सभ्य नगरों और ग्रामों में
सभी मानव
सुखी, सुंदर व शोषण मुक्त
कब होगें"?[1]

कवि दिनकर स्वतंत्रता के पश्चात् जनता के सामाजिक-आर्थिक शोषण के विरूद्ध आवाज़ उठाते हैं। उन्होनें 'दिल्ली', 'नीम के पत्ते', 'परशुराम की प्रतीक्षा' में स्वतंत्रता के बाद जनजीवन में व्याप्त आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक विषमताओं का चित्रण किया है। कवि कहता है कि-

"सकल देश में हालाहाल है, दिल्ली में हाला है।
दिल्ली में रोशनी, शेष भारत में अंधियारा है"।[2]

स्वस्थ समाज ही राष्ट्रीय चेतना का संवाहक हो सकता है। हिन्दी साहित्यकारों ने देश की सामाजिक अवनति की ओर बहुत ध्यान दिया। उन्होनें सभी कुरीतियों का जो समाज में प्रचलित थी उसका अपनी रचनाओं में चित्रण किया, जिससे भारतीय समाज उन पर आत्मचिंतन कर सुधार कर सके। साहित्यकारों ने समाज में व्याप्त दुरबलताओं और बुराईयों पर निर्मम प्रहार किये हैं। भारतेंदु ने 'मधुमुकुल' में 'होली' शीर्षक कविता में भारत की उस समय की अवनति का वर्णन किया है। 'भारत दुर्दशा' नाटक में जातिवाद, बाल विवाह, बहु विवाह, विधवा विवाह, भूत-प्रेत की पूजा जैसी कुरीतियों पर व्यंग्य कर लोगों को जागरूक करने का प्रयास किया है।

धार्मिक सद्भावना राष्ट्रीय एकता का आधार होती है और राष्ट्रीय एकता राष्ट्र निर्माण का मूलाधार होती है। धर्म की आड़ में देश में जो रक्त-पात, लूट- मार और आगजनी आदि होती है, उससे मानव समाज की उन्नति और विकास में बाधा पड़ती है। साम्प्रदायिकता पूर्ण परिवेश में राष्ट्र निर्माण का कार्य एक घोषणा बनकर रह जाता है। इस लिए साम्प्रदायिकता के विष को फैलानेवाले तत्वों की पहचान कर उनका अंत करना जरूरी होता है। हिन्दी साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में देश के हित के लिए धार्मिक संकीर्णता के दृष्टिकोण को मिटाकर जनसामान्य में राष्ट्रीय दृष्टि का निर्माण करने का पूरा प्रयास किया। कवि दिनकर राष्ट्रीय एकता स्थापित करने के लिए धार्मिक सदभाव की प्रेरणा देते हुए कहते हैं-

"लड़ते हिन्दु मुसलमान, भारत की आँखे जलती हैं।
आने वाली आजाद्री की, लो! दोनों पाँखे जलती हैं"।[3]

भारतीयों को एकता का मार्ग ग्रहण करने के लिए संकेत करते हुए भारतेंदु कहते हैं-

"बैर फूट ही सों भयो, सब भारत के नास।
तबहुँ न छाँड़त याहि सब, बँधे मोह के फाँस"।[4]

भाषा संस्कृति का ही एक अंग होती है। वह विचारों और भावनाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम है और देश को एकात्म भाव का बोध कराती है। राष्ट्रीय चेतना के लिए जिस प्रकार अपने देश में अपनी संस्कृति, अपने आदर्श और अपने विश्वास अपेक्षित हैं, उसी प्रकार सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में एक समान भाषा की भी आवश्यक्ता होती है। हिन्दी के साहित्यकार राष्ट्र चिंतन की दृष्टि से पूर्ण रूप से सजग थे और प्रारंभ से ही उनकी चिंता का विषय अपनी भाषा का विकास और उसकी प्रतिष्ठा रही है। राष्ट्र के निर्माण के लिए उसकी एक निजभाषा का होना जरूरी है। भारतेंदु हरिश्चन्द्र राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधने के लिए निजभाषा को प्रधान घोषित करते हैं, क्योंकि निज भाषा से ही मानव में चेतना का विकास होता है। चेतना के जाग्रत होने पर वह राष्ट्रीय भावों से ओतप्रोत हो जाता है। राष्ट्र निर्माण में निज भाषा के महत्व को दर्शाते हुए भारतेंदु कहते हैं-

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल"।[5]

राजभाषा संपूर्ण राष्ट्र को एक धागे में बाँधकर रखती है। भारत एक विशाल राष्ट्र है। यहाँ पर अनेक प्रादेशिक भाषाएं पाई जाती हैं। इन भाषाई विभिन्नता को एक सूत्र में बाँधने के लिए एक ऐसी भाषा की जरूरत है जो संपूर्ण भारत में बोली, लिखी और समझी जाती हो। विश्व में उस भाषा का अपना एक नाम और सम्मान हो। भारत में हिन्दी एक ऐसी ही भाषा है जो संपर्क भाषा बनकर प्रादेशिक और प्रांतीय विभिन्नताओं को स्वीकारते हुए सांस्कृतिक, राजनीतिक, सामाजिक और शैक्षणिक एकता को स्थापित करती है। साहित्यिक रूप से हिन्दी भाषा बढ़ी समृद्धशाली है। हिन्दी साहित्य के विभिन्न साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के द्वारा हिन्दी भाषा को जनप्रिय बनाने में बहुमूल्य योगदान दिया। 'भारत-भारती' में कवि मैथिलीशरण गुप्त लिखते हैं-

"है राष्ट्र भाषा भी अभी तक देश में कोई नहीं,
हम निज विचार जता सके जिससे परस्पर सब कहीं
इस योग्य हिन्दी है तथापि
अब तक न निज आदर पा सकी"।[6]

कह सकते हैं कि हिन्दी भाषा को संपूर्ण राष्ट्र की वाणी बनाने में हिन्दी साहित्यकारों का योगदान महत्वपूर्ण रहा है।

शिक्षा एक ऐसा विषय है जो किसी भी देश या राष्ट्र के विकास, नवाचार और सांस्कृतिक उन्नति के लिए एक प्रमुख आयाम है। यह मनुष्य में मौलिक चिन्तन की क्षमता

और ज्ञान को प्राप्त करने की ललक पैदा करती है। शिक्षा उनके व्यक्तित्व को निखारने और उनमें चारित्रिक मूल्यों का संचार करके उन्हें राष्ट्र निर्माण में सहयोग करने की उर्जा और शक्ति प्रदान करती है। शिक्षित समाज सुखी समाज होता है। शिक्षित लोग अंधविश्वसासों से मुक्त होकर सामाजिक कुरीतियों को दूर कर राष्ट्र को उन्नति की ओर लेकर जाते हैं। स्वतंत्रता के पश्चात् से ही हमारी सरकारें करोड़ों रूपए खर्च कर साक्षरता के कार्यक्रम को सफल बनाने की कोशिश कर रही हैं। उनका ध्यान इस बात पर रहता है कि कोई भी गाँव या शहर शिक्षा की सुविधाओं से वंचित न रहे। लोगों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित करते हुए कवि रामकुमार वर्मा 'एकलव्य' में कहते हैं-

"जाति भेद नहीं, वर्ग भेद भी नहीं
शिक्षा प्राप्त करने के सभी अधिकारी हैं"।[7]

निष्कर्ष:

अंत: हम कह सकते हैं कि हिन्दी साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में राष्ट्र की पराधीनता के प्रति क्षोभ का भाव व्यक्त कर, देश के गौरवपूर्ण अतीत का गुणगाण कर जनमानस में देश के प्रति प्रेम की भावना को उत्पन्न करने में बहुमूल्य योगदान दिया है। हिन्दी भाषा को भारत में उसका स्थान दिलाने के लिए उन्होनें सराहनीय भूमिका निभाई है। हिन्दी साहित्यकारों ने देश में व्याप्त समस्याओं में अपेक्षित सुधार लाने की प्रेरणा देकर राष्ट्र निर्माण में योगदान दिया।

संदर्भ ग्रंथ:

1. गजानन माधव मुक्तिबोध, चाँद का मुँह टेढ़ा है, भारतीय ज्ञानपीठ, पृष्ठ.155.
2. रामधारी सिंह दिनकर, परशुराम की प्रतीक्षा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ.18
3. रामधारी सिंह दिनकर, सामधेनी, जनवाणी प्रेस एण्ड पब्लिकेशन्स, कलकत्ता, पृ.29
4. भारतेंदु ग्रंथावली तृतीय खंड, हिन्दी लेक्चर, पृ.5
5. भारतेंदु ग्रंथावली, तृतीय खंड, हिन्दी लेक्चर, पृ.1
6. मैथिलीशरण गुप्त, भारत भारती, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ.10
7. रामकुमार वर्मा, एकलव्य, भारती भंडार लीडर प्रेस, इलाहाबाद, पृ. 55

MOBILE: 98773-01108 **EMAIL-manjeetsandhu3600@gmail.com**

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 March 2025 Page No. : 98-103
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

दिव्यांग शिक्षा के समावेशन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता और सूचना संचार प्रौद्योगिकी की भूमिका

डॉ. रजनीश कुमार सिंह, शोध-निर्देशक, विभागाध्यक्ष शिक्षा संकाय,
नीतू सिंह, शोधार्थी शिक्षा विभाग,
जगद्गुरु रामभद्राचार्य दिव्यांग राज्य विश्वविद्यालय, चित्रकूट (उ.प्र.)

सारांश

तकनीकी को समझने और इस्तेमाल करने वाले प्रत्येक व्यक्ति की वास्तविक रचनात्मकता के साथ-साथ प्रौद्योगिक विकास की तीव्र दर को देखते हुए यह निश्चित है कि प्रौद्योगिकी, शिक्षा कों कई मायनों में प्रभावित करती है| नए प्रौद्योगिकी क्षेत्र जैसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई), मशीन लर्निंग, ब्लॉकचेन, स्मार्ट बोर्ड, हस्त-संचालित कंप्यूटिंग उपकरण और अन्य प्रकार से साफ़्टवेयर द्वारा न केवल शिक्षा के क्षेत्र में यह परिवर्तन होगा कि छात्र क्या सीखता है? वरन यह भी परिवर्तन होगा कि वह कैसे सीखता है?[i] शिक्षा के क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता और सूचना संचार प्रौद्योगिकी के एकीकरण ने दिव्यांग विद्यार्थियों को समावेशी शैक्षिक वातावरण प्रदान करते हुए उन्हें नई संभावनाओं के लिए रास्ते खोल रहा है| छात्रों और शिक्षकों के अलावा शिक्षण संस्थान भी अपनी दक्षता और प्रभावशीलता में सुधार के लिए विभिन्न प्रोद्योगिकियों जैसे- चैटबॉट, अनुकूली शिक्षण प्लेटफार्म और आभासी शिक्षण सहायकों का उपयोग कर रहे हैं| यह शोध-पत्र दिव्यांग व्यक्तियों की शिक्षा में एआई और आईसीटी उपकरणों के उपयोग के माध्यम से शिक्षा के विकसित परिदृश्य की जांच करता है, साथ ही यह भी पता करता है कि , आईसीटी और एआई शैक्षिक अनुभवों को कैसे नया आकार दे रहा है? शिक्षण विधियों, छात्र-जुड़ाव और ज्ञान के प्रसार को कैसे प्रभावित कर रहा है?

कीवर्ड: शिक्षा में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और आईसीटी की उपयोगिता, आईसीटी से शिक्षा में समावेशन, शिक्षा में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का एकीकरण, दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए वैयक्तिक शिक्षण|

परिचय

21 वीं सदी सूचना संचार प्रौद्योगिकी का उद्दीप्त युग है| आज के तेजी से बढ़ते तकनीकी युग में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक गेम-चेंजिंग टूल्स है, जो दिव्यांग लोगों के जीवन को बदल रहा है| सहायक प्रौद्योगिकी से लेकर व्यक्तिगत स्वास्थ्य सेवा से लेकर रोजगार तक एआई दिव्यांग व्यक्तियों की बाधाओं को दूर करने और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सशक्त बना रहा है(ब्लूम स्वास्थ्य देखभाल, 2023) साथ ही उन्हें गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा प्रदान कराने, समाज में समाविष्ट कराने और उनके शैक्षिक संभावनाओं को बढ़ाने में भी सहायक सिद्ध हुआ है|

शिक्षा के क्षेत्र में, एआई में प्रत्येक छात्र की अद्वितीय आवश्यकताओं और क्षमताओं के अनुरूप व्यक्तिगत शिक्षण अनुभवों को प्रदान करके शिक्षण और सीखने में क्रांति लाने की क्षमता है| एआई-संचालित अनुकूली शिक्षण प्रणाली लगातार एक छात्र के प्रदर्शन का आकलन कर सकती है और उसके अनुरूप सीखने की सामग्री, गति और वितरण पद्धति को समायोजित कर सकती है; जिससे छात्रों को लक्षित समर्थन और निर्देश प्राप्त होते है| इसके अलावा एआई को अधिक आकर्षक और इंटरैक्टिव शिक्षण सामग्री विकसित करने के लिये भी नियोजित किया जा सकता है, जैसे- वर्चुअल सिमुलेशन और शैक्षिक गेम आदि जो अधिक गहन और आनंददायक सीखने के अनुभव को बढ़ावा देते हैं|

विशेष आवश्यकता वाले व्यक्तियों के लिए एआई और आईसीटी के आगमन ने शैक्षिक क्षेत्रों में स्वतंत्रता, एकीकरण और समान अवसरो में भागीदारी के लिए पहुँच को आसान बना रहा है; जैसे- गूगल का **Parrotron** एआई टूल है, जो बोलने में अक्षम व्यक्तियों को उनके विकृत भाषण पैटर्न को धाराप्रवाह बातचीत में अनुवाद करने में सक्षम बनाती है|

शिक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का एकीकरण: एआई उन स्मार्ट मशीनों में से एक है, जिनमें मानवीय व्यवहार और प्रतिक्रिया होती है| यह कंप्यूटर नियंत्रित मशीनों को मनुष्यों की तरह ही कार्यों को निष्पादित करने की क्षमता को संदर्भित करता है| विकलांग छात्रों के लिए सीखने के अनुभवों को निजीकृत करने लिये मशीन लर्निंग,
प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण और कंप्यूटर विजन जैसी एआई प्रौद्योगिकियो के द्वारा लाभ उठाया जा सकता है| एआई का एक प्रमुख पहलू निजीकरण हैं, जो छात्रों को उनकी अद्वितीय क्षमताओं, प्राथमिकता और अनुभवों के आधार पर सीखने के लिए एक व्यक्तिगत दृष्टिकोण रखने में मदद करता है|

<u>समावेशी शिक्षा के लिए आईसीटी का उपयोग</u>: तकनीकी के क्षेत्र में, आईसीटी दिव्यांग व्यक्तियों के जीवन में महत्वपूर्ण योगदान देता है| जिसमें एआई, एक ऐसा उपकरण है जो कक्षाओं को भाषा या किसी अन्य विकलांगता के बावजूद भी सभी के लिए सुगम बनाता है| आरपीडब्ल्यूडी, 2016 के अनुरूप राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए कक्षा-कक्ष में पूर्ण भागीदारी व समावेशन के लिए उपयुक्त शिक्षा प्रणाली विकसित की है, जिसमें विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को बुनियादी विषयों को सिखाने के लिए विभिन्न प्रकार के सहायक उपकरण, तकनीक-आधारित उपकरण, भाषा उपयुक्त शिक्षण-सामग्रियों तथा भारतीय सांकेतिक भाषा का उपयोग करते हुए कक्षा में समावेशी माहौल प्रदान करवाने की बात कही है|

<u>वैयक्तिक शिक्षण और अनुकूल प्रौद्योगिकी</u>: कंप्यूटिंग प्रौद्योगिकियो के तेजी से विकास ने शिक्षा में एआई के अनुप्रयोग को आसान बना दिया है|एआई छात्रों को पिछले सीखने के इतिहास का विश्लेषण करके उनकी कमजोरियों की पहचान कर सकता है; तथा अनुकूल शिक्षण प्रौद्योगिकी शैक्षिक-सामग्रियों को व्यक्तिगत छात्रों की जरूरतों, गति और सीखने की शैलियों के अनुरूप बनाती है| वैयक्तिकृत शैक्षिक अनुभव प्रदान करने में अनुकूली शिक्षण एल्गोरिदम और आभासी वास्तविकता, सिमुलेशन जैसी नवीन दृष्टिकोणों को भी अपनाया जा सकता है|

<u>पहुँच और समान अवसरों को बढ़ावा देना:</u> एआई में वैश्विक स्तर पर जीवन और अर्थव्यवस्थाओं को बदलने की क्षमता है; हालांकि यह सुनिश्चित करने के लिए एआई के लाभ सभी के लिये सुलभ हो, एआई अनुसंधान और विकास में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को और बढ़ावा देना आवश्यक है|

<u>उद्देश्य</u>

इस लेख का उद्देश्य अक्षम व्यक्तियों के आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक समावेशन को मजबूत बनाने वाले आईसीटी और एआई के अनुप्रयोग से उत्पन्न होने वाली संभावनाओं को समझना है साथ ही शिक्षा के क्षेत्र में इन प्रोद्योगिकियों के उपयोग का मुख्य उद्देश्य नई शिक्षा प्रणाली और सीखने के कौशलो का सरल एवं सुगम बनाकर विशेष आवश्यकता वाले व्यक्तियों के सामने प्रस्तुत करना है; ताकि उनके अंदर सोचने, समझने तथा निर्णय लेने की क्षमताओं का विकास हो सके| शिक्षा में इन तकनीकों के उचित कार्यान्वयन से विद्यार्थियों एवं शिक्षकों में कुशलतापूर्वक सीखने की प्रेरणा को बढ़ाने में मदद करना है|

<u>कार्यप्रणाली</u>

इस शोध-पत्र को विकलांगता,आईसीटी और विकास के क्षेत्र में प्रमुख विशेषज्ञों के सर्वेक्षण के दौरान प्राप्त सुझावों एवं मार्गदर्शन के आधार पर वर्णनात्मक शोध विश्लेषण के रूप में संचालित किया गया है|

- आईसीटी, ने इन समूहों के सर्वोत्तम उत्थान के लिए सामाजिक प्रगति और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने में किस हद तक सक्षम बनाती है|

- स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार और सरकारी सेवाओं आदि क्षेत्रों में आने वाली बाधाओं का विश्लेषण करती है|
- राजनीतिक और सार्वजनिक जीवन में भागीदारी के क्षेत्रों में विकास प्रयासो को प्रभावित करती है|
- आईसीटी और एआई के उचित कार्यान्वयन से इन विशेष छात्रों/शिक्षकों में कुशलतापूर्वक सीखने की प्रेरणा, अनुभवों, कौशलों और शिक्षण पद्धतियों को बढ़ाने में भी मददगार है|
- तकनीकी के माध्यम से पाठ्यक्रम के अनुकूल शिक्षण सामग्रियों को उपलब्ध कराने से लेकर उनके लिए उचित शैक्षिक वातावरण को प्रदान करते हुए मूल्यांकन पद्धति को सही से कार्यान्वित करने में सहायक है|
- शिक्षा में प्रौद्योगिकी और उसकी मूल्यांकन प्रक्रिया की निगरानी करना, ताकि इस प्रक्रिया में किस प्रकार की समस्या है? और उसका क्या समाधान है|

चर्चा

प्रौद्योगिकी ने, हमेशा शिक्षा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है लेकिन स्मार्ट उपकरणों और वेब-आधारित पाठ्यक्रम की बढ़ती उपलब्धता के कारण इसका वर्तमान उपयोग पहले से कहीं अधिक प्रचलित है| शिक्षा में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के बढ़ने के साथ छात्रों को सीखने में मदद करने के लिए इसका उपयोग कई अलग-अलग तरीकों से किया जा रहा है_

चैटबॉट जो कि एक एआई शैक्षिक ऐप है, जिसका उपयोग छात्र गणित या पढ़ने की समझ जैसे विशिष्ट विषयों को समझने में मदद के लिए जल्द ही कर सकते हैं| पैरेंटस मीटिंग के दौरान शिक्षकों और अभिभावकों के बीच ईमेल संचार की जगह भी यह ऐप ले सकता है|

आभासी वास्तविकता जो कि शिक्षा में एक नवाचार है, एक प्रकार का त्रिआयामी कंप्यूटर-जनित वातावरण है जिससे लोग वे सब खोज सकते हैं, जिसके बारे में वह जानना चाहते है और उसके साथ बातचीत भी कर सकते है| आभासी वास्तविकता के साथ छात्र उन चीजों का पता लगा सकते हैं, जिनके बारे में उन्हें वास्तविक जीवन में देखने या सीखने का अवसर कभी नहीं मिल सकता है|

लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम जो कि स्कूल की सभी ऑनलाइन गतिविधियों के प्रबंधन के लिए एक केंद्रीकृत सहज प्रणाली प्रदान करती है| ये सिस्टम, पाठ और असाइनमेंट से लेकर, मूल्यांकन और ग्रेडिंग तक, पाठ्यक्रम के सभी पहलुओं को एक ही स्थान में समाहित करने की अनुमति देता है; जिससे शिक्षक किसी भी समय किसी भी असाइनमेंट या मूल्यांकन पर फीडबैक दे सके और छात्रों को इसके लिए इंतजार न करना पड़े|

रोबॉटिक्स जो कि एआई के वर्तमान विकास के साथ शिक्षा में भी अपरिहार्य है| रोबोट छात्रों और शिक्षकों दोनों के लिए सीखने का उत्कृष्ट संसाधन दे सकते हैं, जो बिना बोर हुए किसी विषय को गहराई से जानने में मददगार साबित होंगे|

चुनौतियां

प्रौद्योगिकी का उपयोग कैसे किया जाए, यह सीखने की चुनौती छात्रों और शिक्षकों के लिए है? समस्या यह है, कि शिक्षकों को अपनी कक्षाओं में नई तकनीक का उपयोग करने के बारे में प्रशिक्षित नहीं किया जा रहा है| शिक्षकों को इसे समझने में मदद की जरूरत है, ताकि वे छात्रों को आकर्षण शिक्षण अनुभव प्रदान कराने में इन उपकरणों का उपयोग उचित तरीके से कर सके| हालांकि एआई के शिक्षा में कई फायदे हैं, लेकिन कई लोगों का तर्क है कि यदि एआई, शिक्षकों की जगह ले लेगा तो शिक्षा के मानवीय तत्वों को छीन लेगा; क्योंकि एआई भावनाओं का अनुभव नहीं करता तथा कुछ लोग एआई के प्रभावों के बारे में भी चिंता करते हैं, कि कहीं न कहीं मानवीय संपर्क लगातार कम हो रहा है|

निष्कर्ष

एआई ने विभिन्न शैक्षिक सेटिंग्स में अपने लाभों और क्षमता का प्रदर्शन करना शुरू भी कर दिया है जहां एक ओर, एआई का उपयोग एक शैक्षिक उपकरण के रूप में किया जा रहा है, जो एआई एल्गोरिदम के आधार पर होमवर्क, क्विज आदि पर व्यक्तिगत प्रतिक्रिया प्रदान करके छात्रों को उनके लक्ष्यों की ओर मार्गदर्शन करता है,वही दूसरी तरफ शिक्षण संस्थान भी ऐसे सॉफ्टवेयर का उपयोग करने लगे हैं, जो डेटा बिंदुओं का विश्लेषण करते हैं ताकि ये जान सकें कि विभिन्न छात्र, सामग्री को कितनी अच्छी तरह से समझते हैं| शिक्षा में बदलाव के लिए एआई और आईसीटी एक महत्वपूर्ण चालक है, जिससे प्रत्येक छात्र को समान पहुँच प्राप्त होगी चाहे उसकी सीखने की क्षमता या विकलांगता कुछ भी हो| इससे बहुत बड़ा फर्क पड़ता है, क्योंकि सभी बच्चे एक ही गति से नहीं सीखते; हालांकि ये सुनिश्चित करने के लिए अभी भी बहुत काम किया जाना बाकी है,आगे यह देखना बाकी है कि प्रौद्योगिकी छात्रों के समग्र सीखने के परिणामों को कैसे सशक्त और बेहतर बनाएगी?

सन्दर्भ

- गुप्ता, एस., & उपाध्याय, एस.(2020) "मीडिया के नये आयाम", निरुपमा प्रकाशन मेरठ,
- माजिद, आई., & विजयलक्ष्मी, वाई.(2022) "शिक्षा में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस", इंडियन जर्नल ऑफ टेक्निकल एजुकेशन, 45/3, पृष्ठ सं.(11-15)
- शर्मा, ए., & गुप्ता, आर. (2020) "आईसीटी और विकलांग छात्रों के लिए शिक्षा में कृत्रिम बुद्धिमता का उपयोग" शैक्षणिक तकनीकी, 8(2)पृष्ठ सं.(45-57)

- स्मिथ, जे.,& जोन्स, ए. (2023) “समग्र शिक्षा के लिए एआई का उपयोग” जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी, 15(3), पृष्ठ सं.(102-150)
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति, (2020), शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली
- इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी, एनसीईआरटी(पत्रिका),4/1/2022जनवरी, पृष्ठ सं.(210-211)

ईमेल: tindwari210128@gmail.com **मोबाइल नंबर: +919161422939**

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 March 2025 Page No. : 104-107
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

''ध्रुवस्वामिनी'' में स्त्री अस्मिता के प्रखर प्रश्न

सिन्धु शर्मा, शोधार्थी हिन्दी विभाग,
राँची विश्वविद्यालय, राँची

सारांश :– हिन्दी नाट्य साहित्य में जयशंकर प्रसाद जी का नाम बड़े ही मान–सम्मान एवं प्रतिष्ठा के साथ लिया जाता है । 'ध्रुवस्वामिनी' जयशंकर प्रसाद जी की अंतिम श्रेष्ठ नाटक है । इस नाटक में नायिका ने स्त्री अस्मिता से जुड़े कई प्रश्न किये हैं । इसमें स्त्री की स्वतंत्रता, समानता, मान–प्रतिष्ठा एवं आधिपत्य की रक्षा आदि का चित्रण किया गया है । पुरातन समय में अनेक स्त्रियों ने अपनी बुद्धि एवं हिम्मत का परिचय दिया है, लेकिन गुप्त काल तक आते–आते स्त्री रूढ़िवादी मान्यताओं एवं परम्पराओं के अधीन होती गई । गुप्तकाल में स्त्रियों पर अत्याचार एवं पशुओं सा व्यवहार किया जा रहा था। भारतीय स्त्री की दुर्गति करने में कोई कसर नहीं छोड़ी गई। समान्ती वर्ग निम्न वर्ग की स्त्रियों को बन्धक बनाकर उन पर अपना अधिकार जमाने लगे । नाटककार ने स्त्री अस्मिता की समस्या को बड़ी ही सूक्ष्मता से चित्रित किया है ।

बीज शब्द : – जयशंकर प्रसाद, नारी–अस्मिता, ध्रुवस्वामिनी सामाजिक, शोषण, मानसिकता, समस्याएँ, पुनर्विवाह, अनमेल–विवाह, नारीमुक्ति ।

पूर्व धारणा : – स्त्री समाज का अभिन्न अंग है । स्त्री के बिना समाज की कल्पना नहीं की जा सकती हं । लेकिन आज स्त्री की दशा एवं दिशा उतनी ही दयनीय एवं चिन्तनीय हैं जितनी की पहले थी । 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक समाज में स्त्री की स्थिति एवं दशा का जीता जागता स्वरूप प्रस्तुत करता है ।

जयशंकर प्रसाद हिन्दी के ऐसे रचनाकार है, जिन्होंने अपने नाटकों में भारतीय संस्कृति, उत्कर्ष, सामर्थ्य एवं गौरव को मुखरित किया है। नाटककार ने 'ध्रुवस्वामिनी' में केवल नारी समस्या ही नहीं, बल्कि भारत की राष्ट्रीयता, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक समस्याओं के साथ–साथ देश के गौरव, त्याग एवं बलिदान को भी उद्घाटित करते हैं। पुरातन समय में स्त्री को भोग–विलासिता का साधन मात्र समझा जाता था । स्त्री के हृदय में उत्पन्न संवेदना, इच्छा तथा भावनाओं की कोई क़दर नहीं थी, लेकिन नाटककार ने इस नाटक में जहाँ स्त्री को त्याग, बलिदान, प्रेम, दया एवं समर्पण जैसे श्रेष्ठ गुणों से युक्त दिखाया है। वहीं स्त्री के अस्मिता एवं अस्तित्व के प्रति विद्रोही स्वर को मुखरित किया है। पुरूष प्रधान समाज में स्त्री को केवल भोग–विलासिता का साधन ही समझा जाता रहा है । इस नाटक में ध्रुवस्वामिनी मंदाकिनी और कोमा तीनों स्त्री पात्रों की स्थिति इसी तरह की है।

प्रस्तावना :– हिन्दी साहित्य जगत में जयशंकर प्रसाद विलक्षण लेखन क्षमता के लिए जाने जाते हैं । ये छायावादी एवं आदर्शवादी कवि हैं । इनके नाटकों की सबसे बड़ी विशेषता है कि ये ऐतिहासिक एवं पौराणिक कथाओं पर आधारित होते हैं । यह समस्या प्रधान सामाजिक नाटक है । इसमें इतिहास एवं वर्तमान की घटनाओं को एक साथ उपस्थित करके पूर्वकालीन एवं नूतनकालीन वातावरण की उत्पत्ति की गई है । इस नाटक में स्त्री समस्या के रूप में अस्मिता, स्वतंत्रता, पुनर्विवाह एवं अनमेल विवाह जैसी समस्याओं को उद्घाटित किया है। इन्होंने परम्परागत कथा के आधार पर वर्तमान समय की समस्या को उजागर किया है। समाज में स्त्री की अस्मिता पर हुए अत्याचार ने उनके अस्तित्व पर हमेशा से प्रश्न खड़े किए हैं । इसका प्रभाव समाज में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इस नाटक की नायिका ध्रुवस्वामिनी सामाजिक रूढ़ियों एवं परम्पराओं से बाध्य एक नारी है। जिसे अपने अस्तित्व एवं सम्मान की रक्षा हेतु परिस्थितियों को बदलना भी बखूबी आता है।

अध्ययन का महत्व :– 'ध्रुवस्वामिनी' में इतिहास एवं कल्पना का सुन्दर समन्वय है। यह यथार्थवादी नाटक है । इस नाटक में दबी–कुचली, तिरस्कृत एवं वंचित स्त्री की यथार्थ स्थिति का वर्णन है तो स्त्री पर हुए शोषण के प्रति उनका क्रांतिकारी स्वर भी सुनाई पड़ता है । नाटककार ने इसमें प्राचीनता एवं नवीनता का ऐसा सामन्जस्य प्रस्तुत किया है कि भारतीय सभ्यता एवं शिष्टता को जीवन्त किया जा सके । इसमें प्राचीन प्रसंगों के माध्यम से वर्तमान की समस्याओं एवं उसके समाधान का सच्चा प्रयास है। प्रसाद के समकालीन और परवर्ती नाटककारों के नाटकों में स्त्री मात्र उदारता, दया एवं सम्मान की अधिकारी बनती आई है । लेकिन जयशंकर प्रसाद ने स्त्री को पुरूष के समकक्ष ला खड़ा किया है। प्रसाद जी ने स्त्री को पुरूष के सामने दया का पात्र न बनाते हुए अपने अधिकारों की माँग करते हुए दिखाया है। ध्रुवस्वामिनी का यह कथन दृष्टव्य है – **''देखिए, मेरी ओर देखिए । मेरा स्त्रीत्व क्या इतने का भी अधिकारी नही है कि अपने को स्वामी समझने वाला पुरूष उसके लिए प्राणों का पण लगा सके।''**[1]

अध्ययन का उद्देश्य :– जयशंकर प्रसाद ने अपने नाटकों में समकालीन समाज में निहित कुछ तीव्र ज्वलंत समस्याओं का यथार्थ रूप प्रस्तुत किया है । इसमें स्त्री की अस्मिता से जुड़ी समस्याओं एवं उसके समाधान का प्रयास दिखता है । नाटककार ने इस नाटक में यह बताया है कि किस प्रकार स्त्री अपनी समस्याओं से जूझ रही है? स्त्री के अस्तित्व को संकटपूर्ण बताते हुए यह प्रश्न पूछते हैं कि समाज, राजनीति या अन्य क्षेत्रों में स्त्री का क्या स्थान है ?

नाटककार का उद्देश्य – स्त्री समस्या के साथ देशप्रेम एवं राज्याधिकार की समस्या को भी उठाना रहा है। इसके संबंध में नाटककार स्वयं कहते हैं – **''मेरी इच्छा भारतीय इतिहास के अप्रकाशित अंश में से उन प्रकाण्ड घटनाओं का दिग्दर्शन कराने की है, जिन्होंने हमारी वर्तमान स्थिति को पथ दिखाने में बहुत प्रयत्न किया है ।''** इस नाटक में ध्रुवस्वामिनी, मन्दाकिनी एवं कोमा जैसी स्त्री पात्रों के जीवन की वेदना एवं परिस्थिति से मुक्ति की छटपटाहट निहित है। इस नाटक में स्त्री की संवेदना एवं विवशता को बड़े ही सूक्ष्मता एवं प्रखरता के साथ हमारे समक्ष प्रस्तुत किया गया है ।

परिकल्पना :– 'ध्रुवस्वामिनी' नाम से ही स्पष्ट है कि यह नायिका प्रधान नाटक हैं, जिसकी केन्द्रीय पात्र ध्रुवस्वामिनी है। इसके अतिरिक्त नायिका के माध्यम से उस समय के समाज में स्त्री की अवस्था का यथार्थ चित्रण किया गया है। इस नाटक के माध्यम से नाटककार ने विशेष रूप से स्त्री के गौरव की कहानी लिखी है। यह गुप्तकाल की राज्य व्यवस्था को भी दर्शाता है। इस नाटक में महत्वपूर्ण विषय वस्तु के रूप में नायिका ध्रुवस्वामिनी, स्त्री की अस्मिता व अस्तित्व से जुड़े कुछ प्रश्नों एवं उसके समाधान को लेकर आधुनिक स्त्री के रूप में उपस्थित हुई है । इसमें राम गुप्त एवं उसका भाई चन्द्रगुप्त तथा ध्रुवस्वामिनी की कथा वर्णित है ।

समुद्रगुप्त का पुत्र रामगुप्त एक कायर, अधमी, मद्यपी एवं व्यभिचारी शासक है । चन्द्रगुप्त से उसका राज्याधिकार एवं वाग्दत्ता पत्नी ध्रुवस्वामिनी को छल–कपट से प्राप्त करने वाला खलनायक भी है । ध्रुवस्वामिनी इच्छा के विरूद्ध रामगुप्त से ब्याही जाती है। नाटक के प्रारंभ से ही ध्रुवस्वामिनी एक स्त्री न होकर एक वस्तु के रूप में उपयोग की जाती है। पिता एवं पति द्वारा उसके अस्तित्व एवं जीवन से खिलवाड़ किया गया है। उसे स्त्री के रूप में एक मनबहलाव की सामग्री समझ कर उपहार स्वरूप भेंट किया जाता रहा है। ध्रुवस्वामिनी के मन में चल रहा प्रेम का आन्तरिक द्वन्द्व एवं विवाह की मर्यादा–दोनों के बीच पिसती नायिका नारी की व्यथा एवं विवशता को प्रकट करती है । यहाँ नायिका एक विवश स्त्री के रूप में अपनी समस्याओं से जूझती दिखाई पड़ती है।

रामगुप्त से अपने अनमेल विवाह से अप्रसन्न एवं असंतुष्ट हैं, क्योंकि ध्रुवस्वामिनी मन से चन्द्रगुप्त को अपना पति मान चुकी थी । रामगुप्त, ध्रुवस्वामिनी को न ही पत्नी के रूप में स्वीकार कर पाया और न ही स्त्री के रूप में मान–सम्मान ही दे पाया। कायर रामगुप्त शकराज से युद्ध करने की बजाय उसके शर्तो के अनुरूप ध्रुवस्वामिनी को भेंट स्वरूप दे देता है। जब ध्रुवस्वामिनी को इस बात का पता चलता है तो उसके मन में अपने आत्म सम्मान, नारीत्व, अस्तित्व एवं अस्मिता को लेकर अनेकों प्रश्न होने लगते हैं । तभी ध्रुवस्वामिनी रामगुप्त से कहती हैं – **''मेरी रक्षा करो । मेरे और अपने गौरव की रक्षा करो । क्या गुप्त सम्राट अपनी पत्नी को शत्रु के उपहार मे देंगे । मैं उपहार देने की वस्तु शीतलमणि नहीं हूँ ।''**[2] रामगुप्त सब कुछ जानने के बाद भी ध्रुवस्वामिनी की रक्षा नही करता है। अपनी अस्मिता को बचाने एवं रामगुप्त से मुक्ति पाने के लिए ध्रुवस्वामिनी सचेत हो जाती है।

नाटककार यहाँ ध्रुवस्वामिनी के माध्यम से सभी स्त्री जाति को जाग्रत करने का प्रयास करते हैं । जयशंकर प्रसाद आगे कहते है कि – नारी को कभी भी, पुरूषों से कम नहीं समझना चाहिए । ना ही स्त्री को समर्थ्यहीन एवं अबला के रूप में देखना चाहिए । प्रसाद जी ने स्त्री की इसी गर्हित एवं तुच्छ स्थिति के लिए सामाजिक व्यवस्था को दोषी ठहराया हैं।

यह रचना स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व की है जब प्रसाद जी ने स्त्री के अस्मिता एवं स्त्री–पुरूष के निजी संबंधों को लेकर सवाल खड़े किये थे । उस समय देश में सामाजिक एवं राजनीतिक दृष्टि से स्त्रियों की दशा दयनीय एवं उपेक्षित थी । उस युग के नाटककारों ने सिर्फ नारी को लाचार एवं पुरूष के अधीन रहने वाली स्त्री के रूप में ही चित्रित किया था । उस समय प्रसाद जी ने विवाहित स्त्री–पुरूष के संबंधों के विच्छेद जैसी बात को उजागर किया था। प्रसाद जी ने जिस समय इस समस्या को उठाया उस समय हिन्दू समाज में तलाक जैसी किसी नियम को कोई प्रमाणिकता नहीं मिली थी । देखा जाय तो नाटककार ने बहुत पहले से ही अपनी रचनाओं में स्त्री की मुक्ति के लिए द्वन्द्व की शुरूआत कर चुके थे ।

प्रासंगिकता : इस नाटक की केन्द्रीय पात्र ध्रुवस्वामिनी है जो नाटक में आद्योपान्त बनी रहती है । जयशंकर प्रसाद जी ने मुख्य रूप से दो समस्याओं को दर्शाया – पहला स्त्री की समाजिक स्थिति एवं दूसरा देशवासियों में राष्ट्रीयता एवं सांस्कृतिक चेतना के जगाना है । इन दोनों समस्याओं में से प्रसाद जी अगर किसी समस्या से अधिक प्रभावित हुए तो वह हैं – नारी की सामाजिक स्थिति । नाटककार ने नायिका ध्रुवस्वामिनी के दृष्टिकोण से स्त्री के अस्तित्व एवं अस्मिता के प्रति अपनी चिन्ता एवं चेतना को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है । इस पुरूष प्रधान समाज ने स्त्रियों के अस्तित्व को हमेशा से नकारा है । उसके जीवन को अपने अनुरूप जब मन किया उपयोग किया जब मन किया छोड़ दिया । उसे खिलौना एवं मनबहलाव की सामग्री समझा गया । स्त्रियों की लाचारी, उसका अपमान करनाा, उसकी दासता, उसका पराश्रित होना ये सारी बातें आज भी उतनी ही विकट रूप में मौजूद है, जैसे की पहले थी । नारी की विवशता पर मैथिलीशरण गुप्त की दे पंक्तियाँ जो आज भी उतनी ही सार्थक हैं –

"अबला जीवन हाय ! तुम्हारी यही कहानी –
आँचल में है दूध, और आँखों में पानी ।"

ध्रुवस्वामिनी अपनी रक्षा के लिए अपने कायर पति रामगुप्त को आवाज लगाती है किन्तु वह उत्तर नहीं देता तो ध्रुवस्वामिनी गुस्से से कहती हैं – **"ध्रुवस्वामिनी (खड़ी होकर रोष से) निर्लज्ज ! मद्य !! क्लीव !!! ओह, तो मेर कोई रक्षक नहीं ? (ठहरकर) नहीं, मैं अपनी रक्षा स्वंय करूँगी । मैं उपहार में देने की वस्तु शीतलमणि नहीं हूँ । मुझमें रक्त की तरल ललिमा है । मेरा हृदय उष्ण है और उसमें आत्म–सम्मान की ज्योति है। उसकी रक्षा मैं ही करूँगी । (रसना से कृपाणी निकाल लेती हैं)"**[3]

उपरोक्त पंक्तियों से ध्रुवस्वामिनी के बगावत के स्वर सुनाई पड़ते हैं, जे उसे आज की आधुनिक नारी के रूप में चित्रित करता है । क्योंकि नारी अपने सम्मान की रक्षा के लिए आवाज उठाना जानती है और जरूरत पड़े तो परिस्थितियों को बदलना भी जानती है। वास्तविकता तो यह है कि जयशंकर प्रसाद जी ने अपने इस नाटक में स्त्री को पुरूष से अधिक महत्ता दी है । नाटक की एक महत्वपूर्ण विशेषता है कि इन्होंने स्त्री के असहाय नहीं बल्कि पुरूष के बराबर ही सामर्थ्यवान, दृढ़, बलशाली एवं आदर्श स्त्री के रूप में चित्रित किया गया है । यहाँ ध्रुवस्वामिनी को एक आधुनिक स्त्री की भाँति अपनी स्वच्छन्दता, प्रगतिशीलता एवं हक के लिए जागरूक एवं सचेत दिखाया है।

नाटककार ने नायिक को अपने कायर पति एवं वैवाहिक जीवन से परेशान, खिन्न एवं अतृप्त दिखाया है। आहत ध्रुवस्वामिनी कहती है कि – **"अरे यह क्या, मेरे भाग्य विधाता । यह कैसा इन्द्रजाल? उस दिन राजमहापुरोहित ने कुछ अहुतियों के बाद मुझे जो आशीर्वाद दिया, क्या वह अभिशाप था ? इस राजकीय अन्तःपुर में सब जैसे एक रहस्य छिपाये हुए चलते हैं, बोलते हैं और मौन हो जाते हैं।"**[4]

यहाँ नाटककार स्त्री को सक्षम, सबल एवं शक्ति स्वरूप दिखाते हुए कहा है कि स्त्री का भी अपना सम्मान अपनत्व एवं वजूद होता है । पति के रूप में रामगुप्त जैसे कायर, व्यभिचारी व्यक्तित्व को पाकर स्त्री चाहे तो उस पुरूष से अपनी मुक्ति का अधिकार रखती है। नाटक में पुरोहित द्वारा इस बात को प्रकट किया गया हैं – **"जिसे अपनी स्त्री को दूसरे के अंक–गामिनी बनाने के लिए**

संकोच नहीं, वह क्लीव नहीं तो और क्या है ? मैं स्पष्ट करता हूँ कि धर्मशास्त्र रामगुप्त से ध्रुवस्वामिनी के मोक्ष की आज्ञा देता है ।"[5]

इस नाटक में ध्रुवस्वामिनी के अलावा दो और स्त्री पात्र हैं – मन्दाकिनी एवं कोमा । ये तीनों स्त्री पात्र इस नाटक में अपनी–अपनी समस्याओं को लेकर उपस्थित है। मंदाकिनी नाटक की दूसरी स्त्री पात्र एवं रामगुप्त की बहन है । नाटक में रामगुप्त की बहन होते हुए भी राष्ट्र के सम्मान की रक्षा के साथ–साथ ध्रुवस्वामिनी के मुक्ति एवं पुनर्विवाह का समर्थन करती हैं । मन्दाकिनी स्त्री की तकलीफ एवं अनादर को बखूबी समझती है। मन्दाकिनी यहां एक आधुनिक स्त्री की तरह उसकी समस्या और समाधान के प्रति संघर्षशील एवं जागरूक है। कोमा नाटक की दूसरी स्त्री पात्र एवं शकराज की होने वाली पत्नी है, जो सच्चे प्रेम के प्रतीक के रूप में अपने भावनात्मक प्रेम को परिभाषित करती है। कोमा अपने पति शकराज को ऐसा पाप करने से रोकना चाहती है क्योंकि शकराज भी रामगुप्त की भांति स्त्री को मनोरंजन एवं भोग विलास का साधन समझता हैं । शकराज कोमा को भी अपमानित करता हैं । कोमा शकराज से पूछती हैं – **"किन्तु, राजनीति का प्रतिशोध क्या एक नारी को कुचले बिना पूरा नहीं हो सकता?"[6]**

सच्चाई तो यह है कि 'ध्रुवस्वामिनी' में नाटककार ने सदियों से चली आ रही इस सोच को बदलने की कोशिश की है। नाटक में रामगुप्त द्वारा पुरूषों की कुत्सित मानसिकता को दर्शाया गया हैं कि प्राचीन काल हो या वर्तमान स्त्रियों को पशु सम्पत्ति समझकर पुरूषों ने हमेशा से उन पर अत्याचार किया है। उनकी उपेक्षा की है। यहाँ तक की स्त्रियाँ पुरूषों के साथ नहीं चल सकती ऐसी हीन भावनाओं से उन्हें ग्रसित भी करते आये हैं। भारतीय समाज में इसी संकीर्ण सोच के कारण समाज में स्त्रियों की इतनी दयनीय दशा है। नाटककार का नाटक में समाज के इसी बेढ़ंगे सोच एवं रूढ़िवादी परम्पराओं को बदलने का प्रयास दिखता हैं । इस नाटक की तीनों स्त्री पात्रों ने अपने अस्तित्व एवं अस्मिता को बचाये रखने के लिए समय–समय पर दृढ़तापूर्वक उनका विरोध किया हैं । इस नाटक की स्त्री पात्रों के माध्यम से नाटककार ने यह संदेश दिया हैं कि स्त्री को अपनी कठिन परिस्थितियों में धैर्यहीन न होकर उसका साहसपूर्वक सामना करना चाहिए। इसी कारण जयशंकर प्रसाद की नायिका ध्रुवस्वामिनी इस नाटक में साहसी, विनम्र, सुशील, निपुण एवं दृढ़ प्रतिज्ञ आदि गुणों से युक्त चित्रित हुई है।

निष्कर्ष :–

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि 'ध्रुवस्वामिनी' नाट्य कला की दृष्टि से समस्या नाटक के रूप में एक सफल सार्थक नाटक रहा है । नाटककार विशेष रूप से ध्रुवस्वामिनी के माध्यम से स्त्री के दृढ़ प्रतिज्ञ रूप की झलक दिखाई है । नाटक में मन्दाकिनी एवं कोमा के माध्यम से राष्ट्र के हित एवं सच्चे प्रेम की परिभाषाा की भी झलक दिखलाई है। इसमें नायिका ऐसे आधुनिक स्त्री का प्रतिनिधित्व करती है जो पुरूष के साथ कंधा से कंधा मिलाकर चलती है ।

अन्ततः नाटक ने यह स्पष्ट किया है कि स्त्री का मोक्ष तभी मुमकिन है, जब सामाजिक व्यवस्था में बदलाव होगा । प्रसाद जी ने नाटक में स्त्री के स्वाभिमानी रूप के साथ उसके विद्रोहिनी रूप के भी दर्शन करवाए हैं । अतः हम यह कह सकते हैं कि प्रसाद जी ने ऐतिहासिक कथावस्तु के माध्यम से नवीन समस्याओं को उजागर किया है। नाटककार एक ओर संकेत देते हुए कहते हैं कि जहाँ स्त्री को सम्मान और प्रतिष्ठा नहीं दी जाती । ऐसी सोच रखने वाले समाज का विनाश तो निश्चित रूप से होता ही हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. ध्रुवस्वामिनी, 'जयशंकर प्रसाद', पृष्ठ संख्या–18
2. ध्रुवस्वामिनी, 'जयशंकर प्रसाद', पृष्ठ संख्या–19
3. वहीं, पृष्ठ संख्या –19
4. वहीं, पृष्ठ संख्या –7, 8
5. वहीं, पृष्ठ संख्या – 47
6. वहीं, पृष्ठ संख्या – 31

ZEmail ID : sindhusharma458@gmail.com Mob. No. 6201362732, 9470934634

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 March 2025 Page No. : 108-110
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Life Skills and Adolescents

Dr. Harpreet Kaur,
56, Central Town, Ludhiana

Everywhere, education is seen as the main way of enabling individuals and nations a like to meet the ever increasing economic, technology, social and personal challenges. We expect education to prepare young people for the world of work and for economic independence; to enable them to live constructively in responsible communities; and to enable them to live in a tolerant, culturally diverse and rapidly changing society. In this time, we expect education to help young people to build lives that have meaning and purpose in a future we can scarcely predict.

The methods used in the teaching of life skills builds upon that is known of how young people learn from their own experience and from the people around them, from observing how others behave and what consequences arise from behaviour. This is described in the social learning. Theory developed by Bondua (1977). In social learning theory, learning is considered to be an active acquisitions, processing and structuring of experience.

Education and Life Skills

Life without education is a life without opportunity. We help children, especially the most access quality education and attain functional levels of literacy, numeracy and essentials life skills. In order to reach goals, we work with children, families and communities so that:-

1. Children read, write and use numeracy skills.
2. Children manage their emotions and communicate ideas.
3. Adolescents are ready for economic opportunity.
4. Children can access and complete education.
5. World vision uses a life cycle approach in our programme that focuses on the needs of children at all stages of all development.
6. Teachers know how to make learning effective.
7. Parents are equipped to help their children learn in the home.
8. Community volunteers are trained to host after school activities.

Three kinds of skills- thinking skills, social skills and emotional skills are main important life skills.

1. Thinking Skills

(i) Self-Awareness: Self-awareness includes recognition of 'self', our character, our strengths and weaknesses, desires and dislikes. Developing self-awareness can help us to recognize when we are stressed or feel under pressure.

(ii) Problem solving: Problem solving helps us to deal constructively with problems in our lives.

(iii) Dealing with stress: Dealing with stress means recognizing the source of stress in our lives, recognizing how this effects us and acting in ways that helps us control our levels of stress.

(iv) Critical thinking: Critical thinking is an ability to analyze. Information and experience in an objective manner.

2. Social Skills

(i) Interpersonal relationship: Interpersonal relationship skills help us to relate in positive ways with the people we interact work. It may mean keeping good relations with family members, friends and may also mean being able to end relationships constructively.

(ii) Decision making: Decision making helps us to deal constructively with all decisions about our loves.

(iii) Creative thinking: Creative thinking is a novel way of seeing or doing things that is characteristic of four components- fluency, flexibility, originality and elaboration.

3. Emotional Skills

(i) Managing feeling emotions: Managing emotions means involving recognizing emotions within us and others, being aware of how emotions influence behaviour and being able to respond to emotions appropriately.

(ii) Communication skills: Communication skills means that we are able to express ourselves, both verbally and non-verbally, in ways that are appropriate to our cultures and situations.

(iii) Empathy: We need to understand and care about other people needs, desires and feelings. Empathy is the ability to imagine what life is like for another person.

Who Needs Life Skills?

Life skills are applicable for all ages of children and adolescents in school. However, the age group targeted is mainly 10-18, adolescent years, since young people of this age groups seems to be most vulnerable to behaviour related health problems. The programme is for the promotion of health and well-being and targeted group is all children.

Why Life Skills Education?

(i) Early identification problems, early intervention and support at key movements in lives of young people is vital.
(ii) Development needs and aspiration of the individuals.
(iii) Development of psychosocial abilities.
(iv) The enhance capabilities and enlarge choices.
(v) To build different dimensions of well-being, by building self-image and self-worth, which in turn help individuals to be less vulnerable to the variations within a given context.

How are they imported?

It involves the process of participatory learning using 4 basic components:-

(i) Practical activities.
(ii) Feedback and reflections.
(iii) Consolidation and reinforcement.
(iv) Practical application to day to day life challengers.

Different methods that can be used to enhance Life Skills in Students

Each workshop is specially designed to import a particular skill and involves all or some of the following techniques:-

(i) Class discussions.
(ii) Brain storming.
(iii) Demonstration and guided practice.
(iv) Arts, music, dance, theatre.
(v) Small groups.

(vi) Simulations.
(vii) Case studies.
(viii) Story telling.
(ix) Debates.
(x) Decision mapping.

Implementing a Life Skills Programme

Life skills programmes are best implemented by teachers or life skill educators that have taken part in life skills education training sessions, and it may be appropriate to limit distribution of the life skills teaching resource to teachers that have taken part in training sessions. To this end, it may be best to deliver the life skills programme materials to training centres, rather than directly to school.

References

- Bandura, A. (1977) *Social learning theory*. Englewood Cliffs, NJ: Prentice-Hall, 27 p.
- Caplan, M., Weissberg, R.P., Grober, J.S., Jacoby, C. (1992) Social competence promotion with inner-city and suburban young adolescents: Effects an social adjustment and alcohol use. *Journal of Consulting and Clinical Psychology*, 60(1), 56-63.
- Errecart, M.T., Walberg, H.J., Ross, J.G., Gold, R.S., Fiedler, J.L., Kolbe, L.J. (1991) Effectiveness of Teenage Health Teaching Modules. *Journal of Schools Health*, 61(1), 26-30.
- Gonzalez, R. (1990) Ministering intelligence: A Venezuelan experience in the promotion of cognitive abilities. *International Journal of Mental Health*, 18(3), 5-19.
- Perry, C.L., Kelder, S.H. (1992) Models of effective prevention. *Journal of Adolescent Health*, 13(5), 355-363.

M: 98725-05975

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 March 2025 Page No. : 111-115
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

अनुवाद की भूमिका

Kumari Akanksha, Assistant professor,
Hindi department, GSSS, ssfgc Mysuru

शोध सार: अनुवाद एक ऐसा क्षेत्र है, जो न केवल लोगों को विचारों को समझने में सक्षम बनाता है बल्कि भाषा और संस्कृतियों की समृद्धि को संरक्षित और सम्मानित भी करता है। ज्ञान के क्षितिज के विस्तार के कारण विश्व दृष्टि का निर्माण हो रहा है। एक प्रांत एक राष्ट्र के बजाय समस्त विश्व प्रत्यक्ष - अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ गया है। ऐसे में अनुवाद ही एकमात्र ऐसा साधन है जिसके कारण पूरा विश्व एक दूसरे की तकनीकी, औद्योगिक, चिकित्सा, विधि, वाणिज्य, राजनीति से लेकर सांस्कृतिक एवं साहित्यिक आदान-प्रदान कर पता है। व्यक्ति अथवा राष्ट्र के संकट को वैश्विक संकट के रूप में प्रस्तुत किए जाने तथा व्यक्ति और राष्ट्र की समस्या का अंतर्राष्ट्रीय समाधान खोजा जाने का श्रेय भी अनुवाद को ही जाता है। जैसे-जैसे दुनिया वैश्विक स्तर पर बढ़ रही है, अनुवाद की भूमिका भी बढ़ती जा रही है। आज अनुवाद विभिन्न अनुशासनों, विविध ज्ञान शाखों के विभिन्न भाषाओं के बिस्तार का संसाधन बन गया है। आज अनुवाद की भूमिका विश्व संस्कृति के विकास में, विभिन्न भाषाओं के विकास में, भारत की भावनात्मक एकता की स्थापना में, राष्ट्रीय एकता की स्थापना में, विश्व साहित्य के विकास में, ज्ञान विज्ञानों के विकास में, व्यावसायिक उत्थान में, व्यापार वाणिज्य के विकास में, चिकित्सा, कानून, शिक्षा, मनोरंजन, यात्रा, वित्त, बैंकिग आदि के प्रमुख क्षेत्र में काफी महत्वपूर्ण बन गई है। आज जीवन का ऐसा कोई भी क्षेत्र। नहीं है, जहां हमें अनुवाद की आवश्यकता न हो। वास्तव में अनुवाद एक ऐसे सेतु की भूमिका निभाती है जिस पर चलकर मनुष्य अपना समग्र विकास कर पता है।

मूल शब्द: वैश्विक, जिज्ञासा, शैक्षणिक, सार्वभौम, अखंडता, प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षित, अंतरराष्ट्रीय

प्रस्तावना: यदि मानव का मस्तिष्क साहित्य की महत्वपूर्ण विद्या 'अनुवाद' से परिचित नहीं होता तो संभवत आज भी विश्व के विभिन्न भाषा - भाषी समुदाय एक दूसरे से अलग-अलग ही रहते। एक दूसरे से सर्वथा अनविज्ञ और अपरिचित रहते। अनुवाद की शुरुआत तब से मानी जाती है, जब मानव सभ्यता के विकास के साथ ही एक भाषा-भाषी समुदाय में जब

दूसरे भाषा भाषी समुदाय के बारे में ज्ञान प्राप्त करने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई, तथा उसकी यही सहज चेतन अनुवाद की आवश्यकता की मूल बनी। मानव समाज में एक दूसरे को समझने तथा निकट आने की दिशा में सबसे बड़ी बाधा भाषा रही है और इस बधा को दूर करने के लिए अनुवाद की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। आज संपूर्ण विश्व में विभिन्न प्रकार की भाषाओं का प्रयोग होता है तो उन भाषाओं के साहित्य, संविधान, कलाओं, धार्मिक ग्रंथो, ज्ञान, तकनीकी ज्ञान, संस्कृति, राजनीतिक, आर्थिक ज्ञान आदि को जानने के लिए हमें अनुवाद का ही सहारा लेना पड़ता है। आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अनुवाद की भूमिका महत्वपूर्ण है।

विश्व संस्कृति में अनुवाद की भूमिका: विश्व संस्कृति के विकास में अनुवाद की विशेष भूमिका रही है। अनेक देशों की प्राचीन सभ्यताओं से भारत का घनिष्ठ संबंध रहा है। धर्म, साहित्य, शिक्षा, विज्ञान, वाणिज्य, व्यवसाय,राजनीति ,संस्कृति आदि के विभिन्न पहलुओं का अनुवाद से अभिन्न संबंध रहा है। बौद्ध धर्म का प्रचार- प्रसार संपूर्ण विश्व में अनुवाद के द्वारा ही किया जा सका। विश्व भर में वेद, उपनिषद, गीता आदि के ज्ञान का अनुवाद अपने-अपने ढंग से किया जाता रहा है। इसी तरह विश्व की विभिन्न भाषाओं के धर्म ग्रंथो का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद किया जाता रहा है। वास्तव में अनुवाद एक सांस्कृतिक सेतु का काम कर रही है। अनुवाद के द्वारा ही हम एक दूसरे की सांस्कृतिक विरासत को जान पाते हैं।

भारत की भावनात्मक एकता की स्थापना में अनुवाद: विश्व के विभिन्न प्रदेशों की जनता के बीच अंतःसंप्रेषण की प्रक्रिया के रूप में अनुवाद की दार्शनिक एवं जीव वैज्ञानिक भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। अनुवाद मानव की मूलभूत एकता का व्यक्ति - चेतना एवं विश्व चेतना के अद्वैत का प्रत्यक्ष प्रमाण है। भाषाओं की गहन स्तर पर पाई जाने वाली मानव की मूलभूत एकता के बारे में जॉर्ज स्टीनर लिखते हैं- ''अनुवाद के द्वारा हम मानव मानव के उसे आधारभूत सार्वभौम ऐतिहासिक एवं सामाजिक एकता का अनुभव करते हैं जो भाषाओ के बाहरी भेद के बावजूद मानवीय भाषा के प्रत्येक मुहावरों की तरह में निहित है। '' संस्कृति के व्यतिरेक के कारण भाषाओं की संरचना एवं अभिव्यक्ति भिन्न हो जाती है। और इसलिए एकता के बिंदु प्रायः नजर नहीं आते हैं। ऐसी स्थिति में बहु भाषा भाषी विश्व जनता के बीच अनुवाद एक सुदृढ़ सांस्कृतिक सेतु का कार्य करता है। भारत जैसे बहु भाषा भाषी देश में तो अनुवाद की भूमिका स्वयं सिद्ध है। भारत के विभिन्न प्रदेशों के साहित्य में निहित मूलभूत एकता के स्वरूप को निखारने के लिए अनुवाद ही एकमात्र अचूक साधन है।

राष्ट्रीय एकता के विकास में अनुवाद की भूमिका: भारत जैसे विशाल राष्ट्र की एकता के विकास में अनुवाद का बहुत महत्व है। इस देश में भिन्न-भिन्न भाषाएं एवं बोलियां लोगों द्वारा बोली जाती है। अनुवाद के माध्यम से ही भिन्न-भिन्न भाषा - भाषी एक दूसरे से जुड़ पाते हैं, तथा राष्ट्रीय एकता की स्थापना हो पाती है। भारत बहुभाषिक भाषा समुदाय वाला देश है। यहां विभिन्न धर्म, संस्कृति, जाति, भौगोलिक वातावरण आदि है। इन विविधताओं में भी भारत ने एकता प्राप्त की है। अनुवाद ने भारत की भाषाओं और संस्कृतियों को आपस में जोड़ने का काम किया है। अनुवाद ने भारत की विरासत और बौद्धिक परंपराओं की विविधता को समझने और उसकी सराहना करने में मदद की है, जिससे भारत की अखंडता और एकीकरण की भावना पैदा हुई है।

साहित्य के क्षेत्र में अनुवाद की भूमिका: साहित्य के अनुवाद का इतिहास काफी प्राचीन है। अनुवाद ने न केवल विभिन्न साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, बल्कि भाषा के विकास में भी इसके योगदान को नकारा नहीं जा सकता। विश्व के विभिन्न साहित्य के बीच जो परस्पर आदान-प्रदान हुआ है वह अधिकांशतः अनुवाद के माध्यम से ही हुआ है। अनुवाद के माध्यम से ही सभी भारतीय साहित्य का अध्ययन संभव हो पाया है। अंतर्राष्ट्रीय साहित्य के ज्ञान प्राप्ति का साधन भी अनुवाद ही है। अनुवाद के कारण ही तुलनात्मक साहित्य का अध्ययन संभव हो पाया है। शेक्सपियर, लॉरेंस, वर्ड्सवर्थ आदि जैसे रचनाकारों की रचनाओं को हम जान पाए हैं साथ ही कालिदास, तुलसीदास, कबीर दास, महात्मा गांधी, रवींद्रनाथ, प्रेमचंद आदि की रचनाओं को संपूर्ण विश्व अनुवाद के माध्यम से ही जान पाया है।

ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में अनुवाद की भूमिका: अनुवाद से मिलने वाला ज्ञान ने मनुष्य के समाजशास्त्र को एक देश की सीमा से निकालकर दूसरे देश तक पहुंचा है। संस्कृत और यूनानी साहित्य कला और दर्शन के प्रचार प्रसार का श्रेय अनुवाद को ही जाता है। विश्व के विभिन्न धार्मिक पुस्तकों को अनुवाद के माध्यम से ही पूरे विश्व के लोगों तक पहुंचाया गया है। आधुनिक नव - जागरण कल में पश्चिम के नए ज्ञान- विज्ञान से हमारे ज्ञान और चेतना के विकास में अनुवाद ही सबसे बड़ा सहारा बना है। विश्व की सभी विकसित देश की राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिकी परक विकास में अनुवाद की उल्लेखनीय भूमिका रही है।

व्यापारिक क्षेत्र में अनुवाद की भूमिका: प्राचीन काल से ही अनुवाद देश-विदेश में वाणिज्य और व्यापार के क्षेत्र में अत्यंत उपयोगी रहा है। प्राचीन काल से ही भारत चीन और यूरोप

मके व्यापारी अपने व्यापार के लिए देश-विदेश जाया करते थे, और अनुवाद के सहारे ही व्यापार और वाणिज्य का काम करते थे। वर्तमान समय में भी व्यापारी अपने उत्पादों और वस्तुओं की गुणवत्ता और उनके उत्तर विक्रय के संवर्धन के लिए अनुवाद का ही सहारा लेते हैं। विश्व स्तर पर बहुराष्ट्रीय कंपनियों की पैठ अनुवाद के सहारे ही जाम पाई है। इसके अतिरिक्त अंतरराष्ट्रीय बाजार में उत्पादों और मालो को खपाने की प्रतिस्पर्धा में तथा आगे बढ़ाने के लिए भी अनुवाद की भूमिका काफी महत्वपूर्ण है।

मीडिया और सिनेमा के क्षेत्र में अनुवाद की भूमिका: कोई भी समाचार रेडियो और टीवी चैनल ऐसा नहीं जिसमें हमें अनुवाद की जरूरत महसूस नहीं होती है। सिनेमा भी अनुवाद का सहारा लेकर बुलंदियों को छू रहा है। टाइटेनिक फिल्म इसका बहुत बड़ा उदाहरण है। अनुवाद को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने नेशनल ट्रांसलेशन मिशन का गठन किया है। मीडिया के सभी क्षेत्रों में चाहे वह हिंदी, अंग्रेजी, भारतीय भाषा के समाचार हो या चैनल हो सभी जगह अनुवाद अहम भूमिका निभाती है। अंग्रेजी अखबारों में संवाददाताओं को भी समाचार संकलन के दौरान, साक्षरतकर करते या भाषण की रिपोर्ट करते हुए, दुर्घटना स्थल का रिपोर्ट तैयार करते समय कई बार अनुवाद का सहारा लेना पड़ता है।

कानून न्यायालय में अनुवाद की भूमिका: कानून के क्षेत्र में अनुवाद अहम भूमिका निभाती है। लाइसेंस समझौते, निजी, सरकारी और कॉरपोरेट के अनुवाद अति महत्वपूर्ण होते हैं। साथ ही न्यायालय में कर्मचारी, वकील आदि अदालतीं भाषा का प्रयोग करते हैं, जिसमे प्रायःप्रादेशिक भाषा प्रयुक्त होती है। वहां अन्य भाषा- भाषीके लिए अनुवाद आवश्यक हो जाता है।

शिक्षा के क्षेत्र में अनुवाद की भूमिका: शिक्षा के क्षेत्र में अनुवाद की भूमिका काफी महत्वपूर्ण है आधुनिक युग में विज्ञान, समाज, विज्ञान, अर्थशास्त्र, गणित, प्रौद्योगिकी आदि अनेक विषय सीखे और सिखाए जाते हैं। जिनसे संबंधित पुस्तके केवल अंग्रेजी में ही उपलब्ध है। अपने ज्ञान वृद्धि के लिए इन पुस्तकों का अनुवाद आवश्यक होता है।

वित्त एवं बैंकिंग के क्षेत्र में अनुवाद की भूमिका: वित्त और बैंकिंग उद्योग वैश्विक व्यापार में एक प्रमुख भूमिका निभाती है। विदेशी देशो में नए-नए ग्राहकों को प्राप्त करने और उच्च स्तर की स्थिरता प्राप्त करने के लिए बैंकिंग और वित्तीय क्षेत्र अपने संचार को प्रभावी और स्पष्ट बनाने के लिए अनुवाद का सहारा लेते है। वित्तीय दस्तावेज, लेनदेन और मंचों का सटीक अनुवाद उन्हें अपने ग्राहक के विश्वास और उनकी अपेक्षाओं को आसानी से पूरा करने में सहायता करता है।

मनोरंजन के क्षेत्र में अनुवाद की भूमिका: मनोरंजन उद्योग अनुवाद का सबसे बड़ा उपभोक्ता है। मनोरंजन में टेलीविजन शो, फिल्में, रेडियो और किताबें शामिल होती है। इनमें प्रत्येक को व्यापक दर्शको या पाठकों या श्रोताओं तक पहुंचने के लिए अनुवाद की आवश्यकता होती है। यहां तक की संगीत का क्षेत्र भी इसे अछूता नहीं है। डबिंग के सहारे एक भाषा के फिल्मों को दूसरी भाषा के दर्शकों तक पहुंचाया जाता है। आज डबिंग का महत्व मनोरंजन के हर क्षेत्र में दिखाई देता है।

यात्रा एवम पर्यटन मे अनुवाद की भूमिका: यह क्षेत्र स्पष्ट रूप से अनुवाद पर निर्भर करता है। पर्यटन ने हाल के दशको मे वैश्वीकरण के अनुरूप बड़े पैमाने पर विकास किया है। कुछ देश तोअपनी निरंतर आर्थिक लाभ के लिए पूरी तरह से पर्यटन पर निर्भर है। और इनका यह पर्यटन विकास अनुवाद के कारण ही संभव हो पाता है। भारत जैसे बहुभाषी राष्ट्र के यात्रा एवं पर्यटन के लिए अनुवाद आवश्यक है।

निष्कर्ष: अनुवाद विश्व संस्कृति, विश्व बंधुत्व, एकता और समरसता स्थापित करने का एक ऐसा सेतु है, जिसके माध्यम से विश्व, ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में क्षेत्रीयता बाद के सीमित दायरे से बाहर निकाल कर मानवीय एवं भावनात्मक एकता के केंद्र बिंदु तक पहुंच सकता है। यही वास्तव में अनुवाद की भूमिका का प्रत्यक्ष प्रमाण है। आधुनिक युग में देशो के बीच की दूरियां कम होने के परिणाम स्वरूप विभिन्न वैचारिक धरातलों और आर्थिक, औद्योगिक स्तरों पर पारस्परिक भाषिक विनिमय बढा है, और इस विनिमय के साथ-साथ अनुवाद का प्रयोग और अधिक किया जाने लगा है। आज के वैज्ञानिक युग में अनुवाद बहुत महत्वपूर्ण हो गया है। यदि हमें दूसरे - दूसरे देशों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलना है तो हमें विभिन्न देशों में हो रहे वैज्ञानिक, सामाजिक, आर्थिक,राजनीतिक एवं सांस्कृतिक प्रगति की जानकारी होनी आवश्यक है। इसके लिए हमें अनुवाद का सहारा लेना होता है। वास्तव में आज अनुवाद ही है, जिसने संपूर्ण विश्व को एक सूत्र में बांधने का कार्य किया है।

संदर्भ सूची :

1) अनुवाद विज्ञान (डा. भोलानाथ तिवारी, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली)
2) प्रयोजनमूलक हिंदी (डा. विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली)
3) प्रयोजनमूलक हिंदी और अनुवाद (डा. स्नेहलता श्रेसचंदा,)
4) egyankosh.ac.in

Mob-9008031407 e.mail-akanksh998655@gmail. Com

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 March 2025 Page No. : 116-121
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

समकालीन हिंदी-कविताओं में स्त्री विमर्श

सोनाली राज, अवर श्रेणी लिपिक (एल.डी.सी.)
ठाकुर प्रसाद महाविद्यालय, मधेपुरा - 852113

'समकालीन' का तात्पर्य सामान्यत: नब्बे के दशक से अब तक का लिया जा सकता है। आज का दौर ज्ञान-विज्ञान और तकनीक का दौर है। भूमंडलीकरण के इस दौर ने मनुष्य के लिए कई संभावनाओं के द्वार को खोल दिया है। स्त्री-पुरूष समानता की बात उठाई जा रही है। विद्वाना और चिंतक भिन्न-भिन्न दृष्टियों से स्त्रियों की स्थितियों का मूल्यांकन कर रहे हैं। क्योंकि स्त्रियों ने कई परम्परागत मान्यताओं को ध्वस्त करते हुए नए प्रतिमान स्थापित किए हैं। अपनी संवेदना और सूझ-बूझ के द्वारा नित्य नए कीर्तिमान स्थापित करते जा रहे हैं। अपने संघर्ष के दम पर अपनी परिस्थितियों को बदली हैं।

समकालीन शब्द का अर्थ समय सापेक्ष होता है। यह समय के साथ बदल जाता है और कुछ अंतराल के बाद भूत हो जाता है। समकालीन हिन्दी कविता का समय 20वीं सदी के नौवें दशक से मान सकते हैं। यह वह समय था जब पूरा विश्व बड़े बदलाव की दहलीज पर थी। सामाजिक क्षेत्र में भूमंडलीकरण और आर्थिक क्षेत्र में नवउदारीकरण ने दस्तक दे दिया था। इसी दौर में भारत में भी आर्थिक सुधारों का दौर शुरू हुआ था। बाजारीकरण ने परम्परागत मूल्यों को ध्वस्त कर दिया। इससे पहले 80 के दशक में स्त्री विमर्श के साथ दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श आदि कई विमर्श मुखरित हो गए थे। हिन्दी साहित्य के केन्द्र में इन विमर्शों को लाने वाले प्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार राजेन्द्र यादव थे। यह विमर्श भले ही 80 के दशक में शुरू हुए हों, लेकिन स्त्री की अभिव्यक्ति का स्वर इससे पहले आदिकालीन हिन्दी साहित्य से लेकर आधुनिक काल में महादेवी वर्मा के साहित्य में भी देखा जा सकता है।

समकालीन हिंदी कविता में स्त्री विमर्श देख सकते हैं। इस दौर में स्त्री को केन्द्र में रखकर रचनाएं पर्याप्त मात्रा में किया जाने लगा है। जिसमें स्त्रियों की पीड़ा, आकांक्षा और अनुभव को खुलकर अभिव्यक्ति मिली है। स्त्रियों के लेखन पर प्रकाश डालते हुए महादेवी वर्मा लिखती हैं - "पुरुष के लिए नारी अनुमान है, परन्तु नारी के लिए अनुभव। अतः अपने जीवन का जैसा सजीव चित्र वह हमें दे सकेगी, वैसा पुरुष बहुत साधना के उपरांत भी शायद ही दे सकें।"[1] समकालीन कविता में कवयित्री अपनी अभिव्यक्ति को खुलकर स्वर देती हैं। साथ-साथ पुरूष रचनाकारों ने भी स्त्री-जीवन की संवेदनशीलता को बारीकी से उकेरा है। इस दौर की प्रमुख

कवयित्री हैं - अनामिका। समकालीन दौर में की प्रमुख कवियित्री के रूप में चर्चित हैं। कविता के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार भी मिला हुआ है। उन्होंने भाषा, शिल्प और सौंदर्य के स्तर पर कविता को नया धरातल दिया है। वे शब्दों से खेलती हुई गप्प-सप्प शैली में कविता को बेहद संप्रेषणीय बनाती है। उनकी कविता स्त्री होने की यातना या त्रासदी को स्वर देती है। उनकी एक कविता का उदाहरण प्रस्तुत है -

"पढ़ा गया है हमको
जैसा पढ़ा जाता है कागज
बच्चों की फटी कॉपियों का
चनाजोरगरम के लिफाफे बनाने के पहले
सुना गया हमको
यों ही उड़ते मन से
जैसे सुने जाते हैं फिल्मी गाने
सस्ते कैसेटों पर
ठसाठस्स ठूसी हुई बस में।"[2]

आगे की पंक्तियों में अनामिका जी ने स्त्री मन की आकांक्षाओं को अभिव्यक्त की है -

"हम भी इंसान हैं
हमें कायदे से पढ़ो एक-एक अक्षर
जैसे पढ़ा होगा बीए के बाद
नौकरी का पहला विज्ञापन।"[3]

इन पंक्तियों के माध्यम से अनामिका ने पुरुषों के द्वारा उपेक्षा की भाव से नहीं देखे जाने बल्कि अपनी जिंदगी में गंभीरतापूर्वक इज्जत के साथ शामिल करने का आह्वान करती है। दूसरी कविता 'बेजगह' शीर्षक के माध्यम से सदियों से स्त्रियों को कमतर आंके जाने की परंपरा बन चुकी मानसिकता पर प्रहार किया है। कमतर माने जाने वाले मनोविज्ञान को उद्घाटित करती है -

"याद था हमें एक-एक अक्षर
आरंभिक पाठों का
राम, पाठशाला जा
राधा, खाना पका
राम, आ बताशा खा
राधा, झाड़ू लगा।"[4]

यह कविता लिंगभेद उजागर करती है। किस तरह आरंभ से ही लड़कियों के लिए अलग व्यवस्था और लड़कों के लिए अलग व्यवस्था तय होती रही है। एक तरफ शिक्षा तो दूसरी तरफ काम का आदेश। यहाँ सिमोन द बुआ की यह पंक्ति सटीक बैठती है - 'स्त्री होती नहीं, बना दी

जाती है।' स्त्रियाँ किस तरह यौन वस्तु बन जाती है। उसे किस तरह सेविका बना दिया जाता है। उनकी अगली पंक्तियां पितृसत्तात्मक समाज से तीखे प्रश्न पूछती है -

'क्या हूँ मैं तुम्हारे लिए?
मात्र एक तकिया
थके-माँदे आओ और जिस पर सिर टिका दो
एक खूँटी, जिस पर ऊब,
उदासी और थकान से भरी कमीज टांग दो।
एक चादर जिसे जब चाहे, जहाँ चाहे, बिछा दिया जाए ?"[5]

किस तरह समाज ने स्त्रियों को केवल वस्तुएं ही समझा है। लेकिन आधुनिक स्त्री इन सब चीजों का विरोध करती है। अपनी स्थिति के में अपेक्षित परिवर्तन के तत्पर रहती है। परम्परागत मान्यताओं को ठोकर मारकर आगे बढ़ने में विश्वास रखती है। वे लगातार अपनी शक्ति को पहचान रही है। अपने हक के लिए सवाल उठा रही है। पुरूष में स्त्री-विरोधी व्यवहारों का उद्घाटन कर रही है। बाहर से सुसंस्कृत और भीतर से कुंठा ग्रस्त विलासलोलुप पुरूषों के दो हरे चरित्र का उद्घाटन करती है। आज की स्त्री और आदिवासी कवियित्री निर्मला पुतुल ऐसे तत्वों की पहचान करते हुए अपनी कविता के माध्यम से उस पर चोट करती है -

'क्या तुम जानते हो
एक स्त्री के समस्त रिश्ते का व्याकरण?
बता सकते हो तुम / एक स्त्री को स्त्री-दृष्टि से देखे
उसके स्त्रीत्व की परिभाषा?
अगर नहीं! तो फिर क्या जानते हो तुम
रसोई और बिस्तर के गणित से परे
एक स्त्री के बारे में...?"[6]

स्त्री को उसके तन के भूगोल पर समझने वाले पुरूषों की कमी नहीं है। मन को समझने वाले पुरूष कम ही हैं। पुरूष अपनी असफलता और कायरता की खीज पत्नी पर निकालता है। इस संदर्भ में चंद्रकांत देवताले की कविता द्रष्टव्य हैं -

"भयभीत आदमी के
साहसी किस्सों का सबसे बड़ा खज़ाना
उसकी बीबी के पास होता है।"[7]

समकालीन दौर में स्त्री मुक्ति की कविता लिखी जा रही है। निर्मला पुतुल की अगली पंक्ति इस संदर्भ में उल्लेखनीय है -

"मैं कविता नहीं
शब्दों में खुद को रचती देखती हूँ
अपनी काया से
बाहर खड़ी होकर अपना होना।"[8]

यहाँ स्त्री अपनी अस्मिता की तलाश करती है। शरीर के मोह से बाहर निकलकर देखती है। इस कड़ी में उनका आत्मविश्वास दिखता है। सौंदर्य प्रतियोगिता के विज्ञापन से बाहर आकर अपनी मुक्ति का प्रयोजन तलाशती है। वस्तुकरण की स्थिति को चुनौती पेश करती है। ऐसी स्त्रियाँ ही आज की सशक्त स्त्रियां होंगी। वह पारंपरिक आवरणों से मुक्त होकर खुली हवा में सांस लेना चाहती है। अपने अधिकारों की मांग करते हुए स्त्री समाज को अपने हक के प्रति मुखर करती है। शैलचंद्रा के अनुसार -

"क्या हुआ गर लड़की हूँ
मुझे भी घर में थोड़ी जगह चाहिए
लड़की होने की सजा गर्भ में मुझे मत दो
हूँ जीवित प्राणी इस धरती का
मुझे भी मेरे हिस्से का थोड़ा प्यार दो
प्यार दो अधिकार दो
मुझे भी इस धरती में जीने का हक दो
हूँ जननी मैं पुरुष की
फिर क्यों जन्म से पहले ही घोंट दिया जाता है गला मेरा
इक्कीसवीं सदी में भी।"[9]

स्त्रियां अपने लिए जगह चाहती है। घर, परिवार और समाज में। इस धरती पर जीवित प्राणी की तरह प्यार चाहती है। साथ ही शैलचन्द्रा की यह कविता भ्रूण हत्या पर भी सवाल उठाती है। निर्मला पुतुल स्त्री आंदोलनों के तह तक जाती है। सांस्थानिक और सांगठिन खोखलेपन को उजागर करते हुए लिखती हैं -

"एक बार फिर
ऊँची नाक वाली अधकटे ब्लाउज पहने महिलाएँ
करेंगी हमारे जुलूस का नेतृत्व
किसी विशाल बैनर के तले
मंच से खड़ी माइक पर वे चीखेंगी
व्यवस्था के विरुद्ध
और हमारी तालियाँ बटोरते
हाथ उठाकर देंगी
साथ होने का भरम।"[10]

निर्मला पुतुल स्त्री मुक्ति के लिए संघर्ष करती है। वे स्त्री और स्त्री के अंतर को साफ समझ लेती है। वह अपनी कविता से सिद्ध करती है कि समकालीन हिन्दी कविता में स्त्री मुक्ति का स्वप्न और अंतर्विरोध छुपा हुआ है।

अनामिका ने अपनी एक कविता 'तुलसी का झोला' में समाज की परंपरागत मान्यताओं पर प्रहार करती है और सवाल उठाते हुए स्त्री को नए सिरे से देखे जाने की बात रखती है '

"'घन-घमंड' वाली चौपाई भी लिखते हुए
याद आई? --- नहीं आई?
घन-घमंड वाली ही थी रात वह भी
जब मैं तुमसे झगड़ी थी
कोई जाने या नहीं जाने, मैं जानती हूँ क्यों तुमने
'घमंड' की पटरी 'घन' से बैठाई
नैहर बस घर ही नहीं होता
होता है नैहर अगरधत्त अंगड़ाई
एक निश्चित उबासी, एक नन्ही-सी फुर्सत!
तुमने उस इत्ती-सी फुरसत पर
बोल दिया धावा
तो मेरे हे रामबोला, बम भोला
मैंने तुम्हें डाटा!
डॉटा तो सुन लेते
जैसे सुना करती थी मैं तुम्हारी
पर तुमने दिशा ही बदल दी!"[11]

वस्तुत: समकालीन हिन्दी कविता में स्त्रियों का सशक्त चित्र प्रस्तुत हुआ है। इसमें प्रमुख रूप से अनामिका, निर्मला पुतुल, ममता किरण, जेन्नी शबनम, कीर्ति चौधरी, स्नेहमयी चौधरी, अमृता भारती, इन्दु जैन, जसिंता केरकेट्टा आदि कवयित्रियों को महत्वपूर्ण योगदान हैा इनकी कविताओं ने भूमंडलीकरण के इस दौर में स्त्रियों का पावर बढ़ाया है और इनकी कविताएं स्त्री विमर्श का अलग ही चेहरा प्रस्तुत करता है।

संदर्भ सूची :

1. शृंखला की कड़ियाँ, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण-2010, पृष्ठ - 63
2. खुरदुरी हथेलियाँ, अनामिका, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण - 2009, पृष्ठ सं. - 13
3. वही, पृष्ठ सं० - 13-14
4. वही, पृष्ठ सं० - 15
5. अपने घर की तलाश में, निर्मला पुतुल, संथाली से अनुवाद : अशोक सिंह, प्रकाशन रमणिका गुप्ता फाउंडेशन, दिल्ली, संस्करण - 2005, पृष्ठ सं० - 4
6. नगाड़े की तरह बजते शब्द, निर्मला पुतुल, संथाली से अनुवाद : अशोक सिंह, प्रकाशन रमणिका गुप्ता फाउंडेशन, दिल्ली, संस्करण - 2005, पृष्ठ सं० - 8
7. कवि ने कहा(चुनी हुई कविताएं), चंद्रकांत देवताले, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण - 2012, पृष्ठ सं० - 97

8. अपने घर की तलाश में, निर्मला पुतुल, संथाली से अनुवाद : अशोक सिंह, प्रकाशन, रमणिकाफाउंडेशन, दिल्ली, संस्करण 2004, पृष्ठ 4-5
9. साक्षात्कार, इक्कीसवीं सदी में स्त्री, शैलेश चंद्रा, अप्रैल 2003, पृष्ठ 48
10. अपेक्षा : 12, अंबेडकरवादी युवा कविता विशेषांक, जुलाई-सितंबर, 2005, पृष्ठ 57
11. कवि ने कहा, अनामिका , किताबघर प्रकाशन , नई दिल्ली ,सं 2008 ,पृष्ठ 73 -74

इमेल : sonaliraj763127@gmail.com मो॰ - 8051338498

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 March 2025 Page No. : 122-126
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

राष्ट्र निर्माण में शिक्षा का योगदान : ऐतिहासिक, संवैधानिक और समकालीन परिप्रेक्ष्य

श्री सायसिंग अवास्या, सहायक प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान)
माँ नर्मदा शासकीय महाविद्यालय, सोंडवा, जिला- अलीराजपुर (म. प्र.)-457888

भूमिका

राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में शिक्षा का योगदान सर्वोपरि है। किसी भी समाज की प्रगति और विकास उसकी शैक्षिक व्यवस्था की गुणवत्ता पर निर्भर करता है। शिक्षा न केवल व्यक्ति के बौद्धिक, सामाजिक और आर्थिक विकास को प्रभावित करती है, बल्कि यह समाज में लोकतांत्रिक मूल्यों, राष्ट्रीय एकता और वैज्ञानिक सोच को भी बढ़ावा देती है। भारतीय संदर्भ में, प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तक शिक्षा ने राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

शिक्षा सामाजिक, आर्थिक, वैज्ञानिक और राजनीतिक सभी क्षेत्रों में विकास को बढ़ावा देती है। इसलिए, यह आवश्यक है कि प्रत्येक नागरिक को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त हो, ताकि राष्ट्र सशक्त और आत्मनिर्भर बन सके। जैसा कि **नेल्सन मंडेला ने कहा था - "शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है, जिससे आप दुनिया को बदल सकते हैं।"**

शब्द कुंजी - गुरुकुल, विश्वविद्यालय, शिक्षा व्यवस्था, आधुनिक चेतना, समवर्ती सूची, नीतियाँ, आत्मनिर्भर ।

01. अतीत में शिक्षा : प्राचीन से स्वतंत्रता पूर्व तक

प्राचीन भारत में वैदिक और गुरुकुल परंपरा प्रचलित थी जिसमें आत्मज्ञान, धर्म, नैतिकता और समाज सेवा की शिक्षा प्रदान की जाति थी। ईसा पूर्व छटवी सदी के बाद शिक्षा व्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन बौद्ध शिक्षा व्यवस्था द्वारा किए गए। बौद्ध शिक्षा व्यवस्था में विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई, जिनमें नालंदा, तक्षशिला, वल्लभी और विक्रमशिला प्रमुख थे। इन विश्वविद्यालयों में भारतीय तथा विदेशी छात्र शिक्षा प्राप्त करते थे, जिससे वैश्विक ज्ञान का आदान-प्रदान हुआ। इन विश्व-स्तरीय संस्थानों ने अध्ययन के विविध क्षेत्रों में शोध एवं शिक्षण के ऊंचे प्रतिमान स्थापित किए। इसी शिक्षा व्यवस्था ने चरक, सुश्रुत, आर्यभट्ट, वराहमिहिर,

भास्कराचार्य, ब्रह्मगुप्त, चाणक्य, पाणिनि और पतंजलि आदि जैसे अनेकों विद्वानों को जन्म दिया। इन विद्वानों ने वैश्विक स्तर पर ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में प्रामाणिक रूप से मौलिक योगदान दिए। यद्यपि प्राचीन भारत में शिक्षा प्रणाली उन्नत थी, लेकिन इसकी सभी वर्गों तक समान रूप से पहुँच नहीं थी। उच्च वर्गों को संगठित शिक्षा प्राप्त होती थी, जबकि निम्न वर्गों और महिलाओं के लिए शिक्षा के अवसर सीमित थे। इसलिए शिक्षा का प्रतिशत अपेक्षाकृत कम था।

इस्लामी शासन के दौरान मदरसों और मकतबों की स्थापना हुई, जहाँ धार्मिक शिक्षा के साथ-साथ गणित, चिकित्सा और खगोल विज्ञान पढ़ाया जाता था। भक्ति और सूफी संतों ने शिक्षा के माध्यम से सामाजिक सुधार और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा दिया। इस काल में धर्मनिरपेक्ष शिक्षा के बजाय धार्मिक एवं दार्शनिक शिक्षा पर जोर दिया गया।

ब्रिटिश शासन में आधुनिक शिक्षा प्रणाली का विकास हुआ, लेकिन इसका उद्देश्य धर्म प्रचार व प्रशासनिक अधिकारियों की भर्ती करना था, न कि राष्ट्र निर्माण। भारत में आए प्रोटेस्टेंट मिशन ने मद्रास, तंजौर तथा अन्य स्थानों पर विद्यालयों की स्थापना की। ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा 1784 में भारत के तंजौर में प्रथम विद्यालय खोला जिसमें अंग्रेजी, तमिल तथा हिंदी के अतिरिक्त अंकगणित तथा ईसाई धर्म की शिक्षा दी जाती थी । 1784 में भारत के प्रथम गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स ने मुस्लिम युवकों में शिक्षा के प्रसार के लिए कोलकाता में मदरसा स्थापित किया। साथ ही 1791 में बनारस में संस्कृत महाविद्यालय की स्थापना की। कंपनी के लोक प्रशासकों को भारतीय भाषाओं, हिंदू-मुस्लिम कानून तथा भारतीय इतिहास से शिक्षित करने के उद्देश्य से लॉर्ड वेलेजली द्वारा 1800 में कोलकाता में महाविद्यालय की स्थापना की।

1813 ई के चार्टर के अनुसार सरकार को प्रतिवर्ष शिक्षा पर एक लाख खर्च करने का प्रावधान किया गया। 1835 में मैकाले की शिक्षा नीति लागू हुई, जिससे अंग्रेज़ी माध्यम की शिक्षा को बढ़ावा मिला। 1854 के वुड के डिस्पैच(1954) ने शिक्षा प्रणाली को संस्थागत रूप दिया, जिससे आधुनिक विद्यालय और विश्वविद्यालय स्थापित हुए। इसे 'भारतीय शिक्षा का मैग्नाकार्टा' कहा जाता है क्योंकि इसके तहत लंदन विश्वविद्यालय की तर्ज पर कलकत्ता, बंबई और मद्रास में तीन विश्वविद्यालय स्थापित किए गए। इसके बाद हंटर कमीशन(1882), सैडलर आयोग(1917), हार्टोग समिति(1929), वर्धा योजना (1937), सार्जेंट योजना (1944) आदि द्वारा शिक्षा व्यवस्था में आवश्यक सुधार किये गए।

इस शिक्षा प्रणाली ने भारतीय समाज में आधुनिक चेतना का विकास किया और स्वतंत्रता संग्राम को बल प्रदान किया। राजा राम मोहन राय, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, ज्योतिबा फुले जैसे समाज सुधारकों ने शिक्षा को सामाजिक सुधार का माध्यम बनाया। महात्मा गांधी ने बुनियादी शिक्षा पर जोर दिया, जिससे व्यावहारिक और आत्मनिर्भर शिक्षा को बढ़ावा मिला। राष्ट्रीय शिक्षा आंदोलन के तहत बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (BHU), अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय (AMU),

जामिया मिलिया इस्लामिया जैसे संस्थानों की स्थापना हुई, जो स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण केंद्र बने।

02. स्वतंत्रता के बाद भारत में शिक्षा व्यवस्था

स्वतंत्रता के बाद भारतीय संविधान निर्माताओं द्वारा संविधान में शिक्षा को एक मौलिक अधिकार, नीति निर्देशक तत्व और राज्य का कर्तव्य तीनों माना गया है। 42वें संविधान संशोधन (1976) के बाद शिक्षा को समवर्ती सूची (Concurrent List) में रखा गया। अब केंद्र और राज्य सरकार दोनों शिक्षा से संबंधित कानून बना सकते हैं। 86वें संविधान संशोधन (2002) द्वारा शिक्षा और मौलिक अधिकार का रूप दिया गया गया। अनुच्छेद 21A - 6 से 14 वर्ष तक के सभी बच्चों के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान करता है। इसके तहत 2009 में "निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिनियम (RTE Act)" लागू किया गया। जिसमें निजी विद्यालयों में 25% सीटें आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लिए आरक्षित की गई।

अनुच्छेद 29 - सांस्कृतिक और शैक्षिक अधिकार जिसमें किसी भी नागरिक को अपनी भाषा, लिपि और संस्कृति को संरक्षित करने का अधिकार प्रदान करता है। अनुच्छेद 30 - अल्पसंख्यकों को शिक्षा संस्थान स्थापित करने का अधिकार अर्थात धार्मिक या भाषायी अल्पसंख्यक अपनी पसंद के शैक्षिक संस्थान स्थापित और संचालित कर सकते हैं और सरकार इन संस्थानों के प्रबंधन में अनुचित हस्तक्षेप नहीं कर सकती।

राज्य के नीति निर्देशक तत्व के अन्तर्गत अनुच्छेद 41(कार्य, शिक्षा और सार्वजनिक सहायता), अनुच्छेद 45(बचपन की देखभाल और शिक्षा), अनुच्छेद 46 (शिक्षा और अनुसूचित जाति/जनजाति का उत्थान) आदि कअ प्रावधान किया गया है।

मौलिक कर्तव्य (Fundamental Duties) के अंतर्गत अनुच्छेद 51A (क) में ग्यारहवा कर्तव्य जोड़ा गया और 6 से 14 वर्ष की आयु के बालक-बालिकाओं की शिक्षा को प्रत्येक पालक का कर्तव्य माना।

03. स्वतंत्रता के बाद शैक्षिक नीतियाँ एवं सुधार

स्वतंत्रता के बाद भारत में शिक्षा प्रणाली को सुधारने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए। 1948-49 में राधाकृष्णन आयोग ने उच्च शिक्षा के विकास पर बल दिया, जबकि 1952-53 में मुदालियर आयोग ने माध्यमिक शिक्षा के सुधार की सिफारिश की। 1968 में भारत की पहली राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू हुई, जिसने निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा, विज्ञान और तकनीकी शिक्षा के प्रसार तथा मातृभाषा में शिक्षा पर जोर दिया।

1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने "सभी के लिए शिक्षा" की अवधारणा को मजबूत किया और महिला, दलित एवं आदिवासी शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया। 1992 में इसमें संशोधन किया गया। 2001 में सर्वशिक्षा अभियान शुरू हुआ, जिससे प्राथमिक शिक्षा को बढ़ावा मिला। 2009 में

शिक्षा का अधिकार अधिनियम पारित हुआ, जिसने 6-14 वर्ष के बच्चों के लिए शिक्षा को मौलिक अधिकार बना दिया।

2020 में नई शिक्षा नीति लागू की गई, जो लचीली, बहु-विषयक, कौशल-आधारित शिक्षा, डिजिटल शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा को प्रोत्साहित करती है। इसने 10+2 प्रणाली को बदलकर 5+3+3+4 मॉडल अपनाया और मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा पर बल दिया। इन सुधारों ने शिक्षा को अधिक समावेशी और व्यावहारिक बनाया, जिससे भारत में शैक्षिक गुणवत्ता में व्यापक सुधार हुए।

04. शिक्षा एवं आधुनिक भारत का निर्माण

आधुनिक भारत के निर्माण में शिक्षा ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह केवल ज्ञान और कौशल प्रदान करने तक सीमित नहीं रही, बल्कि समाज सुधार, स्वतंत्रता संग्राम, आर्थिक विकास, और वैज्ञानिक प्रगति का आधार भी बनी। स्वतंत्र भारत में शिक्षा ने लोगों में तार्किकता और समस्या-समाधान की क्षमता विकसित की, जिससे वैज्ञानिक आविष्कार संभव हुए। सी.वी. रमन (भौतिकी), होमी भाभा (परमाणु ऊर्जा), ए.पी.जे. अब्दुल कलाम (अंतरिक्ष और मिसाइल तकनीक) जैसे वैज्ञानिकों ने आधुनिक भारत को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया। भारत में आईआईटी (IITs), IISc, CSIR, ISRO, BARC जैसे संस्थानों की स्थापना शिक्षा प्रणाली के कारण ही संभव हुई। ये संस्थान अंतरिक्ष, परमाणु ऊर्जा, जैव प्रौद्योगिकी और चिकित्सा के क्षेत्र में शोध कर रहे हैं।

शिक्षा के माध्यम से चिकित्सा विज्ञान में नई खोजें हुईं, जिससे जीवन प्रत्याशा बढ़ी और बीमारियों का इलाज संभव हुआ। भारत में AIIMS, ICMR, NIMHANS जैसे संस्थानों ने चिकित्सा शिक्षा और शोध को बढ़ावा दिया। COVID-19 महामारी के दौरान वैक्सीन (Covaxin, Covishield) विकसित करने में वैज्ञानिक शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

स्वतंत्रता के बाद भारत ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। 1950 में वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR) की स्थापना के साथ शोध और नवाचार को बढ़ावा दिया गया। 1969 में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) की स्थापना हुई, जिसने भारत को अंतरिक्ष महाशक्ति बना दिया। 1975 में पहला उपग्रह 'आर्यभट्ट' प्रक्षेपित किया गया, और 2014 में मंगलयान मिशन ने भारत को पहले प्रयास में मंगल ग्रह तक पहुंचने वाला देश बना दिया।

परमाणु ऊर्जा में भी भारत ने महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल कीं। 1974 और 1998 के पोखरण परमाणु परीक्षणों ने भारत को एक मजबूत परमाणु शक्ति बना दिया। कृषि क्षेत्र में हरित क्रांति (1960 के दशक) ने उन्नत बीज, रासायनिक खाद और सिंचाई तकनीकों के माध्यम से खाद्य उत्पादन को आत्मनिर्भर बनाया।

सूचना प्रौद्योगिकी में भारत वैश्विक केंद्र बन गया है, जहाँ बेंगलुरु जैसे शहर आईटी हब के रूप में उभरे। डिजिटल इंडिया, स्टार्टअप इंडिया और 5G तकनीक के विकास ने भारत को तकनीकी रूप से सशक्त बनाया। चिकित्सा, जैव प्रौद्योगिकी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में भी भारत तेजी से आगे बढ़ रहा है। विज्ञान और तकनीक में यह प्रगति भारत को आत्मनिर्भर और वैश्विक शक्ति बनाने में सहायक है।

भारत के शिक्षित युवाओं ने विज्ञान, प्रौद्योगिकी, चिकित्सा, व्यापार और प्रशासन के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आईटी क्षेत्र में भारतीय पेशेवरों की विशेषज्ञता के कारण गूगल, माइक्रोसॉफ्ट और आईबीएम जैसी कंपनियों में शीर्ष पदों पर भारतीय युवा कार्यरत हैं। चिकित्सा और अनुसंधान में भारतीय डॉक्टर और वैज्ञानिक नई खोजों में अहम भूमिका निभा रहे हैं। वैश्विक स्टार्टअप इकोसिस्टम में भारतीय उद्यमियों का योगदान बढ़ा है, जिससे कई भारतीय कंपनियाँ यूनिकॉर्न स्तर तक पहुँची हैं। इसके अलावा, नीति-निर्माण, अर्थशास्त्र और शिक्षाविदों के रूप में भी भारतीय युवा दुनिया भर में प्रभाव छोड़ रहे हैं।

निष्कर्ष

भारत की शिक्षा को और अधिक कौशल-आधारित, नवाचार और शोध केंद्रित शिक्षा को बनाया जाना चाहिए। वैज्ञानिक सोच, तकनीकी दक्षता और उद्यमशीलता को प्रोत्साहित करने के लिए स्कूलों और विश्वविद्यालयों में अत्याधुनिक सुविधाएँ विकसित की जानी चाहिए। डिजिटल शिक्षा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) को पाठ्यक्रम में शामिल कर भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा प्रणाली बनानी चाहिए। ग्रामीण क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित कर सभी वर्गों को समान अवसर दिए जाएँ। उच्च शिक्षा में वैश्विक मानकों को अपनाकर भारतीय युवाओं को विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाया जा सकता है, जिससे भारत आत्मनिर्भर और महाशक्ति बन सके।

संदर्भ

01. ओझा, एन एन, (2021), सामाजिक-आर्थिक विकास, क्रानीकल बुक्स, प्रा लि नोयडा, प्रथम संस्करण।

02. आहूजा, राम, (2023), भारतीय समाज, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, पुनःमुद्रित संस्करण, 2023

03. गुहा, रामचन्द्र,(2012), भारत: गांधी के बाद, पेंगविन इंडिया पब्लिकेशन, प्रथम संस्करण ।

03. बसु, दुर्गादास (2023), भारत का संविधान- एक परिचय, Lexi nexis Publication, 14Th संस्करण।

04. कोठारी आयोग (1964-66) की रिपोर्ट ।

05. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986, 2020 का मसौदा।

06. नीति आयोग की रिपोर्ट्स ।

E-mail - sayuawasya1030@gmail.com, Mob- 9993786996

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 March 2025 Page No. : 127-129
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

आदिवासी समाज में पलायन के कारणों एंव प्रभावों का अध्ययन

(अलिराजपुर जिले के विकासखण्ड– सोण्डवा के विशेष सन्दर्भ में)

डॉ. मुकेश अजनार, सहायक प्राध्यापक समाजशास्त्र,
माँ नर्मदा शासकीय महाविद्यालय सोण्डवा,
वालपुर रोड, सोण्डवा, 457888 जिला–आलीराजपुर

भारत में 2011 की जनगणना के आधार पर भारत में अनुमानतः 10.42 करोड़ आदिवासी निवास करते है, जो भारत की कुल जनसंख्या का लगभग 8.06 प्रतिशत है, इनमें से 93.8 प्रतिशत जनंसख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार मध्यप्रदेश में आदिवासी की जनसंख्या 1,53,16,784 है म.प्र. भारत का सबसे बड़ा जनजातीय राज्य है। सन् 1991 से 2011 तक की जनगणनाओं में आदिवासियों की जनसख्या में लगातार वृद्धि देखी गई है। इससे स्पष्ट है कि देश की बढ़ती आबादी में इनकी वृद्धि दर की भूमिका कम महत्वपूर्ण नहीं है। 17 मई 2008 को झाबुआ से अलग आलीराजपुर जिले का गठन हुआ इस आलीराजपुर जिले की साक्षरता देश की सबसे कम साक्षरता 36.10 प्रतिशत है 2011 की जनगणना के आधार पर जिले में 90 प्रतिशत आदिवासी निवासरत है और 92.17 प्रतिशत यह समुदाय ग्रामीण क्षैत्र में निवास करता है।

अलिराजपुर जिले में भिलाला, भील, पटलिया जनजाति समुदाय आमतौर पर दूरांचल, वनाचंल एवं ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती आ रही है और इनका मुख्य कार्य कृषि करना, शिकार करना तथा वनों से लकड़ी काटकर बेचना एंव वनोपज आदि का विक्रय करना, मजदुरी करना आदि होता है और कुछ संख्या में नौकरी आदि भी करने लगे है लेकिन परिवर्तनों के कारण इनके कार्य में बदलाव आया, जिससे इनमें परिवर्तन के रूप में पलायन उभरकर सामने आया।

पलायन की संख्या दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है जो एक समस्या है। पलायन से विशेष इनकी सामाजिक स्थिति में पिछले कुछ सालों में भी सुधार नहीं हुआ, वहीं पुरानी स्थिति टुटी–फुटी झोपडियाँ, फटे वस्त्र एवं भोजन में गुणवत्ता का अभाव जो इनकी सामाजिक स्थिति को दर्शाती है। सामाजिक स्थिति के साथ आर्थिक स्थिति में भी कोई सुधार नहीं हुआ है। दैनिक रूप में मजदूरी कर एवं अपना जीवनयापन करने पर मजबूर है। अतः वर्तमान में इनकी सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ हे। नीति आयोग की रिपोर्ट में भारत देश में आलीराजपुर को सबसे गरीब जिला कहा गया है यह रिपोर्ट साल 2019 और 2020 के बीच हुए **'राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण'** के आधार पर है।

शोध कार्य के उद्देश्य :

प्रस्तुत अध्ययन आदिवासी समाज और पलायन के कारणों का अध्ययन अलिराजपुर जिले के विकासखण्ड–सोण्डवा के में निम्न उदेश्यों को ध्यान में रखकर किया गया है।

1. आदिवासी समाज में पलायन के प्रमुख कारणों का पता लगाना।
2. आदिवासी समाज में पलायन के प्रकार एवं स्वरूप का पता लगाना।
3. आदिवासी समाज में पलायन के प्रभावो का अध्ययन करना।

आदिवासी समाज में पलायन के प्रमुख कारण

तालिका क्रमांक – 1
पलायन के कारण संबंधी जानकारी

क्रमांक	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	गरीबी	18	18.0
2.	बेरोजगारी	11	11.0
3.	दोनों	46	46.0
4.	कर्ज के कारण	25	25.0
	योग	**100**	**100**

उपरोक्त तालिका में दर्शाये गए आंकडों से स्पष्ट होता है कि 18 प्रतिशत गरीबी के कारण पलायन करती है, 11 प्रतिशत बेरोजगारी तथा 25 प्रतिशत कर्ज के कारण पलायन कर जाते है जबकि सबसे अधिक 46 प्रतिशत गरीबी और बेरोजगारी दोनों कारणों से पलायन करते है।

स्पष्ट होता है कि अधिकांश आदिवासी समुदाय गरीबी और बेरोजगारी के कारण पलायन करते है।

तालिका क्रमांक – 2
पलायन के दौरान आदिवासी समाज के व्यवसाय संबंधी जानकारी

क्रमांक	व्यवसाय	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	कृषि	27	27.0
2.	कृषि मजदूरी	61	61.0
3.	मजदूरी	9	9.0
4.	नौकरी	1	1.0
5.	व्यापार, स्वरोजगार	2	2.0
	योग	**100**	**100**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि कुल पलायन समुदाय में 27 प्रतिशत का व्यवसाय कृषि है, 61 प्रतिशत का व्यवसाय कृषि मजदूरी है, 9 प्रतिशत का व्यवसाय मजदूरी है तथा 1 प्रतिशत नौकरी एंव 2 प्रतिशत ऐसे है, जो व्यापार एंव स्वरोजगार करते है।

अतः स्पष्ट है कि 61 प्रतिशत आदिवासी समुदाय पलायन के दौरान कृषि मजदूरी में कार्य करते है।

पलायन के आर्थिक प्रभाव

तालिका क्रमांक – 3
पलायन का आर्थिक जीवन पर प्रभाव से संबंधी जानकारी

क्रमांक	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हॉ	82	82
2.	नहीं	18	18
	योग	**100**	**100**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 82 प्रतिशत आदिवासीयों ने पलायन का आर्थिक जीवन पर प्रभाव संबंधित जानकारी में हॉ कहा है तथा 18 प्रतिशत ने पलायन का आर्थिक जीवन पर प्रभाव नहीं पड़ता से संबंधित जानकारी दी गई है। स्पष्ट है कि अधिकांश महिलाओं के आर्थिक जीवन पर पलायन का प्रभाव पड़ता है।

आर्थिक प्रभाव के प्रकार संबंधित जानकारी

तालिका क्रमांक – 4
किस प्रकार का प्रभाव संबंधी जानकारी

क्रमांक	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	गरीबी दूर होती है	29	29
2.	बेरोजगारी का अंत	7	7
3.	आर्थिक स्तर में सुधार	46	46
4.	अन्य	18	18
	योग	**100**	**100**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 29 प्रतिशत पलायन आदिवासीयें ने जानकारी दी है कि गरीबी दूर होती है, 7 प्रतिशत बेरोजगारी कम होती है, 46 प्रतिशत ने आर्थिक स्तर में सुधार से संबंधित जानकारी दी है तथा 18 प्रतिशत ने कुछ भी जवाब नहीं दिया गया है। स्पष्ट है कि पलायन से आर्थिक स्तर में सुधार होता है।

निष्कर्ष –

भारत में ग्रामीण जनसंख्या, नगरों की और प्रवासित हो रही है। यदि यह प्रवास इसी गति से जारी रहा तो भारत में शहरी और ग्रामीण जनसंख्या का अनुपात बराबर हो जायेगा। इसका कारण यह है कि भारत में शहरी जनसंख्या 3.1 प्रतिशत की दर से बढ़ती है जबकि ग्रामीण जनसंख्या की विकास दर 1.7 प्रतिशत की दर से बढ़ती है। **ए.चटर्जी का विचार है कि** ''अतः आने वाले वर्षो में ग्रामीण जगत की अपेक्षा शहरों की समस्याएं अधिक गंभीर होगी। किन्तु जब तक ग्रामीण जनसंख्या को रोका नहीं जायेगा, ग्रामीण क्षेत्रों को उद्योगों का केन्द्र नहीं बनाया जायेगा। यह प्रवास नहीं रोका जायेगा। अतः व्यावहारिक जनसंख्या नीति को एक और जनसंख्या की वृद्धि पर रोक लगानी चाहिए तथा दुसरी और आर्थिक विकास की दर तीव्र की जानी चाहिए।

सन्दर्भ सुची :–

1. डॉ. माधवी लता दुबे "भारतीय जनजातियों का समाजशास्त्र" मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल 2024
2. डॉ. जी.के.अग्रवाल "समाजशास्त्र" साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा 2019
3. डॉ. डी.एस.बघेल, "भारतीय जनजातियों का समाजशास्त्र" कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल 2024
4. जनगणना 2011 कर रिपोर्ट।

7566979788 www.wikipedia.org.hindi

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 March 2025 Page No. : 130-135
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

मैत्रेयी पुष्पा जी के उपन्यासों में लोक सांस्कृतिक मूल्य

सुहासिनी.यू, शोध विद्यार्थिनी,
ए.यू.टी.डी.आर.हब, आन्ध्रा विश्वविद्यालय विशाखापट्टनम।

भारतीय संस्कृति :-

भारतवर्ष प्राचीन काल से एक महान देश रहा है। यह समझ में नहीं आ जाता है कि यहॉ की सांस्कृतिक विकास कितने दिनों में हुआ तथा वैदिक काल से पूर्व यहॉ की क्या दिशा थी? भूतत्वोत्ताओं ने विभिन्न खुदाइयों के आधार पर जिन तथ्यों के प्रकाशित किया उनसे स्पष्ट हो जाता है कि भारतीय संस्कृति अति प्राचीन है। वर्तमान रूप में यह संस्कृति एक विविध व्यूह दिखाई पडती है। 'संस्कृति' शब्द अपने में सभी सामाजिक संस्कारों, परंपराओं, सभ्यता के विभिन्न तत्वों तथा लौकिक ,आध्यात्मिक और धार्मिक परम्पाराओं, सभ्यता के विभिन्न तत्वों, तथा लौकिक ,आध्यात्मिक और धार्मिक मान्यताओं में को समेट हुए है।

भारत में आजादी के पहले से ही लोकगीत प्रचलित में थे। लोकगीत1850 के आसपास अंग्रेजी राज भारत में बहुत मजबूत हो चुका था। उसके खिलाफ विद्रोह करने की बात सपने में सोचना डरवाना बन गया था। वे भारत को दोनों हाथों से लूट रहे थे ।लेकिन ऐसे दौर में ही अंग्रेजों के खिलाफ हिंदी प्रदेश में 1857 में अंग्रेजों के खिलाफ आवाज उठाना मौत को गले लगाने की समान था ।अमृतलाल नागर की एक किताब है " गदर के फूल " । इस किताब में 1857 समय के बारे में एक वृद्ध व्यक्ति के हवाले से अमृतलाल नागर ने लिखा है कि आम जनता की दृष्टि में , जिसने अंग्रेजो को साथ दिया वह जीवित रहते हुए भी मरा हुआ ही मान लिया जाता था। इस किताब में अमृतलाल नगर ने प्रतिबंधित साहित्य की अवधारणा को नए परिप्रेक्ष्य में जनता के सामने रखा है ।1857 के जब सौ साल पूरे हुए तो उत्तर प्रदेश के गॉवों में घूम कर नागरजी ने 1857 लोकगीतों और लोगकथाओं को एकत्र करने की कोशिश की ।काम लोकगीत मिलते हैं ।इसका कारण यह है कि अंग्रेजों ने लोक साहित्य का भी प्रतिबंधित करने में बहुत हद तक

सफलता प्राप्त कर ली थी। 1857 के वीर सेनानी कुंवरसिंह पर सबसे ज्यादा लोकगीत मिलते हैं ।एक लोकगीत अंग्रेजों के जुल्म को दर्शाता है ।

"करलश देश पर जुलम जोर फिरँगिया।
जुलम कहानी सुनि तड़पे कुंवर सिंह।
बनके लुटेरा उतरल फौज फिरंगिया।
सुन सुन कुंवर के हिरदय लागल अगिया।"(1)

मैत्रेयी पुष्पाजी के उपनयासों में लोक सांस्कृतिक मूल्य:-

भारत में बुंदेलखंड एक सांस्कृतिक प्रदेश है। हमारी संस्कृति में लोकगीत और संगीत का अटूट संबंध है। बुन्देली लोक साहित्य की वाचिक परंपरा प्राचीन काल से समृद्ध तथा विविध रूप हैं। इन्हें यहॉ के लेकगीतों, लोक कथाओं, कहावतों और जनश्रृतियों में देखा जा सकता है। दो-ढाई सौ वर्ष पूर्व तक इनका लिखित रूप प्रायः नहीं मिलता था।

बुंदेली लोकगीतों को लिखित स्वरूप देने का श्रेय पहली बार जार्ज अब्रहम ग्रियर्सन को है। जिन्होंने इंडियन एंटीक्वेरी पत्रिका में " दि सांग आफ आल्हा मैरिज "पर काव्यांश अपनी टिप्पणियों के साथ लिखे थे। इसके बाद भारतीय लेखकों में हिन्दी क्षेत्रों के लोकगीतों का कुछ संकलन पं. रामगरीब चौबे ने 'नार्थ इंडियन नोट्स एंड क्वेरीज" नामक पत्रिका के लिए किया ,उसमें भी बुंदेली गीत नहीं दिखे।

इसका प्रथम प्रयास पं. रामनरेश त्रिपाठी ने 1929 में हुआ। उन्होंने अपनी पुस्तक "कविता कौमदी भाग-5" का प्रकाशन किया है। इसके लिए उन्होंने बहुत मेहनत करके, गाँव-गाँव जाकर लोकगीतों को संग्रह किया। उस वक्त बुंदेली लोकगीत प्रथम बार लिखित रूप में हमारे सम्मुख आ गए हैं। इसके बाद कई लेखक- लेखिकाओं ने इनके बारे में वर्णित किये थे। खासकर मैत्रेयी पुष्पा जी ने अपने उपन्यासों में बुंदेलखंड की लोक संस्कृति के व्दारा भारतीयों की मूल्यों का महत्व के बारे में समझाने की कोशिश की ।

बेतवा बहती रही:-

भारतीय संस्कृति में माता को सर्वोच्च स्थान दिया गया है, वह पूख्य है तो उस पर उगे पर्वत, वृक्ष - वनस्पतियॉ ,नदियॉ - सरोवर सभी पूज्य है, उनके के प्रति आस्था हमारा धर्म है। उनमें आस्था इसलिए हमने जीवन को सार्थक बनाती है। इसलिए हमनें पर्वतों - तथा कामदगिरि नदियाँ, यथा गंगा, यमुना, सरस्वती नर्मता, बेतवा आदि के पूज्य माना है। बुंदेलखंड के क्षेत्र में विवाह परंपरा में अपने अपने गीत हैं।मैत्रेयी पुष्पा जी के उपन्यास का नाम है कि "बेतवा बहती रही । इस उपन्यास में नायिका ऊर्वशी को विदा करने से पहले नाइन ने चावल,अक्षत,दूब, हल्दी उर्वशी के हाथ में रखकर बेतवा नदी को पूजा कराती थी।

देहरी पुजवाकर नाइन ने पानी भरा लोटा हाथ में ले लिया। उर्वशी की भाभी के हाथ में थाली थी। आगे-भागे अजीत ऊर्वशी को गोद में, उठाये लिया जा रहा था। पीछे पीछे औरतें गीत गाती हैं ।

"औरन , कौरन गुड़िया छोडी।
रोउट छोडी सहेलरी....."।(2)

ऊर्वशी के ससुरालवालों ने गॉव के देवी-देवताओं की पूजा उससे कराने के लिए तैयार होते हैं। उस वक्त गीत गाते हैं।

कैसे कै दरसन पाऊँरी
माई तेरी सँकरी दुअरिया
माई के दुआरें एक कन्या पुकारै
दैदेउ सजन -वर जाऊ री .....माई तेरी.....(3)

पति के घर में सारी औरतें ऊर्वशी को नंगा गाके सुनाने के लिए आग्रह करने लगी । ऊर्वशी हिम्मत रखकर बहुत शरम से गीत गाने लगी।

कोई लैलो मटर की दो फलियाँ
कोई लैलो मटर की दो फलियॉ (सबका स्तर)
सोने की थाली में भोजन परोसे
जिन्हें जेवेल सनम की दो सखिया
जिनके लम्बे -लम्बे केस रसीली अखियॉ
कोई लैलो मटर की दो फलियॉ.....(4)

इदन्नमम उपन्यास में नायिका मंदाकिनी की शादी मकरंद के साथ तय हो जाती है। उस वक्त महिलाएँ गीत गाने लगी।

“ छोटी सी बनरी के लम्बे लम्बे केस
सो खेले बबुल दरबार भेल जू।
कै तुम बेटी मेरी साँचे में ढो़री,
कै गढी सकल सुनार भले जू
चार कुहार जब खेपल रे पालकी
बिटिया ने रूदन मचाये मोरे लाल "।(5)

वर-पक्ष वाले भी गीत गाते हैं।

"मन्दाकिनी की पक्यात है।
मकरन्द की सगाई है आज।
रमतूला बजा, दूऊँ SS, टूउँ SS

बुलउआ दिए गए।
सिया बारी बनरी रघुनन्दन बनरे,
को को बरातै जायँ मेरे लाल।"(6)

इदन्नगम उपन्यास में "सुआटा मूर्ति के सामने दशहरे के दिनों में गीत गाते हैं।
तिन के फूल निनही के दाने,
चन्दा उगे बडे भुनसारे।।
सारे वारे फूल सिराए,
काठ कठीले काठे से,
पाॅंयों भइया पंडा से ।
छटई बहन ईंगुर सी।(7)
इदन्नमम उपन्यास में कार्तिक नहान त्यौहार के समय गीत गाते हैं-
कन्हैया माँगता दान दही कौ
नहात मैं चीर हरें सब ही कौन
गोपिका क्यों इतराती रे.....
सखी जवाब देती है,मन्दा गाती है,
कुसुमा गाती है
चोर तुम नन्दा बाबा के लाला
कंस से जाय कहें ब्रज बाला
करो तुम क्यों मान मानी रे...(8)

"झूलानट" उपन्यास की नायिका शीलो के पति सुमेर छोड़कर शहर में अन्य स्त्री के साथ रहने लगा।वह अपने पति को वापस लाने के लिए कई पूजा-पाठ करती थी।। लेकिन वह वापस लौट नहीं आया था। व्याकुलता से शीलो रधिया के ब्याह में गीत गा चुकी थी।
" दिल है बेकरार तुम्हारे बिना
राजा देखो हमारी ऑंखियाँ ,
हुई रो रो के लाल तुम्हारे बिना
राजा देखो हमारा कलेजा
हुआ जल जल के राख तुम्हारे बिना
राजा देखो हमारी जवानी ,
कोई थामें न हाथ तुम्हारे बिना "।(9)

बुंदेलखंड क्षेत्र में कुंवारी लडकियॉ मामुलिया खेलती हैं। इस खेल में लडकियाँ आँगन में काँटों को फूल गूँथती हैं।"अगनपाखी "उपन्याय में लडकियॉ मामूलिया खेलती हैं। इस उपन्यास में नायिका भुवन मोहिनी शादीशुदा होने पर भी मामूलिया खेलती है ।गीत गाती है ।

" ल्याओ ल्याओ रतन झडे सजाओ मेरी मामूलिया
ल्याओ ल्याओ गेंद हजारी के फूल, सजाओ मेरी मामूलिया ।
कहाँ लगादऊँ मामूलिया?
मामुलिया के आए लिबउआ छिटक चली मोरी मामुलिया
जा जा बाबुलालजी के बाग उतई गई मेरी मामुलिया
अम्मा रानी देखन आई, बाग बना ल्याई मामुलिया.....(10)

"त्रिया -हठ "उपन्यास में हिंदू लड़का एक मुस्लिम लहकी की प्रेमकथा को चित्रित की है। मैं गौर से देखता हूँ। वह मुस्करा देता है।वह गीत गाता है।

" स्टेशन पर बैठी धोरी मुसलमान की
बाबूजी, मेरी टिकट काट दो पाकिस्तान की
एक लाखा, एक चूडा घर से ले आउँगा
मैं बनिये का लाल तेरी जान बचाऊंगा
पर बामन की न बनिये की, लड़की शेख पठान की
बाबूजी,मेरी टिकट काट दो पाकिस्तान की...."(11)

"अल्मा कबूतरी" उपन्यास में लोकगीत गाये जाते हैं।ये गीत किसी भी जाति की संस्कृति की पहचान होते हैं। ये सुख -दुख के समय गाये जाते हैं। सुख में संतोष प्रकट करने के लिए , दुःख में मन का बोझ दूर करने के लिए गाये जाते हैं। इस उपन्यास में जंगलिया कबूतर जाति की पुलिस मुठभेड में हत्या हो जाती है। कबीले के लोग उनके रीति-रिवाज के अनुसार मृतक की आत्मा को शांति प्रदान करने के लिए वीर देवता की पूजा करते हैं। इस अवसर पर महिलाएँ गीत गाती है

" आज तो जाजो रे पन फुटो मत जातोर
घोडा घोडा घूमती मान आवती फुलवादी केवडा
आवती, आवती हमीर दे, वीर दे..... "(12)

वीर देवता का आह्वान इस तरह गीतों के द्वारा करके उनके कष्टों को दूर करने के लिए वर माँगते हैं।

उपसंहार:

आधुनिक काल में लोकगीतों को हेय समझा रहे थे। इन्की बड़ी उपेक्षा की जाती थी । प्राचीन काल में भी लोकगीत गाये जाते थे।1857 स्वतंत्र आंदोलन में भी ये लोकगीत गाने लगे।

महाकवि कालिदास, विद्यापति कवि ने अपने काव्य रचना में लोकगीतों को स्थान दिया गया है। लोकगीत हमारी संस्कृति की पहचान है। इनके द्वारा मनुष्य में सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति आस्था, भक्ति,और श्रद्धा ऐसे गुण जागृत होते हैं।पूरे विश्व में भी भारतीय संस्कृति महान है। त्रेतायुग में भगवान रामचन्द्र जी ने भी यहाँ के महान संस्कृति के कारण भारत को स्वर्ग से श्रेष्ठतम माना था।

नेयं स्वर्णपुरी लंका सोचते मम लक्ष्मण:

जननी-जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।(13) (वाल्मीकि रामायण)

संदर्भ सूची :-

1.कुम कुम शर्मा,जब्त सुधा साहित्य , पृष्ठ संख्या- 63

2.मैत्रेयी पुष्पा जी, बेतवा बहती रही, पृष्ठ संख्या -42

3.मैत्रेयी पुष्पा जी, बेतवा बहती रही, पृष्ठ संख्या -48

4.मैत्रेयी पुष्पा जी, बेतवा बहती रही, पृष्ठ संख्या -49

5.मैत्रेयी पुष्पा जी, इदन्नमम उपन्यास,पृष्ठ संख्या -122

6..मैत्रेयी पुष्पा जी, इदन्नमम उपन्यास, पृष्ठ संख्या -122

7.मैत्रेयी पुष्पा जी, इदन्नमम उपन्यास,पृष्ठ संख्या -131

8.मैत्रेयी पुष्पा जी, इदन्नमम उपन्यास,पृष्ठ संख्या -134

9.मैत्रेयी पुष्पा जी, झूलानट उपन्यास

10.मैत्रेयी पुष्पा जी, अगनपाखी उपन्यास

11.मैत्रेयी पुष्पा जी त्रिया -हठ उपन्यास पृष्ठ संख्या -9

12.मैत्रेयी पुष्पा जी,अल्मा कबूतरी उपन्यास

13. रामधारी सिंह दिनकर, संस्कृति के चार अध्याय, पृष्ठ संख्या -68

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 March 2025 Page No. : 136-140
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

पर्यावरण संरक्षण पर प्राचीन भारतीय दृष्टिकोण

नीलम पाटीदार, सहायक प्राध्यापक इतिहास,
मां नर्मदा शासकीय महाविद्यालय, सोण्डवा, जिला-अलीराजपुर (म.प्र.)

शोध सार-

पर्यावरण अर्थात् ऐसा आवरण जो हमें चारों ओर से घेरे हुए है। पर्यावरण संरक्षण का अर्थ है पर्यावरण की गुणवत्ता में सुधार करना, उसकी रक्षा करना तथा उसे बनाए रखना। वर्तमान समय में पर्यावरण संरक्षण का महत्व बहुत बढ़ गया है। यदि हम प्राचीन भारत की जीवनशैली देखे तो पाएंगे कि हमारे पूर्वज पर्यावरण के प्रति बहुत संवेदनशील थे। भारतीय धर्म, दर्शन और संस्कृति में पर्यावरण को बहुत महत्व दिया गया है। वेद, उपनिषद, महाभारत, रामायण, भगवद्गीता और पुराण जैसे प्राचीन भारतीय ग्रंथों में पर्यावरण के संरक्षण, पारिस्थितिकी संतुलन तथा मौसम चक्रों से सम्बंधित कई सन्देश दिए हुए हैं।

शब्द संकेत- पर्यावरण संरक्षण, प्राचीन भारत, संस्कृति, दृष्टिकोण, जीवन शैली।

पर्यावरण का तात्पर्य-

पर्यावरण वह समूह है जिसमें पृथ्वी पर पाए जाने वाले भूमि, जल, वायु, पेड़-पौधे और जीव-जंतु शामिल होते है। इसके अंतर्गत मानव जीवन को प्रभावित करने वाले सभी जीवित और निर्जीव तत्व आते है। प्राकृतिक और मानव निर्मित परिवेश या वातावरण को पर्यावरण कहा जाता है। यजुर्वेद में पर्यावरण को परिभाषित किया गया है- 'परितः आवृगोतित पर्यावरणम'. इसका अर्थ है जो चारों ओर से आवृत्त करता है वही पर्यावरण है।

पर्यावरण संरक्षण पर प्राचीन भारतीय दृष्टिकोण-

प्राचीन भारत में लोग पर्यावरण संरक्षण को लेकर बहुत जागरूक थे। भूमि, जल, पेड़-पौधे, वन और वन्यजीव संरक्षण का विशेष महत्व था। उन्होंने प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित कर लिया था तथा उसी के अनुसार अपनी जीवनशैली विकसित कर ली थी। वेद तथा उपनिषद् में पृथ्वी को माता कहा गया है। यह निर्देश दिए गए है कि पृथ्वी, आकाश तथा जल के साथ अनावश्यक छेड़छाड़ नहीं की जाए। आधुनिक युग में पर्यावरण संरक्षण (Environment Conservation) तथा सतत विकास (Sustainable Development) पर वैश्विक सम्मेलन

आयोजित किये जाते है, भारत में प्राचीनकाल से ही हमें वेदों तथा उपनिषदों में इसका उल्लेख मिलता है।

अथर्ववेद में जल को अमृत कहा गया है। ऋग्वेद में जल को प्राणियों का प्राण माना गया है। श्रीमद्भागवतगीता में भी श्रीकृष्ण ने जल का महत्व बताया है। पद्मपुराण में कहा गया है कि जो कोई जलस्रोत को दूषित करेगा वह नरक का भागी होगा। भारत में नदियों को देवी का दर्जा दिया गया है तथा उन्हें माँ कहकर संबोधित किया जाता है, जैसे माँ गंगा, माँ नर्मदा। वरुण को जल का देवता माना जाता था। जलदेवी तथा जलदेवता के रूप में जलस्रोतों की पूजा की जाती रही है।

प्राचीनकाल से ही भारत में यज्ञों का बहुत महत्व रहा है। ऐसा माना जाता है कि यज्ञ वायुमंडल के प्रदुषण को दूर कर वायु को शुद्ध करते है तथा यज्ञ करने से देवता भी प्रसन्न होते है और वर्षा होती है। भारतीय संस्कृति में नीम, पीपल, बरगद, शमी, आम, तुलसी तथा अन्य कई पेड़-पौधों, जड़ी-बूटियों को पवित्र माना जाता है, और इनके महत्व के चलते इनकी पूजा की जाती रही और इस तरह संरक्षण भी किया गया। हमारी सभ्यता में पेड़-पौधों को सजीव माना गया था जो कि आधुनिक वैज्ञानिक खोजों से सही साबित हुआ है। ऋग्वेद का एक श्लोक कहता है, हजारों और सैकड़ों वर्षों तक यदि आप जीवन के फल और सुख का आनंद लेना चाहते हैं तो वृक्षारोपण करें। वराह पुराण में कहा गया है, जो व्यक्ति एक पीपल, एक नीम, एक बरगद, दस फूल वाले पौधे या लता, दो अनार, दो संतरे और पांच आम लगाता है, वह नर्क में नहीं जाता है। वेद इस बात पर जोर देते हैं कि पेड़-पौधे पीढ़ियों के लिए खजाने हैं और इनकी रक्षा करनी चाहिए। रामायण, महाभारत और भगवद्गीता में भी पर्यावरण संरक्षण को लेकर जागरूक किया गया है। हरे वृक्षों को काटना वर्जित था और ऐसे कार्यों के लिए दण्ड दिया जाता था। विभिन्न पेड़-पौधें और फल धार्मिक अनुष्ठानों में विशेष महत्व रखते है। नारियल पूजा के दौरान भगवान को चढ़ाए जाते हैं। आम के पत्तों का उपयोग पूजा और शुभ कार्यक्रमों के दौरान तोरण के रूप में किया जाता है। विभिन्न फूलों और पत्तों का पूजा के दौरान उपयोग किया जाता है। कमल का फूल पवित्र माना जाता है। तुलसी का पौधा औषधीय गुणों के साथ धार्मिक अनुष्ठान के लिए महत्वपूर्ण है। नीम, पीपल तथा वट वृक्ष की त्रिवेणी के रूप में पूजा की जाती है। पीपल के वृक्ष में भगवान विष्णु का वास माना जाता है। रामायण में रावण पर जब विपदा आती है तो वह कहता है, 'मैंने वैशाख के महीने में एक भी पीपल का पेड़ नहीं काटा, फिर मुझ पर यह विपत्ति क्यों आयी है?' धार्मिक क्रिया-कलापों के माध्यम से वृक्षारोपण और उनके संरक्षण को पवित्र बनाया गया था।

हमारी संस्कृति में पर्वतों तथा वन्य जीव प्रजातियों को महत्व दिया गया है तथा उन्हें देवी-देवताओं के वाहन के रूप में प्रस्तुत किया गया है। श्रीमद्भागवद्गीता में श्रीकृष्ण कहते है, पहाड़ों में हिमालय, वृक्षों में पीपल, हाथियों में ऐरावत, गायों में कामधेनु, नागों में शेषनाग, पशुओं में

मृगराजसिंह, पक्षियों में गरुड़, मछलियों में मगर, पवित्र करने वालों में वायु एवं नदियों में भागीरथी गंगा स्वयं है। समस्त प्राणियों के संरक्षण का सन्देश देते हुए श्रीकृष्ण कहते है,

'मैं सभी प्राणियों के हृदय में स्वयं आसीन हूँ। मैं ही समस्त प्राणियों का आदि, मध्य और अन्त हूँ।' सभी प्राणियों के साथ एक जैसा व्यवहार किया जाना चाहिए। श्रीकृष्ण दुनिया की तुलना असीमित शाखाओं वाले एक बरगद के पेड़ से करते हैं जिसमें जानवरों, मनुष्यों और देवताओं की सभी प्रजातियाँ रहती हैं।

प्राचीन ग्रंथों में जीव हत्या की निंदा की गयी। महावीर स्वामी तथा गौतम बुद्ध ने अपने उपदेशों में वृक्ष संरक्षण की बात भी कही और इनकी शिक्षाओं के कारण अहिंसा के सिद्धांत को बल मिला। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में राजनीति के साथ पर्यावरण और इसके संरक्षण का भी उल्लेख है। इसमें सार्वजनिक स्वच्छता, पर्यावरण, वन और वन्य जीवन के संरक्षण का वर्णन किया गया है। राजा और प्रशासन को पर्यावरण संरक्षण के लिए निर्देशित किया गया है, तथा जल मार्ग को बाधित करने या मोड़ने के लिए, तटबंधों को नुकसान पहुंचाने आदि के लिए जुर्माना लगाने का प्रावधान किया गया है। अर्थशास्त्र में, कौटिल्य ने वन और पशु अभयारण्य विकसित करने की आवश्यकता का सुझाव दिया हैं। चन्द्रगुप्त मौर्य तथा अशोक ने पर्यावरण संरक्षण के कार्य किये तथा कुछ वनों को संरक्षित घोषित किया। अशोक के 5वें स्तम्भ लेख में उल्लेख है कि उसने अनेक वन्य प्राणियों को मारने पर रोक लगा दी। 7वें स्तम्भ लेख में उसके द्वारा वृक्षारोपण किये जाने का उल्लेख है। हमारी संस्कृति में यह माना जाता रहा है कि प्रकृति और पर्यावरण का निर्माण पांच तत्वों- आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी से हुआ है, और हमारा मानव शरीर इन्हीं से बना हैं, इसलिए प्रकृति और पर्यावरण हमारे अस्तित्व का एक अविभाज्य हिस्सा है. प्राचीन भारतीय ग्रंथों का पूरा जोर इस बात पर रहा है कि मनुष्य अपने आप को प्राकृतिक परिवेश से अलग नहीं करें और धरती का मनुष्य से ऐसा रिश्ता रहे जो मां का अपने बच्चे से होता है।

वर्तमान समय में पर्यावरण पर प्राचीन भारतीय दृष्टिकोण की प्रासंगिकता-

विकास की दिशा में आगे बढ़ते समय हमनें प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन किया जिससे असंतुलन पैदा हुआ और पर्यावरण पर इसका हानिकारक प्रभाव पड़ा। पृथ्वी पर जनसंख्या की निरंतर वृद्धि औद्योगीकरण एवं शहरीकरण की तीव्र गति से जहाँ प्रकृति के हरे-भरे क्षेत्रों को समाप्त किया जा रहा है वहीं दूसरी और प्रकृति के अत्यधिक दोहन के कारण न केवल मानव जाति बल्कि अन्य सभी प्राणियों के जीवन पर संकट आ गया है। पर्यावरण प्रदुषण के कई दुष्प्रभाव हैं, जो अत्यंत घातक हैं, जैसे ग्लोबल वार्मिंग, ओजोन परत की हानि, भूक्षरण, जल, वायु तथा परिवेश का दूषित होना एवं वनस्पतियों का नष्ट होना, अनेक नये रोगों का फैलना आदि। बड़े कारखानों से विषैला अपशिष्ट बाहर निकलने से तथा प्लास्टिक के कचरे से प्रदूषण की मात्रा बढ़ रही है। कारखानों का गंदा पानी, घरेलू गंदा पानी, नालियों में प्रवाहित मल, सीवर लाइन का गंदा

पानी नदियों और समुद्र में गिरने से जल को विषाक्त कर देते हैं। उसी प्रदूषित पानी को सिंचाई के काम में लेने से उपजाऊ भूमि भी विषैली हो जाती है। उसमें उगने वाली फसल व सब्जियों में पौष्टिक तत्व नष्ट हो जाते है और इनको खाने से खतरनाक रसायन मानव शरीर में पहुंच कर बीमारियाँ पैदा करते हैं। जल प्रदूषण के साथ ही वायु प्रदूषण भी एक बड़ी चुनौती है। बड़े-बड़े कल-कारखानों की चिमनियों से लगातार उठने वाला धुआं, रेल व नाना प्रकार के डीजल व पेट्रोल से चलने वाले वाहनों के पाइपों से और इंजनों से निकलने वाली गैसें तथा धुआं, ए.सी., इन्वर्टर, जेनरेटर आदि से कार्बन डाइऑक्साइड, नाइट्रोजन, सल्फ्यूरिक एसिड, नाइट्रिक एसिड प्रति क्षण वायुमंडल में घुलते रहते हैं।

महानगरों में ही नहीं बल्कि गाँवों तक में लोग ध्वनि विस्तारक यंत्रों का प्रयोग करने लगे हैं। सभी कार्यक्रमों, उत्सवों आदि में में डी.जे. का प्रयोग होने लगा है। जिससे ध्वनि प्रदूषण बढ़ा है। औद्योगिक संस्थानों की मशीनों के शोर ने भी ध्वनि प्रदूषण को जन्म दिया है। इससे मनुष्य की श्रवण-शक्ति का ह्रास होता है। ध्वनि प्रदूषण का मस्तिष्क पर भी घातक प्रभाव पड़ता है। ऋतुचक्र का परिवर्तन, कार्बन डाईऑक्साइड की मात्रा का बढ़ना ग्लेशियरों को पिघला रहा है। सुनामी, बाढ़, सूखा, अतिवृष्टि या अनावृष्टि जैसे दुष्परिणाम सामने आ रहे हैं, जिन्हें देखते हुए अपने बेहतर कल के लिए '5 जून' को समस्त विश्व में 'पर्यावरण दिवस' के रूप में मनाया जा रहा है। अतः आज के दौर में प्राचीन भारत के प्रकृति के साथ संतुलन करके चलने के संस्कार का महत्व तथा प्रासंगिकता कहीं अधिक बढ़ गयी है। पर्यावरण का संरक्षण करने के लिए प्राचीन भारत में पेड़-पौधों, नदी-पर्वत, ग्रह-नक्षत्र, अग्नि-वायु सहित प्रकृति के विभिन्न रूपों के साथ मानवीय रिश्ते जोड़े गए ताकि मनुष्य को प्रकृति को गंभीर क्षति पहुंचाने से रोका जा सके। भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति में प्रकृति से अनुराग केवल उपयोगितावादी अथवा उपभोगवादी दृष्टि से नहीं वरन पूजा, श्रद्धा और आदर की भावना से करना सिखाया गया है। प्राकृतिक सम्पदा का केवल उतना दोहन करें जितना जरूरी है। यदि भारत के साथ साथ अन्य देश भी उक्त वर्णित भारतीय परम्पराओं का सही अर्थों में पालन करने लगते हैं तो शायद इस पृथ्वी से पर्यावरण सम्बंधी समस्याओं को धीरे धीरे समाप्त किया जा सकता है।

निष्कर्ष-

इस प्रकार स्पष्ट है कि वेदों, उपनिषदों, पुराणों, सूत्रों और अन्य ग्रंथों में प्रकृति की पूजा के कई संदर्भ शामिल किये गए तथा नदियाँ, पहाड़, पेड़, पशु-पक्षी और पृथ्वी के सम्मान में कई मन्त्रों की रचना की गयी हैं। इनके माध्यम से पर्यावरण संरक्षण को लेकर लोगों को जागरूक किया गया तथा पशु-पक्षियों को हिंसा से बचाने का प्रयास किया गया। लोगों को प्रकृति का शोषण करने से मना किया गया तथा उन्हें प्रकृति के साथ सद्भाव में रहना सिखाया गया, जिससे की मनुष्य तथा प्रकृति का रिश्ता अनवरत चलता रहें।

सन्दर्भ सूची :-

1. खींची डॉ. श्याम एस., शहैरिया डॉ. अरुण कुमार (2020), पर्यावरण संरक्षण: साहित्य, शोध एवं समाधान, Ambica Book Agency
2. शर्मा योगेन्द्र (2020),पर्यावरण संरक्षण, लोकभारती प्रकाशन
3. https://web.archive.org/web/20190720225301/http://hindi.webdunia.com/environment-day-special/indian-traditions-and-environment
4. https://www.prabhasakshi.com/currentaffairs/environment-has-been-given-special-importance-in-indian-culture
5. https://patheykan.com
6. https://hi.wikipedia.org/wiki

patidar.neelam@gmail.com **mob. No. 9644143281**

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 March 2025 Page No. : 141-146
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

श्रीमद्भागवत पुराण में अध्यात्म पक्ष

डा. पशुपतिनाथ मिश्र, प्रभारी प्राचार्य,
हरियाणा संस्कृत विद्यापीठ, बघौला।

श्रीमद्भागवत मानव मात्र के लिए स्वीकार्य, पठनीय तथा मननीय ग्रन्थ है। इसके श्रवण एवं पठन के साथ मनन परम् आवश्यक है। मनन के बिना इसकी पूर्ण सार्थकता नहीं है। इसलिए कहा गया है

श्रवणं तु कृतं सर्वैः न तथा मननं कृतम् । श्रीमद् भागवत माहात्म्य -5-7-1

अर्थात् गोकर्ण के द्वारा भागवत की कथा सुनी तो सबने पर मनन धुन्धकारी ने किया । इसलिए फल प्राप्ति में भेद हो गया।

परमहंसों की संहिताः- भागवत वस्तुतः परंहंस सन्यासियों की संहिता है। इसलिए कहा गया है " विद्यावतां भागवते परीक्षा "। अर्थात् विद्वानों की परीक्षा भागवत में होती है। इस लिए कथा की दृष्टि से भागवत सरलतम है , तो चिन्तन की दृष्टि से दुरूह तथा दुर्बोध है। इसलिए स्वयं भगवान उद्घोषणा करते हैं कि --

अहं वेद्मि शुको वेत्ति परीक्षित् वेत्ति वा न वा ।
श्रीधरः सकलं वेत्ति श्रीनृसिंहप्रसादतः।।

"मैं जानता हूँ। शुकदेव जानते हैं। परीक्षित् जानते या नहीं जानते स्पष्ट नहीं है । पर नृसिंह भगवान की कृपा से भागवत के टीकाकार श्रीधर पूर्णरूप से जानते है।

इस प्रकार भागवत के बारे में कलम चलाना इतना सरल नहीं है। यह श्री वेदव्यास द्वारा समाधि की अवस्था में रचित महापुराण है।

"समाधि भाषा व्यासस्य " अर्थात् भागवत श्री वेदव्यास की समाधि की भाषा है।

भक्तियोगेन मनसि सम्यक् प्रणिहितेऽमले।
अपश्यत्पुरुषं पूर्वं मायां च तदपाश्रयम् ॥ श्रीमद् भा0 1-7-4

जब वेदव्यासजी ने भक्तियोग से मनको एकाग्र तथा निर्मल किया तब उन्होनें परपुरुष भगवान् तथा उनके आश्रित माया का प्रत्यक्ष दर्शन किया। तब उस समाधि की अवस्था में ही भागवत की रचना की। इसलिये भागवत परमहंसों के लिए समाधिस्थ भाषा है।

ऐसे असामान्य संहिता पर कुछ लिखना वह भी मुझे जैसे मन्दमति के लिए असम्भव सा है। फिर भी अपनी टूटी फूटी बोली में मुख्य तीन बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए कुछ लिखने का प्रयास कर रहा हूँ। वे तीन बिन्दु हैं -

1 भागवत में अध्यात्म पक्ष।

2. भागवत में व्यवहारपक्ष

3. भागवत में विज्ञान पक्ष

इन तीनों पक्षों को श्रीमद्भागवत के उद्धरणों से स्पष्ट करना ही मेरा उद्देश्य रहेगा। कमियाँ मेरी रहेगी, वैशिष्ट्य कुछ हों तो भागवत की है।

1. श्रीमद्भागवत में अध्यात्म पक्षः- भागवत का मुख्य प्रतिपाद्य विषय यही है।यहाँ एक ऐसे मनुष्य की समस्या का उल्लेख है जिसके जीवनके केवल सात दिन बचे हैं। प्रश्न है, उसे क्या करना चाहिए? हम आप में तथा परीक्षित् में यहीं अन्तर है कि उन्हें अपनी आयु का पता है। आपको हमें नहीं है। समाधान सबका एक जैसा है इसलिए भागवत केवल परीक्षित के लिए ही नहीं अपितु समग्र मानवमात्र के लिए एक पथ- प्रदर्शक है। दूसरी भाषा में कहें तो भागवत हमें सही अर्थ में जीने की कला तथा मरने की कला का ज्ञान करवाती है। जिसे जीना और मरना आ गया वही सफल है, सिद्ध है, तथा जीवन्मुक्त है। भागवत की भाषा में यही निर्भयावस्था है।

भागवतका अध्यात्म चिंतन दुराग्रही नहीं हैं। किसी मत सम्प्रदाय या सिद्धांत की प्रति प्रतिबद्ध भी नहीं है। इसमें उदार और तर्कसम्मत चिंतन है। सामान्यतया वेदों के तीन काण्डों की चर्चा होती है। कर्मकाण्ड , ज्ञानकाण्ड तथा उपासना काण्ड। इन तीनो में कौन किसका अधिकारी है उसका उल्लेख श्रीकृष्ण एकादशस्कन्ध में करते हैं।

योगास्त्रयो मया प्रोक्ता नृणांश्रेयो विधित्सया । श्रीमद् भा0 11-20-6
ज्ञानं कर्म च भक्तिश्च नोपायोऽन्योऽस्ति कुत्रचित् ।
निर्विण्णानां ज्ञानयोगो न्यासिकामिह कर्मसु।
तेष्वनिर्विण्णचित्तानां कर्मयोगस्तु कामिनाम् ।। श्रीमद् भा011-20-7
न निर्विण्णो नातिसक्तो भक्तियोगोऽस्य सिद्धिदः ॥ श्रीमद् भा0 11-20-8

अर्थात् मनुष्य के कल्याण के लिए मैंने ज्ञान कर्म तथा भक्तियोग बताया है। दूसरा कोई उपाय नहीं है। इनमें से कर्मों से विरक्त सन्यासियों के लिए ज्ञान योग है इहलोक तथा परलोक के सुखों की कामना करने वाले वैराग्य हीन लोगों के लिए कर्मयोग है। जो व्यक्ति तो पूर्ण विरक्त है न अति आसक्त है ऐसे मध्यम श्रेणी के व्यक्ति के लिए भक्तियोग ही उपयुक्त है। यहाँ भक्तियोग ही उपासना काण्ड है।

इसलिए भागवत के माहात्म्य में बताया है कि कलियुग में भक्ति का अधिक महत्त्व है। भक्ति के साथ ज्ञान और वैराग्य तो स्वतः उपलब्ध हो जाते हैं। अर्थात् ये तीनों एक दूसरे के पूरक हैं बाधक नहीं। कपिल मुनि माता देवहूति से कहते हैं-

वासुदेवे भगवति भक्तियोगः प्रयोजितः।

जनयत्याशु वैराग्यं ज्ञान यद्ब्रह्मदर्शनम् ।। श्रीमद् भा0 3-32-23

भगवान के प्रति की गई भक्ति से शीघ्र वैराग्य उत्पन्न होता है। वैराग्य से ज्ञान की प्राप्ति होती है। वही ब्रह्मदर्शन है।

दो प्रकार की भक्तिः- सकाम और निष्काम नाम से भक्ति को दो भागो में बांटा हैं। किसी कामना से अपने इष्ट की भक्ति की जाये तो वह सकाम भक्ति है। यह सबसे निकृष्ट भक्ति है। निष्काम भक्ति सबसे उत्कृष्ट है। ऐसे भक्त भगवद् भक्ति के अतिरिक्त किसी ऐश्वर्य या मुक्ति को भी नहीं चाहते। भक्त-प्रवर वृत्रासुर कहते हैं -

न नाक पृष्ठं न च पारमेष्ठ्यं न सार्वभौमं न रसाधिपत्यम् ।

योग सिद्धिरपुनर्भवं वा समंजस त्वा विरहय्य काङ्क्षे। श्रीमद् भा0 6-11-25

अर्थात हे भगवान आपको छोडकर मैं स्वर्गलोक, ब्रह्मलोक, पृथ्वी का सम्पूर्ण साम्राज्य, वरुण लोक का साम्राज्य, योग, अष्ट सिद्धियाँ, यहाँ तक की मोक्ष भी नहीं चाहता हूँ।

भगवान् कपिल अपनी माता से कहते हैं -

अहैतुक्यप्रतिहता या भक्ति पुरूषोत्तमे।

सालोक्यसार्ष्टिसामीप्य सरूप्यैकत्वमप्युतः

दीयमानं न गृह्णन्ति विना मत्सेवनं जनाः ।। - श्रीमद् भा03-29-13

निष्काम तथा अविचल जो भक्त होते हैं वो, सालोक्य, तुल्यऐश्वर्य, सामीप्य, सारूप्य, ऐकत्व नाम की मुक्ति दिये जाने पर भी भगवान की सेवा के अतिरिक्त (पांच प्रकार की मुक्ति भी)नहीं लेते।

नृसिंह भगवान् के द्वारा प्रह्लाद को वर मांगने के लिए आग्रह करने पर प्रह्लादजी कहते हैं।

यस्त आशिष आशास्ते न स भृत्य स वै वणिक् ।

नान्यथेहावयोरर्थो राजसेवकयोरिव ।। श्रीमद् भा0 7-10-4

अर्थात् जो आपसे (भगवान्से) वरदान की आशा रखता है वह व्यापारी है सेवक नहीं। अर्थात भक्ति के बदले अपनी कामना पूर्ण करना व्यापार के तुल्य है। भक्त और भगवान् का सम्बन्ध राजा और सेवक की तरह परस्पर सापेक्ष नहीं है। राजा को सेवक की आवश्यकता है तो सेवक को वेतन की आवश्यकता है। यहाँ दोनों सापेक्ष हैं। परन्तु भगवान् को भक्त की सेवा की आवश्यकता नहीं है क्योंकि वे निरपेक्ष हैं। वहीं सच्चे भक्त की कोई कामना बचती ही नहीं। श्री कृष्ण गोपियों से कहते हैः-

न मय्यावेशितधियां कामः कामाय कल्पते।

भर्जिता क्वथित्ता धाना प्रायो बीजाय नेष्यते।। श्रीमद् भा0 10-22-26

जिस प्रकार भूने हुए या उबाले हुए धान बीज के काम नहीं आते उसी प्रकार जिसने अपनी बुद्धि को भगवान् में लगा दिया है उनमें कामनाओं का अंकुरण ही नहीं होता।

इसलिए भक्तिमार्ग कर्ममार्ग की तरह कठोर नियमों में जकड़ा हुआ नहीं है। इस मार्ग में तो किरात, हुण, खरा, पुलिन्द आदि निम्नसे निम्नकोटि के जीव भी भक्ति करने के अधिकारी हैं। देखेः-

किरातहूणान्ध्रपुलिन्दपुल्कसा ,आभीरकङ्कायवनाः श्वशादयः।

येऽन्ये च पापा यदुपाश्रयाश्रयाः शुद्धयन्ति तस्मै प्रभविष्णवे नमः।। श्रीमद् भा0 2-4-18

इसीलिए भक्तशिरोमणि हनुमान् कहते हैं-

न जन्म नूनं महतो न सौभगं, न वाङ् न बुद्धिर्नाकृतिस्तोषहेतुः।

तैर्यद्विसृष्टानपि नो वनौकसश्चकार सख्ये बत लक्ष्मणाग्रजः । श्रीमद् भा0 5-19-7

भगवान् को प्रसन्न करने के लिए ऊँचे कुल में जन्मलेना, भाग्यशाली होना, अच्छी वाणी अच्छी बुद्धि, अच्छा चेहरा आदि कारण नहीं है। इन सारे गुणों से रहित वनवासी हम वानर भालुओं को श्रीराम ने अपना मित्र बनाया।

<u>कर्मफल समर्पणः-</u> श्रीमद्भागवत में कर्मकाण्ड की चर्चा है तो सही परन्तु फल की इच्छा से किये गये कर्म व्यर्थ है। बंधन के कारण हैं। यही कारण है कि कर्मकांडी प्राचीनवर्ही राजा को पुरञ्जनोपाख्यान से समझाया गया । वस्तुतः निष्काम कर्म या भगवदर्पण किया हुआ कर्म ही जीव का उद्धार कर सकता है। कपिल मुनि कहते है -

यो मां सर्वेषु भूतेषु सन्तमात्मानमीश्वरम्।

हित्वार्चां भजते मौढ्यादभस्मन्येवजुहोति सः ।। श्रीमद् भा0 3-29-22

समस्त प्राणियों के अन्दर चेतन रूप से विद्यमान आत्मास्वरूप मुझे छोडकर केवल मूर्ति आदि की ही जो पूजा करता है, यह भस्म में हवन करता है। अर्थात् ऐसी पूजा व्यर्थ है। सकाम कर्म करने वालोंको

"धूम्रधियः" धूमिल बुद्धिवाले कहा गया है।

<u>साकार निराकार का सामञ्जस्य -</u> भागवत में भगवान के साकार या निराकार रूप पर कोई मतभेद नहीं है। लक्ष्य है चञ्चल मन को अन्तर्मुखी करना एकाग्र करना या स्थिर करना। इसके लिए इष्ट के सुन्दर साकार विग्रह का चिन्तन करते हुए मन को एक सुन्दर आकृति में बाँधना ही साधन है । चञ्चल मन आकार का सहारा लिए बिना एकाग्र या स्थिर नहीं हो सकता। इसलिए पहले मन को इष्ट के आकर्षक भावमयी मूर्ति में स्थिर करें। फिर प्रभु के एक एक अङ्ग पर केन्द्रित कर मन को स्थिर करे। मन के स्थिर होने पर जीव आनन्द विभोर हो जाता है। कपिल कहते हैं -

एवं हरौ भगवति प्रतिलब्धभावो ,भक्त्या द्रवद्धृदय उत्पुलकः प्रमोदात्।

औत्कण्ठ्यवाष्पकलया मुहुरर्द्यमानस्तच्चापि चित्तवडिशं शनकैर्वियुङ्क्ते।। श्रीमद् भा0 3-28-34

इस प्रकार अपने इष्ट के प्रति भाव बढ़ने से साधक का हृदय द्रवित हो जाता है। रोमाञ्चित होता है। उत्कण्डाजन्य प्रेमाश्रुओं से साधक भीग जाता है इस अवस्था में पहुंचने के बाद चित्त उस वदिश (मछली को पकड़ने का काँटा जिसमें मांस का टुकड़ा लगा होता है) स्वरूप भगवदाकृति से स्वयं छूट जाता है। जब मन आकृति के आश्रय से मुक्त हो जाता है विषय हीन हो जाता है। तब घी समाप्त होने पर जैसे दीपक बुझ जाता है उसी प्रकार मन भी मुक्त हो जाता है।

मुक्ताश्रयं यर्हि निर्विषयं विरक्तं निर्वाणमृच्छति मनः सहसा यथार्चिः । श्रीमद् भा0 3-28-35

इस प्रकार इष्ट के साकार विग्रह का आश्रय लेते लेते मन स्वतः मुक्ताश्रय होता है। यह साकार से निराकार की और एक सहज यात्रा है। कुछ ऐसे ज्ञानी भी होते हैं जो निराकार नि}ZU} अ}Sत ब्रह्म में लीन थे पर राम कृष्ण आदि त्रिभूवन मोहक चरित्र पर वरवस खींचे चले आए । उद्धवजी श्री शुकदेव जी इस बात के उदाहरण है । इस लिए-साकार निराकार की लड़ाई अज्ञानी के लिए है। भक्तिहीन व्यक्तियों के लिए है। ज्ञानी और अच्छे भक्तमें कोई मतभेद नहीं है। यही बात भागवत पञ्चमस्कन्ध के अन्त में कही गई। भूगोल खगोल का विस्तृत विवरण सुनाने के बाद श्री शुकदेवजी कहते हैं कि भगवान के स्थूल तथा सूक्ष्म विग्रह के विषय में सुनकर साधक स्थूलरूपमें स्थिर हुए मन को धीरे धीरे सूक्ष्मकी को लेजाये।

श्रुत्वा स्थूलं तथा सूक्ष्म रूपं भगवतो यतिः।
स्थूले निर्जितमात्मानं शनैः सूक्ष्मं धिया नयेत्।। श्रीमद् भा0 5-26-39

केवल साकार निराकार की बात नहीं अलग अलग दर्शनों में आचार्यों द्वारा अनेकों तत्वों का प्रतिपादन अपनी अपनी सुक्तियों के द्वारा प्रतिपादन किया है। किसी ने एक तत्व, किसी ने दो, तीन, पाँच, सात,नौ ग्यारह, पच्चीस छब्बीस आदि तत्वों का प्रतिपादन किया है। उद्धव जी ने भगवान् से पूछा इनमें से किसका मत सही है। इस प्रश्न के उत्तर में भगवान किसी के मत का खंडन नहीं करते हैं। सब-के मतों का सादर अनुमोदन करते हैं।

इतिनाना प्रसंख्यानं तत्वानामृषिभिः कृतम् ।
सर्वन्याय्यं युक्तिमत्वाद् विदुषां किमशोभनम्। श्रीमद् भा011-22-25

इस प्रकार ऋषिमुनियों ने भिन्न भिन्न प्रकार से तत्त्वों की गणना की है। सबका कहना उचित है; क्योंकि सबकी संख्या युक्तियुक्त है। तर्कसंगत है जो लोग तत्वज्ञानी हैं, उन्हें किसी भी मत में बुराई नहीं दीखती। उनके लिए तो सब कुछ ठीक ही है।

यह उदारता, यह विशाल हृदयता, यह सर्वस्वीकार्यता इस भागवत धर्म की आत्मा है। प्राण है। इसीलिए यह मत सनातन है। यहाँ सबका आदर है। सबका सम्मान है सारे मत वन्दनीय हैं। पूजनीय है। सम्भवतः इसी को अनेकता में एकता कहते हैं। यह किसी एक धर्म या सम्प्रदाय का नहीं, मानव मात्र का है

नामोच्चारण माहात्म्यः- भागवत के षष्ठ स्कन्ध में अजामिलोपाख्यान में जाने अनजाने लिए गए भगवान् के नामोच्चारण का माहात्म्य तर्क संगत ढंग से दिया गया है। दुराचारी अजामिलने अन्त समय में अपने पुत्र नारायण को भयभीत होकर बुलाया था। पर बचाने विष्णुदूत आ गए । सुनते हुए कुछ अटपटा लगता है। पर तर्क अकाट्य है। जाने अनजाने भगवान् का नाम उच्चारण किया गया तो उसके पाप नष्ट हो जाते हैं।[1]

अज्ञानादथवा ज्ञानादुत्तमश्लोक नाम यत् ।
सङ्कीर्तितमधं पुंसो दहेदेहो यथाऽनलः।। श्रीमद् भा06-2-18
यथागदं वीर्यतममुपयुक्तं यदृच्छया ।
अजानतोप्यात्मगुणं कुर्यान्मंत्रोप्युदाहृतः। श्रीमद् भा06-2-19

जैसे जाने या अनजाने में ईंधन से अग्नि का स्पर्श हो जाय तो वह भस्म हो जाता है, वैसे ही जानबूझकर या अनजाने में भगवत् के नामों का उच्चारण करने से मनुष्य के सारे पाप भस्म हो जाते हैं।

जैसे कोई व्यक्ति परम शक्तिशाली औषधि को उसका गुण जाने बिना भी पी ले तो वह औषध पीने वाले को अपना प्रभाव दिखा देता है ठीक उसी प्रकार अनजाने में उच्चारण करने पर भी मन्त्र अपना काम करता है।

अर्थात् जैसे अग्नि का स्वभाव जलना है, जैसे औषधि का स्वभाव संबंधित रोग को दूर करना है, वैसे ही मंत्र का भगवन्नाम का अपना स्वभाव है, वह अपना काम करेगा। इसलिए मंत्रोच्चारण या नामोच्चारण कभी व्यर्थ नहीं जाता।

निष्कर्षः- इस प्रकार श्रीमद्भागवत का अध्यात्मपक्ष परम उदार तर्कसंगत, सर्वग्राह्य तथा समवेदनाओं से परिपूर्ण है। इसलिए भागवत को पुराणों का सम्राट माना गया। इसलिए इसमें जीवन-मृत्यु का गूढ़तम विज्ञान है साथ ही इससे जीवन जीने की कला तथा मृत्यु को सहजता से स्वीकारने की कला सीखी जा सकती है। इति शम्।

संदर्भ ग्रंथ :-

श्रीमद्भागवत पुराण

दूरभाषः- 9466869173

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 March 2025 Page No. : 147-150
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

नरेन्द्र अत्री की रचनाओं में बदलते सांस्कृतिक मूल्य

कविता कुमारी, पीएच.डी. शोधार्थी हिन्दी,
डॉ० माया मलिक, शोध निर्देशिका,
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक–124021 (हरियाणा)

सारांश :–

वैदिक युगीन साहित्य में हरियाणा के नाम का उल्लेख एक ऐसे भू–भाग के रूप में मिलता है, जो भारतीय संस्कृति का केन्द्र रहा है और जहाँ अनेक भाषाओं में साहित्य–सृजन की समृद्ध परंपरा रही है। सरस्वती नदी का उद्‌गम स्थल और समस्त सृष्टि को वेद के रूप में अध्यात्म का प्रारंभिक सूत्र प्रदान करने वाला हरियाणा प्रांत आज भी साहित्य के क्षेत्र में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। हरियाणा के समकालीन साहित्यिक परिदृश्य पर दृष्टिपात करें तो एक सुखद संयोग यह भी देखने को मिलता है कि साहित्येतर क्षेत्र से जुड़े हुए व्यक्ति भी संवेदनशील साहित्यकार की तरह साहित्य–सृजन में तल्लीन है और उनके साहित्य में साहित्य के विद्यार्थियों की तरह केवल घिसी–पिटी साहित्यिक रूढ़ियाँ नहीं, बल्कि वह मौलिकता परिलक्षित होती है, जो उन्हें प्रबुद्ध एवं सजग साहित्यकार सिद्ध करती है। वाणिज्य, विज्ञान, उद्योग, राजनीति, लोक एवं पुलिस प्रशासन तथा स्वास्थ्य विभाग जैसे साहित्येतर क्षेत्रों से आने वाले व्यक्ति जब अपने विभागीय उत्तरदायित्वों का पूरी ईमानदारी और निष्ठा के साथ निर्वहन करते हुए संवेदनाओं के सागर में प्रक्षालन करते हैं, तो उनके हृदय से साहित्य की ऐसी भाव–निर्झरी निःसृत होती है, जो सुहृदय पाठकों को रसाप्लावित तो करती ही है, उन्हें उदात्त जीने की प्रेरणा भी देती है।

साहित्येतर क्षत्रों से आने वाले अनेक ऐसे साहित्यकार हैं, जिन्हें हरियाणा का साहित्य सरोवर सुशोभित है। उन शुभ–कमलों में से एक शुभ–कमल है श्री नरेन्द्र संतोषी जिन्होंने हरियाणी बोली में अनेक रचनाओं का प्रणयन करके ऐसा कार्य किया है, जिसे हरियाणी बोली को भाषा का दर्जा दिलवाने की ओर बढ़ाया गया एक सक्षम कदम कहा जा सकता है। इनकी काव्य रचनाओं में केवल भारतीय सनातन धर्म एवं संस्कृति का ही गुणगान नहीं है राष्ट्र के जीवन्त, अखंड व विशिष्ट व्यक्तित्व की पहचान, उसके प्रति प्रेम एवं आत्मीयता का भाव, उसकी एकता, अखंडता, स्वतंत्रता, गौरव और सम्मान की सुरक्षा की भावना की भी अभिव्यंजना देखने को मिलती है जो इनके सनातन धर्म एवं संस्कृति के अनुगायक और राष्ट्रीय–चेतना के कवि होने का प्रमाण है।

प्रस्तावना :–

कवि समाज का सर्वाधिक संवेदनशील व्यक्ति होता है और कविता उसकी संवेदनाओं की रागात्मक अभिव्यक्ति ऐसी रागात्मक अभिव्यक्ति, जो शब्द और अर्थ के मध्य बहती हुई यथार्थ की कठोर भावभूमि पर भी संवेदनाओं के फूल खिलाती है, जिनमें भावों की ऐसी सुगन्ध भरी रहती है, जो पाठकों को आनन्द और आश्चर्य से भरकर उन्हें उतमता के लिए प्रेरित करती है और उनमें ऐसी शक्ति का संचार करती है, जिसमें हित और मनोहरता का भाव भरा रहता है। पलक खुलने से पहले कविता–संग्रह की कविताएँ भी ऐसी ही कविताएँ हैं, जिनमें युगचेता कवि नरेन्द्र अत्री ने ऐसी रागात्मक अभिव्यक्तियाँ दी हैं, जो जीवन का समग्रता से अवलोकन करती हुई सहृदय पाठकों के हृदय को गहराई से छूने की सामर्थ्य रखती है।

बदलते सांस्कृतिक मूल्य समाज के विकास और परिवर्तन की प्रक्रिया का हिस्सा होते हैं। ये मूल्य सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी परिवर्तनों के साथ–साथ नई पीढ़ियों की सोच और दृष्टिकोण के कारण बदलते रहते हैं

बदलते सांस्कृतिक मूल्यों के प्रमुख कारण :–

1. विभिन्न संस्कृतियों के बीच संपर्क बढ़ने से नए विचार और प्रथाएँ अपनाई जा रही हैं।
2. पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव कई परंपरागत मूल्यों में परिवर्तन ला रहा है।
3. गाँवों से शहरों की ओर पलायन से सामूहिकता की भावना कम हो रही है और स्वतंत्रता को बढ़ावा मिल रहा है।
4. आधुनिक शिक्षा प्रणाली ने तर्कशीलता, समानता और स्वतंत्रता जैसे मूल्यों को बढ़ावा दिया है।
5. महिलाओं की भूमिका अब केवल घर तक सीमित नहीं है।
6. औद्योगिकीकरण ने समाज में व्यावसायिकता और प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा दिया है।
7. नारीवाद और लैंगिक समानता ने पारंपरिक भूमिकाओं को चुनाती दी है।
8. लोकतंत्र और सामाजिक अधिकारों ने पारंपरिक सामंती मूल्यों को कमजोर किया है।
9. त्योहार मनाने के तरीके बदल रहे हैं। परंपरागत रीति–रिवाज़ों की जगह आधुनिक, उत्सव का चलन बढ़ा है।
10. स्थानीय भाषाओं का उपयोग घट रहा है और अंग्रेजी जैसी भाषाओं का उपयोग बढ़ा है जिससे पश्चिमी संस्कृति का चलन अधिक हो गया है।

नरेन्द्र अत्री हरियाणवी साहित्य के प्रमुख कवि हैं, जिन्होंने अपने काव्य में हरियाणा की सांस्कृतिक धरोहर और बदलते सांस्कृतिक मूल्यों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है। उनके साहित्य में निम्नलिखित बदलते सांस्कृतिक मूल्यों का उल्लेख मिलता है :

1. **पारंपरिक और आधुनिक जीवन शैली का टकराव –** नरेन्द्र अत्री की कविताओं में ग्रामीण जीवन की सादगी और शहरीकरण के प्रभाव से उत्पन्न जटिलताओं का चित्रण मिलता है। वे दिखाते हैं कि कैसे आधुनिकता ने पारंपरिक मूल्यों को चुनौती दी है। नरेन्द्र जी की रचनाओं में पीछे छूट गए बचपन को, भुलाए जा रहे सामाजिक सम्बन्ध को, स्मृतियों से फिसलती जा रही परिवेशगत वस्तुओं को, विस्मृत हो रहे सांस्कृतिक प्रतीकों और मानव जीवन से लुप्त होते जा रहे मानवीय मूल्यों को स्मृत कर अपनी अनुभूतियों का हिस्सा तो बनाए रखना चाहती ही है उन्हें पाठकों के स्मृतिपटल पर भी अंकित करने को उत्सुक दिखाई देता है 'लौटा दे कोई मेरा बचपन' गाँव के जीवन में 'कहाँ गए' 'आज विरासत हार चली है' 'मैं क्या बोलूँ' और बेचा नहीं कभी ईमान आदि ऐसी कविताएँ हैं; जिनमें स्मृति, लम्बी–लम्बी श्रृंखलाएँ बनाती हुई संचारी भाव की तरह प्रयुक्त हुई है और अतीत के प्रति आसक्ति होने के कारण रति–रूपीस्थायी–भाव के पैदा होने का कारण बनी है। हमारे जीवन में सांस्कृतिक प्रतीकों के धीरे–धीरे लुप्त होते जाने के कारण कवि के हृदय में जो पीर उत्पन्न हुई है। द्रष्टव्य –

   परछाई बन रही राम की, सीता की वह प्रीत कहाँ है
   धर्मराज से लोहा लेती, सावित्री की जीत कहाँ है
   पतिव्रता का बनी उदाहरण, अनुसुइया–सी रीत कहाँ है
   जोहर से पघावत का मन, किंचित भी भयभीत कहाँ है

2. **पारिवारिक सरंचना में परिवर्तन –** नरेन्द्र जी की रचनाओं में संयुक्त परिवार प्रणाली के विघटन और एकल परिवारों के उदय से उत्पन्न सामाजिक और भावात्मक प्रभावों का वर्णन है। वे इस बदलाव के कारण पारिवारिक संबंधों में आई दूरियों को उजागर करते हैं। क्योंकि पारिवारिक संरचना में परिवर्तन एक जटिल प्रक्रिया है, जो सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कारकों के प्रभाव से विकसित होती है। पारंपरिक संयुक्त परिवार प्रणाली से एकल परिवारों की ओर यह बदलाव विशेष रूप से शहरीकरण, औद्योगीकरण और वैश्वीकरण के कारण हुआ है। आज भूमण्डलीकरण, उदारीकरण, निजीकरण, शहरीकरण और बाजारीकरण के कारण विकास तो हुआ है, परन्तु यह विकास सन्तुलित विकास नहीं है। इस असन्तुलित विकास के कारण ही सामाजिक जीवन में एक गहरी खाई उत्पन्न हो गई है, जिसने अनेक विकृतियों का जन्म दिया है और इन विकृतियों ने जिस जन को सबसे अधिक प्रभावित किया है वह है, साधारण–जन। इसी साधारण–जन के प्रति सहानुभूतिपूर्ण ढंग से सोचता हुआ कवि उसकी वेदना और विवशता को अपनी कविताओं में इस प्रकार उकेरता है –

संस्कारहीन यह शिक्षा भारत को न छलती जाए
मारामारी आपाधापी की नीति न फलती जाए
सपना–सा लगती आशा की किरण और ढलती जाए
काली अंधियारी लम्बी यह रात यूं ही न चलती जाए

3. **महिला सशक्तिकरण :–** नरेन्द्र अत्री की कविताओं में महिलाओं की बदलती भूमिका और उनकी स्वतंत्रता की आकांक्षाओ को प्रमुखता से स्थान मिला है। वे दिखाते हैं कैसे महिलाएँ शिक्षा और रोजगार के माध्यम से सशक्त हो रही हैं। नरेन्द्र संतोषी ने अपनी रचना 'विविधायन' में हमारी प्रज्ञा को उर्जस्वल बनाने वाली आदि शक्ति स्वरूप देवी–देवताओं का स्तवन भी कहा जा सकता है। ये दोनों कविताएँ इनके गहन अध्ययन, मनन, और चिन्तन का परिणाम तो है ही, एक प्रबुद्ध भाषाविद होने का प्रमाण भी हैं। दृष्टव्य है :–

हे विद्या रूपा! कामप्रदा! हे पद्मलोचना! न्यायकारी
हे सुरसुंदरी! मात भारती! मैं तेरे चरणों बलिहारी
हे वर प्रदा! हे शिवाउजा! रात बड़ी है अंधियारी
हे महाविद्या! कृपा कर दे, भले नही हम अधिकारी

आलोच्य कृति 'विविधायन' में संकलित एक खोड़िया–लोकनृत्य–गीत है जिसमें मनोरंजन के साथ–साथ परंपरा से दबी–ढकी महिलाओं के अनकहे भावों की मुखर अभिव्यक्ति है जो उन्हें मनोवैज्ञानिक संबल देकर सभी प्रकार के अवसादों से उभारती है और सभी प्रकार के वैमनस्यों को समाप्त कर परिवारों को विघटित होने से बचाने का कार्य करते हुए सम्मानजनक स्थिति को बनाए रखने और अपने मन की बात कहने का ऐसा विरल और अद्‌भुत अवसा भी प्रदान करती है, जहाँ बाते कड़वी होते हुए भी मीठी लगती है। दृष्टव्य है :–

मनै जी त प्यारी लागै सै मेरी सासू माँ
दुनिया तै न्यारी लागै सै मेरी सासू माँ।।
जीकी लाड़ी लागै सै मेरी सासू माँ।
फिर भी माड़ी लागै सै मेरी सासू माँ।।

4. **पश्चिमी संस्कृति का चलन :–** नरेन्द्र अत्री की रचनाओं में पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव को दर्शाया गया है कि किस प्रकार हमारी भारतीय संस्कृति पर विदेशी संस्कृति का असर दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। हमारी मातृभाषा हरियाणवी को लोग बोलने में शर्म महसूस करते हैं और दिन–प्रतिदिन अंग्रेजी भाषा के बढ़ते प्रभाव को भी दर्शाया गया है। 'पछवा आँधी कविता में कवि यदि परोक्ष रूप से भारत की गौरवमयी सांस्कृतिक अस्मिता को बचाने के लिए माँ की सेवा का व्रत लेने की बात करता भी दिखता है। हमारे खान–पान, वेश–भूषा, भाषा, रहन–सहन, मानवीय मूल्य सभी पर पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव परिलक्षित होता है जिसे कवि ने अपने सुन्दर भावों से अभिव्यक्त किया है –

आज हुए 'इंडिया के वासी', जो ये भारत माँ के लाल
पश्चिमी चकाचौंध के मारे, भूल चुके हैं अपनी चाल
खान–पान पहनावा भूले, भूले दिन, तिथियाँ व साल
मातृ–भूमि, मातृ–सेवा, मातृ–भाषा है बदहाल

निष्कर्ष :–

इस प्रकार हम नरेन्द्र अत्री की रचनाओं के माध्यम से समाज में बदलते सांस्कृतिक मूल्यों को तत्कालीन समाज में यथार्थ रूप से देख सकते हैं। उन्होंने यथार्थ का वर्णन करते हुए मानवीय मूल्यों के आदर्शों की स्थापना पर बल दिया। वे अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज में निरन्तर हो रहे परिवर्तन की ओर सबका ध्यान केन्द्रित करना चाहते हैं, ताकि हमारी अमूल्य भारतीय संस्कृति अपनी अस्मिता का संरक्षण कर सकें और हमारी सोच को हमेशा सकारात्मक व ऊर्जावान बनाने में मदद कर सके। यह सर्वविदित है कि साहित्यकार का कृत्तित्व उसके व्यक्तित्व से तो प्रभावित होता ही है उसकी युगीन परिस्थितियों से भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। बाबू गुलाबराय ने तो साहित्यकार को अपने युग का मुख और मस्तिष्क कहा है। वे कहते हैं कि मस्तिष्क में जो–जो विचार उठते हैं, मुख उन्हीं को उच्चरित करता है। यानि एक साहित्यकार के साहित्य में उसके युग की ध्वनि ही प्रतिध्वनित होती है। एक सजग और प्रबुद्ध साहित्यकार की तरह नरेन्द्र संतोषी ने भी अपनी युगीन परिस्थितियों से प्राप्त अनुभव

और अनुभूतियों को, अपनी रचनाओं में इतने प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया है कि उन्हें पढ़कर कोई भी पाठक–अंध्येता अभिभूत हुए बिना नहीं रह सकता। नरेन्द्र संतोषी ने अपनी रचनाओं में यथार्थ– बोध, उदात जीवन मूल्यों, सनातन धर्म एवं संस्कृति के प्रति गहन आस्था, राष्ट्र–प्रेम, बदलते सांस्कृतिक मूल्य की बड़ी प्रभावशाली अभिव्यंजना हुई है। उन्होंने अपनी रचना 'पलक खुलने से पहले' में बदलते हुए अनेक सांस्कृति मूल्यों का वर्णन किया है। कवि की संवेदनशीलता, जागरूकता और विचारों की मौलिकता यदि उसे अलग पहचान दिलवाती है तो लेखनी की सशक्तता और भाषा की जीवन्तता उसे साहित्य–जगत में सम्मानजनक स्थान का हकदार भी बनाती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, अशोक के फूल, भारतीय संस्कृति, पृ०–75
2. डॉ० रविन्द्र दरगन : आधुनिक हिन्दी कविता : संस्कृति मूल्य, पृ०–18
3. धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी साहित्य कोश, ज्ञानमण्डल लिमिटेड
4. नरेन्द्र अत्री, पलक खुलने से पहले, पृ०–57
5. वही पृ०–64
6. वही पृ०–66
7. डॉ० सीता राम झा, भारतीय समाज का स्वरूप, पृ०–139
8. डॉ० गणपति चन्द्रगुप्त, साहित्यिक निबंध, पृ० सं० – 393, 94

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 March 2025 Page No. : 151-157
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

भारतीय संस्कृति का ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ0 अरुण कुमार सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर इतिहास विभाग,
डी०ए०वी० पी०जी० कॉलेज, आज़मगढ़

भारत की सांस्कृतिक धरोहर हजारों वर्षों के इतिहास से बुनी गई एक समृद्ध संरचना है, जो इसकी विविध जनसंख्या, धर्मों, भाषाओं और परंपराओं को दर्शाती है। यह शोध ऐतिहासिक दृष्टिकोण से भारतीय सांस्कृतिक धरोहर के विकास का अध्ययन करता है, जिसमें सिंधु घाटी सभ्यता और वैदिक काल से लेकर मौर्य और गुप्त साम्राज्य के शास्त्रीय युग, और फिर मुगल साम्राज्य और क्षेत्रीय राज्यों के माध्यम से मध्यकाल तक का इतिहास शामिल है। इसके साथ ही विदेशी प्रभावों, जैसे यूनानी, फारसी, और ब्रिटिश उपनिवेशवाद, के योगदान पर भी विचार किया गया है, जिनसे भारत की सांस्कृतिक विविधता का निर्माण हुआ। इस अध्ययन के प्रमुख पहलुओं में भारत की कला, वास्तुकला, साहित्य, संगीत, नृत्य, और दार्शनिक परंपराओं का विश्लेषण शामिल है, साथ ही ठोस और अमूर्त धरोहर के संरक्षण प्रयासों पर भी ध्यान दिया गया है। यह भी देखा गया है कि धार्मिक आंदोलनों, व्यापार मार्गों और राजनीतिक परिवर्तनों जैसी ऐतिहासिक घटनाओं ने भारत की सांस्कृतिक पहचान को कैसे आकार दिया। यह शोध भारतीय सांस्कृतिक धरोहर में निरंतरता और परिवर्तन दोनों की पड़ताल करता है, और यह दिखाता है कि कैसे भारत बाहरी प्रभावों को आत्मसात करके अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखता है।

भारत का इतिहास और संस्कृति प्राचीन, जीवंत और प्राचीन सभ्यता से लेकर आज तक विस्तारित है। संस्कृति का अर्थ व्यक्तियों के विचारों और व्यवहारों के पैटर्न से होता है। संस्कृति एक व्यापक शब्द है, जिसमें मूल्य, नियम, मानदंड, नैतिकता, आचरण और सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संगठनों के पैटर्न शामिल होते हैं। ये एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को औपचारिक और अनौपचारिक प्रक्रियाओं के माध्यम से हस्तांतरित किए जाते हैं। संस्कृति उन तरीकों का समायोजन है, जिनके माध्यम से एक व्यक्ति समाज का सदस्य होते हुए कार्य करता है। व्यक्ति इस दृष्टिकोण में जानकारी उत्पन्न करते हैं कि एक व्यक्ति समाज का सदस्य होते हुए कैसे कार्य करता है। इस प्रकार, समूह जीवन की सभी उपलब्धियों को सामूहिक रूप से संस्कृति

कहा जाता है। लोकप्रिय भाषा में, संस्कृति के भौतिक पहलू, जैसे वैज्ञानिक और तकनीकी उपलब्धियां, संस्कृति से अलग मानी जाती हैं। इसे अमूर्त के रूप में देखा जाता है, जैसे समूह जीवन की उच्चतर उपलब्धियां - कला, संस्कृति, संगीत, साहित्य, दर्शन, धर्म और विज्ञान। संस्कृति इस तरह के संगठन का उत्पाद है और यह भाषा, कला, दर्शन और धर्म के माध्यम से व्यक्त होती है। इसके अतिरिक्त, यह सामाजिक आदतों, रीति-रिवाजों, आर्थिक संगठनों और राजनीतिक संस्थानों के माध्यम से भी व्यक्त होती है। जब व्यक्ति भारतीय इतिहास का अध्ययन करते हैं, तो वे मानदंडों, मूल्यों और संस्कृतियों के संदर्भ में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। ऐतिहासिक नेताओं ने संस्कृति और धरोहर के संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। संस्कृति दो प्रकार की होती है: भौतिक और अमूर्त। पहले प्रकार में प्रौद्योगिकियां, उपकरण, भौतिक वस्तुएं, उपभोक्ता वस्तुएं, घरेलू डिज़ाइन और वास्तुकला, उत्पादन के तरीके, व्यापार, वाणिज्य, कल्याण और अन्य प्रकार की सामाजिक गतिविधियां शामिल होती हैं। संस्कृति के अमूर्त रूप, जैसे मूल्य, मानदंड, नैतिकता, सिद्धांत, मानक, साहित्य, कला और अन्य धार्मिक गतिविधियां शामिल हैं। संस्कृति को सभी समाजों की अमूल्य संपत्ति माना गया है। संस्कृति के भौतिक और अमूर्त पहलू एक-दूसरे से स्वतंत्र होते हैं। संस्कृतियों को उनके समग्र जीवन स्तर में समझना और व्यवहार में लाना आवश्यक है। भारतीय संस्कृति विश्व की सभी संस्कृतियों में सबसे पुरानी मानी जाती है। संस्कृति को राष्ट्र की आत्मा माना जाता है। व्यक्तियों को संस्कृतियों को स्वीकारना और उनका पालन करना आवश्यक है। संस्कृति को मानव जीवन के उन मूल्यों के संग्रह के रूप में परिभाषित किया गया है, जो समाज की पहचान को स्थापित करते हैं।

संस्कृति को जीवन और सोचने के तरीके में किसी के स्वभाव की अभिव्यक्ति के रूप में परिभाषित किया जाता है। संस्कृति का व्यक्तियों के जीवन पर कई कारकों के रूप में प्रभाव पड़ता है। इनमें अन्य लोगों के साथ प्रभावी संचार प्रक्रियाओं का कार्यान्वयन, दूसरों के साथ संबंधों की स्थापना, विभिन्न प्रकार की मनोरंजन और अवकाश गतिविधियाँ, आनंद और विभिन्न प्रकार के कार्यों और गतिविधियों का कार्यान्वयन शामिल हैं। भौतिक संस्कृति में कई कारक शामिल होते हैं, जैसे वस्त्र, भोजन और घरेलू सामान। दूसरी ओर, अमूर्त संस्कृति में मानदंड, मूल्य, मानक, सिद्धांत और नैतिकता शामिल हैं। संस्कृति स्थान और देशों के अनुसार बदलती है। इनका चरित्र विभिन्न संस्कृतियों और परंपराओं से होता है। व्यक्तियों की अपनी जीवनशैली, व्यवसाय, वस्त्र, भोजन, त्यौहार, घटनाएँ, अनुष्ठान, रीति-रिवाज, परंपराएँ, राजनीतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक गतिविधियों में अंतर होते हैं। समय के साथ, व्यक्तियों को अपनी संस्कृति में परिवर्तन लाना आवश्यक होता है। एक महत्वपूर्ण पहलू जिसे ध्यान में रखना आवश्यक है, वह यह है कि सभी संस्कृतियों के संचालन में सकारात्मकता को

मजबूती से स्थापित किया जाए। सांस्कृतिक विकास को ऐतिहासिक प्रक्रियाओं के रूप में परिभाषित किया जाता है। व्यक्ति अपने पूर्वजों से विभिन्न कारकों के संदर्भ में जानकारी प्राप्त करते हैं। समय के साथ, वे अपने अनुभव से इसमें नई बातें जोड़ते हैं और उन चीजों को छोड़ देते हैं, जिन्हें वे उपयोगी नहीं समझते। समय के साथ, संस्कृति में सुधार लाया जाता है। यह नई विचारों, दृष्टिकोणों, मान्यताओं, मूल्यों और मानदंडों को जोड़कर किया जा सकता है। इस प्रकार, संस्कृति का हस्तांतरण सुगम हो जाता है और यह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचती है। पूर्वजों से विरासत में मिली संस्कृति को सांस्कृतिक धरोहर कहा जा सकता है। राष्ट्र भी संस्कृति को विरासत में पाता है, जिसे सांस्कृतिक धरोहर कहा जाता है। यह स्पष्ट है कि व्यक्ति नैतिक और नैतिक मानव बनने और देश के उत्पादक नागरिक बनने की आकांक्षा रखते हैं। इसलिए, जब वे अपने लक्ष्यों और उद्देश्यों की प्राप्ति के प्रति पूर्ण रूप से प्रतिबद्ध होते हैं, तो उन्हें सांस्कृतिक धरोहर के अर्थ और महत्व को स्वीकारना होगा। संस्कृति के मूल्य एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानांतरित होते हैं। इस प्रकार, इस प्रक्रिया में, व्यक्ति संस्कृति के अर्थ और महत्व की समझ प्राप्त कर लेते हैं। भारत में, पूरे देश में सांस्कृतिक स्थल, ऐतिहासिक स्थल, स्मारक और धार्मिक स्थल हैं। ये स्थान देश की संस्कृति, सुंदरता और वास्तुकला का प्रतीक हैं। इनके अलावा, अन्य कारक भौतिक कलाकृतियों, बौद्धिक उपलब्धियों, दर्शन, ज्ञान के खजाने, वैज्ञानिक आविष्कारों और खोजों पर जोर देते हैं। ये सब धरोहर का हिस्सा हैं। भारतीय संदर्भ में, गणित, खगोलशास्त्र और ज्योतिष के क्षेत्र में बौधायन, आर्यभट्ट, भास्कराचार्य, भौतिकी के क्षेत्र में वराहमिहिर, रसायन विज्ञान के क्षेत्र में नागार्जुन, चिकित्सा के क्षेत्र में सुश्रुत और चरक तथा योग के क्षेत्र में पतंजलि के योगदान भारतीय सांस्कृतिक धरोहर में महान खजाने माने जाते हैं। संस्कृति में परिवर्तन लाए जा सकते हैं, परंतु धरोहर में नहीं। जब व्यक्ति शिक्षा प्राप्त करने या रोजगार के अवसरों के लिए विदेशी देशों में जाते हैं, तो उन्हें उस राष्ट्र के मानदंडों और मूल्यों के अनुसार खुद को ढालना पड़ता है। दूसरे शब्दों में, उन्हें उस राष्ट्र की संस्कृति की प्रभावी समझ प्राप्त करनी होती है। अतः यह अच्छी तरह समझा जा सकता हैं।

भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ मानदंडों और मूल्यों के उन्नयन पर जोर देती हैं। इसके अतिरिक्त, व्यक्ति उन विभिन्न कारकों पर जोर देते हैं जो उनके जीवन की समग्र गुणवत्ता में सुधार लाने में सहायक होते हैं। व्यक्तियों को सभी आवश्यक कारकों के संदर्भ में जानकारी उत्पन्न करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, जो उन्हें नैतिक और आचारवान मानव तथा देश के उत्पादक नागरिक बनने में सहायक होते हैं (शर्मा और कौर, 2017)। विभिन्न कारकों के संदर्भ में जानकारी उत्पन्न करना उनके कार्यों और गतिविधियों में सफलता दिलाने में सहायक होगा। दूसरे शब्दों में, व्यक्ति भारतीय संस्कृति की विशेषताओं के संदर्भ में जानकारी को बढ़ावा देने में कुशल योगदान करेंगे। जब कोई व्यक्ति संस्कृति के संदर्भ में शोध करता है, तो भारतीय

संस्कृति की विशेषताओं के प्रति अच्छी तरह से परिचित होना आवश्यक है। परिणामस्वरूप, व्यक्ति व्यक्तिगत, सामुदायिक और राष्ट्रीय कल्याण और सद्भावना को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान देंगे। इसलिए, भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

भारतीय दर्शन और संस्कृति ने एक आंतरिक सामंजस्य और व्यवस्था प्राप्त करने का प्रयास किया है, जो पूरे ब्रह्मांड तक फैला हुआ है। भारतीय संस्कृति का मानना है कि प्रकृति में निहित प्राकृतिक ब्रह्मांडीय व्यवस्था नैतिक और सामाजिक व्यवस्था की आधारशिला है। आंतरिक सामंजस्य को बाहरी सामंजस्य की नींव माना जाता है। बाहरी व्यवस्था और सौंदर्य स्वाभाविक रूप से आंतरिक सामंजस्य से उत्पन्न होते हैं। भारतीय संस्कृति भौतिक और आध्यात्मिक का संतुलन बनाती है और उन्हें मिलाने का प्रयास करती है, जिसे पुरुषार्थ के सिद्धांत में दर्शाया गया है। व्यक्ति की आंतरिक सुंदरता पूरे जीवन में बनी रहती है, जबकि बाहरी सुंदरता अस्थायी होती है।

भारतीय संस्कृति सभी समुदायों, वर्गों और सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि से संबंधित व्यक्तियों में मानदंडों और मूल्यों के उन्नयन पर जोर देती है। व्यक्तियों को अपने जीवन के संपूर्ण मानकों में मानदंडों और मूल्यों को लागू करना सुनिश्चित करना चाहिए। इस प्रकार, वे निरंतरता और स्थिरता को सुदृढ़ बनाने में एक महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। इसके अतिरिक्त, व्यक्ति उन विभिन्न कारकों पर जोर देंगे जो उनके जीवन की समग्र गुणवत्ता में सुधार लाने में सहायक होते हैं। व्यक्तियों को सभी आवश्यक कारकों के संदर्भ में जानकारी उत्पन्न करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, जो उन्हें नैतिक और आचारवान मानव और उत्पादक नागरिक बनने में सहायक होते हैं। विभिन्न कारकों के संदर्भ में जानकारी उत्पन्न करना उनके कार्यों और गतिविधियों में सफलता दिलाने में सहायक होगा। इस प्रकार, निरंतरता और स्थिरता को किसी के कार्यों और गतिविधियों में अमल में लाया जाता है। इसलिए, निरंतरता और स्थिरता भारतीय संस्कृति का एक प्रमुख विशेषता है।

आध्यात्मिकता को भारतीय संस्कृति की आत्मा के रूप में परिभाषित किया गया है। आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार किया गया है। व्यक्तियों का अंतिम लक्ष्य शारीरिक सुख नहीं बल्कि आत्म-ज्ञान प्राप्त करना है। यह मान्यता है कि जब व्यक्ति सहयोग और सहायता की भावना को बढ़ावा देते हैं, एक-दूसरे के साथ आदर और शिष्टता से व्यवहार करते हैं और ईश्वर की सेवा में समर्पित होते हैं, तो वे अपने जीवन की समग्र गुणवत्ता में सुधार ला सकते हैं। इस प्रकार, वे अपने कार्यों और जिम्मेदारियों को सुव्यवस्थित और संतोषजनक तरीके से निभाने में महत्वपूर्ण योगदान देंगे। इसलिए, आध्यात्मिकता भारतीय संस्कृति की एक विशेषता है, जिसे सभी समुदायों के लोग मान्यता देते हैं।

भारतीय संस्कृति में धर्म का केंद्रीय स्थान है। वेद, उपनिषद, पुराण, रामायण, महाभारत, गीता, आगम, त्रिपिटक, कुरान और बाइबल जैसे धार्मिक ग्रंथों ने व्यक्तियों के जीवन पर प्रभाव डाला है। व्यक्ति उन विभिन्न कारकों के संदर्भ में अपनी जानकारी बढ़ाते हैं, जिन्होंने उन्हें उत्पादक जीवन जीने में सक्षम बनाया है। उदारता, सहृदयता, करुणा, आशावाद, संयम, अच्छा आचरण, मित्रता, सहानुभूति, ईमानदारी, भलाई, शिष्टता, क्षमा और धर्मनिष्ठा जैसे विभिन्न पहलुओं पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। प्रारंभिक बचपन से लेकर पूरे जीवन में, व्यक्तियों को इन पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करना और इन्हें व्यवहार में लाना होता है। इसलिए, धार्मिक प्रधानता भारतीय संस्कृति की एक विशेषता है, जिसने व्यक्तियों के जीवन की समग्र गुणवत्ता में सुधार को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

भारतीय संस्कृति में अच्छे कर्म और अच्छे कार्यों के विचार का महत्वपूर्ण प्रभाव है। प्रारंभिक बाल्यावस्था से ही, पूरे जीवन में व्यक्तियों को अच्छे परिणाम प्राप्त करने के लिए अच्छे कर्म करने की आवश्यकता होती है। व्यक्ति को दूसरों की भलाई और सद्भावना को बढ़ावा देने में योगदान देना चाहिए। दूसरे शब्दों में, किसी को चोट नहीं पहुंचाना चाहिए या किसी को नुकसान नहीं पहुँचाना चाहिए। यह माना जाता है कि जो व्यक्ति अच्छे कर्म करता है, उसे उच्चतर जीवन में जन्म मिलता है और वह सुखी जीवन व्यतीत करता है। जब व्यक्ति बुरे कर्म करता है, तो उसे निम्नतर जीवन में जन्म लेना पड़ता है और उसे अपने जीवन में दुख और कष्ट सहना पड़ता है। उपनिषदों में कहा गया है कि कर्म का फल उचित होना चाहिए। इस प्रकार यह पूरी तरह से समझा जाता है कि व्यक्तियों को अच्छे और बुरे कर्मों के परिणामों का अनुभव करना आवश्यक है। इसलिए, सभी समुदायों, श्रेणियों और सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमियों के व्यक्तियों को अच्छे परिणाम प्राप्त करने के लिए अच्छे कार्य करने की आवश्यकता है।

संयुक्त परिवार प्रणाली वह प्रणाली है, जिसमें दो या अधिक एकल परिवार एक ही छत के नीचे रहते हैं। इसमें चाचा, चाची, माता-पिता, बच्चे, भाई-बहन, चचेरे भाई आदि शामिल होते हैं। अधिकतर मामलों में, संयुक्त परिवार के सदस्य एक ही रसोई का उपयोग करते हैं। यह स्पष्ट है कि सभी समुदायों, श्रेणियों और सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमियों से संबंधित व्यक्ति विभिन्न प्रकार की समस्याओं और चुनौतियों का सामना करते हैं। इसलिए, संयुक्त परिवारों में, व्यक्ति एक-दूसरे से सहायता प्राप्त कर सकते हैं और समस्याओं तथा चुनौतियों का समाधान प्राप्त कर सकते हैं। परिणामस्वरूप, व्यक्ति अपने कार्यों और गतिविधियों में बेहतर परिणाम प्राप्त करने के लिए प्रेरणा और एकाग्रता के स्तर में सुधार कर सकते हैं। इसके अलावा, व्यक्ति अपने कार्यों में अच्छा प्रदर्शन करेंगे और अपने जीवन की समग्र गुणवत्ता में सुधार ला सकते हैं। एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि परिवार के सदस्यों को एक-दूसरे के साथ प्रभावी रूप से संवाद करना चाहिए। इसके अतिरिक्त, घरों में एक सुखद वातावरण बनाना आवश्यक है। इस प्रकार, संयुक्त

परिवार प्रणाली भारतीय संस्कृति की एक विशेषता है, जो परिवार के सदस्यों के बीच आपसी समझ को विकसित करने में सहायक होती है।

भारत में जाति व्यवस्था का प्रचलन रहा है। विभिन्न जातियों से संबंधित व्यक्ति विभिन्न प्रकार के व्यवसायों में संलग्न होते हैं, लेकिन उनका एक मुख्य लक्ष्य अपने जीवन की समग्र गुणवत्ता में सुधार लाना होता है। भारतीय समाज में चार जातियाँ हैं: ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। ब्राह्मण सबसे उच्च जाति माने जाते हैं, जो पुरोहित और शिक्षक होते हैं। क्षत्रिय योद्धा और शासक होते हैं। वैश्य व्यापारी, कारीगर और शिल्पकार होते हैं। शूद्र सफाई कर्मचारी होते हैं। वर्तमान में, कई कार्यक्रमों और उपायों का निर्माण किया गया है, जो व्यक्तियों के जीवन की समग्र गुणवत्ता में सुधार लाने में सहायक होते हैं। व्यक्तियों को पूर्ण अधिकार और अवसर प्रदान किए जाते हैं, जिससे वे अपने जीवन के मानकों में सुधार कर सकें। एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि सभी जातियों को उन अधिकारों और अवसरों की समझ होनी चाहिए जो उन्हें प्रदान किए गए हैं। इस प्रकार, जाति व्यवस्था भारतीय संस्कृति की एक विशेषता है, जो व्यक्तियों की जीवन स्थितियों में सुधार लाने में सहायक है।

विविधता में एकता

भारत में सभी समुदायों में व्यक्ति कई कारकों के संदर्भ में एक-दूसरे से अलग होते हैं, जैसे जाति, पंथ, धर्म, लिंग, आयु वर्ग, जातीयता, शैक्षिक योग्यताएँ, व्यवसाय, समुदाय और सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि। इन भिन्नताओं के बावजूद, सभी समुदायों और सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमियों के व्यक्ति अपने कार्यों में सहयोग और एकता के साथ काम करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। विभिन्न प्रकार के व्यावसायिक सेटिंग्स में, जैसे सभी स्तरों के शैक्षिक संस्थान और रोजगार के विभिन्न स्थानों में, व्यक्ति सांस्कृतिक रूप से भिन्न होते हैं। इसलिए, व्यावसायिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, व्यक्तियों को विभिन्न कारकों और उन व्यक्तियों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना होगा जिनके साथ वे काम कर रहे हैं। दूसरे शब्दों में, एक व्यक्ति को रचनात्मक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए और घर के अंदर और बाहर अन्य व्यक्तियों के साथ सौहार्दपूर्ण और मैत्रीपूर्ण संबंध बनाना चाहिए। इस प्रकार, सभी समुदायों, श्रेणियों और सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमियों से संबंधित व्यक्ति सभी प्रकार की संस्कृतियों को स्वीकारने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। इसलिए, विविधता में एकता भारतीय संस्कृति की एक महत्वपूर्ण विशेषता है।

निष्कर्ष

संस्कृति का अर्थ है विचारों, व्यवहारों, मूल्यों, नियमों, मानदंडों, नैतिकता, आचरण और सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संगठनों के पैटर्न। भारतीय संस्कृति की विशेषताओं में एक सार्वभौमिक दृष्टिकोण, सामंजस्य की भावना, सहनशीलता, निरंतरता और स्थिरता, अनुकूलता,

ग्रहणशीलता, आध्यात्मिकता, धार्मिक प्रमुखता, कर्म और पुनर्जन्म के विचार, कर्तव्य पर बल, संयुक्त परिवार प्रणाली, जाति व्यवस्था, विविधता में एकता, संस्कृति का सीखना और प्राप्त करना, और संस्कृति में परिवर्तन शामिल हैं। भारतीय संस्कृति के संबंध में जानकारी उत्पन्न करना व्यक्तियों, समुदायों और राष्ट्र की प्रगति को प्रोत्साहित करता है। अंततः यह कहा जा सकता है कि भारतीय संस्कृति के संबंध में जानकारी उत्पन्न करना व्यक्तियों, समुदायों और पूरे राष्ट्र के कल्याण को बढ़ावा देने में सहायक है।

संदर्भ सूची

- Nature of Indian Society - Pre and Post Position (Historical Reflection). Retrieved October 31, 2023 from https://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/38799/8/08_chapter_2.pdf
- Kumar, A. (2019). Significance of Philosophy in Perspective of Education. *Indian Journal of Adult Education, 80(3-4),* 67-73.
- Lathan, J. (2022). 10 Traits of Successful School Leaders. University of San Diego. Retrieved October 31, 2023 from onlinedegrees.sandiego.edu
- Satpathy, B.B. (n.d.). Indian Culture and Heritage. Retrieved October 31, 2023 from http://ddceutkal.ac.in/Syllabus/MA_history/paper-8.pdf
- Sharma, A., & Kaur, H. (2017). Changes in Indian Social Structure: A Perspective of PostGraduate Students of Punjab University, Chandigarh. *International Journal of Innovative Studies in Sociology and Humanities, 2(4),* 1-11. Retrieved October 31, 2023 from http://ijissh.org/wp-content/uploads/2017/06/IJISSH-020404.pdf
- Aliaga, D.G., Bertino, E., Valtolina, S.: Decho - a framework for the digital exploration of cultural heritage objects. J. Comput. Cult. Herit. 3, 12:1-12:26 (2011).
- Mallik, A., Chaudhury, S., Ghosh, H.: Nrityakosha: Preserving the intangible heritage of indian classical dance. JOCCH 4(3), 11 (2011).
- Verghese, A., Dallapiccola, A.L. (eds.): South India under Vijayanagara: Art and Archaeology. Oxford University Press (2011).

Email-arunnsingh99@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 March 2025 Page No. : 158-161
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में पंडित मदन मोहन मालवीय के कृत कार्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

LAV KESH BAHADUR SINGH, Research Scholar history,
Dr. Shrikrishna Singh, professor history,
P. K. K. Government degree college Jalabad Shahjahanpur

प्रस्तावना

अंग्रेजी शासन 1757 से ही भारत पर अपने नियंत्रण का प्रयोग अपने निजी हितों को सिद्ध करने के लिए किया । परंतु यह भी कहना सदैव सत्य नहीं लगता कि पूरे दौर में अंग्रेजों के शासन का मूल चरित्र एक जैसा ही रहा । अंग्रेजी शासन लगभग 200 वर्षों के लंबे शासन में अनेक सोपनो से गुजरा । ब्रिटेन में जो भी परिवर्तन सामाजिक ,राजनीतिक ,आर्थिक विकास में जैसा भी बदलाव आया उसी के अनुरूप शासन तथा साम्राज्यवादी चरित्र में वैसा ही प्रभाव दिखाई देता है।

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में भारत रत्न पंडित मदन मोहन मालवीय का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। मालवीय के जन्म के समय तत्कालीन भारतीय राजनीतिक ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के अधीन थी। प्रायः किसी कंपनी का मुख्य उद्देश्य अधिक से अधिक लाभार्जन होता है ,लेकिन ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी का उद्देश्य येन केन प्रकारेण भारत की अपार प्राकृतिक एवं मानव संसाधनों का अधिकार अधिक दोहन करना ही नहीं था, अभी तो साथ ही साथ ब्रिटिश साम्राज्य का विस्तार भी करना था।

पंडित मदन मोहन मालवीय के जन्म से 4 वर्ष पूर्व ही भारत की स्वतंत्रता का प्रथम बीज फूटा जिससे भारतीय समाज में परिवर्तन की धारा चल उठी। जिसका परिणाम 1857 ई के विप्लव के रूप में देखने को मिलता है।

पंडित मदन मोहन मालवीय ने सन् 1886 में प्रोफेसर आदित्यराम भट्टाचार्य के प्रोत्साहन पर प्रथम बार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस कोलकाता अधिवेशन में भाग लिया। दिसंबर 1887 के मद्रास अधिवेशन में बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया। यही से मदन मोहन मालवीय का कांग्रेस में यात्रा

प्रारंभ होता है। महामना चार बार कांग्रेस के अध्यक्ष मनोनीत हुए जिसमें दो बार अंग्रेजी सरकार के प्रतिबंधों के कारण कांग्रेस का अधिवेशन संपन्न नहीं हो सका। मालवीय जी नरम दल एवं ग्राम दल के एकीकरण के लिए पुरजोर वकालत किया तथा रॉलेट एक्ट के विरोध में भी बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया साथ ही साथ अपने योग आंदोलन में गांधी जी के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चले।

अध्ययन का उद्देश्य

1 -पंडित मदनमोहन मालवीय का राष्ट्रीय आंदोलन में योगदान का वर्णन करना।

2 -पंडित मदनमोहन मालवीय का कांग्रेस में दिए गए योगदान की जानकारी प्रदान करना।

3 -भारत रत्न पंडित मदन मोहन मालवीय के स्वतंत्रता आंदोलन में कृत कार्यों को जानना।

पंडित मदन मोहन मालवीय का भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान-

प्रयागराज धार्मिक तीर्थ ही नहीं अपितु क्रांतिकारी कहीं भी जन्म ले किंतु प्रयागराज उनके लिए एक प्रकार का तीर्थ स्थल ही होता था, जहां सदैव क्रांतिकारियों का जमावड़ा रहा करता था। सब तीर्थ के राजा प्रयागराज में पुण्यसलिला 'मकर वाहिनी मां गंगा, कर्मवाहिनी मां यमुना और हंसरूढ़ मां सरस्वती' के पावन त्रिवेणी से कुछ दूर महामना का जन्म हुआ था।

भारतीय इतिहास मैं प्राचीन काल से लेकर अब तक ऐसे अनेक दृष्टांत दृश्यमान होते हैं, जिनमें लोकनायकों ने पूर्ण मनोभाव से भारत वर्ष में लोक जागरण का अभिनव प्रयोग किया।

मालवीय जी जब छोटे थे तभी अपने संगी साथियों का एक छोटा सा दल बनाया। यह दल उन अराजक तत्वों को सबक सिखाती जो अराजकता उत्पन्न करते थे। यह दल मेला, सभाओं, उत्सवों आदि भीड़ नियंत्रित करने का काम भी अवसर आने पर करता। बाल्यावस्था में मदन मोहन मालवीय का एक और कार्य "वाग्वर्धिनी सभा" का गठन था। जिसका कार्य विभिन्न विषयों पर वाद विवाद करना था। कॉलेज के दिनों में वह फक्कड़ सिंह उपनाम से सामाजिकता पर कविताएं लिखा करते थे ।पत्रकारिता के दौरान जब प्रेस की आजादी नहीं थी तब भी वे राष्ट्र का पक्ष सुंदर तरीके से रखा करते थे। सन् 1886 में पंडित मदन मोहन मालवीय प्रयाग के म्योर सेंट्रल कॉलेज में प्रोफेसर आदित्यराम भट्टाचार्य के साथ कोलकाता में कांग्रेस अधिवेशन में भाग लिया जिसमें दादा भाई नौरोजी, ए.ओ.ह्यूम, सुरेंद्रनाथ बनर्जी जैसे प्रतिनिधि उपस्थित थे। सुरेंद्रनाथ बनर्जी ने मालवीय जी के भाषण सुनने के उपरांत कहा-" यह भाषण मेरे अभी तक चुने हुए उन भाषणों में सबसे अच्छा था जिसे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रतिनिधियों पर अच्छा प्रभाव पड़ा जिसने उन्हें कांग्रेस के प्रबल भावी नेता के रूप में निर्दिष्ट कर दिया था। उसके इसके बाद मालवीय जी को 1909 लाहौर ,1918 दिल्ली अधिवेशन की अध्यक्षता सोप गई ।सन् 1930 तथा 1932 की अध्यक्षता मदन मोहन मालवीय को सौंप गई परंतु ब्रिटिश सरकार के प्रतिबंधों के कारण यह अधिवेशन ना हो सका। सन्1903 से लेकर

1921 तक मदन मोहन मालवीय ने प्रांतीय काउंसिल के सदस्य रहे तथा सन् 1910 से लेकर 1920 तक भारतीय विधान काउंसिल के सदस्य के रूप में कार्य किया। 1924 में भारतीय लेजिसलेटिव असेंबली के सदस्य निर्वाचित हुए जिसमें वे 1930 तक बन रहे।

नरम दल की ओर से एक क्रांतिकारी की आलोचना के लिए 1909 ईस्वी में एक सभा आयोजित किया गया ।जिसमें पंडित मदन मोहन मालवीय को नरम दल की आतंकवादी गतिविधियों की वर्णन करने को कहा गया। उसे आमंत्रण को पंडित मदन मोहन मालवीय ने ठुकरा कर उस संदर्भ में अपने विचार दिए ,"मैं इस समय तक क्रांतिकारियों के विरुद्ध कुछ भी कहने को तैयार नहीं हूं जब तक उस सभा में उन्हें सरकार की उस गतिविधियों की आलोचना करने का पूर्ण मौका ना दिया जाए, इसके कारण क्रांतिकारी भावनाएं प्रचलित होती हैं। नरम दल और गरम दल आपस में दूरी बनाए रखते थे। पंडित मदन मोहन मालवीय को नरम दल एवं ग्राम दल की दूरी उचित नहीं लगी। अतः उनके दोनों पक्षों के साथ विचार विमर्श करने के बाद सन् 1916 के अधिवेशन में दोनों दलों का समझौता करवा सके।

सन् 1919 को रोलेट एक्ट लागू हुआ। जिसका उद्देश्य भारत में क्रांतिकारियों के प्रभाव को समाप्त करने एवं राष्ट्रीयता की भावनाओं को कुचलना था। इसके विरोध में मदन मोहन मालवीय ने केंद्रीय असेंबली में रोलट एक्ट के विरोध में 4 घंटे से ज्यादा लगातार भाषण दिया। उसे समय सेंट्रल असेंबली श्रोता- दीर्घा में महात्मा गांधी भी आए थे।

महात्मा गांधी द्वारा चलाए गए सहयोग आंदोलन में मदनमोहन मालवीय ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। लाला लाजपत राय, जवाहरलाल नेहरू तथा अन्य स्वतंत्रता सेनानियों के साथ मिलकर साइमन कमीशन का पुरजोर विरोध किया और इसके विरोध में देशभर में घूम-घूम कर जन जागरण अभियान चलाया। मालवीय जी सदैव तुष्टिकरण का विरोध किया करते थे। वे सन्1916 लखनऊ पैक्ट के अंतर्गत मुसलमान को प्राप्त अलग निर्वाचन मंडल का विरोध किया था। वे कदापि देश विभाजन के पक्ष में नहीं थे। 'सत्यमेव जयते' नारे को लोकप्रिय बनाने में महामना का अमूल योगदान रहा। उन्होंने महात्मा गांधी को आगाह किया था कि वह देश के विभाजन की कीमत पर स्वतंत्रता स्वीकार न करें । अर्थात देश को अखंड बनाने में अपनी भूमिका निर्वहन करें। द्वितीय गोलमेज सम्मेलन का आयोजन सन् 1931 में लंदन में हुआ था इस सम्मेलन में महात्मा गांधी के साथ मदन मोहन मालवीय ने भी हिस्सा लिया तथा कुछ सुझाव भी प्रस्तुत किया, जिसमें उत्तरदाई सरकार, वित्तीय आजादी, विधानसभा में सदस्य संख्या का विस्तार, वोट डालने वाले लोगों की संख्या में विस्तार आदि विषयों पर उन्होंने मुखर होकर अपनी बात प्रस्तुत किया।

निष्कर्ष

ऊपर निर्दिष्ट विवरण से यह स्पष्ट है कि मदन मोहन मालवीय केवल एक व्यक्ति ही नहीं अपितु वे स्वयं में अनेक संस्थाएं थे। यद्यपि कांग्रेस के पिता व जन्मदाता ए ओ हुजूम थे, परंतु मदन मोहन मालवीय जैसे लोगों ने कांग्रेस में प्रवेश प्रवेश से कांग्रेस की अंग्रेजी धीरे-धीरे कम हुई। इसके इतर भारतीयता बढ़ गई।

निसंदेह महामना मदनमोहन मालवीय ऐसे प्रतिभा संपन्न राष्ट्रवादी व्यक्तित्व थे। जिन्होंने राष्ट्रहित में अपना संपूर्ण जीवन अर्पण कर दिया। सच्चे अर्थों में पंडित मदनमोहन मालवीय भारत रत्न थे।

संदर्भ ग्रंथ सूची -

* डॉक्टर बालमुकुंद पांडे, डॉक्टर देवेंद्र कुमार शर्मा ,भारत रत्न महामना
* अशोक कौशिक ,भारत के महान अमर क्रांतिकारी मदन मोहन मालवीय
* शरद सिंह, महामना मदन मोहन मालवीय
* अशोक मेहता ,न्यायालय में महामना
* पंकज चतुर्वेदी, महामना मदनमोहन मालवीय
* वासुदेव शरण, महामना श्री पंडित मदनमोहन मदन मोहन जी मालवी के लेख एवं भाषण
* पद्माकर मालवीय ,मालवीय जी के लेख

mob. 9648619567 Email shaileshbsc9838@gmail

mob. 8299784909 Email. S.Krishana51@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 March 2025 Page No. : 162-165
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

भारत में ई-कॉमर्स का विकास

राजेश बारिया, सहायक प्राध्यापक अर्थशास्त्र,
मां नर्मदा शासकीय महाविद्यालय, सोण्डवा, जिला-अलीराजपुर (म.प्र.)

शोध सार-

भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था के रूप में उभरा है। जापान और जर्मनी को पीछे छोड़ते हुए 2027 तक भारत का तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने का अनुमान है। 759 मिलियन से ज़्यादा इंटरनेट यूज़र्स के साथ भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा ऑनलाइन बाज़ार है। अनुमान है कि 2025 तक देश में 900 मिलियन से ज़्यादा इंटरनेट यूज़र्स होंगे। महामारी के दौरान, भारतीयों ने अपनी रोज़मर्रा की खरीदारी के लिए बड़े पैमाने पर ई-कॉमर्स प्लेटफ़ॉर्म का इस्तेमाल किया है। इससे देश के ई-कॉमर्स बाज़ार को अतिरिक्त बढ़ावा मिला है।

शब्द कुंजी-

ई-कॉमर्स, अर्थव्यवस्था, उपभोक्ता, रोजगार, इंटरनेट, निवेश।

ई-कॉमर्स-

ई-कॉमर्स इलेक्ट्रॉनिक कॉमर्स (Electronic Commerce) का संक्षिप्त रूप है, इसमें इंटरनेट पर उत्पादों और सेवाओं को खरीदना और बेचना जैसे विभिन्न ऑनलाइन लेनदेन शामिल होते है। 1990 के दशक में, खुदरा विक्रेताओं ने व्यापार करने का एक नया तरीका खोजा- इंटरनेट। इसके मूल में इंटरनेट का उपयोग करके वस्तुओं और सेवाओं की खरीदी और बिक्री की जाती है। विशेषज्ञों का अनुमान है कि 2025 तक वैश्विक ई-कॉमर्स बाज़ार का मूल्य 24 ट्रिलियन डॉलर से अधिक हो जाएगा।

ई-कॉमर्स के लाभ-

ई-कॉमर्स से ग्राहकों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाज़ार तक आसानी से पहुंच मिलती है। इसके ज़रिए सामान सीधे उपभोक्ता को मिलता है, जिससे बिचौलियों की भूमिका खत्म होती है और सामान सस्ता मिलता है। ई-कॉमर्स से ग्राहकों का समय बचता है। खरीदारी करने के लिए कहीं जाने की ज़रूरत नहीं होती। ग्राहक 24 घंटे, हफ़्ते के सातों दिन खरीदारी कर सकते हैं।

उपभोक्ताओं की शिकायतों का जल्दी समाधान होता है। ई-कॉमर्स से लेन-देन तेज़ होता है, लेन-देन की लागत कम होती है। ग्रामीण ई-कॉमर्स विकास कृषि उत्पादन और किसानों की बाज़ारों तक पहुंच में सुधार कर सकता है।

ई-कॉमर्स के नुकसान-

ई कॉमर्स को लेकर सुरक्षा खतरे बने रहते है। खराब वेबसाइट सुरक्षा की वजह से अनधिकृत लोग वेबसाइट पर पहुंच सकते हैं और संवेदनशील डेटा देख सकते हैं। भुगतान प्रोसेसर में समस्या होने पर ग्राहकों की क्रेडिट और डेबिट कार्ड की जानकारी लीक हो सकती है। हैकर्स के लिए वित्तीय जानकारी हासिल करना आसान होता है। विलंबित डिलीवरी से ग्राहक असंतुष्ट हो सकते हैं। परिवहन के दौरान उत्पाद के क्षतिग्रस्त होने का जोखिम रहता है। ई-कॉमर्स में ऑनलाइन प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है। ई-कॉमर्स स्टोर व्यवसायों के लिए वरदान और अभिशाप दोनों हो सकते हैं। ग्राहक खरीदने से पहले उत्पादों को छू या महसूस नहीं कर सकते या आज़मा नहीं सकते। ग्राहक की गोपनीयता से समझौता किया जाता है। उच्च शिपिंग लागत, रिटर्न और शिकायतों का प्रबंधन करना की भी समस्याएँ होती है।

भारतीय अर्थव्यवस्था पर ई-कॉमर्स का प्रभाव-

ई-कॉमर्स भारतीय अर्थव्यवस्था का एक केंद्रीय स्तंभ बन रहा है, निवेश के अवसरों को खोल रहा है और लाखों भारतीयों की खरीददारी की आदतों को बदल रहा है। भारत में ई-कॉमर्स का आकर लगातार बढ़ता जा रहा है। अमेज़न और वॉलमार्ट जैसी खुदरा दिग्गज कंपनियाँ भारत पर भारी दांव लगा रही हैं। जेफ बेजोस ने भारत में अधिक निवेश करने का वादा किया और वॉलमार्ट ने 1.2 बिलियन डॉलर के निवेश के साथ भारतीय ई-कॉमर्स मार्केट लीडर फ्लिपकार्ट में अपनी 60% बहुमत हिस्सेदारी का विस्तार किया था। भारत में 63.4 मिलियन सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (MSME) हैं जो 11 करोड़ नौकरियों में से 3.6 करोड़ नौकरियां पैदा करते हैं। रोजगार का एक बड़ा हिस्सा पैदा करने के अलावा, भारत में एमएसएमई विनिर्माण जीडीपी में 6.11%, सेवा गतिविधियों से जीडीपी में 24.63% और कुल निर्यात में 45.56% का योगदान करते हैं। कुल ई-कॉमर्स बाजार 2030 तक 350 बिलियन डॉलर तक पहुंचने की उम्मीद है। भारत ने इंटरनेट और स्मार्टफ़ोन की लोगों तक पहुँच में ऐतिहासिक उछाल देखा है। जून 2023 तक, भारत में इंटरनेट कनेक्शनों की संख्या 'डिजिटल इंडिया' कार्यक्रम द्वारा संचालित होकर उल्लेखनीय रूप से बढ़कर 895 मिलियन हो गई। कुल इंटरनेट कनेक्शनों में से 55% शहरी क्षेत्रों में थे, जिनमें से 97% वायरलेस थे। स्मार्टफ़ोन बेस में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है और सस्ते डेटा की बदौलत इसके और बढ़ने की उम्मीद है। कनेक्शन की संख्या में यह विस्फोट ई-कॉमर्स के लिए एक महत्वपूर्ण इंजन है। इससे भारत के डिजिटल क्षेत्र को मदद मिली है, जिसके 2030 तक 1 ट्रिलियन डॉलर तक पहुँचने की उम्मीद है। इंटरनेट उपयोगकर्ताओं और स्मार्टफोन की पहुंच में इस तेज़ बढ़ोतरी के साथ-साथ बढ़ती आय और नए अनुप्रयोगों ने भारत के ई-कॉमर्स क्षेत्र की वृद्धि को बढ़ावा

दिया है। भारत के ई-कॉमर्स क्षेत्र ने भारत में व्यापार करने के तरीके को बदल दिया है और वाणिज्य के विभिन्न क्षेत्रों को खोल दिया है। एसोचैम की रिपोर्ट में भुगतान समाधान लागत को तर्कसंगत बनाकर, सीमा शुल्क प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करके, एक्सप्रेस निर्यात आंदोलन को सुविधाजनक बनाकर और ई-कॉमर्स निर्यात केंद्रों की स्थापना करके ई-कॉमर्स निर्यात को बढ़ाने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है, जो विदेश व्यापार नीति में सरकार की प्रतिबद्धता के अंतर्गत आता है। भारत ने 2030 तक 1 ट्रिलियन डॉलर के व्यापारिक निर्यात का लक्ष्य रखा है, जिसका लक्ष्य 12.2% की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर हासिल करना है। ई-कॉमर्स का वैश्विक व्यापारिक व्यापार में लगभग 6.6% हिस्सा होगा। कई उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में बढ़ते ई-कॉमर्स के प्रभाव से स्पष्ट है, ई-कॉमर्स अर्थव्यवस्था को कई तरह से लाभ पहुंचाता है, जिसमें मोबाइल, एयर कंडीशनर, रेफ्रिजरेटर और अन्य उपकरणों जैसे उपभोक्ता खर्च का विस्तार और विविधीकरण शामिल है, जिससे निर्माताओं और खुदरा विक्रेताओं दोनों को लाभ होता है। डिजिटल स्टैक द्वारा समर्थित देश भर में इसकी व्यापक पहुंच के साथ, ई-कॉमर्स कई तरह से मदद करता है, जिससे उपभोक्ताओं को आसान पहुंच, मुद्रास्फीति नियंत्रण और कीमतों के स्थिरीकरण के साथ अधिक विकल्प मिलते हैं। यह रोजगार सृजन, जीवन की गुणवत्ता में सुधार और जीवनशैली और टिकाऊ वस्तुओं के लिए उनके खर्च की बेहतर योजना बनाने में भी मदद करता है। यह भारत और विदेशों में इनपुट और बेहतर मार्केटिंग को बढ़ावा देने के साथ ही कृषि जैसे अन्य क्षेत्रों के विकास में भी मदद करता है।

सरकारी पहल जैसे डिजिटल इंडिया और स्टार्टअप इंडिया का उद्देश्य तकनीकी क्षेत्र को बढ़ावा देना और उद्यमशीलता को प्रोत्साहित करना है।

डिजिटल इंडिया - इसका उद्देश्य भारत को बेहतर इंटरनेट अवसंरचना के माध्यम से ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों को जोड़कर डिजिटल समाज और अर्थव्यवस्था में परिवर्तित करना है। इस पहल से इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या में वृद्धि हुई है। सूचना प्रौद्योगिकी तक पहुंच को सुविधाजनक बनाने के द्वारा डिजिटल इंडिया तेजी से बढ़ती ई-कॉमर्स क्षेत्र को बढ़ावा दे रहा है।

स्टार्टअप इंडिया - 2016 में नवाचार और उद्यमियों को बढ़ावा देने के लिए स्टार्टअप इंडिया सरकार की एक और महत्वपूर्ण पहल है। कर प्रोत्साहन, प्रशासनिक सरलीकरण और वित्तपोषण के माध्यम से स्टार्ट-अप इंडिया नए- नए स्टार्ट-अप्स के लिए एक पारिस्थितिकी तंत्र बनाता है। इस पहल ने हजारों नए व्यवसायों के निर्माण में योगदान दिया है, इस प्रकार देश के आर्थिक गतिशीलता को मजबूत किया है।

ई-कॉमर्स का विनियमन-

उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 2019 का उद्देश्य उपभोक्ताओं को व्यवसाय, सेवाओं और उत्पादों में अधिक पारदर्शिता प्रदान करना है। जुलाई 2020 के अंत में, भारत सरकार ने ई-कॉमर्स खुदरा विक्रेताओं के लिए एक नया कानून पेश किया। इसके प्रावधानों के अनुसार ई-रिटेलरों को

अपने प्लेटफ़ॉर्म पर रिटर्न, रिफंड, एक्सचेंज, वारंटी, डिलीवरी और शिपिंग, भुगतान के तरीके और शिकायत प्रक्रिया आदि का विवरण प्रदान करना आवश्यक होगा। उत्पादों पर भी मूल देश का उल्लेख होना चाहिए। भारतीय ई-कॉमर्स इकाई के मार्केटप्लेस पर अपने सामान और सेवाएँ प्रदान करने वाली अंतर्राष्ट्रीय कंपनियों को उस इकाई को उपरोक्त विवरण प्रदान करना आवश्यक होगा। 2020 से, ई-कॉमर्स प्लेटफ़ॉर्म को अपने प्लेटफ़ॉर्म पर विक्रेताओं के बारे में उपभोक्ताओं को यथासंभव अधिक जानकारी प्रदान करने की आवश्यकता होगी। इसमें कंपनी का नाम, पता, ग्राहक सेवा नंबर और विक्रेता या उत्पादों के बारे में कोई समीक्षा या अन्य प्रतिक्रिया शामिल है। उत्पाद पर कुल कीमत के साथ-साथ शिपिंग लागत जैसे किसी भी छिपे हुए अतिरिक्त शुल्क का उल्लेख होना चाहिए, और प्लेटफ़ॉर्म को अनुचित लाभ कमाने के लिए पेश किए गए सामान और सेवाओं की कीमत में फेरबदल करने की अनुमति नहीं है। ई-कॉमर्स नियमों को भारत में केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण (CCPA) द्वारा लागू किया जाता है, और नए अधिनियम के उल्लंघन पर भारी जुर्माना लगाया जाता है।

निष्कर्ष-

भारत का ई-कॉमर्स मार्केट लगातार बढ़ रहा है, जो निवेशकों और उद्यमियों के लिए व्यापार के विस्तार का अवसर पेश करता है। वर्तमान में ई-कॉमर्स ने दैनिक जीवन में एक अभिन्न स्थान बना लिया है। न सिर्फ बड़े शहरों बल्कि छोटे शहरों तथा ग्रामीण क्षेत्र में भी लगातार इसका विस्तार हो रहा है। ई-कॉमर्स को विभिन्न तरीकों से सरकारी समर्थन की आवश्यकता है, जिसमें विनियमन, लॉजिस्टिक्स, बुनियादी ढांचा, डिजिटल कानून, साइबर अपराध की रोकथाम, द्विपक्षीय समझौतों में सीमा पार ई-कॉमर्स व्यापार के प्रावधान आदि शामिल हैं। चूंकि भारत 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनने की दौड़ में है, इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि हम अवसरों के नए दरवाजे खोले और साथ ही नई चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार रहें।

सन्दर्भ-

1. ठाकुर प्रदीप (2020), भारत में ई-कॉमर्स की सक्सेस स्टोरी, प्रभात प्रकाशन
2. https://www.business-standard.com/economy/news/e-commerce-as-a-major-building-block-for-viksit-bharat-2047-124072201249_1.htmlcommerce
3. https://www.drishtiias.com/hindi/daily-updates/daily-news-editorials/navigating-india-s-e-commerce-crossroads
4. https://www.indiaconnected.co.uk/blog-articles/market-focus-e-commerce-in-india/
5. https://www.iccrindia.org/hi/limpact-de-le-commerce-sur-leconomie-indienne/

rajeshbariya0808 @gmail.com mob. No. 9669324831

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 March 2025 Page No. : 166-171
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Rural Poverty in India:- A Brief Perspective on Sociological Challenges

Pragya Tiwari, Senior Doctoral Fellow,
L.C.S.S. Government Post Graduate College Kapkot, Bageshwar Uttarakhand.
(SSJ University, Almora Uttarakhand)

Abstract

Poverty is that state, where people become unable to access the minimum needs of human life. These needs comprises the fundamental goods and services alongside social participation As per the NITI Aayog's India- National Multidimensional Poverty Index 2023, There is 19.28% (2019-2021) fastest decline in percentage of Multidimensional poor in rural areas from 32.59% (2015-2016). But the differentiation in multidimensional poverty still exist between rural and urban areas, with the proportion of multidimensional poor in 2019-21 being 19.28% in rural areas compared to 5.27% in urban areas. Poverty is defined as the lack of fundamental services and unequal opportunities to access the resources. To eradicate rural poverty, sociological challenges becomes one of the reason where to deal with it. The coordination between these challenges and the Modern developments system in India requires an inclusive solution, which can help India in completing to it's Sustainable Goal 1.2 by 2030.

Key Words:- Rural Poverty, Social Challenges, Self Help, Development.

Introduction

Poverty is defined as inability to access the fundamental needs of human life. It is also a process of multidimensional and complexities with the state of existence. To examine poor and poverty, the socio- economic, political and regional effects are some common factors where the concern about the poverty is considered. It exists in form relative poverty and absolute poverty. Absolute poverty affects the developing countries where vulnerable sections of society do not command the basic goods and services. India is home to more than 6 lakh villages, with more than 2 lakh Gram Panchayats and Rural Local Bodies, which is the backbone of the nation's rural landscape. Between 2011 and 2019, India halved its extreme poverty rate (below $2.15/day, 2017 PPP), as per World Bank data. These sections are called by different nomenclature like weaker sections, vulnerable groups, rural poor.[1]

From the sociological point of view, generally poverty is considered a condition of deprivation which the effect of mal- distribution of resources. In India, approximately 908.9 population is rural population. Rural poverty refers to poverty in rural areas, including the factors of rural society. The environment of Rural economy, social and political system gives rise to the poverty in rural areas. As per data of world bank, 80% of the extreme poor live in rural areas where up to half of their income comes from sources other than farming.[2] Their low labour productivity affects the country's social and economic growth. Therefore it becomes essential to find out the challenges in spite of the implementation of multiple public policies and developing programmes.

Characteristics of Rural Poverty in India

1. Maximum number of people are living in rural areas.
2. Their family sizes are bigger than the average number.
3. Agricultural sector is the main source of their income.
4. Inequality and inequity of the resources.
5. Comparatively low quality of human resources.
6. Low income and low purchasing power.
7. The income is used for daily needs not sufficient for saving culture.

Sociological Challenges and Rural poverty

Social challenges are those conditions or behaviours that impacts negatively at personal and professional level to the communities or groups of people. These are based on multifactorial causes and demands the complex solutions. Economists and sociologist like Amerty Sen, Peter Townsend, Paul Streeten, Robert Chambers and others are the prominent advocators of this approach of this kind of poverty. They highlighted various forms of deprivation (economic, educational, health, social status and others) experienced by the poor.[3] The major challenges are as follows:-

1. Caste, Class, Educational and Infrastructure Dynamics

Caste is one of the major contributor to rural poverty in India as it rigid hierarchical system in society. It prevails historically, because it restricts lower caste individuals (schedule caste and schedule tribes and other marginalised groups) from accessing better education, employment opportunities, land ownership, and social mobility, and resources. D. Spencer Hatch writes, "in my mind the main obstacle to his advance and progress lies in the psychology of the rural worker himself, owing to the custom and habit of caste and tradition that has governed his life and actions for generations."[4] Before and after the independence this lead to a cycle of deprivation and poverty, especially in highly entrenched caste - based social structure. It increases the discriminatory practices which constraints them from accessing not only financial and economic participation but also trapping in low-paying jobs and marginal social positions. Although due to technological changes and social upliftment's programmes running by the government has changed the caste based relations in society but this has created the decrease in traditional occupations like handicraft and cottage industries.

Moreover, rural poverty manifests in several ways. Socially, poverty is reflected in low literacy rates and poor access to quality education. The Census of India (2011) revealed that rural literacy rates lag behind their urban counterparts, creating barriers to upward mobility. Health disparities are another concern, as many rural families lack affordable healthcare services, leading to higher morbidity and malnutrition rates.[5] The lack of quality education in rural areas tends to unskilful productivity which affects the not only the economic development but also social civic sense. It may happen that, the lack of education and awareness to the rural youth can convert them in criminal like cyber, Naxalite, Terrorist and Drugs mafia's extra. In addition to this, lack of infrastructure is significant barrier to the country's growth and development. The reach to the basic services such as health, education and market places, road infrastructure, Digital divide and contaminated drinking water etc are some fundamental challenges that impacts the social growth of Indian villages. The lack of infrastructure considerably impedes the advancement of initiatives aimed at rural development.

2. Religious Dynamics

Indian society is primarily an identity-based society.[6] Religion is one of them that lead to decrease productivity of human beings. In India Hindu and Muslims communities are major participants of he economical and social growth of country. But certain Hindu practice for example theory of "karma" justifies poverty as a result of past birth actions. It tends to discourage efforts to improve economic conditions of the poor people. Moreover, what is often interpreted as lack of desire for better things. Accepting the theory of Kismat and Karma, there

is too willing resignation to fate with a religious conviction that it is the part of righteousness to be resingned.[7] If anyone asks to poor that why they are poor most of the poor people used to reply that this was their own fault, or caused by their fate. It means that they were intended by the fate to be poor.[8] On the other hand, lower and poor Muslim groups are found be involved in rack picking areas, unhygienic risky areas, beggar work etc. This restrict to a Muslim little child in access of educational and health facilities which is far away from their better social upliftment.

3. The Problem of Leadership in Rural Areas

This is one of the major challenge in rural areas where it can bee seen that, the especially favoured boy in the Indian village who goes on to distant colleges of the institution rarely come back to live and work in the village apart from the party and functions of the families. On the other hand, the villagers are proud of these distinguished sons, they talk about the them and look forward to their returning sometime got a few day's visit. The ordinary man finds it very difficult to do any leading in his home village. His poverty and lack of education alienate him from that prestige which is necessary for leadership and caste tends to confine his association and influence to a narrow circle.[9] This affects not only a village leader efficiency but also the holistic development of village community. The low quality of village leadership and its incoordination with traditional and modern norms and notions increases the possibilities of rural poors to be more poor.

4. The Condition of Agricultural Labour

In India, according to the census data 2011, 54.9% (144.3 million) population is agricultural labour.[10] On the other hand it is the country of most of marginalised and small farmers. Agricultural labour, workers and cultivators is one the most distinguishing feature of rural economy of India, who involved crop production and consequently and dispossessed peasantry. Their growth reflects the colonial legacy of under food security of the country. Maximum number of them are from socially economically poorest section of society for example historically deprived social groups, displaced handicraftsmen development and the inadequacies of planning intervention in the past. The biggest social challenge is for them that they usually suffers from under development, asset lessness, unemployment, low wages, under-nutrition, illiteracy, inequality and social backwardness. Furthermore, they are not much benefited unless they helped simultaneously in every phase of their life and regard to every relationship he bears to others. There are, for example middleman who are present at every harvest. The money lender is one of these. But the oppression, discrimination and exploitation by them especially in 20th and 21st century has made agricultural labours just like hanging wall which has no its defined location and material.

Although, the social relations of oppression (systemic harm arising from social practices) of Dalits and Adivasis have changed over time but they continue to be pervasive in the way capitalism has expanded across the country; most notably Adivasis and Dalits have been kept at the bottom of the social and economic hierarchies in the new economies.[11] In addition to this, the marginalised farmer small size of holdings, and the various conditions of life and servitude, make it quite impossible for a large percentage of rural families to maintain themselves adequately, without extra source of income.

The another challenge of rural poverty is the threat from power and politics of rich people. Rich people hit the poor people and earn their profit. The minimum coordination between the psychology of rich and poor people is one of the prevailing challenge to rural poverty not only in comparison of urban and rural areas but also in within the families. It creates economical as well as sociological stratification and difference.

5. Waste Time

Despite varying definitions of 'youth' in India, the country's rural youth population stand at approximately 67-68 percent of India's total population. Of the total rural youth population, the male-female ratio remains almost equal at about 52 percent and 48 percent, respectively. Given such statistics, there is no doubt that the actual demographic dividend of the country is titled towards rural India, with the potential to foster rapid economic progress through leveraging the existing massive human capital base.[12] When it comes to sources of employment we see the majorly youth is involved in crop production which depends upon the seasonal monsoon. Because of marginalised land to cultivate, a part of the explanation of the poverty of employ a man for more than a comparatively small number of days in the year. He works steadily when he ploughs the land and puts in his crops, and again at harvest time, but for the most part of the year he has to do fill his time , still knows no other revenue producing work to which he can turn his hand.[13]

Today in the world of globalisation, privatisation and liberalisation a country can not depend only on the agricultural production. India is currently home to 378 million young people. However, two-thirds of this population live in rural areas and are typically disconnected from the country's economic growth. Rural India faces significant challenges, making up 70% of the population but contributing only about 46% to the GDP.[14]

Moreover, being of technological changes the youth is still limited socio – economic employment opportunities which can upbring their lifestyle. What becomes absolutely essential in this context is to constantly close the gap between the demand and supply in the domain of rural skilling.[15] On the other hand, the supply side needs the to implement better incentives and innovative as per the skills of diverse communities, socio- economic system and the regional diversities. Yet the digital divide is another issue should be concerned. There is requirement for better reach of the internet technology to the rural youth not only from the employment view but also from the view of social mobility and not being isolated from the modern changing world and new thoughts.

6. Challenges Related with Rural Women

Indian Rural women plays key role in social, economic, and environment transformation in society. Historically and Geographically they bear invisible hard work for their family. If we look around us, we find them continuously engaged in work either in agricultural sector or non agricultural sector like factories in spite of any difficult situations. After the independence, Where poverty alleviation was a fundamental objective in national policy, the rural poor and the other oppressed minorities were viewed as the recipients of the benefits of development.[16] Women led polices and schemes such as, Prime minister's employment generation program (PMEGP), National Livelihoods Mission, Deen Dayal Upadhayay Grameen Kaushalya Yojana (DDU-GKY), Pradhan Mantri Kaushal Vikas Yojana (PMKVY), Beti Bachao Beti Padhao, Pradhan Mantri Matri Vandana Yojna(PMMVY), etc. In rural communities, agriculture and allied sector is the primary source of livelihood that includes 80 percent of all economically active women, out of which 33 percent constitute agricultural labour force and 48 percent are self-employed farmers. These has made significant contributions in creating gender parity and socio-economic empowerment of women in India. But the challenges for them reduced by the change of time but still it did not give comparatively better results from the view of holistic empowerment.

Although women may have benefited from the general improvement of living standards, their gains have been small compared with the persistent inequalities between men and women in many parts of rural India. In some cases, their relative position has actually declined. This decline is linked in part to the process of Sanskritization and the institution of dowry, and in part to the reduced participation of women in the labour force following occupational diversification and technological change.[17]

Moreover, psychologically women's income is considered a supplementary income when a husband's income becomes insufficient for full fulling the needs of family. In addition to this, in power politics yet the women had provided the participation in Gram Panchayat's but the concept of "Pati Pradhan" still challenging in states of India. It tends to restrict women not only in local decision making but also their social status. Further more, How much one can expect from such a scheme depends, to some extent, on how well represented the poor are in local decision-making. This, and factors such as village solidarity, are likely to be affected by the degree of polarization in village living standards.[18]The another challenge of rural women are the limited access to the educational facilities for example in the hilly states of India, Girls has to cover 3 – 4 km to reach the school which consumes their most of the time. It affects their health also consequently turn into malnutrition.

Conclusion

The concern about the sociological challenges of rural poverty in India are significant. Much of the population live in villages and depends on agriculture and its allied sectors or informal sectors where they fight for poverty and their struggle goes on for their own social respect. The poorer rural people feel their ignorance, their poverty, their comparative weakness.[19] They keep a hope of better things that would be given by or arranged by the Government, some philanthropy or charity.[20] To reduce these challenges there is need in the collaboration between the social, economic, development policies where poors must be involved in local decision making. A sensible rural development strategy would involve paying much closer to the areas where the poor fight for respect and resources, and subsequently supporting the negotiating strategies of the poor and the demands that poor women and men make on the state or on local elites.[21]

On the other hand, self help is the solution, where it gives growth to a permanently happy state. The old panchayat was a self help system that used to self help or self organised solution to its problems. But now, it has changed its structure with upcoming of the modern development systems. There is requirement to collaborate between the old panchayat systems and modern policies of growth and development so that the accessibility to the resources and the gap among the rich and poor can be filled. It would be not only economically, socially but also psychologically that can have long run positive impact on rural people of India. Connecting the rural developmental programmes to the social centres may have affirmative results in reducing the challenges. This will require a interdisciplinary approach, to the social challenges like caste and class dynamics, fundamental services, waste time, challenges that affects the women and other marginalised groups of the rural India.

References:-

1. **(World Bank Poverty and Inequality Portal and Macro Poverty Outlook, Spring 2023). https://www.worldbank.org/en/country/india/overview**
2. **https://ieg.worldbankgroup.org/sites/default/files/Data/RNFEbrochureweb.pdf (introduction)**
3. Erappa, S. Dynamics of Rural Poverty in India. Discovery Publishing House New Delhi.1996.page no.1.
4. Hatch, Spencer D.Up from Poverty in Rural India. Oxford University Press.1932.page no.1**.**
5. **Rural Poverty in India: Causes, Manifestations, and Recent Decline (2023-24 Analysis) https://www.indiafarm.org/agriculture/extension/rural-poverty-india/**
6. Thorat, Amit. Ethnicity, Caste and Religion: Implications for Poverty Outcomes. Economic and Political Weekly, Vol. 45, No. 51 (DECEMBER 18-24, 2010).
7. Hatch, Spencer D.Up from Poverty in Rural India. Oxford University Press.1932.page no.23.

8. Beck, Tony. The experience of Poverty Fighting for Respect and Resources in Village India. Intermediate Technology Publications.1994.page no.172.
9. Hatch, Spencer D.Up from Poverty in Rural India. Oxford University Press.1932.page no.22.
10. Agricultural Statistics at a Glance 2022. Government of India Ministry of Agriculture & Farmers Welfare Department of Agriculture & Farmers Welfare Economics & Statistics Division. https://desagri.gov.in/wp-content/uploads/2023/05/Agricultural-Statistics-at-a-Glance-2022.pdf
11. Alpa Shah, Jens Lerche, Richard Axelby, Dalel Benbabaali, Brendan Donegan, Jayaseelan Raj, Vikramaditya Thakur, 2018. Ground Down by Growth: Tribe, Caste, Class and Inequality in Twenty-First Century India. London: Pluto and New Delhi: OUP.
12. Hatch, Spencer D.Up from Poverty in Rural India. Oxford University Press.1932.page no.15
13. Observer research foundation. https://www.orfonline.org/expert-speak/indias-rural-youth-and-sdgs
14. Global opportunities youth network. State of rural youth employment 2024. https://goyn.org/wp-content/uploads/2024/08/State-of-Rural-Youth-Employment-Report.pdf
15. Observer research foundation. https://www.orfonline.org/expert-speak/indias-rural-youth-and-sdgs
16. Wignaraja, Poona. Women, Poverty and Resources. Sage Publications.1990 page no. 20.
17. Jayaraman, Rajshri and Lanjouw, Peter. The Evolution of Poverty and Inequality in Indian Village**s.** February 1999.The World Bank Research Observer, Vol 14, no.1.
18. Jayaraman, Rajshri and Lanjouw, Peter. The Evolution of Poverty and Inequality in Indian Village**s.** February 1999.The World Bank Research Observer, Vol 14, no.1.
19. Hatch, Spencer D.Up from Poverty in Rural India.Oxford University Press.1932.page no.5.
20. Ibid, page no.5
21. Erappa, S. Dynamics of Rural Poverty in India. Discovery Publishing House New Delhi.1996.page no.192.

E-mail:- pragyatewari96@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115
Impact Factor: 8.642 March 2025 Page No. : 172-176
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

ਸਿੱਖ ਧਰਮ ਵਿੱਚ ਸੇਵਾ: ਸਮਕਾਲੀਨ ਪ੍ਰਸੰਗਿਕਤਾ

ਜਸਮੀਤ ਸਿੰਘ

ਵਾਰਡ ਨੰਬਰ 5.ਘਰ ਨੰਬਰ 57. ਨਵੀਂ ਬਸਤੀ ਗੋਨਿਆਣਾ ਮੰਡੀ ਜਿਲਾ ਬਠਿੰਡਾ, ਪੰਜਾਬ

ਸੇਵਾ ਦੇ ਸੰਕਲਪ ਨੇ ਸਿੱਖ ਧਰਮ ਦੀ ਰਾਸ਼ਟਰੀ ਅਤੇ ਅੰਤਰ - ਰਾਸ਼ਟਰੀ ਪੱਧਰ 'ਤੇ ਵਿਲੱਖਣ ਪਹਿਚਾਣ ਬਣਾਉਣ ਵਿੱਚ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਭੂਮਿਕਾ ਨਿਭਾਈ ਹੈ। ਸਿੱਖ ਧਰਮ ਵਿੱਚ ਚਲਾਏ ਜਾਂਦੇ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਸੇਵਾ ਕਾਰਜਾਂ ਵਿੱਚੋਂ 'ਲੰਗਰ ਦੀ ਸੇਵਾ' ਤਾਂ ਸਿੱਖ ਧਰਮ ਦਾ ਮੁੱਢਲਾ ਪਛਾਣ ਚਿੰਨ੍ਹ ਬਣ ਗਈ ਹੈ।

ਮੁੱਖ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਸਮਝਣ ਵਾਲੀ ਗੱਲ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਹੋਰਨਾ ਧਰਮਾਂ ਦੇ ਮੁਕਾਬਲੇ ਸਿੱਖ ਧਰਮ ਵਿੱਚ ਸੇਵਾ ਦਾ ਸੰਕਲਪ ਵਧੇਰੇ ਭਾਰੂ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਕਿਵੇਂ ਅਤੇ ਕਿਉਂ ਉਜਾਗਰ ਹੋ ਗਿਆ ਹੈ। ਇਸ ਸਬੰਧੀ ਸਿੱਖ ਧਰਮ ਦੇ ਸੰਸਥਾਪਕ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ ਦੇ ਵਿਲੱਖਣ ਵਿਚਾਰਾਂ ਨੂੰ ਸਮਝਣਾ ਬਹੁਤ ਜਰੂਰੀ ਹੈ। ਵੱਖ-ਵੱਖ ਵਿਦਵਾਨਾਂ ਨੇ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਦੇ ਆਗਮਨ ਸਬੰਧੀ ਆਪਣੇ ਵਿਚਾਰ ਪ੍ਰਗਟ ਕਰਦਿਆਂ ਇਹ ਦਰਸਾਇਆ ਹੈ ਕਿ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ ਦਾ ਜਨਮ ਉਸ ਵੇਲੇ ਹੋਇਆ ਜਦੋਂ ਸਾਡਾ ਸਮੁੱਚਾ ਸਮਾਜ ਹਰ ਪੱਖ ਤੋਂ ਗਿਰਾਵਟ ਵੱਲ ਜਾ ਰਿਹਾ ਸੀ। ਧਾਰਮਿਕ ਪਖੰਡਵਾਦ ਸਿਖਰ ਤੇ ਪੁੱਜ ਗਿਆ ਸੀ। ਰੱਬ ਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਲਈ ਘਰ ਤਿਆਗ ਕੇ ਜੰਗਲਾਂ ਅਤੇ ਪਹਾੜਾਂ ਵਿੱਚ ਜਾ ਕੇ ਤੱਪ ਕਰਨ ਦੀ ਪ੍ਰਵਿਰਤੀ ਭਾਰੂ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਚਲਿਤ ਸੀ। ਯੋਗ ਸਾਧਨਾ ਰਾਹੀਂ ਸਰੀਰ ਨੂੰ ਸਾਧ ਕੇ ਜਾਂ ਸਰੀਰ ਨੂੰ ਵੱਖ ਵੱਖ ਪ੍ਰਕਾਰ ਦੇ ਤਸੀਹੇ ਦੇ ਕੇ ਰੱਬ ਨੂੰ ਖੁਸ਼ ਕਰਨ ਦੇ ਪਖੰਡ ਲਗਾਤਾਰ ਜਾਰੀ ਸਨ। ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਨੇ ਅਜਿਹੇ ਧਾਰਮਿਕ ਪਾਖੰਡਵਾਦ ਦਾ ਸਖਤ ਸ਼ਬਦਾਂ ਵਿੱਚ ਵਿਰੋਧ ਕੀਤਾ ਅਤੇ ਇਹ ਵਿਚਾਰ ਸਥਾਪਿਤ ਕੀਤਾ ਕਿ ਰੱਬ ਤਾਂ ਮਨੁੱਖ ਦੇ ਅੰਦਰ ਵੱਸਦਾ ਹੈ। ਰੱਬ ਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਲਈ ਕਿਤੇ ਵੀ ਬਾਹਰ ਜਾਣ ਦੀ ਲੋੜ ਨਹੀਂ ਸਗੋਂ ਗ੍ਰਹਿਸਥੀ ਜੀਵਨ ਗੁਜ਼ਾਰਦਿਆਂ ਹੀ ਮਨੁੱਖ ਰੱਬ ਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਕਰ ਸਕਦਾ ਹੈ।ਇਸ ਸਬੰਧ ਵਿੱਚ ਗੁਰੂ ਸਾਹਿਬ ਦੀ ਸਿਧ ਗੋਸ਼ਟਿ ਬਾਣੀ ਵਿਚਲੇ ਵਿਚਾਰ ਬੜੇ ਹੀ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਹਨ। ਸਿਧਾਂ ਨਾਲ ਵਿਚਾਰ ਕਰਦਿਆਂ ਜਦੋਂ ਇਹ ਚਰਚਾ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਇਹ ਸਵਾਲ ਉੱਠਦਾ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਦੁਨੀਆ ਜਿਸ ਵਿੱਚ ਮੋਹ ਮਾਇਆ ਦਾ ਪਸਾਰ ਚਾਰੇ ਪਾਸੇ ਭਾਰੂ ਹੈ ਤਾਂ ਇਸ ਦੁਨੀਆ ਵਿੱਚ ਇੱਕ ਘਰ- ਗ੍ਰਹਿਸਥੀ ਸਾਂਭਣ ਵਾਲਾ ਇਨਸਾਨ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਕਿਵੇਂ ਕਰ ਸਕਦਾ ਹੈ।

ਦੁਨੀਆ ਸਾਗਰੁ ਦੁਤਰੁ ਕਹੀਐ ਕਿਉ ਕਰਿ ਪਾਈਐ ਪਾਰੇ ॥
ਚਰਪਟੁ ਬੋਲੈ ਅਉਧੂ ਨਾਨਕ ਦੇਹੁ ਸਚਾ ਬੀਚਾਰੇ ॥1

ਤਾਂ ਗੁਰੂ ਸਾਹਿਬ ਉੱਤਰ ਦਿੰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਜਿਵੇਂ ਚਿੱਕੜ ਦੇ ਵਿੱਚ ਰਹਿ ਕੇ ਵੀ ਕਮਲ ਦਾ ਫੁੱਲ ਖਿ਼ੜਿਆ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਮਿਰਗਾਈ ਪਾਣੀ ਵਿੱਚ ਤਰਦੀ ਹੋਈ ਵੀ ਆਪਣੇ ਖੰਭ ਗਿੱਲੇ ਨਹੀਂ ਹੋਣ ਦਿੰਦੀ ਉਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਘਰ- ਗ੍ਰਹਿਸਥੀ ਦਾ ਜੀਵਨ ਜਿਉਂਦਿਆਂ ਹੋਇਆ ਇਨਸਾਨ ਸ਼ਬਦ- ਗੁਰੂ ਦੇ ਲੜ ਲੱਗ ਕੇ, ਇਸ ਸੰਸਾਰ ਵਿੱਚ ਰਹਿੰਦਿਆਂ, ਪਰਮਾਤਮਾ ਨੂੰ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰ ਸਕਦਾ ਹੈ।

ਜੈਸੇ ਜਲ ਮਹਿ ਕਮਲੁ ਨਿਰਾਲਮੁ ਮੁਰਗਾਈ ਨੈ ਸਾਣੇ ॥
ਸੁਰਤਿ ਸਬਦਿ ਭਵ ਸਾਗਰੁ ਤਰੀਐ ਨਾਨਕ ਨਾਮੁ ਵਖਾਣੇ ॥
ਰਹਹਿ ਇਕਾਂਤਿ ਏਕੋ ਮਨਿ ਵਸਿਆ ਆਸਾ ਮਾਹਿ ਨਿਰਾਸੋ ॥
ਅਗਮੁ ਅਗੋਚਰੁ ਦੇਖਿ ਦਿਖਾਏ ਨਾਨਕੁ ਤਾ ਕਾ ਦਾਸੋ ॥੫॥2

ਅਜਿਹੇ ਵਿਚਾਰਾਂ ਨੂੰ ਪੱਕਿਆਂ ਕਰਨ ਲਈ ਆਮ ਲੋਕਾਂ ਦੇ ਮਨਾਂ ਅੰਦਰ ਪਰਲੋਕ ਦੇ ਨਾਲ- ਨਾਲ, ਇਹਲੋਕ ਦੀ ਮਹੱਤਤਾ ਨੂੰ ਸਥਾਪਿਤ ਕਰਨਾ ਬਹੁਤ ਜਰੂਰੀ ਸੀ। ਭਾਵ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੀ ਸਿਰਜੀ ਹੋਈ ਦੁਨੀਆਂ ਦੇ ਨਾਲ ਮੋਹ ਪਵਾਉਣਾ ਵੀ ਅਤਿ ਜਰੂਰੀ ਸੀ। ਇਹਲੋਕ ਨਾਲ ਜੁੜਨ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਹੀ ਮਨੁੱਖ ਪਰਿਵਾਰ ਅਤੇ ਸਮਾਜ ਪ੍ਰਤੀ ਆਪਣੇ ਬਣਦੇ ਫਰਜ਼ਾਂ ਦੀ ਪੂਰਤੀ ਲਈ ਚੇਤਨ ਹੋਵੇਗਾ। ਸੋ ਮੂਲ ਸਮਝ਼ਣ ਵਾਲਾ ਵਿਚਾਰ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦੁਆਰਾ ਸਿਰਜੇ ਗਏ ਇਸ ਸਮੁੱਚੇ ਬ੍ਰਹਿਮੰਡ ਨਾਲ ਸਧਾਰਨ ਲੋਕਾਈ ਆਤਮ-ਸਾਤ ਕਿਵੇਂ ਹੋਵੇ? ਇਸ ਸਮੁੱਚੇ ਬ੍ਰਹਿਮੰਡ ਸਬੰਧੀ ਜਨ- ਸਧਾਰਨ ਅੰਦਰ ਜਿੰਮੇਵਾਰੀ ਦਾ ਅਹਿਸਾਸ ਕਿਵੇਂ ਉਜਾਗਰ ਹੋਵੇ ? ਗੁਰਮਤਿ ਵਿਚਾਰਧਾਰਾ ਇਸ ਸਮੱਸਿਆ ਦਾ ਹੱਲ, ਇਹਲੋਕ ਨਾਲ ਜਨ- ਸਧਾਰਨ ਦਾ ਮੋਹ ਪੁਆ ਕੇ ਹੀ ਲੱਭਦੀ ਹੈ। ਇਸੇ ਲਈ ਤਾਂ ਸਮੁੱਚੇ ਗੁਰਮਤਿ ਫਲਸਫੇ ਵਿੱਚ ਇਹ ਵਿਚਾਰ ਦ੍ਰਿੜਾਇਆ ਗਿਆ ਹੈ ਕਿ ਪਰਮਾਤਮਾ ਕਿਤੇ ਦੂਰ ਨਹੀਂ ਵਸਦਾ ਸਗੋਂ ਇਸ ਸਮੁੱਚੇ ਸੰਸਾਰ ਵਿੱਚ ਹੀ ਵਸਦਾ ਹੈ।

ਇਹੁ ਜਗੁ ਸਚੈ ਕੀ ਹੈ ਕੋਠੜੀ ਸਚੇ ਕਾ ਵਿਚ ਵਾਸੁ ॥3

ਸੋ ਜਨ ਸਧਾਰਨ ਇਸ ਸੰਸਾਰ ਵਿੱਚ ਪਰਮਾਤਮਾ ਦਾ ਵਾਸਾ ਸਮਝ਼ ਕੇ ਆਪਣੀ ਚੇਤਨਾ ਅੰਦਰ 'ਨਿਸ਼ਕਾਮ ਸੇਵਾ' ਦੀ ਭਾਵਨਾ ਨੂੰ ਜਗਾਵੇ ਤਾਂ ਜੋ ਇਸ ਬ੍ਰਹਿਮੰਡ ਵਿੱਚ 'ਨਿਸ਼ਕਾਮ ਸੇਵਾ' ਕਰਨ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਹੀ ਮਨੁੱਖ ਸਹੀ ਅਰਥਾਂ ਵਿੱਚ ਪਰਮਾਤਮਾ ਨੂੰ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰ ਸਕਦਾ ਹੈ। 'ਨਿਸ਼ਕਾਮ ਸੇਵਾ' ਦਾ ਸੰਕਲਪ ਅਸਲ ਵਿੱਚ ਗੁਰਮਤਿ ਫਲਸਫੇ ਨੂੰ ਪੱਕੇ- ਪੈਰੀਂ ਕਰਨ ਲਈ ਇੱਕ ਬਹੁਤ ਜਰੂਰੀ ਕਦਮ ਹੈ, ਪਰ ਆਧੁਨਿਕ ਯੁੱਗ ਵਿੱਚ ਇਸ ਸੰਕਲਪ ਬਾਰੇ ਕਈ ਚਰਚਾਵਾਂ ਜਾਰੀ ਹਨ।

ਆਧੁਨਿਕ ਪੂੰਜੀਵਾਦੀ ਖਪਤਵਾਦੀ, ਨਿੱਜਵਾਦੀ ਯੁੱਗ ਵਿੱਚ ਇਹਲੋਕ ਨਾਲ ਜੁੜਨ ਲਈ 'ਸੇਵਾ ਦਾ ਸੰਕਲਪ' ਬਹੁਤ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਭੂਮਿਕਾ ਨਿਭਾਅ ਰਿਹਾ ਹੈ।ਇਸ ਸਬੰਧੀ ਜਦੋਂ ਅਸੀਂ ਆਧੁਨਿਕ ਮਨੋਵਿਗਿਆਨ ਅਤੇ ਉੱਤਰ ਆਧੁਨਿਕਤਾ ਦੀ ਗੱਲ ਕਰਦੇ ਹਾਂ ਤਾਂ ਇਸ ਦੇ ਵਿਚਾਰਕਾਂ ਨੇ ਇਹ ਵਿਚਾਰ ਸਥਾਪਿਤ ਕਰਨ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕੀਤੀ ਕਿ ਮਨੁੱਖ ਆਪਣੀਆਂ ਮਨੋਵਿਗਿਆਨਿਕ ਬਣਤਰਾਂ ਅਤੇ ਪੂੰਜੀਵਾਦੀ ਜੀਵਨ ਸ਼ੈਲੀ ਦੇ ਕਾਰਨ ਡੂੰਘੇ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਅਜਿਹੇ ਉਪ ਭੋਗੀ ਸਭਿਆਚਾਰ ਵਿੱਚ ਖਚਤ ਹੋ ਗਿਆ ਹੈ ਜਿੱਥੇ ਉਸ ਦਾ ਇਸ ਸਮਾਜ ਪ੍ਰਤੀ ਮੋਹ ਲਗਾਤਾਰ ਟੁੱਟ ਰਿਹਾ ਹੈ।ਵੈਸੇ ਤਾਂ ਮਨੋਵਿਗਿਆਨਿਕ ਪ੍ਰਣਾਲੀ ਨੇ ਵੱਖ ਵੱਖ ਪੱਖਾਂ ਤੋਂ ਮਨੁੱਖੀ ਮਨ ਦਾ ਅਧਿਐਨ ਕੀਤਾ ਹੈ, ਪਰ ਕਾਮ ਸੰਬੰਧਾਂ ਬਾਰੇ ਸਿੰਗਮਡ ਫਰਾਇਡ ਦੇ ਵਿਚਾਰ ਗੋਲਣਯੋਗ ਹਨ।ਮਨੁੱਖ ਦੀ 'ਕਾਮ ਇੱਛਾ'ਦੇ ਸਬੰਧ ਵਿੱਚ ਚਰਚਾ ਕਰਦਿਆਂ ਸਿੰਗਮੰਡ ਫਰਾਇਡ ਨੇ ਇਹ ਵਿਚਾਰ ਸਥਾਪਿਤ ਕੀਤਾ ਹੈ ਕਿ ਇਸ ਇੱਛਾ ਨੂੰ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਅਤੇ ਸਮਾਜਿਕ ਕਦਰਾਂ ਕੀਮਤਾਂ ਦੁਆਰਾ ਲਗਾਤਾਰ ਦਬਾਏ ਜਾਣ ਦੇ ਕਾਰਨ ਮਨੁੱਖ

ਦੀ ਮਨੋਸਥਿਤੀ ਅਜਿਹੀ ਬਣ ਗਈ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਆਪਣੇ ਪਰਿਵਾਰ ਅਤੇ ਸਮਾਜ ਪ੍ਰਤੀ ਇਮਾਨਦਾਰੀ ਅਤੇ ਜਿੰਮੇਵਾਰੀ ਨਿਭਾ ਹੀ ਨਹੀਂ ਸਕਦਾ। ਹਰਜੀਤ ਸਿੰਘ ਮਾਂਗਟ ਨੇ ਫਰਾਈਡ ਦੇ ਵਿਚਾਰਾਂ ਨੂੰ ਆਧਾਰ ਬਣਾ ਕੇ ਲਿਖਿਆ ਹੈ ਕਿ "ਕਾਮ ਪ੍ਰਵਿਰਤੀ ਬਾਰੇ ਉਸ ਦੇ ਵਿਚਾਰ ਸ਼ੁਰੂ ਤੋਂ ਹੀ ਵਿਵਾਦ ਗ੍ਰਸਤ ਤੇ ਗੁੰਜਲਦਾਰ ਰਹੇ ਹਨ ਪਰ ਇਹ ਕਿਸੇ ਧਰਮ ਗੁਰੂ ਦੇ ਪ੍ਰਵਚਨ ਨਹੀਂ ਜਿੰਨਾ ਬਾਰੇ ਵਿਰੋਧੀ ਧਰਮ ਵਾਲਿਆਂ ਨੇ ਵਵੇਲਾ ਖੜਾ ਕੀਤਾ ਹੋਵੇ ਬਲਕਿ ਇਹ ਇੱਕ ਆਧੁਨਿਕ ਮਨੋਵਿਗਿਆਨ ਦੀਆਂ ਖੋਜਾਂ ਤੇ ਅਧਾਰਤ ਵਿਗਿਆਨਿਕ ਸਿਧਾਂਤ ਹਨ। ਸੱਚ ਭਾਵੇਂ ਕਿੰਨਾ ਵੀ ਕੋੜਾ ਹੋਵੇ ਉਸ ਵੱਲ ਪਿੱਠ ਕਰਕੇ ਖੜੋਣ ਨਾਲ ਹੀ ਉਸ ਨੂੰ ਝੁਠਲਾਇਆ ਨਹੀਂ ਜਾ ਸਕਦਾ। ਆਪਣੀਆਂ ਅੱਖਾਂ ਬੰਦ ਕਰਨ ਨਾਲ ਰਾਤ ਨਹੀਂ ਪੈਂਦੀ।"4 ਇਸ ਲਈ ਖੁੱਲੇ ਦਿਮਾਗ ਨਾਲ ਇਹਨਾਂ ਨੂੰ ਪੜਨ ਦੀ ਲੋੜ ਹੈ। ਹੋ ਸਕਦਾ ਹੈ ਸਦੀਆਂ ਤੋਂ ਧਰਮ ਅਤੇ ਸਦਾਚਾਰ ਬਾਰੇ ਇੱਕ ਪਾਸੜ ਗੈਰ ਵਿਗਿਆਨਿਕ ਵਿਚਾਰ ਸੁਣਦੇ ਸੁਣਦੇ ਅਸੀਂ ਹੀ ਕੰਡੀਸ਼ਨ ਹੋ ਚੁੱਕੇ ਹੋਈਏ। ਇਹ ਠੀਕ ਹੈ ਕਿ ਅੱਜ ਤੋਂ ਇੱਕ ਸਦੀ ਪਹਿਲਾਂ ਲਿਖੇ ਗਏ ਇਹ ਵਿਚਾਰ ਯੂਰਪ ਦੀ ਮੁਕਾਬਲਤਨ ਆਜ਼ਾਦ ਸੋਚ ਦੇ ਮਾਹੌਲ ਵਿੱਚ ਲਿਖੇ ਗਏ ਸਨ ਪਰ ਸਾਡੀਆਂ ਕਦਰਾਂ ਕੀਮਤਾਂ ਲਈ ਇਹ ਅੱਜ ਵੀ ਬਹੁਤ ਵੱਡਾ ਚੈਲੰਜ ਜਾਪਦੇ ਹਨ।

ਉਪਰੋਕਤ ਵਿਚਾਰਾਂ ਦੇ ਉਲਟ ਗੁਰਮਤਿ ਵਿਚਾਰਧਾਰਾ ਬਹੁਤ ਪਹਿਲਾ ਤੋਂ ਹੀ ਇਹ ਸਿਧਾਂਤ ਸਪਸ਼ਟ ਕਰ ਚੁੱਕੀ ਹੈ ਕਿ ਮਨੁੱਖ 'ਮਨਮੱੁਖਤਾ' ਨੂੰ ਛੱਡ ਕੇ ਜਦੋਂ 'ਗੁਰਮੱੁਖ' ਬਣ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਆਪਣੇ ਜੀਵਨ ਨੂੰ ਗੁਰੂ ਦੁਆਰਾ ਦਰਸਾਏ ਹੋਏ ਸੱਭਿਆਚਾਰ ਅਤੇ ਕਦਰਾਂ- ਕੀਮਤਾਂ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰੀ ਢਾਲ ਕੇ ਨਿਸ਼ਕਾਮ ਸੇਵਾ ਦੇ ਸਿਧਾਂਤ ਨੂੰ ਅਪਣਾ ਲੈਂਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਉਸਦਾ ਜੀਵਨ ਸਫਲ ਹੋ ਜਾਂਦਾ ਹੈ।ਗੁਰਮੁੱਖ ਇਨ੍ਹਾਂ ਇੱਛਾਵਾਂ ਨੂੰ ਦਬਾਉਂਦਾ ਨਹੀਂ, ਸਗੋਂ ਸਾਧਦਾ ਹੈ ਭਾਵ ਇਨ੍ਹਾਂ ਇੱਛਾਵਾਂ ਦੀ ਭਟਕਣ ਅਤੇ ਲੋੜ ਨੂੰ ਸਮਝਦਾ ਹੋਇਆ, ਲੋੜ ਦੀ ਪੂਰਤੀ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਭਟਕਣ ਨੂੰ ਕੰਟਰੋਲ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਗੁਰਮੱੁਖ ਨੂੰ ਸੋਝੀ ਹੈ ਕਿ ਇੱਛਾਵਾਂ ਦੀ ਭਟਕਣ (ਸੁਆਦ ਅਤੇ ਚਸਕਾ) ਜਿਸ ਨੂੰ 'ਚੇਸਟਾ' ਕਿਹਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ, ਦੀ ਕਦੇ ਵੀ ਪੂਰਤੀ ਨਹੀਂ ਹੋ ਸਕਦੀ। ਚੇਸਟਾ ਦੀ ਮੰਗ ਤਾਂ ਹੋਰ ਤੋਂ ਹੋਰ ਵਧਦੀ ਤੁਰੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।

ਅਨਿਕ ਭੋਗ ਬਿਖਿਆ ਕੇ ਕਰੈ ॥
ਨਹ ਤ੍ਰਿਪਤਾਵੈ ਖਪਿ ਖਪਿ ਮਰੈ ॥5

ਸੋ ਮੂਲ ਸਮਝਣ ਵਾਲੀ ਗੱਲ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਇਨ੍ਹਾਂ ਇੱਛਾਵਾਂ ਜਾਂ ਰੁਚੀਆਂ ਨੂੰ ਦਬਾਉਣਾ ਜਾਂ ਕੁਚਲਣਾ ਨਹੀਂ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਇਹ ਦਬਾਉਣ ਜਾਂ ਕੁਚਲਣ ਨਾਲ ਤਾਂ ਹੋਰ ਵੀ ਵਧੇਰੇ ਤੀਬਰ ਹੋਣਗੀਆਂ ਅਤੇ ਮਨੁੱਖੀ ਚੇਤਨਾ ਨੂੰ ਭਟਕਾਉਣਗੀਆਂ, ਜਿਹਾ ਕਿ ਆਧੁਨਿਕ ਮਨੋਵਿਗਿਆਨ ਕਹਿੰਦਾ ਹੈ। ਲੋੜ ਤਾਂ ਇਸ ਨੂੰ ਸੰਜਮ ਵਿੱਚ ਲੈ ਕੇ ਆਉਣ ਦੀ ਹੈ। ਭਾਵ ਇਛਾਵਾਂ ਨੂੰ ਉਤਕ੍ਰਿਸ਼ਟ (ਸੁਬਲਮਿਓਟਏ) ਕਰਨਾ ਜਰੂਰੀ ਹੈ। ਇਸ ਤੋਂ ਅਗਲੀ ਸਮਝਣ ਵਾਲੀ ਗੱਲ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਉਤਕ੍ਰਿਸਟਤਾ ਦੀ ਇਹ ਕਿਰਿਆ 'ਨਿਸ਼ਕਾਮ ਸੇਵਾ' ਦੇ ਕਾਰਨ ਹੀ ਸੰਪੂਰਨ ਹੋ ਸਕਦੀ ਹੈ।

ਕਿਉਂਕਿ 'ਨਿਸ਼ਕਾਮ ਸੇਵਾ' ਕਰ ਰਹੇ ਗੁਰਮੁਖ ਦੇ ਮਨ ਅੰਦਰ ਸਮਰਪਣ ਦੀ ਭਾਵਨਾ ਉਪਜਦੀ ਹੈ। ਇਹ ਸਮਰਪਣ ਦੀ ਭਾਵਨਾ ਹੀ ਗੁਰਮੁਖ ਦੇ ਮਨ ਅੰਦਰ 'ਹਉਮੈ' ਨੂੰ ਨਸ਼ਟ ਕਰ ਦਿੰਦੀ ਹੈ, ਤੇ ਜਦੋਂ 'ਹਉਮੈ' ਨਸ਼ਟ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਤਾਂ ਮਨੁੱਖ ਅੰਦਰ ਸਮਾਜ ਅਤੇ ਪਰਿਵਾਰ ਪ੍ਰਤਿ ਜਿੰਮੇਵਾਰੀ ਦੀ ਭਾਵਨਾ ਉਪਜਦੀ ਹੈ। ਇਹ ਜਿੰਮੇਵਾਰੀ ਦੀ ਭਾਵਨਾ ਹੀ ਸਮੁੱਚੇ ਸਮਾਜ ਦੇ ਕਲਿਆਣ ਲਈ ਬਹੁਤ ਲਾਭਕਾਰੀ ਹੈ। ਜਿੰਮੇਵਾਰੀ ਦੀ ਭਾਵਨਾ ਨਾਲ ਭਰਿਆ ਮਨੁੱਖ ਹੀ ਠੱਗੀ ਚੋਰੀ ਤੋਂ ਬਚੇਗਾ, ਵਾਤਾਵਰਨ ਦੀ ਸੇਵਾ ਸੰਭਾਲ ਕਰੇਗਾ, ਦੂਜਿਆਂ ਦੀ ਮਦਦ ਕਰੇਗਾ ਅਤੇ ਕੁਰਬਾਨੀ ਲਈ ਵੀ ਤਿਆਰ ਰਹੇਗਾ, ਆਦਿ।

ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਉਤਰ ਆਧੁਨਿਕ ਵਿਚਾਰਕਾਂ ਨੇ ਵੀ ਅਜਿਹੇ ਵਿਚਾਰ ਸਥਾਪਿਤ ਕੀਤੇ ਹਨ ਕਿ ਆਧੁਨਿਕਤਾ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਇਸ ਉੱਤਰ ਆਧੁਨਿਕ ਦੌਰ ਵਿੱਚ ਅਜਿਹੀ ਸਥਿਤੀ ਪੈਦਾ ਹੋ ਗਈ ਹੈ ਕਿ ਮਨੁੱਖ ਅਤੇ ਮਨੁੱਖੀ ਚੇਤਨਾ ਇਸ ਕਦਰ ਖੰਡਿਤ ਹੋ ਗਏ ਹਨ ਕਿ ਮਨੁੱਖ ਨੂੰ ਕੁਝ ਸਿਧਾਂਤਾਂ ਹੇਠ ਬੰਨ੍ਹ ਕੇ ਇੱਕ ਵਿਚਾਰਧਾਰਾ ਦੇ ਲੜ੍ਹ ਲਾਉਣਾ ਸੰਭਵ ਨਹੀਂ ਰਿਹਾ।ਮੱਧਕਾਲੀਨ ਸਦਾਚਾਰਕ- ਸਾਂਝੀਵਾਲਤਾ ਹੁਣ ਅਰਥਹੀਣ ਹੋ ਗਈ ਹੈ। ਧਰਮ ਵਿੱਚੋਂ ਧਾਰਮਿਕਤਾ ਗਾਇਬ ਹੈ।ਡਾ.ਆਤਮ ਰੰਧਾਵਾ ਨੇ ਸਟੂਅਰਟ ਹਾਲ ਦਾ ਹਵਾਲਾ ਦਿੰਦੇ ਹੋਏ ਲਿਖਿਆ ਹੈ ਕਿ “ਸਟੂਅਰਟ ਹਾਲ ਅਜਿਹੇ ਉੱਤਰ ਆਧੁਨਿਕ ਮਨੁੱਖ ਨੂੰ ਪਰਿਭਾਸ਼ਿਤ ਕਰਦਾ ਹੈ, ਜਿਸ ਨਾਲ ਉਹ ਮਿਸ਼ਰਤਾ ਜਾਂ ਹਾਈਬ੍ਰਿਡਟੀ, ਅਸਥਿਰਤਾ ਤੇ ਅਨਿਸ਼ਚਿਤਤਾ ਨੂੰ ਜੋੜ ਦਿੰਦਾ ਹੈ। ਇਸੇ ਪਰਿਸਥਿਤੀ ਵਿੱਚੋਂ ਹੀ ਮਨੁੱਖ ਨੂੰ ਜਲਾਵਤਨ ਜਾਂ ਪ੍ਰਵਾਸੀ ਹੋਣ ਦਾ ਅਹਿਸਾਸ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸਟੂਅਰਟ ਹਾਲ ਨੇ ਮਨੁੱਖ ਦੀ ਪਹਿਚਾਣ ਨੂੰ 'ਮਿਸ਼ਰਤ' ਦੱਸਿਆ। ਜੋ ਕਦੀ ਵੀ ਇਕਾਰਥੀ, ਇਕਹਿਰੀ ਅਤੇ ਨਿਸ਼ਚਿਤ ਨਹੀਂ ਹੋ ਸਕਦੀ, ਸਗੋਂ ਇਸ ਦੇ ਪਿੜ ਵਿੱਚ ਕਈ ਵਿਚਾਰ ਧਾਰਾਵਾਂ ਸਮਾਨਾਂਤਰ ਘਮਸਾਨ ਪਾਉਂਦੀਆਂ ਰਹਿੰਦੀਆਂ ਹਨ। ਇਹ ਮਿਸ਼ਰਤ ਪਛਾਣ ਅਤੇ ਸਮਾਨਾਂਤਰਤਾ, ਉੱਤਰ ਆਧੁਨਿਕ ਪਰਪੇਖ ਵਿੱਚ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਪਛਾਣ ਚਿੰਨ ਵਜੋਂ ਉਘੜਦੇ ਹਨ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਇਕਾਗਰਤਾ ਅਤੇ ਇਕਹਿਰੀ ਵਿਚਾਰਧਾਰਾ 'ਤੇ ਭਾਰੀ ਸੱਟ ਮਾਰੀ।"6

ਇਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਆਧੁਨਿਕ ਪਦਾਰਥਵਾਦੀ ਵਿਚਾਰਧਾਰਾ ਇਸ ਵਿਚਾਰ ਤੇ ਵਧੇਰੇ ਜ਼ੋਰ ਦਿੰਦੀ ਹੈ ਕਿ ਮਨੁੱਖ ਆਪਣੇ ਆਪ ਵਿੱਚ ਕੁਝ ਵੀ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ, ਜਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦਾ ਸਮਾਜ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਉਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੀ ਹੀ ਮਨੁੱਖੀ ਸ਼ਖਸ਼ੀਅਤ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਪਰ ਰੂਸ ਵਿੱਚ ਸਮਾਜਵਾਦੀ ਸਮਾਜ ਨੂੰ ਸਥਾਪਿਤ ਕਰਨ ਲਈ ਜੋ ਤਜਰਬੇ ਹੋਏ ਉਸ ਦੇ ਆਧਾਰ ਤੇ ਇਹ ਵਿਚਾਰ ਸਥਾਪਿਤ ਹੋਇਆ ਕਿ ਸਮਾਜਵਾਦੀ ਸਿਧਾਂਤਾਂ ਦੇ ਆਧਾਰ 'ਤੇ ਰਾਜ ਸਥਾਪਿਤ ਕਰਨ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਵੀ ਹੇਠਲੇ ਪੱਧਰ ਤੱਕ ਮਨੁੱਖ ਦੀ ਚੇਤਨਾ ਨੂੰ ਸਮੂਹਿਕ ਸਮਾਜ ਭਲਾਈ ਭਾਵ 'ਸਮੂਹੀਕਰਨ' ਵੱਲ ਕੇਂਦਰਿਤ ਜਾਂ ਅਗਰਸਰ ਕਰਨ ਲਈ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਵਧੇਰੇ ਕੰਮ ਕਰਨਾ ਪਵੇਗਾ। ਲੰਬੇ ਸਮੇਂ ਤੱਕ ਸਮੂਹੀਕਰਨ ਦੇ 'ਨਿਸ਼ਕਾਮ ਮਾਹੌਲ' ਵਿੱਚ ਕੰਮ ਕਰਨ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਹੀ 'ਸਮਾਜ ਪ੍ਰਤੀ ਸਮਰਪਿਤ ਮਨੁੱਖੀ ਚੇਤਨਾ' ਦਾ ਜਨਮ ਹੋ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਸਬੰਧ ਵਿੱਚ ਵੀ. ਆਈ. ਸੋਲੋਖੋਵ ਦੇ ਪ੍ਰਸਿੱਧ ਨਾਵਲ 'ਧਰਤੀ ਪਾਸਾ ਪਲਟਿਆ' ਦੇ ਪਾਤਰ ਬੁੱਢਾ ਸੱਚੂਕਾਰੂ ਦੇ ਚਰਿੱਤਰ ਨੂੰ ਵੀ ਸਮਝਿਆ ਅਤੇ ਵਿਚਾਰਿਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਕੁਲਦੀਪ ਨੇ ਧਰਤੀ ਪਾਸਾ ਪਲਟਿਆ ਨਾਵਲ ਦੇ ਰਿਵਊ ਵਿੱਚ ਲਿਖਿਆ ਹੈ ਕਿ,"ਮਨੁੱਖ ਦੀ ਬੌਧਿਕ ਪੈਦਾਵਾਰ ਉਸ ਦੀ ਪਦਾਰਥਕ ਪੈਦਾਵਾਰ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰੀ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਪਰ ਇਨਾ ਵਿਚਲਾ ਇਹ ਸਬੰਧ ਇਕਹਿਰਾ, ਇੱਕਰੇਖੀ ਤੇ ਮਕਾਨਕੀ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ। ਭਾਵ ਮਾਨਸਿਕ ਪੈਦਾਵਾਰ ਪਦਾਰਥਕ ਪੈਦਾਵਾਰ ਨੂੰ ਵੀ ਮੋੜਵੇ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਕਰਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਇਹ ਸਬੰਧ ਦੁਵੰਦਾਤਮਕ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।"7

ਉਪਰੋਕਤ ਚਰਚਾ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਇਹ ਵਿਚਾਰ ਸਥਾਪਿਤ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ ਕਿ ਸੰਸਾਰ ਵਿੱਚ ਖਾਸ ਕਰ ਪੰਜਾਬ ਵਿੱਚ ਵੱਡੀ ਸਮਾਜਿਕ -ਆਰਥਿਕ ਤਬਦੀਲੀ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਉਸ ਨੂੰ ਸਥਾਪਿਤ ਕਰਨ ਲਈ ਗੁਰਮਤਿ ਵਿਚਾਰਧਾਰਾ ਦੀ ਰੌਸ਼ਨੀ ਵਿੱਚ ਚੱਲ ਰਹੇ 'ਨਿਸ਼ਕਾਮ ਸੇਵਾ' ਦੇ ਸੰਕਲਪ ਨੂੰ ਪੁਨਰ ਪਰਿਭਾਸ਼ਿਤ ਕਰਨ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਇਸ ਤੋਂ ਵੱਡਾ ਫਾਇਦਾ ਲਿਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ,ਕਿਉਂਕਿ ਗੁਰਮਤਿ ਵਿਚਾਰਧਾਰਾ ਦੀ ਰੋਸ਼ਨੀ ਵਿੱਚ ਚੱਲ ਰਿਹਾ ਇਹ 'ਨਿਸ਼ਕਾਮ ਸੇਵਾ' ਦਾ ਸੰਕਲਪ ਵੀ ਅੰਤਿਮ ਰੂਪ ਵਿੱਚ ਸਮਾਜ ਨੂੰ ਸਮਰਪਿਤ 'ਚੰਗੀ ਸ਼ਖਸ਼ੀਅਤ ਵਾਲਾ ਮਨੁੱਖ' ਅਤੇ 'ਬੇਗਮਪੁਰਾ' ਨੂੰ ਸਥਾਪਿਤ ਕਰਨ ਲਈ ਹੀ ਉਜਾਗਰ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਹੈ।

ਹਵਾਲੇ

1. ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ, ਪੰਨਾ 938

2. ਉਹੀ, ਪੰਨਾ 938

3. ਉਹੀ, ਪੰਨਾ 463

4. ਹਰਜੀਤ ਸਿੰਘ ਮਾਂਗਟ, ਸਭਿਅਤਾ ਕਿ ਸਰਾਪ, ਪੰਨਾ 36

5. ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ, ਪੰਨਾ 279

6. ਡਾ. ਆਤਮ ਰੰਧਾਵਾ, ਉੱਤਰ- ਆਧੁਨਿਕਤਾ ਅਤੇ ਸਮਕਾਲੀ ਪੰਜਾਬੀ ਕਵਿਤਾ, ਪੰਨਾ 29

7. ਕੁਲਦੀਪ, ਸਮਾਜਵਾਦੀ ਰੂਸ ਵਿੱਚ ਖੇਤੀ ਦੇ ਸਾਂਝੀਕਰਨ ਦੀ ਨਿੱਗਰ ਯਥਾਰਥਕ ਤਸਵੀਰ ਕਸ਼ੀ ਦਾ ਇਤਿਹਾਸਿਕ ਦਸਤਾਵੇਜ : ਸੋਲੋਖੋਵ ਦਾ ਸੰਸਾਰ ਪ੍ਰਸਿੱਧ ਨਾਵਲ 'ਧਰਤੀ ਪਾਸਾ ਪਲਟਿਆ,' ਲਲਕਾਰ ਅਗਸਤ 2015 ਅੰਕ, ਪੰਨਾ 43

Jsrupinder8@gmail.com

PRINTED MATTER/PRINTING BOOK CLAUSE 121 (A) P & T GUIDE

गुरुनानक एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.)
द्वारा भिवानी (हरियाणा), काठमाण्डू (नेपाल) से प्रकाशित

ISSN : 2395-7115
Impact Factor 8.642

बोहल शोध मंजूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL MULTI DISCIPLINARY, MULTIPLE LANGUAGES PEER REVIEWED, REFREED RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 2018)

Website :
www.bohalshodhmanjusha.com
Email : grsbohal@gmail.com

Editor :
Dr. Naresh Sihag, Advocate
HOD Hindi, Tantia University
M. : 8708822674, 9466532152

गीना देवी शोध संस्थान
द्वारा श्रीगंगानगर, (राजस्थान), चंडीगढ़ (पंजाब) व नेपाल से प्रकाशित

ISSN : 2321-8037
Impact Factor 7.834

Gina Shodh SANGAM

A Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
Journal of Literature, Arts, Culture, Humanities and Social Sciences

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 2018)

Website : www.ginajournal.com
Email : grngobwn@gmail.com
Office : 8708822674

Editor :
Dr. Rekha Soni, Vice Principal
Education, Tantia University
M. 9828531975

गिरधारीलाल घासीराम शोधपीठ
द्वारा नई दिल्ली, आगरा, गाजियाबाद एवं नेपाल से प्रसारित

ISSN : 2348-5639
Impact Factor 6.521

SHODH SAMALOCHAN

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Website : https://ginajournal.com/shodh-samalochan/
Executive Editor : Dr. Varsha Rani M. 9671904323
Managing Editor : Dr. Mukesh Verma M. 9627912535

Editor :
Dr. Naresh Sihag, Advocate
M. 8708822674

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक गुरुनानक सोसायटी रजि. के लिए डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट ने मनसावाचा प्रिन्टर्स, भिवानी से छपवाकर गीना प्रकाशन, 202, पुराना हाउसिंग बोर्ड भिवानी-127021 (हरि.) से वितरित की।

ISSN 2395-7115